कथा-प्रभास

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

कथा-प्रभास

(तीन दशकक प्रतिनिधि मैथिली कथा)

प्रभास कुमार चौधरी



मैथिली अकादमी, पटना

प्रकाशक : मैथिली अकादमी प्रकाशन १६१
मैथिली अकादमी
श्रीकृष्णापुरी
पटना-८००००१

आवरण सज्जा : डॉ० गंगेश गुंजन

प्रथम संस्करण
दिसम्बर १९८८
प्रति—५१००

मूल्य : साधारण—[illegible] टाका
सजिल्द—[illegible] टाका

मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस,
मुसल्लहपुर, पटना—६

प्रस्ताविकी

कथा आजुक एक सशक्त विधा थिक। बहुत हर्षक विषय जे सम्प्रति मैथिली कथा साहित्य बहुत समृद्ध भ' रहल अछि। प्रसिद्ध कथा संग्रहक प्रकाशनक शृंखलामे मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रभास' प्रकाशित करैत अकादमी अतिशय आह्लादक अनुभव करैत अछि। कथा कहबाक एक अपूर्व भंगिमा, सहज आकर्षक शिल्प, परिवेशक सहजता औ विश्वसनीयता तथा कथ्यक प्रभावशीलताक लेल प्रभास कुमार चौधरी मैथिली कथा साहित्यमे प्रसिद्ध छथि। उपन्यास लेखनमे सेहो ई बहुत मांजल छथि।

''कथा-प्रभास''मे विगत तीन दशकक विद्वान कथाकारक अट्ठाइस गोट प्रसिद्ध कथा संग्रहित अछि। मध्यवर्गीय समाजक यथार्थ चित्रण, सामन्ती विलासिताक अंत तर कुहड़इत-पिसाइत लोकक अशेष व्यथा-कथा ओ एक अभिनव समाजक संकल्पनाक दिशा ओ दृष्टि एत' दर्शनीय अछि। आशा अछि कथा साहित्यक प्रेमी पाठक अकादमीक एहि अभिनव प्रस्तुतिक स्वागत करताह।

मैथिली अकादमी
२६-१२-१९८८

(डा० फणीन्द्र नाथ ओझा)
अध्यक्ष

प्रकाशकीय

मैथिलीक विशिष्ट ओ सम्मानित कथाकार श्री प्रभास कुमार चौधरीक 'कथा-प्रभास' प्रकाशित करैत अकादमी अतिशय गौरवान्वित अछि। मैथिलीक साठोत्तरी पीढ़ीक ई एक सशक्त हस्ताक्षर छथि। अहिना छठम दशकमे मैथिली कथा-धारामे तीन नाम—ललित, राजकमल, मायानन्द—बहुचर्चित एवं प्रतिष्ठित रहलाह, तहिना सातम दशक मे प्रभास, गुंजन, राजमोहन जीवकान्त ओ धूमकेतु मैथिली कथा पर आच्छादित रहलाह। प्रभास मैथिली कथा साहित्यक समर्थ युवा ऊर्जा ओ स्फूर्ति सँ भरल एहन कथाकार छथि जे कथा कें व्यापक आधार, विराट परिवेश, बहुआयामी दृष्टि, तथा विशिष्ट दृष्टि-भंगी प्रदान कयलनि अछि। अत्यन्त संवेदनशील हृदय, चिन्तनशील मस्तिष्क, सत्योन्मेषी दृष्टि तथा चोटगर-नोकगर व्यंग्यक वक्र-भंगिमा हिनक विशेषता थिक। शहरमे रहितो ई मौन-प्राणक गाममे रहैत छथि। बाल्यकालक संस्मरण ओ अतीतक बहुत रास मार्मिक अनुभूति हिनका मे तेना ने रचि-बसि गेल छनि जे कदाचित् नागर संस्कृतिक छलनामय वातावरण हिनका हठात् मिथिलाक अपन माटिपानि ओ गाम घर मे आनि दैत छनि। एक विशिष्ट मध्यवर्गीय संस्कार ओ ग्रामीण सहज परिवेश मे पलल आदर्श जीवनक मूल्यबोध हिनका कदाचित् यथास्थान मोहग्रस्त सेहो करैत रहलनि अछि। तें युवा रहितो हिनक कथा-शिल्प एक वयोवृद्ध प्रगल्भता देखबैत अछि। एहन बात नहि अछि जे कथाकार 'प्रभास आदर्शवादी छथि'। हिनकामे वस्तुतः यथार्थ ओ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। गाम सँ नगर, नगर सँ राष्ट्र ओ राष्ट्र सँ अन्तर्राष्ट्रीयताक विराट क्षितिज हिनक सम्पूर्ण मनोमस्तिष्ककें झिकझोरैत रहलनि अछि। अतएव बद्धमूल सामंती संस्कार कें तोड़ि-फोड़ि ई बेर-बेर अपन रचनामे यथार्थ जनवादी जमीन सेहो तकैत छथि। पूर्वमे मैथिली कथा जाहि संकीर्णताक कठघरा मे घूमल-खाम्हल छल तकरा ई व्यापकता ओ विविधताक उन्मुक्त भाव-भूमि पर उतारि देलनि। हिनक रचना-शिल्प मे मिथिला-अंचलक सोना-माटिक सम्पूर्ण सुगन्धि भेटैत अछि। संगहि हिनक कथा नाना रूपात्मक जगत ओ जिनगीक बहुरंगी कथा कहैत अछि। हिनका मे एक अपूर्व जिज्ञासा, सजीवता

मनोवैज्ञानिकता, साक्षात: संघर्षक उठा-पटक देखिते बनैत अछि। ई अतीतक ओ कथा कहैत छथि जे वर्तमानक रेखाचित्र गढ़ैत भविष्यक सपना सजबैत अछि। कदाचित आधुनिक विभीषिका ओ विसंगति अथवा वर्ग-संघर्ष हिनका तेहेन उद्वेलित कयलकनि अछि जाहि सँ आन्तरिक कोनो दीपशिखा प्रज्वलित कयल जा सकय। बहुगहन-असियारल सामाजिक व्यवस्था, विडम्बनामय जीवन, भावुक अनाचार ओ अभिचार सँ अकच्छ परिवेश अथवा दिग्भ्रमित साम्प्रतिक युग-चेतना अपन विशिष्ट कथाकार सँ भविष्यमे आरो अपेक्षा रखैत अछि।

कथाकारक अतिरिक्त प्रभास मैथिली कथा साहित्यक एक समर्थ उपन्यासकार सेहो छथि। मैथिली उपन्यास साहित्य कें ई पाँचटा एहन अनमोल रत्न देलनि अछि जाहि सँ हमर उपन्यास साहित्य गौरवान्वित भेल अछि। पूर्वमे अकादमी हिनक 'हमरा लग रहब ?' उपन्यास प्रकाशित क' चुकल अछि। पुन: आइ विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित-अप्रकाशित ओ बहु प्रशंसित अठाइस गोट प्रतिनिधि कथाक संकलन 'कथा प्रभास' प्रकाशित करैत हमरा लोकनि अत्यन्त आनन्दोल्लास अनुभव क' रहल छी। कथा-धाराक इन्द्रधनुषी छवि, मिथिलाक माटिपानिक समग्र सौरभ, गहन चिन्तन ओ जीवनानुभवक यथार्थ कसौटी पर गढ़ल हिनक उपर्युक्त कथामे मैथिली कथा साहित्यक अपूर्व रंग-टीप दर्शनीय अछि। नव युगक सर्वाधिक लोकप्रिय कथा-विधाक दिशा ओ दृष्टि कें देखैत ई निःसंकोच कहल जा सकैत अछि जे आधुनिक मैथिली कथा-साहित्य कोनो भाषा-साहित्यक समकक्ष ठाढ़ कयल जा सकैछ। शिल्प ओ प्रयोग, विषय ओ विस्तार, शैली ओ अभिव्यक्ति, कथ्य ओ कथ्य तथा बोध ओ संवेदना —सब दृष्टि सँ कथाकार प्रभास मैथिली कथा-धाराक एक स्वर्णिम हस्ताक्षर छथि। एहि संकलनक अनेक कथा हिन्दी, बंगला ओ गुजराती भाषा मे अनुदित ओ बहु-प्रशंसित भ' चुकल अछि।

हम आशा करैत छी जे अकादमीक कथा-मालाक एहि सुन्दर-सुरभित अभिनव पुष्पक मातृभाषानुरागी सहृदय पाठक हृदय सँ स्वागत करताह। सर्वथा सचेष्ट रहितो मुद्रण जन्य त्रुटि परिमार्जनीय थिक।

मैथिली अकादमी
२९-१२-८८

देवकान्त झा

निदेशक-सह-सचिव

लेखकीय : कोनो आहे माहे नहि

हमरा जे कहबाक अछि से अपन कथा सभमे बेर-बेर कहैत आयल छी आ कहैत रहब। हम आइयो ओहि बात कें मानैत छी जे आइ सँ पच्चीस वर्ष पहिने अपन कथा संग्रह "नव घर उठय : पुरान घर खसयक" प्रकाशनक समय लिखने रही। कृतिक सम्बन्धमे कर्ताक वक्तव्यक कोन प्रयोजन? पच्चीस वर्ष बाद 'कथा लिखबाक क्रम मे" शीर्षक अपन वक्तव्यमे मिथिला मिहिरमे सेहो हम ई बात दोहरौने रही जे मुग्गाक दाम मुग्गाक बोल सुनले पर लगैत छैक। कथामे दमखम रहैत छैक, हृदय कें छूबाक आ मस्तिष्क कें आन्दोलित करबाक सामर्थ्य रहैत छैक त' ओ अपन लोहा मनबा क' रहैत छैक। ओकरा कोनो डालि बजोनिहारक काज नहि पड़ैत छैक। वक्तव्यक साँगर पर कथा ठाढ़ नहि भ' सकैत छैक। हमरा जे कहबाक अछि 'कथा-प्रभासक' एक एकटा कथा बाजत, हमरा बदौ ओकरा सत-सत हजार-लाख-करोड़ लोक दिस सँ बाजत।

पूरा दू युगक बाद हमर दोसर कथा संग्रह 'कथा-प्रभास" मैथिली अकादमीक सौजन्य सँ प्रकाशित भ' रहल अछि। हमर पहिल कथा संग्रह १९६४मे छपल। हमर पहिल मैथिली कथा 'बाहर इजोत : भीतर धूँआँ' मिथिला मिहिरमे १९६१मे प्रकाशित भेल (यद्यपि ओहि सँ पहिने दू टा कथा 'वैदेही' मे 'धरती कुहरि उठल' आ 'प्रतीक्षा' १९५६-५७मे छपि चुकल छल आ किछु कथा सभ विद्यालय-पत्रिका सभमे सेहो)। १९६४मे प्रकाशित "नव घर उठय:पुरान घर खसय" मे हमर एगारह टा प्रारम्भिक कथा (१९६१—१९६३क बीच छपल) संग्रहित भेल।

आइ ई सोचला पर आश्चर्य होइत अछि जे हमर पहिल कथा-संग्रहक ओतेक उत्साहवर्द्धक आ व्यापक स्वागत भेलाक बादो पच्चीस वर्ष धरि कोनो दोसर संग्रह किऐक ने प्रकाशित भेल। एहि बीच हम नियमित कथा लिखैत रहलहुँ, प्रकाशितो होइत रहल। पाँच टा उपन्यासो (अभिशप्त युगपुरुष, हमरा लग रहब, नवारम्भ, राजा पोखरिमे कतेक मछरी) प्रकाशित भेल मुदा दोसर

कथा संग्रह नहि छपल। प्राय कथाक नियमित प्रकाशन होइत रहबाक कारणे कथा-संकलनक प्रकाशन दिस ध्यान नहि गेल। प्रायः प्रकाशनक समस्या कें देखैत सभ बेर कथा संग्रह आ उपन्यासक प्रकाशनमे चयन करबाक बेर उपन्यासे प्रकाशन कें प्राथमिकता देब' पड़ल।

'कथा-प्रभास' मे बही कारणे हमर लगभग तीन दशकक कथा लेखनक किछु बानगी प्रस्तुत अछि। ई चयन हमरा लेल कठिन काज छल। हम प्रत्येक कथामे फराक-फराक बात कें, युगीन आ शाश्वत यथार्थ कें फराक-फराक ढ़ंग सँ कहबाक चेष्टा करैत आयल छी। अपन माटि पानिक रचनाक संग-संग एहन एहन कथाक रचनाक प्रयास करैत आयल छी जे सर्वदेशीय, सर्वकालिक एवं सार्वजनीन हो। कोनो कथाकें छोड़ि देबाक अर्थ छल ओइ प्रवाह कें खण्डित करब। मुदा एकेटा संग्रहमे बत्तीसँ अधिक कथा संकलित करब सेहो कतेको कारण सँ संभव नहि छल। तेँ मात्र अट्ठाइस टा कथा एहि संग्रहमे देल गेल अछि।

१९६१ सँ १९७०क बीच हम छियालीस टा कथा लिखलहुँ जाहिमे एगारह टा "नव घर उठय पुरान घर खसय"मे संकलित भेल आ चौदह टा 'कथा-प्रभास'मे आ रहल अछि। शेष एकैस टा शीघ्र कोनो दोसर संकलनमे प्रकाशित हैत, से आशा करैत छी। १९७१ सँ १९८०क बीच हम २४ टा कथा लिखलहुँ जाहिमे सात टा कथा मात्र एहि संग्रहमे आ रहल अछि। शेष सत्रह टा कोनो दोसर संग्रहमे आ सकत, से आशा करैत छी। नवम दशकक सात टा कथा एहि संग्रहमे संकलित भेल अछि। एहि संग्रहक बहुत रास कथा हिन्दी, गुजराती आ बंगला मे अनूदित भ' चर्चित आ प्रशंसित भेल अछि। मैथिली पाठक आ समीक्षकक स्नेह आ प्रशंसा सेहो ई रचना सभ प्राप्त क' चुकल अछि। तेँ ई संग्रह अपने लोकनिक हाथमे दैत काल हम एक प्रकार सँ आश्वस्त छी।

सातम दशक मैथिली साहित्यमे, विशेष क' कथा साहित्यमे बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। ई ओ दशक थिक जाहिमे मिथिला मिहिरक पुनर्प्रकाशन प्रारम्भ भेलाक कारणे मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ रचनाकार पुनः सक्रिय भ' उठल छलाह आ एकटा सशक्त नव पीढ़ीक प्रवेश भ' रहल छल। छठम दशक मैथिली कथा साहित्यक लेल नवारम्भक युग छल आ ललितक 'कथा' 'रमजानी'सँ मैथिली कथाक वर्तमान धाराक प्रारम्भ भेल छल। ललितक संग राजकमल चौधरीक

प्रवेश भेल जिनका सबसँ ललित १९६४में मैथिलीक जीवित कथाकारमे सर्वश्रेष्ठ मानलनि। अही पीढ़ीक अन्य सशक्त कथाकार भेलाह "मणिपद्म, मायानन्द, सोमदेव, धीरेन्द्र, हंसराज लिलि रै, बलराम आ रामदेव झा। उपानन्द, शैलेन्द्र मोहन झा, योगिराज, राम किशुन झा, "किसुन" आदि सेहो अही पीढ़ी कँ समृद्ध कयलनि। तेसर, चारिम आ पाँचम दशकक कथाकार सेहो एहि दशकमे सक्रिय भ' उठलाह आ कुमार गंगानन्द सिंह, प्रो० किरणजी हरिमोहन झा, व्यासजी नगेन्द्र कुमार, कुलानन्द नन्दन, उमानाथ झा, मनमोहन झा गोविन्द झा एवं शेखरजी अपन उत्कृष्ट रचना एहि दशकमे लिखलनि।

सातम दशकक आरम्भक संग हमर नियमित कथा लेखन प्रारम्भ भेल। दादा (हमर पिता) आशु कवि छलाह, हुनकर कविता पढ़ि सुनिक' आ हुनकर पारिवारिक पुस्तकालय मे अनेक कवि, कथाकार, उपन्यासकारक हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला (हिन्दीमे अनुदित) रचना पढ़ि-पढ़ि हमहुँ कविता लिख' लगलहुँ। दादा हिन्दीमे कविता लिखैत छलाह, हमहुँ हिन्दियेमे शुरु कयलहुँ। १९५२मे लहेरिया-सरायक एम० एल एकेडमीमे नाम लिखौलाक तीन वर्षक बाद, दशम वर्गक विद्यार्थीक रूपमे हमर मैथिली-लेखन प्रारम्भ भेल—अपन गुरु कथाकार ललित आ कवि चन्द्र नाथ मिश्र "अमर"क सम्पर्क सँ। १९६४ धरि हिन्दी मैथिलीमे कथाक संग हिन्दीमे कवितो प्रकाशित होइत रहल। मुदा हमरा लागल जे हमरा लेल उपयुक्त विधा चुनि लेबाक बेर आबि गेल छल आ हम कथा विधा कँ बेसी उपयुक्त मानलहुँ। आइयो मानैत छी। पहिल उपन्यास अभिशप्त १९७०मे छपल आ दस सालमे पाँच टा उपन्यासो छपि गेल। कथा निरन्तर लिखैत रहलहुँ, मैथिली आ हिन्दीमे आ अन्य भारतीय भाषामे अनुवाद होइत रहल। यथावधि एकसयक लगभग कथा लिखल अछि। सातम दशकमे हमर लगले बाद गंगेश गुंजन अपन कथाक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पकड़ आ भाषाक नव भंगिमाक संग विशिष्ट स्थान बनौलनि। धूमकेतु आ राजमोहन झा जे छठम दशक मे मूलतः कविता लिखि रहल छलाह, सातम दशकमे कथाकार रूपमे अपन परिचय प्रतिष्ठ कयलनि। पैंगठक बाद जीवकान्त सामर्थ्य आ वेग मे संग प्रवेश कयलनि। साकेतानन्द आ रमानन्द रेणु सेहो लिखि रहल छलाह, गौरी मिश्र आ शेफालिका वर्मा सेहो लिखि रहल छलाह। उमानन्द व्यंग लेखनमे नाम पढ़बाक चेष्टा क' रहल छलाह। पाँचम छठम आ ओहि सँ पहिलुको दशकक अनेक

कथाकार अपन उत्कृष्टतम रचना द' रहल छलाह। किरणजीक मधुरमनि, हरिमोहन बाबूक पाँच पत्र, गोविन्द झाक रामक पोती, मणिपद्मक 'गुरु-दक्षिणा' ललितक "नवपुरान", राजकमलक "ललितक माछ", धूमकेतुक अगुरवान, "गुंजनक "बन्हेज" आ "धूप महक भाटा", रामदेव झाक "मनुक सन्तान" बलरामक दकचल देवाल, जीवकान्तक "सीड़क", साकेतानन्दक "त्रिलोकीसमाहार" राजमोहन झाक "अप्पन लोक" आ हमर बाबी, अरुनी, सूर्यास्त, दुःख आदि कथा एहि दशकमे प्रकाशित भेल जाहिसँ ललितक "रमजानी" सँ प्रारम्भ भेल कथा-धारा समृद्ध एवं विकसित भेल आ अन्य भारतीय भाषाक कथाक समकक्षता प्राप्त क' सकबाक हकदार बनल।

मैथिली कथा लेखन वा एना कहू जे सम्पूर्ण मैथिली लेखनक संग एकटा समस्याक हरदम जुड़ल छैक। पाठकीय आ समालोचकीय अतिरिक्त उदासीनता आ अतिरिक्त उदारता। वैह उदासीनता आ उदारता मैथिली लेखन लेल सभ सँ पैघ खतरा छैक। मैथिलीक भाषीमे ई धारणाछे मैथिली बजैत छी त' मैथिलीमे लिखियो सकैत छी, आइयो ओहिना जीवैत अछि जेना पचास वर्ष पूर्व जीवैत छल। मैथिलीमे लिखबाक लेल कोनो विशिष्ट प्रतिभा वा अध्ययनक आवश्यकता नहि, मात्र मैथिली बाजब, लिखब आयब पर्याप्त छैक, ई धारणा आइयो सम्पूर्ण मैथिल समाज कें आक्रान्त कयने अछि। तें जे किछु छपि जाइत अछि, सभ साहित्यमे बना जाइत अछि। जे क्यो किछुओ लिखिक' छपबा लैत अछि, साहित्यकारक सूचीमे आबि जाइत अछि। समालोचक (?) लोकनि ओहि सभ नाम कें अपन उल्लेख मे जोड़ि लेब अपन उत्तरदायित्व बुझैत छथि।

सही लेखक कें प्रशंसा आ स्वीकृतिक उपरान्तो तें एक तरहक अपमान आ घुटनक अनुभव होइत रहैत छैक। सूचीमे अपना संग जुड़ल नाम देखि ओकरा होइत छैक जे अइ सूची सँ बाहरे रहितहुँ त' नीक। लिखनिहारक फराक-फराक गोल होइत छैक आ एकके रचनाकारक सभ रचना एकके गोत्रक नहि होइत छैक ई मानबा लेल मैथिलीक पाठक - समीक्षक (?) आइयो प्रस्तुत नहि लगैत छथि।

हमरा आइयो ओकर कारण वैह लगैत अछि जे हम बेर बेर कहैत आयल छी। अपन भाषाक प्रति मैथिलक हीन भावना। अपन साहित्यमे प्रकाशित वस्तु

के हमरा लोकनि स्वयम् दोसर अंशोक मानैत छी । मैथिलीक जे विशिष्ट वर्ग अछि, से मंच सभ हथियौने अछि, तकरा मैथिली सँ कोनो प्रेम नहि छैक । ओ मैथिलीक मंच पर बैसिक' मैथिली लेल बजितो, हरदम अइ भावना सँ आक्रान्त रहैत अछि जे मैथिलीमे विद्यापतिक बाद किछु नहि अछि । विद्यापति पर्व मनाउ, मैथिली तँ विश्वी पढ़िक' की हैत ? ओइमे पढ़बा लेल छैहे की ? आ जे जनसाधारण छैक से उदासीन छैक । ओकरा मैथिली अपन भाषा नहि, बाबू-भैयाक भाषा लगैत छैक । तें मंच पर दावा करबा लेल तीन करोड़ मैथिली भाषी मुदा पढ़बा लिखबाक लेल पाँचो सात सय मैथिली भाषी भेटब मश्किल । मैथिली ककरो भाषा नहि, ने इलिट (विशिष्ट वर्ग)क, ने मासक (जनसाधारणक) । किछु मुट्ठी भरि लेखक, जतबे लेखक ततबे पाठक । कथनो काल ओतबो पाठक नहि । लेखकोमे एक दोसरक रचना पढ़बामे अरुचि ।

आइ हमरा सन लेखक के सेहो ई बात कह' पड़ि रहल अछि जकरा पहिले कथाक प्रकाशन दिन सँ पाठक, समालोचक, पूर्ववर्ती आ समकालीन साहित्यकार सभक स्नेह आ कृपा प्राप्त भेलैक । हमर लेखक उपेक्षाक नहि, अत्यधिक कृपा आ स्नेह सँ आक्रान्त अछि । ओकरा एकटा घुटन, एकटा आक्रोशक अनुभव सभदिन होइत रहलैक अछि । बी० ए० मे पढ़ैत रही त' कथा बी० ए० कोर्स मे लागि गेल छल । आइयो मिडिल, मैट्रिक, आइ० ए०, बीए०, एम०ए० सभक कोर्स मे अपन रचनाक नाम देखैत छी । पटना विश्वविद्यालय मे हमरा पर शोध प्रबन्ध सेहो स्वीकृत भेल, आइयो लिखा रहल अछि । पाठकक स्नेहपूर्ण पत्र आइयो भेटैत अछि । मुदा बेर बेर इएह धारणा पुष्ट होइत अछि जे अधिकांश मैथिली भाषी लेल आइयो मैथिली लेखन वास्ते कोनो विशिष्ट प्रतिभा वा अध्ययनक नहि, मैथिली मे बाजि, लिखि लेबा मात्रक आवश्यकता छैक । सभ धन बाइस पसेरी । जेहने राजकमल तेहने

आइ अपन कथा संग्रह बारेमे किछु लिखैत काल एकटा आयोजन मोन पड़ैत छथि । राजधानीक एकटा प्रतिष्ठित संस्था एकबेर उत्साह मे एकटा मैथिली पत्रिका प्रकाशित करबाक निश्चय कयने छल । ओकर संयोजक एकटा उत्साही नवयुवक छलाह । किछु गोटेक संग हमरो आमन्त्रित कयने छलाह एकटा गोष्ठी मे जे ओहि प्रस्तावित पत्रिकाक रुपरेखा बनयबाक लेल आयोजित भेल

छलैक । गोष्ठी पैघ पैघ सुझावक संग समाप्त भेल मुदा तकर पश्चात ओ उत्साही नवयुवक एक बात लजा आस्ते सँ कहलनि— ई सभ त' ठीक छैक भाइ मुदा सत्ते कहू त' मैथिलीमे मैथिली मे पढ़ लेल छैहे की जे लोक पढ़त । विद्यापति पर्व मना लेब धरि ठीक अछि मुदा पढ़बा लेल मैथिली— ? हँसी नहि लगैत अछि भाइ । की पढ़त लोक मैथिली मे ''ककरा पढ़त''''?

हम हुनका नहि कहि सकलियनि जे पढ़बा लेल त' बहुत रास चीज अछि । सुमन, मधुप, यात्री, किरण, आरसी आ अमर के पढ़ू । कुमार गंगानन्द सिंह, हरिमोहन बाबू व्यासजी, उमानाथ झा, मनमोहनजी, शेखरजी, गोविन्द झा, मणिपद्म, आ बहुत के पढ़ू । ललित, राजकमल, मायानन्द धीरेन्द्र, सोमदेव, हंसराज, लिलि रे, रामदेव आ बलराम के पढ़ू । ''किसुन'' आ कीर्तिनारायण मिश्र के पढ़ू । गुंजनक, धूमकेतु, राजमोहन झा, जीवकान्त, आ सुभाष के पढ़ू । प्रवासी, कुलानन्द मिश्र, महाप्रकाश भीमनाथ झा, रोषी, सुकान्त सोम, हरेकृष्ण झा आ विनोद के पढ़ू ।

हुनका हम किछु ने कहलियनि । निश्चित बुझल छल जे पुछि बैसताह ई लोकनि के छिकाह ? की लिखने छथि ?

आइ मुदा अहाँ सभ के कहैत छी । अहाँ एहि संग्रहक एकको टा कथा नहि पढ़ू मुदा जिनकर हम नाम लेलहुँ अछि, तिनकर रचना पढ़ू । हमरा सन्तोष रहत जे अहाँ लोकनि मैथिली पढ़ैत छी, तीके ओकर रचना पढ़ैत छी ।

कथा-संग्रह प्रकाशन हेतु मैथिली अकादमी के समर्पित करैत काल मोन पड़ैत अछि बाबी जकरासँ कथा सुनि सुनि क' हमर कथाकार जनमल । मोन पड़ैत छथि दादा (हमर पिता) जे हमर सम्पूर्ण लेखन सामर्थ्यक केन्द्रमे आइयो छथि । मोन पड़ैत छथि बड़का काका जिनकर अध्ययनशीलता सँ प्रभावित भ' आ जिनकर लाइब्रेरी (काका आ दादाक संयुक्त) सँ किताब पढ़ि पढ़ि हमर पढ़बा लिखबाक इच्छा बढ़ल-पनपल । मोन पड़ैत अछि माय जे सभ दिन आ आइयो अपना सँ हटिकें ककरो लेल, सबहक लेल किछु सोचबाक आ करबाक प्रेरणा दैत अछि । ओकरे क्रियाकलाप आ जीवन शैली के देखि देखि हमर रचनाकार आ व्यक्ति दुनू कोनो पैघ बात सोचि सकबामे सक्षम भेल अछि आ आइयो होइत अछि । मोन पड़ैत छथि पत्नी जे हमर भविष्यचिन्तनविहीन जीवन प्रणालीक दबाव सभ दिन

भोगैत रहलौंह आ भोगैत छी। आ मोन पड़ैत अछि सम्पूर्ण परिवार, माइ-बहिन, दोस्तमहिम, गाम-घर आ संसार जे घूमि फिरिक' हमर कथाक अंग बनैत रहैत अछि। खासक' मोन पड़ैत अछि दुनू बेटी चिनी आ मिमी (वन्दना आ अर्चना) जे अत्यन्त परिश्रम सँ एहि संग्रहक प्रेस कापी तैयार कयलक।

एहि कथा संकलनक प्रकाशन हेतु हमर अकादमीक अध्यक्ष डा० फणीन्द्र नाथ ओझाक प्रति आभार प्रकट करैत छी। अकादमीक विद्वान निदेशक आ साहित्य-सेवी बन्धुवर डा० देवकान्त झाकें धन्यवाद देबाक औपचारिकता करब हुनकर योगदानकें छोट करबाक धृष्टता हैत। मामू (डा० गंगेश गुंजन) जाहि तत्परता आ स्नेह सँ आवरण-सज्जा कयलन्हि अछि, तकर हुनका सँ अपेक्षा छल।

प्रभास कुमार चौधरी

दीपावली १९८८

सातम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल
- ☐ टूटल कसम : लभरल आखर
- ☐ सुभद्रा-हरण
- ☐ नव चिड़नी : तोहर डंक
- ☐ उपरफाट्ट
- ☐ गिरगिट
- ☐ क्लान्त
- ☐ दिनचर्या
- ☐ असाध्य
- ☐ बरगनी
- ☐ सूर्यास्त
- ☐ जनविहार अप्पन
- ☐ धमकी
- ☐ दुख

लिफाफ बन्द : चिट्ठी खूजल

एकटा संकल्पक संग नरेन बाबू लिफाफ टेबुल पर सँ उठा लेलनि—धीरेनक पत्र पढ़िते ली। आर उपाये कोन ? जखन पढ़बेक अछि, त' अखने किएक ने पढ़ि ली।

लिफाफ हाथ मे लैत देरी मोनक संकल्प गलि गेलनि आ एकटा निश्चित डर पैसि गेलनि। हाथ काँप' लगलनि। थरथराइत आँगुरक बीच दबल लिफाफकेँ ओ उनटि-पुनटि क' देखलनि, अपन पता देखलनि, पठाब'बलाक नाम देखलनि आ फेर लिफाफ टेबुल पर राखि देलनि। लिफाफ फाड़ि क' पत्र पढ़बाक साहस नहि भेलनि। जेना ओहि लिफाफ मे हुनक पुत्र धीरेनक पत्र नहि, कोनो विषाक्त गैस बन्द होइ जे लिफाफ खुजैत देरी हुनकर नाक कान पसरि जयतनि, आ ओना क' साँस बन्द भऽ जयतनि।

दू घंटा पहिने स्कूलक चपरासी लखना अजुका डाक टेबुल पर राखि गेल छलनि। डाक तीन टा पत्र छलैक—एक टा मे डी०इ०ओ० आफिसक इन्सट्रक्शन्स आ दोसर मे एग्जामिनेशन बोर्डक निर्देश। सभटा बात बुझा दुनू पत्र नरेन बाबू, किरानी बाबूक इलाका लगा देलथिन आ हिदायति कयलथिन जे एकर उत्तर समय पर चलि जाइ। मुदा नरेन बाबू जनैत छलाह जे ओकर उत्तर समय पर नहि जयतैक। काज केँ समय पर करब वा ढंग सँ करब किरानी बाबू बीस बरखक नोकरी मे नहि सिखने छलाह। टोकला वा डँटला पर मिमिया उठैत छलाह—'क्या करें सर। काम ही इतना रहता है। इतना सारा काम और अकेला किरानी। मैं तो कितनी बार कह चुका, अब एक किरानी से चलने का नहीं, एक असिस्टेन्ट चाहिए सर।' हुनकर तर्कक सामने चुप भऽ जाइत छलाह नरेन बाबू। देहातक मामूली स्कूल मे दू-दू टा किरानी रखबाक औकाति कहाँ ? फेर काजो कोन बेसी छैक ? शिकायतो कयला सँ कोनो लाभ नहि छलनि—सेक्रेटरी साहब प्रसन्न छलथिन किरानी बाबू पर।

तेसर पत्र। माने धीरेनक पत्र। मतलब हुनक जेठ बालकक पत्र। लिफाफ देखतहि नरेन बाबू बेटाक हस्तलिपि चीन्हि गेल छलाह। तैयो हुनका विश्वासे नहि भेलनि। पता देखलनि— नरेन्द्र नाथ झा, हेडमास्टर हाइस्कूल, मधुबन, जिला— दरभंगा। पठौनिहारक नाम देखलनि—धीरेन्द्रनाथ झा, रेलवे कालोनी, चिड़ैया टांड पटना। तैयो अइ तेसर पत्र कें खोलिक' पढ़बाक साहस नहि भ' रहल छलनि, जेना ओ लिफाफ कोनो अजेय दुर्ग हो, जकर भीतर हुनक पुत्रक पत्र बन्दी होनि, जकरा मुक्त करबाक हेतु अपन समस्त शक्ति लगाब' पड़तनि नरेन बाबू कें। प्रयास ओ करलनि अछि मुदा सभ व्यर्थ। कतेको बेर दृढ़ प्रतिज्ञ भ' लिफाफ हाथ मे लेलनि अछि, मुदा लिफाफ हाथ मे अबैत देरी मोनक संकल्प नहि जानि कत' टूटि जाइत छनि। कागजक देवाल पर हुनकर थरथराइत आंगुर रेंगैत छनि। कागजक ओ पातर देवाल नहि टूटैत छनि।

त' की ओ पत्र नरेन बाबू नहि पढ़लनि अछि? की ओ नहि जनैत छथि जे लिफाफक अन्धकूप मे जे स्वर बन्दी छैक से की मंगैत छनि हुनका सँ? ओ जनैत छथि, सभटा जनैत छथि। कागजक पातर देवाल पारदर्शक बनि जाइत छनि आ पत्रक एक-एक आखर स्पष्ट भ' उठैत छनि—चश्माक नीचाँ मुकायल हुनकर थाकल-हारल आँखि सँ किछु नहि बचैत छनि। सभटा देखि लैत छथि ओ। यद्यपि चश्माक लैंस कमजोर छनि। आँखिक ज्योति आर धूमिल भ' गेलनि अछि, लैंस बदल' पड़तनि। डाक्टर पछिले कहने रहथिन मुदा डाक्टरक कहला सँ की होयत? पाकिट कहनि तखन ने? डाक्टर त' आरो बहुत किछु कहैत छनि— बेसी काज नुनि करू, ब्लडप्रेसर बढ़ि जायत, चीनी जुनि खाउ, परसेन्टेज पहिने सँ बेसी अछि। इनसुलिन बन्द जुनि करू, डायबटीज अछि। डायट हेल्दी लिअ'।

नरेन बाबू किएक सुनथिन ओकर अण्ट-शण्ट गप्प? कोना मोन रहतनि ई अलाय-बलाय गप्प सभ? सोचबा सुनबा लेल आरो विषय छनि, मोन रखबा लेल आरो गप्प छनि। हुनका मोन छनि जे दरमाहा तीन सय रुपैया छनि—प्रोभिडेण्ड फंडक रुपैया काटि क'। हुनका मोन छनि जे डेढ़ सौ रुपया प्रोभिडेण्ड फंड सँ लेल गेल लोनक कटैत छनि—इन्सटालमेंट पर। हुनका इहो मोन छनि जे तीस रुपया लाइफ इन्स्योरेन्सक आ एक सय टाका धीरेन कें पठयबाक छनि। बाँचि गेलनि बीस टाका। आ हुनका इहो मोन छनि जे तीन साल सँ खेत ने बज्जर पड़ैत छैक, बेसाहिए खाइत छनि। हुनका इहो मोन छनि जे डाक्टर कहने

रहथि जे बेसी सोचब जुनि करू, मानसिक चिन्ता ब्लडप्रेसरक कारण होइत छैक। तैयो हुनका सोचबाक छनि जे बीस रुपैया मे महाजनक दस हजार कर्जक की हेतैक? मुखनक दवाइक पथ्य कोना चलतैक? धीरेन आ रमेनक हेतु मास्टर कोना रहतैक? छोटका जोतिन बड़ कमजोर भ' गेल छनि। हमेशा दुखिते रहैत छनि, ओकरो एक डाक्टर सँ देखयबाक छनि। मंझिली बेटी शीलाक बारहम छैक, एकोंका ओकरो विवाह क' करायब' पड़तनि। छोटकी बुनू सभ दिन फ्राक लेल कनैत रहैत छनि—कानो त कोना? मात्र एकटा फ्राक छैक, सेहो पुरान, फाटल आ भटरंग। फेर डाक्टरक गप्प पियंका मुकस्य? चश्माक कमजोर लैंस के बिबेक देखथु? देखबा सोचबा लेल आहिना की कम समस्या छनि। महाजनक सूद, घरक निपटल छप्पर....

आ घरक ध्यान अबितो रमाक ध्यान अबैत छनि नरेन बाबू कें। हुनकर पत्नी रमा। रमा कें देखि हुनका लगैत छनि जेना ओ कोनो मशीन छथि, जाहि मे ने कोनो संवेदना छैक, ने थकान्ति। ने विश्राम, ने उपराम। छैक खाली काज, मात्र काज। नरेन बाबू नहि जनैत छथि जे रमाक नेत्र कखन दिन उगैत छनि आ कखन राति होइत छनि। भोरे आँखि खुजला पर नरेन बाबू देखैत छथि जे आँगन बहारल छैक, तुलसीक चौरा नीपल छैक, पूजाक आसन बिछाओल छैक, सराइ मूढ़ी मांजल, आ फूल तोड़िक' राखल छैक, आ चूल्हा पजारिक', केतली मे चाहक पानि चढ़ा रमा बैसलि छथि। छात्र बजैत-बजैत सभ कें जलखइ भेटि जाइत छैक आ दस बजे सभ खा-पी क' स्कूल चलि जाइत अछि। मुदा रमाक काज दुपहरिया धरि पहुँचने कहुयो खतम नहि होइत छनि। छुट्टीक दिन मे नरेन बाबू देखैत छथिन जे एक हाथ सँ जोतिन कें सम्हारने रमा भोर सँ तीन बजे धरि भंसाघर मे व्यस्त रहैत छथि। खनाकिनी नहि छनि, ऐंठो अपने उठब' पड़ैत छनि। सभटा करैत-धरैत दू बजे फुरसति होइत छनि, त' जल्दी-जल्दी कल पर दू लोटा जल ढारि भगवतीक पूजा पर बैसि जाइत छथि। फेर जल्दी-जल्दी दू कौर मुँह मे द' रसा भरि घरक ओसारा पर पटिया बिछा ओंगरा जाइत छथि। मुदा चारि बजे चाय सभकें भेटिये जाइत छनि। एकको दिन कनेको देरी भ' जयतैक त' सुनेन आकाश माथ पर उठा लेतनि। चायक बड़ शौकीन अछि ओ। फेर साँझ सँ वैह क्रम। एक हाथ सँ जोतिन कें पकड़ने, डिबियाक धुँआयल इजोतमे रमा चूल्हाक आगू मे बैसलि रहैत छथि आ आँगन मे एसिटिलिनक कार्पेट पहाड़क बीचसँ मूड़ी उठा नरेन

बाबू कौखन बैसि लैत छथिन— "कतेक कुम्हरि भ' गेलि छथि रमा। मात्र बंकातेटा बाँचल छनि, एतेक खों-खों किएक करैत छथि? मुदा अखन ई सभ गप्प नहि। अखन ... सभ कॉपी जँचबाक छनि। नरेन बाबू होमवर्क देखैत छथि, मंथली एक्जामिनेशनक प्रश्न देखैत छथि आ सिम्बोल बेसा दैत छथिन। भोजन क' आँगन मे चौकी पर पड़ल-पड़ल हुनकर अलसायल आँखि देखि लैत छनि जे रमा अखनो धरि जागले छथि। फेर आँखि झँपि जाइत छनि। राति बितला पर कौखन नीन्न टूटि गेलाँ पर नरेन बाबू सुनैत छथि जे रमा नीन्द मे कुहरि रहल छथि। रमाक कुहरनाइ धतमुखी भऽ आँगनक कोना-कोना मे गनगनाय लगैत छनि आ फेर भरि राति नीन्न नहि होइत छनि नरेन बाबूकें, एक्को मिनटक लेल नहि।

टनटन-टनटन......

स्कूलक घंटी जोरसँ टनटना उठलैक। विचारक शृंखला टूटि गेलनि। चश्मा उतारि कुर्त्ताक छोर सँ आँखि पोछैत छथि नरेन बाबू। छेह बाजि गेलैक-छिकैक। लड़की सभक कॉमन रूम मे हुल्ला-गुल्ला शुरू भऽ जाइत छैक सभ दिन जकाँ आ अपन आदति मोताबिक किछु छौंडा सभ किरानी बाबूक टेबुलक चारूकात जुमि जाइत अछि। नरेन बाबू अपन आफिसक निरीक्षण कर' लगैत छथि। एकदम स्पेशल हुलि। एकके टा कोठली मे आलमारी आ रैक राखि क' तीन भाग कयल। पूबसँ आधा मे नरेन बाबूक आफिस छनि आ दोसर भाग के फेर आलमारी आ रैक राखि क' दू भाग मे बाँटि देल गेल छैक—उत्तरबारी भाग किरानी बाबू बैसैत छथि आ दक्षिणबारीकात मे लड़की सभक कॉमन रूम छैक। अइ तीनू कोठलीक बीच बस एक आदमीक आब' जाय जोगर रास्ता छोड़ि देल गेल छैक, आलमारी सभक बीच कनेक गैप छोड़ि क'। मुदा किरानी बाबू अइ बाटे नहि निकलि पबैत छथि। हुनकर तीनमहला पोंथि ओहि मे अकसरहाँ फँसि जाइत छनि आ फेर तीन-तीन आदमी मिलिये क' निकालि पबैत छनि हुनका। मुदा अइ व्यवस्था लेल सेक्रेटरी कें नहि कहि सकैत छथिन। मामूली बात पर कालिहुये कतेक पैघ अपमान क' देलकनि नवका सेक्रेटरी। गाम पर किछु कालक हेतु चारिटा छिट्टाक काज छलैक। स्कूल पर छिट्टा सभ बेकार पड़ल छलैक। नरेन बाबू चपड़ासी सँ कहलखिन जे किछु कालक हेतु चारिटा छिट्टा स्कूल पर सँ गाम पर द' अबही, फेर त' आनिहें। सेक्रेटरी साहेब छिट्टा नहि जाय देलथिन। कहय लगलथिन—ई त' गलत बात मास्टर साहेब। अहाँ लोकनी जँ स्कूलक चीज अपन काज मे लेबै तखनी स्कूलक काज कोना होयतइ। ई त' ठीक नै है।

नरेन बाबूक भीतर किछु खौलि उठलनि। देहक समटा शोणित चेहरा पर आबि रुकि गेलनि। आब अइ सेक्रेटरी कें की की बाजथु? जो नीक जकाँ जनैत छथि जे मैनेजिंग कमिटीक जानकार लोकनि ई क्लास पढ़ल योग्य सेक्रेटरी कें अही निमित्त हुनका माथ पर बैसा देलथिन अछि जे ओ बात-बात पर हुनकर अपमान क' सकथि। नहि जानि कोन-कोन पापड़ बेलि थोड़ेक रुपैया कमेलक आ आइ टोनर बनल फिरैत अछि। अपने त' नरेन बाबूक लाख विरोध करलोपर स्कूलक पाँच हजार रुपया छुट्टी मे अपना हाथ राखि लेलकथि। कहलकनि-छुट्टी मे स्कूलक मकान बनतै। मकान त' नहि बनलै मुदा सेक्रेटरी साहेबक बेटीक विवाह भ' गेलनि। स्कूलक रेडियो दरबज्जा पर बजैत रहलैक आ स्कूलक कुर्सी पर टाँग पसारि बरियाती सभ सिगरेटक धुँआ उड़बैत रहलाह। से सेक्रेटरी चारि टा मामूली छिट्टा लेल हुनकर अपमान क' देलकनि। गलत-सही सिखब' लगलथि। नरेन बाबूक मुँह मे एकटा मुँहतोड़ जवाब आबि क' रहि गेलनि। मात्र एतबे कहलखिन—"अहाँ ठीक कहै छी सेक्रेटरी साहब। स्कूलक चीज हमरा सभ अपन काज में लगाबी से त' ठीक बात किन्नहु नहि।" आ अखन टीचर्स रूम मे बैसल सेक्रेटरी साहब चाहक स्वाद लैत प्रवचन दैत हेताह "हम त' अहाँ आरक सेवक हुवी, अहाँ आर के वेतन वखत पर मिले, स्कूल मे पढ़ाइ नीमन से हो, स्कूल के तरक्की हो, येहे त' हम चाहैत हुवी।" सभ मास्टर हँ मे हँ मिला रहल हेथिन दरबारी जकाँ आ सेक्रेटरी साहब अपन कान्ह पर पड़ल जोलहा गमछा कें बेर-बेर सबं सँ झटकारि रहल हेताह।

स्कूलक तरक्कीक हेतु सेक्रेटरी साहेब वस्तुतः बड़ मेहनति करलथि अछि। इ क्लास पढ़ल ई शिक्षित सेक्रेटरी क्लास-क्लास मे घूमि क' पूछैत छथिन जे फलाँ मास्टर की सभ पढ़ौलकथि आ केहन पढ़ौलनि? यदि लड़का सभ कहलकनि जे ठीक पढ़ौलनि तखन, त' जान बचलनि मुदा यदि कहलकनि जे नीक नहि पढ़ौलनि त' फेर ओइ मास्टरक हालत खराब। झट बर्खास्त करबाक प्रस्ताव। शीतल बाबूक मामला मे त' हुनकार मोस्तैदी देखबा जोगर छलनि। कोनो नयकोल विद्यार्थी कहि देलकनि सेक्रेटरी साहेब कें जे शीतल बाबू ज्योग्राफी ठीक स' नहि पढ़बैत छथि, आ सेक्रेटरी साहेब भीड़ि गेलाह हुनका डिसमिस करबा पर। शीतल बाबू असिस्टेंट हेडमास्टर छथि। बेचारे बीस वर्ष धरि बाहर हेडमास्टरी करलनि, फेर गामक स्कूल जानि असिस्टेंट हेडमास्टर भ' कय

पाबलाह। चालीस वर्षक शिक्षक जीवन मे कखनो कोनो शिकायति नहि भेलनि। सभ हुनकर पढ़ाइक प्रशंसक रहलनि, मुदा आइ कोनो भूतपोल विद्यार्थी जे भरिसके कोनो विषय मे पास हो, कहि देलकनि जे हुनका पढ़ब' नहि अबैत छनि, त' दूध महक माछी भ' गेलाह। शिक्षकक पढ़ाइक निर्णायक एकटा फाजिल विद्यार्थी सँ बढ़ियाँ आर भैये के सकैत अछि? नरेन बाबू आइ गेलाह—धीरेन बाबू के विशेष नहि होब' देलथिन। ओ जनैत छथि जे सेक्रेटरी साहेब कें मोन मे की छनि। मुदा ई त' अन्याय थीक, पक्षपात थीक।

"वाह, मालिक!"

चिट्ठी क' मुट्ठी उठौलनि नरेन बाबू। लखना चाह लेने ठाढ़ छलनि। चाहक चुस्की लैत हेरी मोन मे नव स्फूर्ति भरि गेलनि। किछु हो, लखना चाह बड़ सुन्दर बनबैत अछि—लिकर स्ट्रोंग, मोल्फुलम हाई, स्वाद विलक्षण। नरेन बाबू जल्दी-जल्दी चुस्की लेब' लगलाह। झट कप खाली भ' गेलनि। सहसा नरेन बाबू कें लगलनि जे हुनको जीवन ओही प्याली सन छनि। क्षण भरि पहिने एहि प्याली मे सभ किछु छलैक, उष्णता आ उफान। आब किछु नहि छैक, खाली पड़ल अछि—पूर्णतः रिक्त। तहिना नरेन बाबूक जीवन मे काल्हि सभ किछु छलनि, आइ किछु नहि छनि—बिलकुल खाली प्याली जकाँ। काल्हि आ आइ मे कतेक अन्तर छैक!

सत्ते, काल्हि आ आइ मे बड़ अन्तर छैक। लगैत छैक जेना काल्हि आ आइक अन्तराल सय बरखक होइ, हजार बरखक होइ, तेहेन पैघ शून्य होइ दुनूक बीच जकरा कहुना पाटल नहि जा सकय। अखन तीनिये बरख त' भेलैक अछि आ तीनिये बरखमे सभ किछु बदलि गेलैक। धरती बदलि गेलैक, आकाश बदलि गेलैक। तीन बरख पहिने नरेन बाबूक जीवनमे सभ किछु छलनि—उमंग, आशा आ रंगबिरंगी स्वप्न। आ ओ स्वप्न निराधार त' नहि सजौने छलाह नरेन बाबू? धीरेन छले तेहन जे ओकरा पर आस लगाओल जाय, स्वप्न सजाओल जाय। अपरके स्कालरशिप परीक्षा मे जिला मे प्रथम आयल छल। फेर अपने स्कूल मे नाम लिखा देलथिन नरेन बाबू छठमा क्लास मे। मुदा नरेन बाबू बेसी दिन नहि राखि सकलथिन ओकरा अइ स्कूल मे। धीरेन मे एकटा बड़ खराब आदति छैक। ओकरा गलत बात सहले नहि जाइ छैक। मन्नू बाबू 'अवसर' माने तैयारी आ 'कारण' माने उपर पढ़ौलथिन आ धीरेन भीड़ि गेलनि हुनका सँ। नरेन बाबू धर्मसंकट मे

पड़लाह। धीरेन के दण्ड दितथिन त' ओकर स्वाभिमान कें चोट लगितैक आ यदि छोड़ि दितथिन त' लोक कहितनि—अपन बेटा छलनि, तें छोड़ि देलथिन। लोक निन्दा सँ डर' पड़लनि। धीरेन कें दण्ड देलथिन। बेंत सँ पिटलथिन ओकरा—जिनगी मे पहिल आ अन्तिम बेर। आ तहिया सँ हुनकर जीवन एकटा नव मोड़ लेलकनि। धीरेन जिद पर अड़ि गेल—"हम नहि पढ़ब एहि स्कूल मे जत' हमरा खाली एहि बास्ते पीटल गेल जे हम हेडमास्टरक बेटा छी।" सभ बुझा क' हारि गेल मुदा धीरेन टस सँ मस नहि भेल। लाचार नरेन बाबू लहेरियासरायक एकटा नीक स्कूल मे नाम लिखा देलथिन। बंगाली टोला मे अपन डेरा छलैक, उपर सँ पचास टाका नगदो देब' लगलथिन।

धीरेनक माँग बढ़िते गेलैक, बढ़िते गेलैक, अस्सी—सय-सबा सय-डेढ़-सय। आ ओही अनुपात मे तरह-तरहक गप्पो उड़' लगलैक—धीरेन त' किताब छुबितो नहि छैक—राति-राति भरि निपत्ता रहैत छैक—खाली सिनेमाक चक्कर लगबै छैक। आर त' आर, छौंड़ी सभक चस्का सेहो लागि गेलैक अछि। दिन-राति बंगाली छौंड़ी सभक पाछाँ बौआयल फिरैत छैक। सुनबैत अछि जे पानि जकाँ पैसा बहबै छैक ओकरा सभ पर। नरेन बाबू सभ अकठबैत गेलाह। एक कान सँ सुनि दोसर कान सँ बहार करैत रहलाह। हुनका विश्वास छलनि अपन रक्त पर। धीरेन हुनकर विश्वास कें धोखा नै देलकनि। फर्स्ट डिवीजन सँ मैट्रिक पास कयलक, नीक नम्बरक संग। नरेन बाबूक मोन नाच' लगलनि, सपना सत्य होइत लगलनि। रुपैया बेसी खर्च भेलनि त' भेलनि, रुपैया त' हाथक मैल छैक। धीरेन बायलोजी ल' क' पटना साइन्स कालेज मे प्रवेश कयलक।

फेर समय उनटि-पुनटि गेलैक। डायबेटीज आ ब्लडप्रेशर तेना ने पकड़लकनि जे छः मास बिछौने सँ नहि उठि सकलाह। सभटा जमा पूँजी खतम भ' गेलनि। उपर सँ कर्जा। तखन जीवनक सभसँ पैघ आघात। धीरेन आइ० एस० सीक परीक्षा छोड़ि देलकनि, साइन्स नहि पढ़त। नरेन बाबूक स्वप्न टूटि गेलनि। बेटा कें डाक्टर बनयबाक सपना। कर्जक बोझ उपर सँ लदैत गेलनि। बड़की बेटी सीताक विवाह आ द्विरागमन—कर्ज पाँच हजार रुपया। सुरेनक उपनयन—कर्ज दू हजार रुपया। मायक श्राद्ध—कर्ज पाँच हजार रुपया। कर्जक दलदल मे फँसि नरेन बाबू दुइये बरख मे बूढ़ भ' गेलाह—चेहरा पर झुर्री लटकि गेलनि।

माथ्य आस लगा लगा तोकैत रहलनि, उठा-उठा पटकैत रहलनि। आशाक क्षीण किरण—धीरेन आइ० ए० कयलकनि, फार्स्ट डिवीजन भेटलैक। औनर्स ल' बी० ए० मे एडमिशन लेलक। कर्जक बोझ सँ दबल नरेन बाबूक जिनगी घिसियाइत रहलनि—बस एक आस पर। धीरेन आइ० ए० एस० कम्पीट करत। मुदा धीरेन बेइमान बहार भेलनि। ठीक परीक्षे बेरमे दुःखित पड़ि गेलनि। नरेन बाबू ई धक्का नहि सहि सकलाह। मोन टूटि गेलनि। आब···आब···

आ छुट्टी बिता पटना जाइत काल धीरेन कहने छलथि—हम अनेत छी बाबूजी, हमरे कारण ई घर उजड़ि गेल। अहाँक जिनगी फोंक भ' गेल, मायक देह गलि गेलैक। हम अनेत छी, हम अपन माइ-बहीनिक दुश्मन छी। हमरे कारण ओकर सभक समुचित भरण-पोषण नहि भ' रहल छैक। ने अपेक्षित अन्न वस्त्र भेटैत छैक, ने उचित शिक्षा। मुदा आब अहाँ चिन्ता नहि करू। हमरा जेना हैत, अपन व्यवस्था स्वयं करब। अहाँ सुनेन आ धीरेनकेँ देखियौक, माय केँ देखियौक, अपन इन्तजाम हम क' लेब, जेना हैत।

आ महीना बितलैक नहि कि धीरेनक पत्र टेबुल पर पड़ल छनि। नरेन बाबू जनैत छथि जे धीरेन की लिखने हेतनि। एक बेटा एक बाप सँ दाम मँगने हेतैक ओहि रंग-बिरंगी स्वप्नक, जे बाप ओकरा आगाँ देखने छलैक। एक बेटा एक बाप सँ मूल्य मँगने हेतैक ओहि आसक, ओहि उम्मीदक, जे बाप, बेटा पर लगौने छलैक आ जकर एक-एक किस्त ओ बाइस साल सँ चुकबैत रहल अछि—भरि छाति क'। मुदा आब छाती मे दम नहि रहलनि। आब......

टन···टनटन···टनटन।

घंटी फेर टुनटुना उठलैक। नरेन बाबू सिलमिलायल आँखिये देबाल पर टाँगल चार्ट दिस तकलनि—फाइव पिरियड, क्लास टेंथ, एलीमेन्ट्री फिजिओलोजी आ हाइजीन। चौक आ डस्टर ल' ठाढ़ भेलाह। तखने लिफाफ पर दृष्टि गेलनि। एक क्षण देखैत रहलाह। फेर लिफाफा उठा क' पाकिटमे रखैत सोचलनि—अइ पीरियडक बाद अवस्से पढ़ि लेबैक।

एक झुण्ड छौंड़ा सभ हल्ला मचबैत बरण्डा पर दौड़ि गेल। ●

अक्टूबर १९६२

टूटल कलम : लभरल आखर

आइ अहाँक कथा अवस्से लिखि दितहुँ ममता। विश्वास करू, आइ संकल्पपूर्वक अहीक कथा लिख' बैसल रही। मुदा एकटा अपरिचित स्त्री बीच मे टपकि बाधा ठाढ़ क' देलक। विश्वास करू ममता, ओ स्त्री एकदम अपरिचित छलि। कमसँ कम आइ सँ पहिने ओकरा कहिओ देखने नहि छलिऐक। प्राय देखियो क' अनठा देने छलिऐक।

अहाँ कहब, ई एकटा बहाना थिक— गढ़ल गप्प। हमर कथा नहि लिख' चाहैत छी, नहि लिखू। अइ मिथ्या बहानाक कोन काज ? एकटा अपरिचित स्त्री हमर कथा लिखब निषेध क' देलक आ अहाँ झट द' मानि गेलिऐक ! बहुत खूब ! देखैत छी, ओकर बड़ जोर छैक अहाँ पर !

अहाँकेँ पतिआइ नहि लागय त' हम कहि दी ममता जे ओकर सत्ते बड़ जोर छक ! अधिकारपूर्वक कहि गेल, "आइ अहाँ ममताक कथा नहि लिखि सकैत छी ! लिखबाक अछि त' हमर कथा लिखू।" हम ओकर आदेश टारि नहि सकलिऐक ममता।

किछुये काल पहिने आयलि छलि। बाहर प्राणहीन नीरवता छलैक। उदास राति अन्हरियाक आलिंगन मे बेसुध पड़ल छल। दिन भरिक थकनीक बाद हवा मे एकटा चुप्पी छलैक—आपरेशनक पूर्व रोगीक विकल चुप्पी सन ! एहन उदास आ सुन्न राति मे अहाँ मोन पड़ि जाइत छी आ घुप्प-कटाह अन्हरिया अहाँक स्मृतिक किरण सँ जगमगा क' उज्ज्वल, प्रोज्ज्वल आ भावुक बनि जाइत अछि।

आइयो अन्हरिया रातिकेँ अहाँक स्मृतिक रोशनीसँ उद्भासित कयने बैसल छलहुँ कि बाजल देल वचन मोन पड़ल। अहाँक कथा लिखबाक वचन। झट कागज कागज कलम ल' बैसि गेलहुँ।

तखने ओ अपरिचित स्त्री टपकि पड़लि। हम ओकर बात पर्यन्त सुनबा लेल तैयार नहि छलिऐक। तामसे मिजाज घोर भ' गेल छल।

हमर मनिच्छाक उपरान्तो ओ अपन कथा कहैत गेलि । हम मिथ्या नहि बाजब ममता, ओकर कथा सुनि अहाँक कथा लिखबाक संकल्प कखन बिसरि गेल से अपनो पता नहि लागल । ओर नहियो दैत, तैयो ओकरे कथा पहिने लिखि-तिर्दैक । ओकर कथा मे किछु तेहने अमरि छलैक ।

नहि ममता, ओइ स्त्रीक सम्बन्ध मे अहाँ अलट-बिलट नहि सोचि सकैत छी । ओकरासँ ईर्ष्याक क' अहाँ बादमे पछतायब, अहाँक माथ लाजे झुकि जायत । नहि जानि, अहाँ लोकनि एतेक सहजे किऐक होइत छी, अपन प्रेम तक पर विश्वास नहि क' सकैत छी ।

नहि क' सकैत छी त' सुनि लय । मुदा हमर अनुरोध अछि जे ओइ स्त्रीक प्रति अपन मोन मे कोनो दुर्भावना नहि लाउ । बहुत छोट भ' जायब अहाँ ।

आ अहाँ ककरो समक्ष छोट बनी, ई हम बर्दास्त नहि क' सकैत छी, सोचियो नहि सकैत छी । अहाँ बहुत ऊँच छी—हमर भावनोसँ ऊँच ! दृष्टिक सामर्थ्योसँ ऊँच । हम अहाँक प्रेम पौलहुँ अछि, तकर स्मरणमात्रसँ गर्वित भ' उठैत छी हम ! तेँ हमर अनुरोध अछि जे सभ किछु सुनबासँ पूर्व किछु अलट-बिलट सोचि हमर विश्वास, हमर प्रेमकेँ अपमानित नहि करू ।

आइ अहाँक गप्प सभ बेर-बेर मोन पड़ि रहल अछि—एक-एक क' कतेको गप्प ! अहाँक ओ गप्प सभ जे आइ सुन्न जिनगीक एकमात्र पूँजी अछि, जकरा बेर-बेर गनि क', दोहरा क' सन्तोष नहि होइत अछि जेना कोनो कंजूस अपन जमा पूँजी बेर-बेर गनियो क' नहि सकैत अछि । प्रायः ओकरा आशा रहैत छैक जे बेर-बेर गनलासँ, भ' सकैत अछि, जे जमा मे किछु वृद्धि भ' जाय ।

हम लिखैत छलहुँ आ अहाँ चुपचाप बैसलि देखैत रहैत छलहुँ । कौखन लिखल अंश उठा क' पढ़' लगैत छलहुँ । एक दिन नहि जानि की फुरल जे अहाँ हमरा हाथसँ कलम छीनि ओकरा नीक जकाँ देखैत कह' लगलहुँ—"जनैत छी प्रभास । प्रत्येक स्त्री एकटा कलम होइत अछि । रोशनाइ नहि रहए, कलम बेकार आ अकार्यक भ' जाइत अछि । तहिना स्त्रीक जीवन निरर्थक भ जाइत छैक, जखन ओकर जीवनमे ककरो उदार प्रेमक अजस्र स्रोत नहि रहैत छैक ।" अहाँक कथनक गूढ़ अर्थ बहुत बादमे स्पष्ट भेल छल ।

हमर एकटा बड़ खराब आदति छल । हम रोशनाइ घर पर रखबाक आ अपनेसँ कलम भरबाक झंझटिसँ बचैत रही । रोशनाइ घटि जाय त' कोनो परिचित दोकान पर सेम्पुलक शीशीसँ भरना लौं वा कोनो दोस्तक घर जा' कलम थमा दियैक जे रोशनाइ भरि दे । अहाँ जनैत छी, हम कंजूसीक दृष्टियेँ ई हरगिज नहि करैत छलहुँ, हमर अभ्यासे बिगड़ल छल ।

एक दिन अहाँ पारकर निबक बड़का शीशी लेने अयलहुँ आ टेबुल पर राखि कह' लगलहुँ—"आइसँ अइ रोशनाइक सिवा दोसर कोनो रोशनाइ अपन कलममे भरी त' रोशनाइ नहि, हमर शोणित भरी । जखन जे भेटि जाइत अछि, ढारि दैत छियैक ! निर्दयी ! अहाँ कलमक व्यथा कियैक नहि बुझैत छियैक । कनेक ध्यान दियौक जे बेर-बेर रोशनाइ बदललासँ एकर आखर केहन भदरंग भ' गेलैक अछि । एतेक अत्याचार कयला पर आर कतेक दिन लिखि सकत एकरासँ ।"

हम अहाँक बात मानि लेलहुँ ममता । आइ धरि मानैत आबि रहल छी । मुदा कौखन सोचैत छी जे हमर पुरना अभ्यास कतेक सुन्दर छल । सुन्दर अइ लेल जे हमर बेढ़ अभ्यास अहाँकेँ हमरा निकट आनि देलक । मोन आछि जे राति अहिबा पहिल बेर बेराइत-बेराइत अहाँसँ किछु माँगने रही ।

राति भात दिन बेग उठौने छल । तैयो अन्हार ततेक गाढ़ रहैक जेना घोरल कारी कमोट । मोन करय त' मुट्ठीमे उठा परसि जाइ । अहाँ अपन कोठलीमे परीक्षाक तैयारीमे जागल रही । हमर आ अहाँक कोठलीक बीचक सड़क पर म्युनिसपैल्टीक लाइट ओइ दिन रातिमे बेसी मिझा गेल रहैक आ सड़क पर गरदनि उठौने ठाढ़ बिजलीक उजरा खम्भा अन्हारमे तेहन लागय जेना कारी कगार पर उजरा चाननक लम्बा ठोप ।

अहाँक कंजूस मामा बिजलीक आदत नहि कैने छल । अहाँ लैम्पक रोशनीमे टेबुल पर झुकलि किछु पढ़ि रहल छलहुँ । पीअर रोशनीक सचमौन ओहि खिड़कीसँ बाहर गमरि दूर तक पसरल अन्हारकेँ छुबि रहल छलैक । अहाँक पाकल बलमापन आकृतिकेँ देखि भ्रम होइत छल जे लैम्पक रोशनी गाढ़ी आकृतिमे टेबुल पर झुकल बैसल अछि ।

हम असमंजसमे पड़ल रही ! कतेको बेर सोचलहुँ जे अहाँक निकटी लग जा माँगि ली ! मुदा प्रत्येक बेर कोनो अज्ञात भय आ संकोचसँ उठल डेग जमीनमे गड़ि जाय ।

एकटा अपूर्ण कथा पूरा करबाक छल ! बीचहिमे रोशनाइ घटि गेल छल । बड़ मस्किलमे पड़ल रही । ओहेक राति क' ककरो उठा क' रोशनाइ मँगबाक अर्थ छल मारि आपकेँ नीन्द देब आ बिना कथा सम्पूर्ण कयने सुतबाक चेष्टा करबाक अर्थ छल 'बिना परीक्षामे सम्मिलित भेने अखबारमे प्रकाशित परीक्षाफलमे अपन नाम ताकब ।

खाली अहीँटा अपन कोठलीमे आगलि परीक्षाक तैयारीमे व्यस्त रही । कतेको बेर सोचलहुँ जे हुनकेँ सँ, अहीँसँ माँगि लैत छी । मुदा साहस जबाब द' जाय !

तखन अइ कोठलीमे अयला मात्र दुइये मास भेल छल ! दू मासमे ककरो सम्बन्धमे जतेक जानल जा सकैत छैक, ओइसँ बहुत अधिक हम अहाँक विषयमे जानि गेल छलहुँ । तकर ई अर्थ कथमपि नहि जे हम नारीक सम्बन्धमे विशेष जिज्ञासु छी । अहाँ नीक लगैत छी । अहाँ छलहुँ तेँ हुनके जकर विषयमे उत्सुकता हो; किछु जनबाक इच्छा जागय ।

गृहपति प्रशान्त मुखर्जीक भगिनी ! नाम ममता चटर्जी । म-म ता तीन अक्षर, एक मात्रा । चटर्जी— उच्चकुलशीलक द्योतक । बी० ए०क छात्रा । रंग खूब साफ नहि मुदा ओइमे एकटा तेहन चमक जेहन स्वच्छ शीशाक आकाशक होइत छैक । चेहराक पानि ततेक तेज जेना पानि भरल मेघ आब बरसल, आब बरसल । आँखि तेहन जे दुबला पर पतो नहि लागय आ नारीत्व ततेक जे ककरो नजरि पड़ैक सेहु बन्हा जाय ।

बहुतोक मुँहसँ सुनि क' सुनने रही जे अहाँक बाप कलकत्तामे डेढ़ सौ रुपया महीना पबैत छथि आ अहाँक मात्र प्रत्येक साल परिवारमे एक आदमीक खर्चा बढ़ा दैत छथि । बहिन-बहिनोइक सहायता करबाक प्रबल इच्छा आ अहाँक पढ़ाइक वास्ते अहाँक मामा अहाँकेँ अपना लग राखि लेने छल ।

मामा, ओ अहाँकेँ बड़ मानैत छल । अहाँक सुविधाक ओकरा बड़ ध्यान रहैक । भोरे अन्हारे उठि जखन अहाँ ओकर स्थूलकाय पत्नी आ आधा दर्जन धीयापुताक हेतु नौ बजेसँ पहिने जलखइ आ भोजन दुनूक व्यवस्था क' दियैक, साढ़े नौ बजे कालेजक बस पकड़बाक छुट्टी अहाँकेँ अवस्से द' दैत छल । जाधरि अहाँ कालेजसँ नहि घुरियैक, ओकर समस्त परिवार अहाँक प्रतीक्षा करय । बस कहियो

अबेर सँ पहुँचैक त' अहाँकि मामी आ देरासँ बेर-बेर टोका दिय ताकय । अहाँकेँ देखैत देरी ममक चेहरा पर अपूर्व सन्तोष आ निश्चिन्तताक भाव पसरि जाइ । कॉपी-किताब-राखि अहाँ तुरन्त भनसा घरमे जुटि जाइ । मुदा दश बजेत-बजेत अहाँक दयालु मामा अवस्से फुरसति द' दियय । सभ खा-पी क' चैन भ' जाय । अहाँकेँ भोरमे समय कम भेटय, तेँ ठेंठ बरतन बासन रातियेमे माजि ली । तखन अहाँ किताब ल' परीक्षाक तैयारीमे बैसि जाइ । कोखन-कोखन भोरुकवा उगि जाय मुदा अहाँ बैसले रहि जाइ । थाकल, कलान्त मुदा दृढ़ संकल्प । हम सोचि सोचिक' आश्चर्यचकित रहि जाइ जे अहाँ सुतैत कखन रही, विश्राम कखन करैत रही । जतेक अहाँक बारेमे सुनने रही, जानि गेने रही, ओतबे अहाँ पर श्रद्धा भ' गेल छल ।

तैयो ओतेक राति क' अहाँसँ रोशनाइ मंगबाक साहस नहि होइत छल । अपन बिगड़ल अभ्यास पर तामस भेल मुदा ताहिसँ कोनो काज कहाँ बनल ? विवशता हमरा अहाँक खिड़की लग ठाढ़ क' देलक । "सुनू ।" हम दकि दकि क' बाजल रही । अहाँ चिहुँकि क' मूड़ी उठौलहुँ । किछु क्षण चकित भेल तकैत रहलहुँ आ फेर उठि क' खिड़कीक समीप अयलहुँ ।

"एक पेन रोशनाइ द' सकब अहाँ ?" हम अपन बात डेराइत-डेराइत कहलहुँ । हमरा हाथसँ कलम ल' क' रोशनाइ भरि देलहुँ अहाँ ! कलम वापस लैत काल हम औपचारिकता निबाहि करैत बजलहुँ—"धन्यवाद ।"

अहाँ किछु नहि बजलहुँ । मुदा घुरैत काल आँखि दोसर तरफ रहलो पर हमरा लागल जे खिड़की पर ठाढ़ि अहाँ हमरे दिस ताकि रहल छी । भरिसक हमर भ्रम रहल हो । आइ धरि ई बात हम अहाँसँ पुछियो नहि सकलहुँ अछि ।

तहियासँ जखन रोशनाइ सठि जाय, हम अहाँक खिड़की लग आ कलम थमा दी । अहाँ कहियो किछु नहि बाजी । चुपचाप कलम भरि क' घुरा दी ।

एक दिन अहाँ बड़ कटाह गप्प बाजि उठलहुँ । कलम भरि क' दैत कहलहुँ —"आब इ बहाना बड़ पुरान भ' गेल । कोनो नव ताकि लिय' ।"

अहाँक बात पर तिलमिला उठल छलहुँ हम । अहाँ हमर नीयति पर सन्देह करैत छी, से जनितहि मोनक समस्त संचित श्रद्धा नहि जानि कत' लुप्त भ' गेल । मोनमे एकटा तीक्ष्ण कटुता भरि गेल—"अपनाकेँ की बुझैत छी ?"

अहाँक कोठली दिस खुजयवला खिड़की हम बन्द क' देलियैक जाहिसँ अहाँ पर नजरि नहि पड़य। मुदा दिमागसँ अहाँक ध्यान नहि हटि सकल। पछुआ कोठलीमे अहींक बात सोचैत रही।

तखन एक राति अप्रत्याशित घटना घटल। हम लाइट मिझा क' अन्हारमे पड़ल रही। नींद हमरासँ किछु रुसि जकाँ गेल रहय। अन्हारमे घण्टो बिछौन पर पड़ल रही मुदा आँखि नहि लागय। जेना पपनीमे किछु अटकि गेल रहय जे ओकरा खस' नहि दैक।

अन्हारमे पड़ल हम नहि जानि की सोचैत रही कि एक व' कोठलीक लाइट जरि उठल। अकचका क' उठलहुँ। जे किछु देखलहुँ ताहि पर विश्वास नहि भेल। कोठलीक बीचोबीच अहाँ ठाढ़ि रही।

अहाँक बात सुनि देहमे आगि लागि गेल छल। व्यंग्य करैत अहाँ बाजलि रही—"एना खिड़की बन्द क' घरमे नुकयलासँ मोनक चोर नहि नुका सकत। अहाँ व्यर्थ अपना पर अन्याय क' रहल छी।"

ओहि समस्त ज्ञान आ विवेक लुप्त भ' गेल छल। पागल जकाँ चिचिया उठल रही—"हम अहाँ लेल मरि रहल छी, एकाएक एतेक पैघ भ्रम अहाँकेँ कोना भ' गेल? की बुझैत छी अपना केँ अहाँ?"

हमर उत्तेजना देखि अहाँ सकपका गेल रही। किछु क्षण स्तब्ध ठाढ़ि रहलाक बाद शान्त मुदा भर्त्सनाक स्वरमे कहने रही—"एतेक पैघ भ्रम हमरा कहियो नहि भेल अछि। एतेक राति क' हम अहाँक कोठलीमे एकसरि आयलि छी। एना चिचिया' अहाँ मोहल्लावला सभकेँ जगाक' देखब' चाहैत छिऐक जे ई चरित्रहीन स्त्री राति क' एकसरि अहाँसँ प्रेमक भीख माँग' आयलि अछि।"

हम लाजे गड़ि गेल रही। किछु क्षण कोठलीमे मौन रहल। हम नहि सोचि सकलहुँ जे की बाजी। अहूँ प्रायः अहाँ सिसकिते रही। अहाँ जयबाक हेतु दरबज्जा दिस बढ़लहुँ। तैयो हमर बकार नहि फुटल।

दरबज्जा लग आबि बिना हमरा दिस ताकने अहाँ बाजलि रही—"ओहि दिन हम जे हँसीक' देलहुँ, से एतेक दूर गेल अहाँकेँ। मुदा आइ, रातिक' एकसरि हम कोन विश्वास पर अहाँक कोठलीमे आयलि छी, से अहाँकेँ नहि बुझैत अछि। अहाँ आन्हर छी।

अन्हार फाटि गेल आ हम दौड़ि' अहाँक बाट छेकि लेने रही—"नहि आइ ममता। स्वीकार करैत छी, हम अपन मोनसँ लड़ि रहल छलहुँ।"

अहाँक संग-संग दुनियाक समटा खुशी आ समटा सुन्दरता हमर कोठलीमे घुरि आयल छल। आयल जेना हमरा लोकनि बहुत दिन सँ अपना केँ नुकौने रही आ आब एकटा प्रकट भ' गेलापर एकदम खुजि गेल रही। कतहु कोनो संशय नहि, कोनो पार्थक्य नहि। ततेक निकटता जे कोनो दूरी नहि, ततेक विश्वास जे किछुओ अदेय नहि।

हम लिखैत छलहुँ, अहाँ चुपचाप बैसलि देखैत छलहुँ। लिखल अंश पढ़ैत छलहुँ, अपन पसिन्द आ आलोचना सुनबैत छलहुँ। कखनो जबर्दस्ती अपन पसिन्दक कोनो चीज लिखा लैत छलहुँ।

हम थाकि क' बिछौनपर पड़ि रही आ अहाँ झुकि क' हमर केशमे आँगुर फेरैत, हमर माथ, मुँह आ सम्पूर्ण देह पर स्नेह भीजल हाथ फेरैत फुसफुसाक' गप्प करैत जाइ। बहुत रास गप्प—अप्पन गप्प, अप्पन लोकक गप्प, दुनियाक गप्प, दुनियाक लोक गप्प। ओहि दिन हमरा ई डर नहि भेल जे हमर एतेक सुख संसारकेँ देखल नहि जयतैक!

अहाँ बी० ए० कयलहुँ। हम बधाइ देलहुँ, मधुर बँटलहुँ। मुदा हमर ई सुख स्थायी नहि भ' सकल। एक राति अहाँ अयलहुँ त' हमरा जीयब कठिन भ' गेल। चौबीस घण्टामे लाल गुलाब पीअर कनैल बनि गेल छल।

अहाँ विदा माँग' आयल रही! भोरे अहाँकेँ कलकत्ता जयबाक छल। ओत' अहाँक विवाह ठीक भ' गेल छल। हम बहुत किछु कह' चाहैत रही, मुदा अहाँ नहि कह' देलहुँ। अपनो किछु नहि बजलहुँ। चुपचाप कोठलीमे बैसलि रही बड़ी काल धरि। जाइत काल कहने रही—"कलम मूक होइत अछि प्रभास। ओ अपन पसिन्दक अभिव्यक्ति नहि क' सकैत अछि। संसार जबर्दस्ती ओहिमे अनिच्छित रोशनाइ भरि देलकैक अछि। ओकर आखर भदरंग भ' जयतैक। किन्तु त' आ अतीत अवशेष नहि मेटा सकत।

अहाँक अनुपस्थितिमे सभ किछु कठाह आ असह्य बनि गेल छल। राति अन्हारमे सिसकैत रहय आ दिन इजोतमे औनाइत। हम सप्ताह दशो राति बितला पर अन्हारमे आँखि फाड़ि-फाड़ि क' अहाँक कोठली दिस ताकल करी। बादमे अहाँक मामा किरायादार राखि लेने छल।

दू वर्षक सुदीर्घ अवधिक उपरान्त एक दिन कलकत्ता मे अहाँ सँ भेट भेल छल । एकटा किताबक प्रकाशनक सम्बन्धमे कलकत्ता गेल रही । अहाँकेँ देखिक' हमरा चिन्हबामे भ्रम होम' लागल छल ! भरिसके कोनो पूर्व परिचित अहाँकेँ आइ क्यो चीन्हि सकैत । दुइये वर्षमे अहाँ कतेक बदलि गेल रही ।

अहाँ आफिस सँ डेरा आएल रही । अहाँ नौकरी करैत छी, पति नहि, माय बापक संग रहैत छी, से जानि बड़ आश्चर्य एवं उत्सुकता भेल छल । अहाँ टारि देने रही — "सभ क्यो त' अहीं सन नहि अछि प्रभास, जे पुरने कलम घसैत रहय । पसिन्द बदल'मे कतेक समय लगैत छैक । नव माडेल भेटि गेल, पुरानकेँ फेकि देलहुँ वा बेचि देलहुँ — इएह त' संसारक नियम छैक ।"

अहाँ आग्रह नहि कयने रही, तैयो हम अहाँक घर तक गेल रही । दू कोठलीक ओ मकान अहाँक भाइ बहीनिक गदंग—शोल सँ कोनो चिड़ियाघर जकाँ लगैत छल । अहाँक बाप खाली चौकी पर बैसल बीड़ी पीबि रहल छलाह वा अहाँक माय परिवारक संख्या वृद्धिक एकटा नव इश्तहार बाँटि रहल छलीह ।

अहाँ सभ सँ परिचय करौलहुँ । माय-बाप, गुली, बुली, खोखन, तपन...... अहाँक बाप-माय दू चारिटा औपचारिक प्रश्नो पुछलनि मुदा हुनका लोकनिक शंकाग्रस्त दृष्टि हमरा सँ नुकायल नहि रहल । अहाँक माय-बापकेँ डर छलनि जे हम कतहु अहाँकेँ ल' ने उड़ी । (छलनि की नहि ?)

हम जल्दिये अगुता गेल रही । साँस औनाय लागल छल । प्रायः अहाँ अहीं लेल चलबाक आग्रह नहि कयने रही ।

अहाँ विदा कर' किछु दूर तक आयलि रही । बाट मे हम अपन प्रस्ताव रखलहुँ । अहाँ जेना पुचकारि देलहुँ हमरा जेना हम कोनो अबोध शिशु होइ । हमर हाथ अपन मुट्ठी मे दबा कहने रही—"नहि प्रभास ! आब ई सम्भव नहि । कलम बेकार भ' चुकल अछि । आब अहाँ ओकर इच्छित रोशनाइयो पहतैक, तैयो सुन्दर आखर नहि बनि सकतैक आ अहाँक आँगुर कबकल रोशनाइक दाग सँ भरि जायत ।"

ओहि दिन हम घुरि अयलहुँ । विदा होइत काल अहाँ कहने रही— "हमर कथा अवश्य लिखब, प्रभास ! खाली नाम बदलि देबैक । नहि हो, सत्ते लिखि देबैक ।" हम वचन देने रही ।

आ आइ एतेक दिनक बाद अपन देल वचन पूरा कर' लगलहुँ, त' एकटा अपरिचित स्त्री बीचमे टपकि पड़लि । ऊपर सँ तमाशा ई जे हम ओकरा पर रुष्टो नहि भ' सकैत छिऐक ।

अहाँ जनैत छी, ओ जनैत जेरी की कहलक ? कह' लागलि—"अहाँ ममताक कथा लिखि रहल छी ! अहाँ मूर्ख छी ।"

बिगड़ि क' हम कोनो कठोर बात कह' चाहलियैक मुदा बोल नहि फूटल ।

"अहाँ हमरा नहि चीन्हि रहल छी ?" ओ कह' लागलि—"अहाँ सन कायर भावुक सहिष्ण देरी सँ चीन्हैत अछि हमरा । हम एकटा स्त्री छी जे सैकड़ो वर्ष धरि सात समुद्र पार कारागृहमे बन्द छलहुँ । हमर भक्त लोकनि हमरा ओहि कारागृह सँ छोड़ौलनि, मुक्ति देलनि । अपन रक्त सँ हमर पैर धोलनि । आबो नहि चीन्हि सकलहुँ हमरा ?"

हमरा चुप देखि ओ फेर बाजलि — "आब प्रायः अहाँ चीन्हि रहल छी हमरा । जँ चीन्हि सकलहुँ अछि, त' विलम्ब जुनि करू । चलू, ओत' चलि क' हमर कथा लिखू, जत' अहाँक हजारो भाइ अपन रक्त सँ हमर कथा लिखि रहल छथि । सकैत छी जे, हम खाली एकटा स्त्री नहि, माय छी — अहाँ सभक माय । आइ फेर एकटा निर्लज्ज आक्रमणकारी अहाँक मायकेँ बन्दिनी बनाब' चाहैत अछि, अहाँ ओकर रक्षा नहि करबै ? निर्लज्ज पड़ोसीक बर्बर आक्रमणक प्रतिकार नहि करबै ?"

ई कहि ओ स्त्री जाय लागलि । किछु दूर जा' क' घुरिक' हमरा लग आबि हमर माथ पर, ममत्व भीजल हाथ फेरैत बाजलि —"ममता के लिखि दियौक जे हम अहाँकेँ ओकर कथा नहि लिख' देलहुँ । ओ रुष्ट नहि हैत, अभिमान करत । हम ओकरो माय छिऐक ।"

ओ स्त्री चलि गेलि आ हम अहाँकेँ पत्र लिख' बैसि गेलहुँ ।

हम हिमगिरीक उतुंग शिखर पर कथा लिखब, अहाँ घर-घर कथा लिखू । स्नेहक गर्म ताग सँ कथा बुनू । हमर संग दिअ' ममता ।

पगली भरिया रहल अछि । आब विदा लैत छी । भोरे उठिक' दिल्ली आफिस जयबाक अछि । ●

जुलाई १९६३

सुभद्रा-हरण

ओ फेर सासुरसँ पड़ा अयलैक ! दोसर बेर !

ओकर नाम छलैक सुभदरा । विश्वास करु, हम अपना दिससँ बिगाड़िक' नहि कहि रहल छी । सभ ओकरा सुभदरे कहैत छैक, सुभद्रा नहि । आर तँ आर, सरकारी कर्मचारी जखन जनगणना कर' अयलैक, तँ ओहो सरकारी बहीमे यैह लिखलकै—ग्राम—गोखुला, नाम सुभदरा, पेशा——

संयोगक बात जे ओकर भाइयोक नाम किसुनमा छैक । पनिया रंग, श्रीकृष्णोसँ बीस । मुदा हाथमे बँसुरी आ सुदर्शन चक्र नहि रहैत छैक । रहैत छैक हर आ कोदारि । हरवाह अछि हमर ।

बापकेँ सभ बसुदेवा कहैत छलैक आ मायक नाम की छलैक से ककरो नहि बूझल छैक । तखन छथि तँ सभ बसुदेवा-बहु कहैत छलैक आ धीया-पुता भेलैक तँ सभ कह' लगलैक—किसुनमा माय । एकाध बेर दुसटोलीक कोनो-कोनो बुढ़ियाकेँ बोमोवाली कहैत सेहो सुनने छलियैक । मुदा सासुरमे ओकर नाम क्यो नहि जनैत छैक । प्रायः बसुदेवो नहि जनैत छलैक ।

सुभदरा पाँचे बरखक छलि तखने एक दिन माय-बाप दुनू ओखार लेने घुरलैक बाधसँ । भरि बाढ़ि पानिमे कटनी करैत छलैक दुनू । ओखार की भेलैक, टुनकी लागि गेलैक । सगरो हैजाक भ' गेलैक । दुनू साथ एक्के दिन । पाँच बरखक सुभदरा टुगरि भ' गेल ।

किसुनमा सोलहमे पयर देने छल । हाड़-काठ बेस मजगूत । बापक जगह भेटि गेलैक—हरवाही । ओकर तँ सोलहम बरख छलैक, बापक दुलारू छल तँ कोनो काज, अपन जीवैत बसुदेवा नहि कर' देलकैक । नहि तँ ओकरा टोलमे होश सम्हारैत देरी हाथमे भट्ठा आ कागत कलमक बदला खुरपी, कचिया हँसू, कोदारि, हर आ महींसक पगहा पकड़ा देल जाइत छैक ।

से बापक दुलरुआ किसुनमा मरैक उतरी उतरैत देरी हरवाही शुरु कयलक—अपन पुरखाक धंधा, पाँच पुस्त हमरे घरमे हरवाही करैत आबि रहल छलैक । बापक वसीयतमे ओकरा लेल नेह छलैक आ छलैक पाँच बरखक एकटा टुगरि बहीन—सुभदरा ।

तकर बाद कतेको बरख धरि दुसटोलीक सड़कक धूरामे मात्र एकटा चारि हाथ धधरी पहिरने औनाइत लेरहा-बोरही करिखुट्ठी छौंड़ीपर ध्यान देबाक फुरसति ककरो नहि छलैक । रहबो कोना करलैक ? दुसटोलीक ओहि सड़कपर सैकड़ो मानव-सन्तान (?) चारि हाथक धधरी वा पैण्ट पहिरने वा पूर्णतः दिगम्बर बनल औनाइत रहैत छैक । नंग-धड़ंग, विकृत आ विनाबोन—देशक नवीन पीढ़ी, भविष्यक आशा ! ककरा एतेक फाजिल समय छैक जे एहि सभपर ध्यान देत चलय ?

एक दिन चारि हाथक धधरी नमरिकँ दसहत्थी मनमिलाइक साड़ीमे बदलि गेलैक आ कारी देहक अमुनिया चामक भीतरसँ एकटा नव आभा फाटि पड़लैक—कारी धानक खोंइचा फाड़ि के बहरायबला उजरा चाउरक दाना जकाँ—पुष्ट आ सुगन्धित ।

आ तहियासँ दुसटोलीक सड़कक बाटे जायबलाकेँ तरह-तरहक सुगन्ध भेट' लगलैक । बाधमे फूटल नवका धानक सुगन्ध, गाछमे फड़ल नव टिकुलाक सुगन्ध । एकर सुगन्ध, ओकर सुगन्ध ।

मतलब ई जे एकदिन दुसटोलीक धूरा भरल सड़कपर जेना कोनो मोमरक हाथसँ अतरक पकगा खसि पड़लैक आ तहियासँ ओहि सड़कमे, ओहि धूरामे कतेको तरहक सुगन्ध भरि गेलैक । सभकेँ सभ तरहक गन्ध लगलैक, मुदा ई बात निर्विवाद जे ओहि बाटे जाइत काल सभ क्यो नाकक पूरा फल्का-फल्का फिट्ठ कर' लागय आ फेर एकटा मादक सुगन्धमे मातल ओकर डेग एम्हर-ओम्हर पड़' लगैक । भुतिया जाइक । मुदा ककरो पता नहि चलैक जे ओहि सुगंधक स्रोत, ओकर उद्गम-स्थल कोन छैक ।

बभनटोलीक बादल चौधरीक (हमरे दैयादीक) बेटा बिजली चौधरी एहि रहस्यक पर्दा उठाबमे बिजलीक चुस्ती देखौलनि । दस दिनक हेतु शहरसँ छुट्टीमे

साँझ कयलाह् आ गामक पाछि धूँईट धूँईत दुनू टोलीक ओहि रहुकपर आबि गेलाह् अत' पहुँचि लोकक ठेंग एम्हर-ओम्हर पड़' लगैत छलैक। मुखिया जाइत छलैक। बिजली चौधरी पाछिर छलाह्। आखिर शहरक कालेजमे पाँच बरखसँ एतेक क्लासमे थोड़ी बात तँ नहि सिखैत छलाह्। टोहियबैत-टोहियबैत एकटा दसहत्थी नवविलाटक साड़ीक छोर पकड़ि अपन सफलतापर आह्लादित होइत मोनमोन छड़पि उठलाह्— "यँह भेलियनि !"

दोसरे क्षण नवविलाटक साड़ी फरकेँ हाथसँ उड़ि गेलनि आ एकटा मांसल हाथक समधानल चाट बिजली चौधरी के मधुकक थूरामे धुला देलकनि। बेचारि थूराने ओंग:एक फेर किछु धुँध' लगलाह्। कोनो सूत्रन्य नहि भेटलनि। भेटलनि... ...अपमानक बोझ आ...... ओकाड़ा। ईर्षी उतरैत, गालपर दुख-हुक पाँचो आङुर—नवविलाटक दसहत्थी साड़ीवालीक पाँचो आङुर।

बिजली चौधरी नवशिक्षुआ नहि, पहुँचल महात्मा आ अवाहियल निर्लज्ज छलाह्। एहि तरहक कतेको अनुभव हुनका अपन बाइस सालक रोमानी जिनगीमे छलनि। हुनका मोक जकाँ मात छलनि जे कोन बात प्रचार करबाक थिक आ कोन झाँपन देबाक।

हुनकर अनुयायी मुदा एतेक महत्वक आ मनोरंजक समाचार पेटमे पचा नहि सकलाह्। संपूर्ण छलनि जाँघमे, मुदा सफलता नहि भेटलनि तँ एक टा अनायास प्राप्त मुखर्ग किएक बंचित रहितथि? बिजली चौधरीक शानदार सफलताक दसतहार घरे-घरे बँटबाएब किएक चुकितथि? पार्टनरशिप मे ई भने तँ कबहु नहि छलनि।

आ बिजली चौधरी प्राते गामक तेना निपत्ता भेलाह् जेना गुड़क सायमे गाय-महींसक दूध।

बिजली चौधरीक आविष्कारक कथा घर-घर पसरि गेलनि। तकर ई अर्थ नहि जे लोकक जिज्ञासा वा कचकच्चा शान्त भ' गेलैक। मुदा तकर बाद ककरो साहस नहि भेलैक जे दसहत्थी नवविलाटक दिस हाथ बढ़ाबय। मोने-मोन गुड़-चाउर फाँकय से दोसर बात।

भोरे जखन सुभद्रा अपन भौजीक (किसुनभाक बहु) संग हमर आङन बीचे आ निपरी गाम' आबय तँ पोखरिक भीड़पर किरदी उठि जाय। हमर घर पोखरिक पछबरिया भीड़पर अछि। जखने ओहि भीड़पर बाटे सुभद्रा चलयै कि दोष तीनू भीड़सँ "ये आकाशवाणी पटना राँची है" जकाँ समवेत स्वर ललकाराउठय "द' रहल अछि बाबू पच्छिमसँ दार्ज।"

जा धरि ओ आङनमे रहय फरद ईश्वरक विद्यार्थी हमर पीतियौत भाइ किताब तकबाक बहाने पाँच-सात बेर आङन जाय। हमर दोस्त लोकनि हमरा आङनसँ बाहर जाइत देखि हमर पुछारी करैत माय लग आङनमे पहुँचि जाथि आ फेर मायक संग अपनैतीक तेहन गप्प नाधि देथि जे घण्टा भरि मे पहिने खतम नहि होनि। भनसीया बुते दालि अधिक काल लागि जानि आ तरकारी कमोन, खाहि बिखनोन भ' जानि। महींसक चरबाह माँड़ लेबाक, पनपियाइ लेबाक वा जारनि देबाक पुछारीक बहाने आङनमे जुटल रहय। आ आङन बहारैत काल, निपरी पाथैत काल हलकैत ओकर अंगक संग दर्शक लोकनिक मोन हलकैत रहनि, दरकैत रहनि।

दुपहरियामे खयला-पीलाक बाद जखन ओ दुनू टोलीक भिड़ले गामक गाछीमे कोनो छमटगर गाछक नीचा मोटगर डुबिपर अपन समतुरिया सभक संग ओंघरा जाय तँ गामक सभटा चरबाह अपन-अपन माल्के बाधमे छोड़ि गाछीमे जुटि जाय। कतेक मालिको लोकनि अपन-अपन चरबाहक ताकमे बौआइत ओहि गाछीमे जुमि जाथि आ फेर छमटगर गाछक छाँह तर दस मिनट वा आधो घण्टा बैसबाक लोभ हुनका संवरण नहि होनि।

आ साँझखन जखन ओ गोलापर सौदा-बारी कर' जाय, गोलापर सभक पदनी जेना क्यो बंशीमे बक्षा ऊपर टानि दैक। अनेरो लोकके उकासी आ छींक आब' लगैक। जनक्षेमे डाक्टर साहेबक डिस्पेन्सरी रहैक, तैयो ओम्हर क्यो नहि जाय।

आषाढ़ मासमे जखन दुनू टोलीक गाछीक छिट्टा भरि करिया बम्बइ माथपर उठा ओ चलय, तँ लोक अनायास ओहि सालक करिया बम्बइक फरीक प्रशंसा कर' लागय—केहन पैप-पैप आ केहन सुपिक्क। आ अगहन मास जखन-

जखन हमर जिरतिया ओकर बोझ उठब' जाइ, तँ बोझ पकड़' लेल उठल ओकर हाथक मेंहदि मोनो उपर उठि जाइ आ तखन ओ घबड़ैक तँ जानि ने कत' कत' लयकि जाइक।

एक दिन मुदा एकटा विषादपूर्ण समाचार सुनि हमर प्राण से उपर अँटकलैक ने अँटकले रहि गेलैक। समाचार तेहेन जल्दी आ तेहेन बोतावे पसरलैक जहेन जल्दी कोनो नेताक मरबाक समाचार आकाशवाणी पर्यन्त न हू प्रसारित क' सकैत अछि। सुभद्राक घरवला विदायगी कराब' आयल छलैक। समाचार बड़ सोझ मुदा कतेक भयंकर।

सुभद्राक लगन कहिया भेलैक तकरो पुछारि करबाक होश ओकर' ओही दिन भेलैक। बाप-माक मृत्युक दुइये बरख बाद लगन क' देने छलैक कियुनमा। मुदा तहिया ककरा काज छलैक एकर खोज-खबरि लेबाक ?

धाँइचा फाड़ि जखन धानक भीतरसँ पुष्ट आ सुगंधित चाउर बहराइछैक तँ नवान्नक सुगन्ध उड़ैत-उड़ैत सुभद्राक सासुरो पहुँचलैक। चौंकि दोसपर तँ छलैक सासुर। घरवला ओकापर अपन अधिकार मांग' पहुँचि गेलैक।

सुभद्रा चल गेलि। जाइत काल ओकर वरोकेँ देखलिऐक। खूब कठमस्त —चाकर आ भुट्ट। चमचम करैत तेलगर कारी रंग।

आ किछु दिन बाद सुभद्राक चर्चा मे सुस्ती आब' लगलैक। लोक नव-सुगन्धक ताकमे लागि गेल। मुदा कहियो-कहियो कोनो पुरान रसिक कोना सबका छौड़ाकेँ अपन अनेरक दैचत्व देखबैत कहैक—एकटा रहय सुभद्रा। आहा हा...हा...।

दू बरख ससरि गेलैक। कोन बाटे, कोन रस्ते, कहाँ बुझलकैक ?

तखन एक दिन भोरे निन्न टुटलापर आँखि मीड़ैत देखैत छी जे आङनमे अप्पन भौजीक संग सुभद्रा ठाढ़ि अछि। हमरा आयल देखलक तँ लग आबि बाजलि—परनाम मालिक।'

"की गय, कहिया अयलें तों ?"

"परसुकिये अयलिऐक मालिक।"

"अखन रहबे ने किछु दिन ?"

"आब तँ हिये रहबै हम।

"से की ? घरबलासँ झगड़ा भेलौक अछि।

"न : ।"

"तखन ? तोहर घरवला आब अही गाममे बसतौक की ? ककर पट्टी मे ?"

"ककरो पट्टी नै। हम अनगरिये रहबे, भैया जोरे।"

"से किएक ?"

"ओहिना नउती।'

हम किछु आर पूछ' चाहैत छलिऐक, मुदा नजरि पड़ल जे माय कान पाथि हमरे सभक गप्प सुनि रहल अछि। भौजी सेहो भनसाघरमे हाथ बारने टकटकी लगौने छथि।......

साँझ मे टहल' बाहर भेलहुँ तँ बहुतोक संग किसुनमा बाट छेकि लेलक। कह' लागल 'हिनका तँ अहाँ चिन्हैत छियनिमालिक। हमर नेमान छथि। तनी अहाँ सुभद्राकेँ समझा दियौक मालिक, जे हिनका जोरे चल जयतनि। हमर तँ कुच्छो सुनिते ने हय.......।

आ हम किछु बाजी, सुभद्राक घरवला गिड़गिड़ाय लागल—"हम गोड़ धरै छी मालिक। ओकरा तनी बुझा दियौक। कोन कसूर ही गेल हमरा से, से नहि जानि। हमर त' बाते नहि सुनै हय। केहुनओ जाय लेल तैयार नहि होइ हय। आब अहींकेँ आसरा हय मालिक।"

दोसर दिन सुभद्रा भेटलि तँ टोकलियैक—"ई कोन नाटक करैत छें गय ? जाइत कियैक नहि छहीं अपन घरवलाक संग ?"

सुभद्रा किछु नहि बाजलि। मूड़ी उठा एक बेर तकलक आ फेर मूड़ी गोंति लेलक। मौन।

हम फेर टोकलियेक—"बजैत किएक ने छें गय ? आखिर की भेलौक अछि तोरा ? कमौआ बर छौक । जान दैत छौक तोरापर । काल्हिये हमरा आगू तेना कान' लागल जे की कहियौक । किएक ने अपवहिक तों ? कौन तकलीफ छौक तोरा ?

"तकलीफ" सुभदरा बाजलि । "हमरा आरक तकलीफ अहाँ बुझबै मालिक ? जकरा अहाँ कमौआ कहैत छियैक तकरा घर पर एक्को धूर जमीन नहि छइ । दस हाथक झोपड़ी छइ एकटा । चारि सेर बोनि रोज कमाइ छय, मुदा घर लबैत छय दुइये सेर । दू सेर पसिनियाकें द' अबै छय । ओइ दू सेरमे जे होइ छय, बनाक' दैत छियैक त' तखटा अपने भकोसि जाइत छय । कहियो ने पुछै छय जे तोरो खातिर कुच्छो बचलौ कि नहि । हम कहबै जे हमहूँ बोनि करब, त' आँखि लाल क' लेत—"खबरदार जे अंगना से बाहर पयर देलें । छौड़ापनमे आँखि लड़ाबैक मोन, त' बोनि करती । बुट्टी-बुट्टी काटि देबौ जे एक्को बेरी बाहर तकले ।" हम चुप्प ही जाइत छी मालिक । मुदा खाली पेट काज कोना चलौ मालिक ? ओकरे ताड़ीक निसामे हमर देहक कुच्छो ने बुझै छय । कखनो कहबै, त' मारि देब' लागत ।—सोचि-सोचि हम चुप्प ही जाइत रहली । मुदा खाली पेट कतना दिन सहितौ । हमहू आदमिये हुतौ । हमरो देहे छय । देहे नहि रहतै हम त' हम की करबै मालिक । बोलू, अहीं बोलू मालिक । तैयो चल जाउ हम । अहीं फैसला करू ।"

की कहियौक, किछु फुरबे नहि कयल । मुदा किछु कहबाक चाही तें कहने छलियैक—"मुदा एना कोढ़ियो देलासँ त' काज नहि चलतौक । तोहर मर्द छौक, तों बुझबहिक, मना करहिक । एना भागि कइयलासँ की होयतौक ?"

"हम ओकरा मना करबै मालिक ? ओकर कानय-कलपब पर नहि जाउ, ओकरा अहाँ नहि चिन्हैत छियै । ओ एक्केटा बात बुझैत छैक—जे हम ओकर बाहनवाली छियैक—ओकर भोजक चीज । ओ आर कुच्छो ने बुझै छय । अ, ओकरा मना कयलासे, बुझौलासे की मिलै है, से अहीं देखबै मालिक । हे लू, देखि लू ।"

ओ घूमि क' पीठ उघारि देत अछि । देह पर ब्लाउज नहि छैक । ललाओन कारी पीठ पर कतेको टटका-टटका घेन्ह छैक जेना धूरक पकाओल मडुआ रोटीक गपड़ी कयो नोचि लेने होइक ।

हमरा चुप देखि ओ फेरि बाजलि—"अइसने ठाम सौंसे देह छय मालिक । अहाँ कहाँ-कहाँ देखब ?"

हमरा आर किछु बजबाक साहस नहि भेल । दोसर दिन सुनलियैक जे ओकर बरबला मिराबा घूरि गेलैक ।

सुभदरा फेरसँ गाममे चर्चाक विषय बनि गेल । साहुर जयवाक ओकर बरनोइसनिसँ कतेको मोनमे नव-नव आशा, नव-नव गुदगुदी उपजल छलैक । मा सुभदरा गाममे तेना रह' लागलि जेना गाम छोड़ि कहियो गेले नहि हो ।

दुसटोलीक घूरा बरल सड़कपर फेर एकटा नबका सुगन्ध पसरलैक—धूर क' पकाओल मडुआ रोटीक सुगन्ध ।

ई गन्ध मुदा जल्दिये उड़ि गेलैक । किसुनमा सगाइ करा देलकैक सुभदराक । बर खूब सुखी छलैक । खाली अवस्था बेसी रहैक । सुभदरोसँ पैंच-तैंच बेटा-बेटी रहैक ।

दुसटोली फेर उदास भ' गेलैक । सुगन्ध उड़ि गेलैक आ रहि गेलैक खाली धुद्दी धरि जमल घूरा आ लहसुन-पियाज आ ताड़ीक दुर्गन्ध ।

मुदा सुभदरा फेर पड़ा अयलैक । दोसर बेर । आब ओतहु नहि जयतैक । किसुनमा थुका क' हारि गेलैक । कचौ लेल टस्ससँ मस्स होयतैक । किसुनमा बिबश भ' क' हमरा समलक ।

साँझखन जानि बूझि क' किसुनमाक घर लगदने जाइत रही । साँझ पसरल जाइत रहैक आ अन्हरिया पसरल अबैत रहैक । उद्देश्यक सिद्धि भेल । सुभदरा बाहरेमे ठाढ़ि छलि । देखिते बाजलि—"परनाम मालिक ।"

हम सड़कपर चलिते रहलहुँ । ओहो पाछाँ-पाछाँ चललि । किछु दूर आबि कने कड़ा स्वरमे कहलियैक—"की गय, ई त' बड़िया ढंग सिखने छें तों । तीमन-चिखनीक हालति भ' गेलौक अछि तोहर । एक ठाम मोन नहि थिर रहैत छौक । दू-दू छोड़लें, आब तेसर चाहियौक की ? किसुनमा तंग भेल जाइत छौक तोहर एहि चालिसँ ।" फेर कने नरम होइत कहलियैक—आखिर तोंही सोच, एना भागि-भागि अपवहिक सासुरसँ त' कतेक बेर सगाइ कयल जयतौक तोहर । की

माय, बरखदिन पर भागि अबैत छही ! आखिर बियाह कोनो धीया पुताक खेल त' नहि छैक.......

—सते मालिक ! हमर' आर क बियाह की हय—धीया-पुताक खेल ! एगो छोड़ली दोसर क' लेली ! ओकरो से मोन भरि गेल त' तेसर क' लेली ! कोनो लाज धाख त' हय नहि, छूटि बेलाइल छी।

ओकर स्वरक आद्रता पर किछु आर नरम होइत कहलियैक—से एतेक जखन बुझैत छहिक, तखन एना कियैक करैत छैं ? एकठाम तकलीफ छलौक, गुजर नहि भेलौक, दोसर ठाम क' देलकौ भाइ। आब ओत' कोन तकलीफ छौ""

—' तकलीफ त' कोनो ने हय मालिक आ बड़का गो हय। बुड़बा मानियो बड़ हय ! मुदा ओकरा जुआन-जुआन बेटा सब हइ ! ओ सब हमरा माय नै बुझै हय ! अपनो पाग रहै हय मोन मे। आर त' कोनो दुख नै हय। अहीं बोलू मालिक, ओकरे ......कोनो मना नू हय—बाप-बेटा दुनू जोरे' हमकोनो जबाब नहि द' सकलियैक। किछु बाजले नहि गेल। चुपचाप चलैत रहलहुँ।

एकाएक लागल जे बड़दूर चल आयल छी। अन्हरिया एकदम गाढ़ भ' गेल रहैक। सुभदरा नहि जानि कोन सोचमे भुतिआयलि छलि।

टोकैत कहलियैक—"आब घुरि जो तों। लोक देखत त' अनेरो बात गढ़ि लेत, बदनाम करत।"

हमरा भेल जे अन्हारमे हमरा टकटकी लगा क' ताकि रहल अछि। नहि जानि कहुन स्वरमे बाजि उठलि—"एहन भाग हमर कहाँ मालिक !"

आ लगभग दौड़ैत चल गेलि।

तकर बाद कतेको दिनक बाद ओ एक दिन हमर कोठलीमे आयलि—राति क' नुकैबाक। हम कने सशंकित होइत पुछलियैक—"की छौ गय ? एतेक राति क' ?"

—हमरा पच्चीस गो रुपैया चाही मालिक।' सुभदरा बाजलि।

"पच्चीस टा रुपैया की करबें तों ? एकाएक एहन कोन काज पड़ि गेलौक अछि ?"

"आइ राति हम जा रहल छी मालिक। गोपालपुरक सुखनी बुढ़िया सिलीगुड़ी जाइत हय। ओत' कोयला बिछैत हय, मोटरा-चिपड़ी पाथै हय आ चारि पाँच रुपैया रोज कमाइ हय। ओ बुढ़िया हमरो कमा लेतै हय त' हमरा पुछै किएक ने होत ? हमहू ओकरा जोरे आइ राति चलि जायब मालिक।

"किशुनमा पुछलहिक ?"

"नहि मालिक। आब ककरो नहि पुछबैक। आब हियाँ नहि रहब हम। गामक लोक गीड़' चाहै हय। भौजी सब दिन गारी दै हय। ओकरा दू गो धीया-पुता हइ। पाँच आदमीक आश्रम हइ आ असगरे भैयाक कमाइ। अबो नहि जुटै हइ। से भौजीक मोन डोलल जाइत हइ। भैया नहि रहै हय, तखनो घरमे बदमाश सबके बजबै हय, हँसी-ठट्ठा करै हय। हमर देह जरि जाइ हय मालिक। भौजीकेँ अपन देह ओकरि गेलै, से भौजी हमरा बेचै चाहैत हय। हियाँ रहब त बिका जायब हम। हमरा जाय दू मालिक।"

"मुदा एकटा बुढ़ियाक संग सिलीगुड़ी जयबें, तँ ओत' के बचौतौक ? ओहि ठाम की सबटा साधुए लोक रहैत छैक ? एहि ठाम भाइ-भौजाइ छौक, हमरालोकनि छियौक, ओत' के देखतौक ?"

- ककरा वसो नहि हइ, ककरा के बेचै हइ मालिक ? सेहो देखनैक हमरो। आब किछुओ मारतैक, नहि जयबै हम, मुदा अपन लोक जखन गारी दै हय, बदनाम करै हय, त' सहलो ने जाइ हय। हमरा पच्चीस गो रुपैया दू मालिक। हम नहि रहब ऐ गाममे :

हम पचास टा रुपैया बहार क' देलियैक। ओ पच्चीसटा बेसी लैते नहि छलि। हमहीं जोर द' क' द' देलियैक जे परदेसमे काज देतौक।"

रुपैया खूटमे बन्हैत ओ बाजलि— "जाइयो हम राखि लैत छी मालिक। मुदा कमाके सबटा रुपैया भेज देब हम। बहिकिँ लेबेके होत। न' नै सुनब हम।"

हम हँसी-हँसीमे कहलियैक—"यदि रुपैया घुरैयबेक छौक तँ एकटा काज करिहेँ। कमाक' घुरिहेँ तँ एकटा चीज लेने अबिहेँ हमरा लेल।"

सुभद्रा मुँह ताक' लागलि—'प्रश्न सूचक आँखि सजाक'।

"कमाक' जखन घुरिहें तँ पचास रुपैयामे एकटा कनिया कीने अबिहें हमरा लेल।" ओ हँस' लागलि—"रुपैयासँ कनिया मिलै छइ मालिक? कोन बाजारमे बिकाइ छइ?"

"हँसी नहि करैत छियौक सच। घुरिहें तँ लेने अबिहें। ओत' भेटैत छैक।"

—केहन कनिया लेबइ मालिक? ओ हमरे पुछलक।

"खूब कारी तोरे सन। झूर क' तरल तरकारी, आ सोन्हगर क' पकाओल जरल कारी रोटी सन मुदा ओहुने सुगन्धित, स्वादिष्ट।"

अन्हारमे हमरा भ्रम भेल जे ओकर आँखिमे पानि छलैक।

प्रात भेने भरि गाम खबरि पसरि गेलैक ...... —सुभद्रा ककरो संग पड़ा गेल—...जतेक मुँह ततेक बात।

——क्यो कहैक जे ततबामे गाँठ घाट छलैक आ क्यो कहलकैक जे पहलो गामक गुअरबासँ। ककरो कहब रहैक जे लागि-भागि भारि पानि भरबाक रहैक आ ककरो धारणा रहैक जे टटका-टटकी रोमान्स रहैक।

हम सभटा सुनैत मोनमे सोचैत रही जे सुभद्रा चल गेलि। किछु दिन बाद ओकर बदनामीक चर्चो बन्द भ' जयतैक। प्रायः गामो बिसरि जयतैक लोक। तखन जेना बाबी-नानी धीया-पुताकेँ खिस्सा कहैत छैक तहिना क्यो-क्यो, कहियो-कहियो चर्चा करतैक—एकटा रहय सुभद्रा ......

मई १९६३

गयबिढ़नी ! तोहर डंक

आब कोन उपाय करब? भेलहुँ ठीक जकाँ देखार।

कोन पाप लागल छल से नहि जानि। डट द' गछि लेलियनि। लागल, जेना एहिसँ बेसी ओकर कोनो काजे नहि छैक—जाइक एहि कनफर्नामे नौ बजे धरि तुराइत दुबकलो रहबामे सोझ। मुदा घुसड़ि गेल सभटा कबिलती। उखनेसँ छटपटी लागल अछि। कोम्हरो कोनो बाट नहि, कोनो इजोत नहि। एकदम अन्हार गुज्ज—तरेगणक भुकभुकी पर्यन्त नदारत। हथोड़िया दैत-दैत थाकि गेलहुँ, मुदा कतहुँ किछु अभरिते नहि अछि। आब तँ इच्छा होइत अछि जे 'हरजी मानि दी।

कतेक लाजक गप्प होयत? कोनो कहि सकथनि अपना मुँहेँ जे हमरा जुते नहि भ' सकल अहाँक आदेशक पालन। कोना फूटत कण्ठसँ बोल? कण्ठमे काँट नहि अँटकि जायत? ठोर एक दोसरसँ पृथक होयबामे विद्रोह नहि करत? रहि-रहि क' एकटा मूर्ति सामने अबैत अछि आ असफल प्रयासक आहत स्वाभिमान मोनमे एकटा हीन भावना उत्पन्न करैत अछि।

"देखू, काल्हि एगारह बजेसँ पहिने! सोन रहत ने?"

जखन काल्हि आदेश भेटल छल आ हम धड़धड़ा क' सीढ़ी उतरि गेल छलहुँ—ई कोन भारी बात? काल्हि एगारह बजेसँ पहिने किएक, कहीं तँ अखने, अही ठाम। अपन अधिकक मिथ्या दंभपर तेना अकड़ल रही जे सीढ़ीपर ओंघराइत-ओंघराइत नीचाँ रही।

सड़कपर जाड़क सुकुमार रौद प्रतीक्षामे छल। देखिते लपकल। बन्द कोठलीक, सर्द वातावरणमे ठिठुरल मोन गरमीसँ भरि गेल—एक-एक तहमे, ठीक अर्कों। पीठपर सूतल गुलाबी रौदक गरमाहटिसँ वेग आयल सरल—छोट-छोट नापल डेग। आँखि चारूकात औनाइत रहल, निरुद्देश्य। नहि-निरुद्देश्य कहब

ठीक नहि होइत। कोनो खास उद्देश्य नहियो रहलापर कोहि दृष्टिमे किछु छलैक—प्रायः कोनो नवीन आकर्षण वा उद्देश्यक अन्वेषण। एकदम अस्थिर दृष्टि—एकक बाद दोसरपर अटकैत, नचैत।

एक ठाम नौजाइत दृष्टि अटकि गेल—डेड स्टॉप। काफी भीड़, धक्कम-धुक्की आ उत्तेजना छलैक। जिज्ञासा भेल। मुदा भीड़ ठेलि क' घटनास्थल धरि पहुँचब नितान्त असम्भव। मूड़ीपर-मूड़ी बजरैत, देहपर देह लटकल। सभ क्यो हुलकि-हुलकि क' देखबा लेल व्यग्र, हड़बड़ायल। जिज्ञासा प्राण तोड़' लागल।

एकटा चाइ साहेब भीड़सँ बहरयलाह—आरस्थात, बौआयल, अस्त-व्यस्त, मुँह जोंकसँ भरल, चाकचकात सगरो निहारैत। वीर महारथीक स्वागतार्थ हमरा लोकनि दूरेसँ हुनकी देनिहार पाँच-दस व्यक्ति झट द' जुटलहुँ—"की बात छिऐक? एहन भीड़ कथीक ई? किएक लोक मुँहियारी देने अछि?"

महारथी कोनो सफल फिल्मक डाइरेक्टर जकाँ सस्पेन्स रखैत बजलाह—"कतेक लाजक गप्प थिक ई जे हमरा लोकनिक देशमे जयचन्द आ मीरजाफरक सन्तान अखन धरि स्वतन्त्र भौजाइत अछि, स्वाधीन देशकेँ कलंकित करैत अछि। ई देशद्रोही सभ समस्त देशक प्रधानपर थाति फेर' चाहैत अछि।"

"आखिर बात की छिऐक?" हमरा लोकनि केँ आब धैर्य राखब कठिन भ' गेल।

महारथी रहस्यक उद्घाटन करैत बजलाह—"अखने कनेक काल पहिने चाइना हवाजहाज गेलैक अछि, से तँ अहाँ सभ देखने हएबैक। एहिठाम सभ कहैत छलैक जे एहि जहाजमे सभमे देशक जवान जा रहल छैक सीमाक रक्षा हेतु, चीनी सभकेँ खहारि क' भारतीय सीमासँ बाहर करबा लेल। मुदा ई देशद्रोही सूचना द' बाजि उठल—'सभ जा रहल अछि अपटी खेतमे प्राण गमाब'।" ततेक ने कुराइ भेलनि आछि बाउकेँ जे मारि धरि होश नहि होयतनि। एहन-एहन देशद्रोहीकेँ एहने दण्ड भेटबाक चाही।" मोन छड़पि उठल—येह! येह!

ई उल्लास मुदा स्थायी नहि भ' सकल। एहि सँ काज चल' बला नहि। कोनो सशक्त वस्तु चाही—अंग-अंगमे नवीन स्फूर्ति, नवीन साहसक संचार करै बला। कोनो आतंककारी सृजन—शत्रुकेँ भय-प्रकम्पित करबामे समर्थ! आ

कोनक प्रकृता रेखा खिचा गेल जेना सिनेमाक पर्दापर कार्टूनक मेहो आकार लोक जकाँ देखनाइसँ पूर्व विलीन भ' जाइत छैक।

डेग आगू बढ़ल। महिकलसँ चारि-पाँच सय गज।

दोसर स्पॉट—किछु बेसी भीड़, किछु बेसी उत्तेजना। उत्तेजित जनता एकटा चीनी डेन्टिस्टक दोकानपर आक्रमण करबा लेल उद्यत। विचारवान लोक सभ स्थिति सम्हारि लेलनि। चीनीक दोकान आ परिवार निरापद रहलैक।

मोन फेर छड़पि उठल-येह! येह!

भारतीय संस्कृतिक अनमोल नमूना। बर्बर चीनीक मुँहपर भिजाओल जूता। चालीग आ बोमडिलामे चीनी बर्बरताक शिकार भारतीय जनताक प्रतिशोध—अभयदान।

न: एहुसँ काज नहि चलत। किछु आर सशक्त, किछु आर प्राणवान वस्तु चाही। दुश्मनोक संग मनुष्यता-पूर्ण व्यवहार राखब, शरणागतकेँ अभय-दान देब, भारतक प्राचीन सिद्धान्त रहलैक अछि। भारत निवासी चीनी जनताक प्रति भारतीय जनताक मनुष्यतापूर्ण मैत्री-भावमे कोनो नवीनता नहि।

मोन फेर उदास भ' गेल। आब टटका-टटकी चीज कहाँसँ आनू? जकरे हाथ लगबैत छी, सैह सेकेण्ड हैण्ड। एहि बेर बेइज्जत भेने क' रहब।

"बाबू, पालिश।"

आवाज परिचित लागल। देखलियैक तँ देखिते रहि गेलहुँ। सामने किशोर ठाढ़ छल—हाथमे पालिशक डिबिया आ ब्रश लेने। आश्चर्यसँ बाजि उठल रही—तों?

किशोर बाजल छल—"देख भाइ, हमरा घरसँ पढ़बाक खर्च नहि भेटैत अछि। स्कालरशिपक पैसासँ कहुना गुजर करैत छी। सुरक्षा कोषमे दान देबाक उत्कट अभिलाषा छल, मुदा हाथ खाली। विचारलहुँ जे एक सप्ताह धरि बूट पालिश करी आ सभटा कमाइ सुरक्षा-कोषमे द' दिऐक। मिलल एहन्मो आ समकाल मुँह अपन जुताक।"

मोन फेर छड़पि उठल—येह! येह!

आचरणक अद्भुत दृष्टान्त । जनताक जागल भावनाक अपूर्व उदाहरण । 'नहरू सरकार जबरदस्ती दान लेती है' प्रोपगेण्डा करनिहार रेडियो-पेकिंगक मुँहतोड़ जवाब । अपनी जन्मभूमि एवं स्वाधीनताक रक्षाक हेतु सर्वस्व अर्पण करबा लेल उद्यत भारतीय जनताक प्रतिनिधि एकटा गरीब छात्र ।

न : आइयो काज चल'बला नहि । मोन कहं लागल—ई त' डाकुमेन्टरी भ' गेल । बहाँक एहेन चीप वस्तुक आशा नहि छल—गरी डिसएप्वाटिंग ।

एक मोन होइत अछि जे घुरिक' कहि अबियनि जे हमरा बुतें नहि भ' सकल आदेशक पालन । फेर बिचारैत छी जे हुनकी कहबा' सँ पूर्व एक बेर डेरा जा क' प्रयास करी । निश्चिन्त भ' क' बैसलासँ भ' सकैत अछि, किछु फुरि जाय, किछु झलकि जाय ।

जल्दी-जल्दी राजेन्द्र नगर दिस लपकैत छी, अपन फ्लेट पहुँचबाक हेतु । रास्तामे सामर्थ्यक हेतु किछु सत्य घटनाकेँ टोहियबैत छी—एकटा अस्सी बरखक बुढ़िया जवानक हेतु अपन आँखि दान क' देलकैक । एकटा नव कनियाँ अपन सोहागक चूड़ी उतारिक' प्रधान मंत्रीक रक्षा-कोषमे द' देलकैक । एकटा आठ बरखक बच्चा जलखैक पैसासँ बचाक' सुरक्षा कोषमे दान देलकैक । एकटा भिखमंगा अपन भरिदिनक कमाइ ......न., बात बन'बला नहि, असंभव ।

अपन ब्लौक आबि जाइत अछि—बारह नम्बर । पूरापूरी बेयालीस सीढ़ी चढ़िक' अपन फ्लैटक सामने पहुँचैत छी—तेसर तल्लापर, एकसय बहत्तर नम्बर । गेटक ताला खोलिते देखैत छी—पोस्टमैनक खसाओल एकटा लिफाफ नीचा फर्शपर खसि रहल अछि ।

लिफाफ उठाक' देख' चाहैत छी जे कत'सँ आयल अछि । मुदा प्रेषकक नाम नदारद । पताक अक्षर देखि चौंकि जाइत छी । अक्षर सभ चिन्हार लगैत अछि । ककर.......ककर...... मोन पाड़' चाहैत छी । किछु क्षण अस्पष्ट, झलफल-झलफल आ फेर सभ किछु स्पष्ट भ' जाइत अछि ।

हाथक उजरा वर्गाकार लिफाफ कारी आयताकार स्लेटमे बदलि जाइत अछि, जाहिपर लिखल एकटा दस बरखक छौंड़ा लिखैत छैक—गोरा-पलटन । लिखब समाप्त भेलापर स्लेट घुमाक' बगलमे एकके हाथपर बैसल छौंड़ीकेँ देखबैत छैक । छौंड़ा अपन स्लेटपर किछ लिखि छौंड़ी दिस घुमा दैत छैक । छौंड़ी पढ़ैत

अछि—बिढ़नी ! दुनूक ठोरपर दाबल-दाबल हँसी मात्र संक्षिप्त थोड़ेक ! कखने कनेक काल पहिने दुनूमे खूब झगड़ा भेल रहैक । खिसियाक' छौंड़ा धमधुमा देलकै छौंड़ीक पीठ नीक जकाँ आ छौंड़ी नछोरिक' देहकेँ शोणित-शोणित क' देलकै । फेर दुनू मुँह फुलाक' बैसि रहल कनेकाल । मुदा दुनूमे ककरो चैन नहि, निबहुता नहि । स्लेटपर लिखि एक दोसरक नामकरण कयलक आ सुलह भ' गेलैक । मुदा तहियासँ दुनू एक दोसरकेँ ओही नामसँ सम्बोधित कर' लगलैक । छौंड़ी कहैक—"गोरा—गोरा पलटन जकाँ निर्मम आ अत्याचारी । आ छौंड़ा कहैक "बिढ़नी", डंक मार'वाली, डकिनियाँ ।

...आइ स्पष्ट रूपसँ एहि महान सत्यक ज्ञान होइत अछि जे मनुष्य बिसरि जाइ सभ किछु चाय, मेटा किछु नहि सकैत अछि । जा धरि अन्तःकरण मौजूद छैक, स्मृतिक एकोटा क्षण मेटाओल नहि जा सकैत छैक । जिनगीमे एहुनो भावक क्षण बेर-बेर अबैत छैक जहिया एकटा मामूली आघातसँ अतीतक ढकल बिसरल स्मृति जगजियार भ' जाइत छैक, एक-एक क्षण, एक-एक पल !

एक टा दृश्य उभरैत अछि—बागमतीक कातमे टूटल-खसमसायल कृष्ण-मन्दिर, खण्डहर जकाँ । मन्दिरक पश्चिम मे एकटा छोट-छीन शिव मन्दिर आ पुजारी कात बड़का एकटा पुरान झमटगर पतरज गाछ । दक्षिणमे कलकल करैत बागमती । जेठक दुपहरियाक जरैत रौदमे पानिक कछेर मे एक टा जोड़ा बालुक घर बनयबामे व्यस्त अछि भीजल बालुक भीतक घर । छौंड़ा बनल अछि राज आ छौंड़ी रेजा । छौंड़ी दौड़ि-दौड़िक' सामग्री जुटबैत छैक आ छौंड़ा कारीगर जकाँ नापि-जोखि क' घरक निर्माण करबामे व्यस्त अछि । दुनूक माथमे बालु भरल छैक आ कारी-कारी केशमे लटकल बालुक कण रौदमे तेना चमकैत छैक जेना अन्हरियामे तारा ।

घर बनिक' तैयार होइत छैक । छौंड़ा लगमे ठेहुनिया देने बैसल छौंड़ीकेँ बार-बार चीचिं कहैत छैक—देख गय बिढ़नी, तैयार भ' गेलौ घर । कोनो गड़बड़ी रहि गेल होइ, तँ एखने बाज, दुरूस्त क' दैत छियौक ! कोना पाछाँ कह' लगबें जे केहन घरबाला कयलहुँ, जकरा घरो बनयबाक लूरि नहि छैक । देख, कुल चारि टा कोठरी रैतबैक अछि—भण्डार, भंसाघर, गोहाल आ एकटा सुतक कोठली हमर-तोहर । ठीक छौ ने ?

छौंड़ी किछु काल गालपर हाथ राखि विचारैत रहलि आ फेर कोनो वुढ़ियो जकाँ गम्भीरतापूर्वक बाजलि—"चारिये टा कोठलीसँ काज नहि चलतौक। कमसँ कम दू टा कोठली आर चाहियैक !"

"से किएक ?"

"से तँ कहैत छियौक जे तोँ गोरा पलटन छेँ—अकिलक तँ छुतियो नहि छौक। कोना जिनगी कटत तोरा संग से नहि जानि ? एतबो नहि बुझैत छहीक जे धीया-पुता भेलापर चारिये टा कोठलीमे कोना गुजर हेतौक। कमसँ कम दू टा कोठली आर चाहियैक—एक टा बेटी-जमायक लेल आ दोसर बेटा-पुतोहुक लेल।"

"आ, हमरा तँ तकर ध्याने नहि रहल। सत्ते, तोँ बड़ बुधिआरि छेँ गय बिड़नी। तोँ भला लेखेँ हमर गृहस्थी नीक जकाँ। बाज, कय टा बेटा लेल कोठली बना दियौक ?"

"धुत"……"

हृदय धड़कैत अछि।

बेठक फुरहरिया नहि, मादवक अन्हरिया राति। टिपिर-टिपिर पानि। रहि-रहिक' ठनका। बिजुलता। अन्धकार भरल रातुक हाहाकार भरल प्रहर। ओही बामनडीक कातमे', पानिक फलेरमे। नहि, ऊपर दड़क चतरल गाछक नीचा दबकल दू टा चिड़ुक प्राणी, सशंकित, आन्दोलित।

किशोरी कहैत छैक—देख गोरा, हमरालोकनि एकटा घर बनौने रही, स्वप्न देखने रही ! सुखद स्वप्नक निर्भमि हमरा जाने नहि रहल जे तोँ छेँ एकटा उच्चकुलक आदि परिवारक कुलीन ब्राह्मणक कुलश्रेष्ठ आ हम छी भनसियाक, एकटा क्षुद्र बाभनक अभागलि बेटी ! समाज हमरा नहि रहऽ देत तोरा संग ओहि स्वप्नमहलमे। नहि स्वीकारत कुलवधूक रूपमे। हमरा बिसरि गेल, सुधिये नहि रहल जे बालुक भीत ढहि जाइत छैक, स्थायी नहि होइत छैक। इहो नहि मोन रहल जे धीयापुताक खेल यौवनक आश्रय, जीवनक सम्बल नहि भ' सकैत छैक।

"से नहि कहु सोना। ई धीयापुताक खेल नहि, जीवन-मरणक प्रश्न छैक ;

बाल्यावस्थामे पड़ल स्नेहक गेँठ जकरा क्यो खोलि नहि सकैत अछि, तोड़ि नहि सकैत अछि। ककर मजाल छैक जे हमर बालुक घर ढाहत, हाथ-पयर तोड़िक' राखि देबैक।"

सोना बिहुँसलि—पानि भरल मेघ जकाँ, बरस' लेल आतुर, फाट' लेल उद्यत।

"देख गोरा, अपन पलटनो नहि देखा तोँ ! ककरा-ककरासँ लड़बेँ, ककर-ककर हाथ तोड़बहिक ? सभ दुश्मने भ' जयतौक ! आ फेर तोँ कत' हाथ तोड़ियो क' की भेटतौक ? बालुक घर तँ ढहिते छैक, ढहबे हेतु बनैत छैक। ओकरा कतेक दिन बचयबहिक तोँ ?"

"तकर माने ई जे तोँ स्वयं ओहि घरमे रह'सँ हिचकैत छेँ। गोरा ओ घर पसिन्न नहि छौक। झूठ नहि बाज सोना, कहि दे जे तोरा बालुक घर नहि चाहियौक। चाहियौक महल, आराम, सुख जकरा लेल तोँ बिका रहलि छेँ, तोहर बाप बेचि रहल छौ तोरा। कहि दे जे महलक स्वप्न तोरा मोनसँ सभ टा पुरान स्मृति धो-पो छ देलकौ। तोँ खाली अपने सँ ई गप्प कहि दे सोना, फेर तोरे सपत खा क' कहैत छियौक, बाट नहि रोकबौक तोहर।"

"ई तोँ कहि रहल छेँ गोरा ? कोना बाजि सकलेँ ई गप्प तोँ ? एक बेर हमरा दिस ताकिक' ई गप्प बाज तँ। बाज, चुप्प किएक भ' गेलेँ"……?"

कोनो जवाब नहि, प्राणहीन निस्तब्धतामे टूटल हृदयक सिसकी, रोम-रोमकेँ सिहरबैत।

सोना विकल भ' बाजि उठलि—"देख, ए ना नहि कान। हमरो कमजोर नहि बना। सभ टा संकल्प भासि जायत हमर। तोँ तँ खाली नामे लेल गोरा पलटन छेँ, मोन त' तोहर मौगियोसँ बेसी कमजोर छौक। एक टा पाथर हम छी, आँखिमे नोरो नहि अबत अछि। सुन्न भ' गेल हीद सेना। हमरा लेल नहि कान तोँ।……हम नहि छी एतेक स्नेह करबा जोगर"……

प्रत्युत्तरमे सिसकीक स्वर आर तीव्र, सम्पूर्ण अस्थिपंजरकेँ झरझारैत !

"देख, चलबा काल एना नहि कर। जायवलाकेँ लोक हँसिक' विदा करैत छैक। तोहूँ एक बेर हँसिक' कहि दे—"बिड़नी," नहि तँ अन्तिम अभिलाषा अतृप्ते रहि जायत हमर"।

"नहि सोना, नहि" उमड़ैत क्रन्दनकेँ रोकबाक असफल प्रयासकेँ टूटल-छिड़िआयल स्वर।

'आइ तोहर दुश्मनिया बिड़नी मा रहल छोक गोरा! सभ दिन तोरा कनबिते रहलियौक, दं किछु नहि सकलियौ। जाइतो-जाइतो एक टा डंक देने जाइत छियौक! तोरा सप्पत छोक एहि डंकक, एहि पीड़ाक, अन्तिम अनुरोध मानि ले हमर! हँसिक' कहि दे एक बेर। नहि कहबें तोँ? बेस, ते हमर मरल मुँह देखय......—से......"

"बिड़नी.........!"

दृश्य फेर परिवर्तित होइत अछि।

बीच आङनमे पटियापर चारू कात मोट-मोट किताब पसारने एक टा नवयुवक बैसल अछि। एक टा नवयुवती आङनमे आबि पयर छूबि प्रणाम करैत छैक। चकित, विस्मित नवयुवक तकिते रहि जाइत अछि, अपलक।

"एना की तकैत छें? हम छी—बिड़नी! एतबे दिनमे बिसरि गेलें की?"

नवयुवक आँखि मूनि लैत अछि। नहि, नहि तोँ हमर सोना नहि भ' सकैत छें! हमर सोना तँ सीँथमे सिन्दूर भरि, हाथमे लहठी पहिरि पालकीपर चढ़ल छलि! तोहर सीँथ पोछल छौक, हाथ सून.........न तोँ हमर सोना नहि छें, कित्नहु नहि......!

...आ आइ लिफाफ हाथमे लेने थरथरा रहल छी। पत्र भेटबाक आनन्दक सुखद सिहरन अछि वा अतीतक दुखद स्मृतिक कम्पन, से कहब कठिन। मुदा आब बड़ी काल भ' गेल। पहिने पत्र पढ़ि ली।

लिफाफ फाड़ि क' चिट्ठी निकालैत छी। सादा कागजपर लिखल आखर सभ लिफाफक अन्हरिया कोठलीसँ बाहर आ' प्रकाशमे चमचमा उठैत अछि।

"गोरा,

लिफाफ देखिये क' तोँ बूझि गेल हेबें—बिड़नी फेर कोनो डंक मारत। आशंका तोहर ठीके छौक, मुदा एहि बिड़नीक डंकक पीड़ा तोँ नकारि सकबें तेतेक साहस तोरामे नहि छौक, हमरा नीक जकाँ बूझल अछि।

पयरमे लागल पाँखिक बलें समयक मेघ धरतीपर कोखन प्रचण्ड दाह आ कोखन सुशीतल छाहरि बनबैत चलैत रहैत अछि आ बिसाहैत रहैत अछि विवश,

असहाय प्राणी। भावुक घरमे गृहस्थी बसयबाक सपना देख' वाली एक दिन कनियाँ बनैत अछि। मुदा ने ओ घर, ने ओ वर। अपरिचितक संग ओ फेरसँ नव घर बसब' चाहैत अछि। देवालो ठाढ़ होइत छैक। मुदा अकस्मात् एकटा प्रचण्ड अन्हड़ ओहि देवालकेँ भूमिसात क' दैत छैक। नवकनियाँ विधवा बनि जाइत अछि।

आ गोरा, चलइन जकाँ भोचण्ड, सिटी खौंड़ा बढ़िक' भावुक युवक बनैत अछि—सशक्त कथाकार। ओकर कथा पढ़ि-पढ़िक' एकटा अभागलिकेँ गौरव होइत छैक जे कहियो ई कथाकार ओकर बालसंगी छलैक, ओकर सभ किछु छलैक। अभागलिक अर्थहीन जीवनक एकमात्र अवलम्ब, एकमात्र आकर्षण बनि जाइत छैक—संगी कथाकारक रचना। ओहिमे हृदयक अपनाकेँ पबैत अछि, अपन नेनपन आ नेनपनक संगीकेँ पबैत अछि।

देशपर संकट अबैत छैक—चीनक विश्वासघातपूर्ण आक्रमण। जनतामे जागरणक लहरि पसरैत छैक। कण-कण स्वाधीनताक रक्षाक हेतु तत्पर होइत अछि। कलम तलवारि बनैत अछि। ओ अभागलि बालसंगी कथाकारक लोकनिक कथा पढ़ैत अछि। बालसंगीक कथा पढ़ैत-पढ़ैत कथा पढ़बाक बाट लागि गेल छैक। सभ कथाकार लोकनि एकके सुर अलापैत छथि—देशकेँ बलिदान चाहिऐक। आइ आवश्यकता छैक सोहल सीँथ आ सून हाथक, उज्जर साड़ी आ आभूषणहीन शरीरक।

ओकरा बड़ आश्चर्य होइत छैक। ओकर धारणा छैक जे आवश्यकता छैक, सिन्दूरसँ भरल सीँथ आ लहठीसँ सजल हाथक जे अपन प्रियतमकेँ, अपन स्वामीकेँ हँसि-हँसि क' समर-क्षेत्रमे पठा सकय, एहि विश्वासक संग जे ओकर हाथक चूड़ीमे रक्षाक शक्ति छैक आ सीँथक सिन्दूरमे अमरत्व।

मुदा अभागलिक अपन सीँथ पोछल छैक, हाथ चूड़ीक स्पर्श बिसरि गेलैक। आइ ककरा पठाओत रण क्षेत्रमे? सधवा रहैत तँ हँसि-हँसि क' आरती उतारि स्वामीकेँ हिमगिरिक अभियानपर पठबैत।

अपन बालसंगी मोन पड़ैत छैक ओकरा। संसार चाहे जकर नाम ओकर सीँथ मे भरि देने होइक, मुदा स्वेच्छासँ जकर नाम माँग मे सजौने छलि, से तँ ओकर बालसंगिये टा छैक—ओकर अपन गोरा। ओकर नारीत्वक लाज,

सिन्दूरक मर्यादा बैह दा बचा सकैत छैक । बालुक भीत तोड़'बलाक हाथ-पयर तोड़' देल उघत गोरा हिमालयक शाश्वत भीत तोड़वाक प्रयास करनिहारक अंग-अंग नहि तोड़ि देतैक ।

की रे गोरा, केहन लगलौक हकिनियाँक ई डंक । एहि टीस मे एक टा उल्लास, एक टा आनन्द छैक कि नहि ? सत्त सत्त बाज ।

तँ आब शीघ्र प्रस्थान कर । हम आरती लं मंगल गीत गबैत छियौक—

जुग-जुग जिबथु, बसथु लाख कोस……

हरदम तोरे
(लोक घाहै अकर कहय) बिहनी

गौरवसँ छाती फूलि जाइत अछि । अपन ओनाक हृदयक विशालता पर ओकर मर्यादित निष्पाप समर्पण आ गौरवपूर्ण आमन्त्रण पर । अन्तर्मन बाजि उठैत अछि—तोहर आह्वान निष्फल नहि जयतौक सोना । तोँ हमरा उचित मार्ग देखौने छह—ओ मार्ग जे आइ प्रत्येक भारतवासी कें हाक द' रहल छैक । ई तोहर आह्वान नहि छियौक सोना, जननी जन्मभूमिक आह्वान छैक, भारत-माताक आह्वान थिकनि ।

हम काल्हि कहि देबनि सम्पादकजी कें जे हमरा बुते नहि पार लागत वर्तमान संकटकालीन स्थिति पर कथा लिखब । हम जा रहल छी एकटा अमर कथा लिखबाक हेतु, हिमगिरिक उत्तुंग शिखिर पर, अपन रक्तसँ, सोनाक सौभाग्य सिन्दूरक साक्षीमे ।

की गय बिहनी, आब कह । ●

४ अगस्त १९६३

उपरफांट्ट

गामक दछिनबरिया सिमान पर दिसम्बरक सर्द साँझ ठिठुरल रातिक प्रतीक्षामे सहमल ठाढ़ छलैक । असमानी सुराह तर दिनभरि निश्चिन्त फाँक काटैबला तरेगन सब धरतीपर झुलक' लागल छलैक । ओकर निर्लज्ज आँखिक कामातुर दृष्टिसँ बचबाक हेतु नग्न धरती अन्हार ओढ़बा लेल अकुला रहल छल ।

चन्दर डेग झाड़ने गाम लाँघि गेल । अपन गाम नहि, मामा गाम । पहिने बभनटोली, तखन धमुखटोली, फेर शिव-मन्दिर आ अन्तमे गामक सिमानपर बहैत बागमती नदी धरि पहुँचि चन्दरक डेग अनिश्चित मनस्थितिक धुनिधुनिमे पड़ि छोट होइत क्रमशः थम्हि गेलैक, जेना कोनो भर्गैत-दौड़ैत मशीनक इंजन क्रमे-क्रमे थम्हा गेल होइक ।

चन्दर सोचमे पड़ि गेल । धार पार जयबाक दू टा रस्ता छलैक । पहिल रस्ता शिव मन्दिरबला घाट बाटे छलैक । बारि भदवारि ओहि घाटपर नाव चलैत छैक, मुदा पानि घटलाक बाद नाव नहि चलैत छलैक । ओहिबेर पानि पहिनेसँ घटि कऽ पाँजर लागि गेल रहैक आ घटवार नाव डुबा देने छलैक । पानिक धार तेज नहि छलैक, कपड़ा समेटि लोक सुगमतासँ पार क' जाइत छल । पार जाए' जायबला कोनन हँसी-हँसीमे आ कोनन खौंझा क' गाबि बैसैत छलैक—ऐ नदियाकि पैह बेबहार, खोलू धरिया उतरू पार ।

पार जयबाक दोसर रस्ता रेलवे पुल बाटे छलैक । सरिकलसँ एक मीलक फेर पड़ैत छलैक, मुदा आब' जायबलाकें ओतबे फेर अखरा दैत छलैक । गामक पछबरिया सिमानपर दने सीधे दक्षिण मेलापर रस्तामे रेलवे पुल पड़ैत छलैक । ओहि बाटे आबय-जायब ककरो सहज भावेँ स्वीकार नहि छलैक । निश्चलता रहैक जे कारण । ... रेल नाव रहैत नाव आ नाव नहि रहला पर पानि हेलिक'

धार पार करब जनसाधारणक अभ्यास बनि गेल छलैक। पुल पर बाटे जयबाक विवशता मात्र तखने होइक जखन घाटपर नाव नहि रहैक वा पानि डाँड़सँ ऊपर होइक।

चन्दर शिव-मन्दिरक सामनेक मोटका आड़ि पर ठाढ़ भ' गेल। पानिक कछेरमे जयबाक साहस नहि भेलैक। पानि सरकि गेल रहैक, कतहो भिजबाक डर नहि रहैक। तैयो चन्दर ओहि पसरैत अन्हारमे आँखि फाड़ने नदीक पाँजरमे सटकल पानिक सतह निहारैत रहल— भयभीत, संत्रस्त, ओहि शिशु जकाँ जे मायक हाथमे पानिक लोटा देखिते हाथ पयर फेक' लगैत अछि जेना देह पर पानि खसलैक तँ मरिये जायत।

बड़ जनमारा जाड़ छलैक, अंग-अंग कनकनबैत। शीतलहरी दाबल पयरेँ अन्हरिया चादर ओढ़ने धरतीकेँ अन्हार उघाड़ि-उघाड़ि क' छूबि रहल छलैक आ शीतलहरीक सर्द हेमाल स्पर्शसँ धरतीक अस्थिपंजर कनकना रहल छलैक। आ चन्दर ओहि कनकनीमे एकटा छोट हाफपैन्ट आ हाफ शर्ट पहिरने खाली पयरे ओससँ डूबल धरती पर ठाढ़ थरथर काँपि रहल छल। कसिक' दाँतपर दाँत बैसा लेने छल, तैयो दाँत कटकटा उठैत छलैक। दुनू हाथ रगड़िकऽ गर्म करबाक बेकार चेष्टा सेहो जारी रखने छल। पैंट-कमीज वर्षा भऽ गेल रहैक आ उघरल टाँग सुन्न भेल जा रहल छलैक। ओहि छोटका हाफ पैंट मे चन्दर अपनाकेँ नग्न अनुभव करैत छल। ठेहुनसँ एक बीत ऊपर उठल पैंटसँ निकलैत अपन अथाह म' रहल लम्बा-लम्बा टाँग ओकरा बड़ बीभत्स आ हास्यास्पद लगैत छलैक। बड़ लाज होइक। होइक जे कतहु नुका रही। तैयो सदिखन ओकरे पहिरने रह' पड़ैत छलैक आ एकटा पराजित विद्रोह मोनेमन भभकिक' शान्त भ' जाइत छलैक। ओ पैंट पहिरलापर ओकरा लगैक जेना ओ आदमी नहि, खेतमे उपद्रवी जानवरकेँ डरयबाक हेतु गाड़ल घासक मनुक्ख छल, जकरा फाटल-चीटल छोट सन कपड़ासँ झाँपि देल गेल छलैक। आदमी नहि आदमीक नकल, एकटा बीभत्स अनुकृति।

अन्हार शीतलहरीक स्पर्शसँ काँपैत रहल आ थरथराइत, ढलकैत राति ससरैत रहलैक।

चन्दर किछु स्थिर नहि क' सकल। ओहि जनमारा सर्दीमे पानिमे पयर देबाक साहस नहि होइक आ पुल पर बाटे घूमिक' जयबाक विचारे पयर भरिया दैक। कोखन सोचय—कपड़ा उठा पानिमे पैसैत छी, गोली मारौ जाड़केँ, गलि

घोड़े जायब।' आ कोखन सोचय—'एक बीत करेक होइत छक। पुलेपर बाटे चल जाइत छी। अनेरो जाड़ ठाढ़मे पानि किएक हेलू?' एहि गुनधुनिमे घण्टो ओहि मोटका धुरपर ठाढ़ चन्दर शीत चटैत रहल। ने डेग आगू बढ़लैक, ने पाछाँ ससरलैक।

समय छिड़ैत गेलैक। दिन भरि स्वर्णिम किरणक मोलायम पाँखि पर उड़' वाली धरती सिकुड़ल-सिमटल थरथराइत रहल।

खाली पयर ठाढ़ भेल तरवा बहीर भऽ गेलैक। खाली पयर चलबाक अभ्यास छलैक, मुदा ओहि कनकनीमे सभटा अभ्यास झूठ आ अंग-अंग सुन्न भेल जाइत रहैक। फूजल कानपर सर्द लहरि अपन जोरसँ वेधा रहल छलैक आ चन्दरक नाक मदबारिक मेघ जकाँ चूबैत जा रहल छलैक। चन्दर ठेरा गेल भेलैक, जेना कनियो देरी होइक तँ जमीनसँ सटि जायत। डेग उठबे नहि करतक। जमिक' बर्फ भ' जायत।

पानिमे हेलबाक विचार स्थगित कर' पड़लैक। पुलक रस्ता धयलक। लम्बा-लम्बा डेग भरैत दुनू हाथसँ कनपटी, कान आ मुँह रगड़ैत रहल, मुदा गर्म हेबाक बदला अंग-अंग सुन्न भेल गेलैक।

रस्तामे श्मशान पड़ैत छलैक। श्मशान मे बुढ़वा पीपर मुँह उठौने गुमसुम ठाढ़ छलैक। ओकर तीनू सुखायल डारि शून्यमे एकटा विचित्र सन नक्शा बनबैत छलैक। लोक अन्हारमे ओकरा देखिक' डेरा जाइत छल। लगैत छलैक जेना पीपड़ पर तीनटा विशाल दैत्याकृति ठाढ़ होइक। अन्हारो रहलापर पूर्वाभ्यासक कारणे चन्दर तीनू डारि केँ स्पष्ट देखलक।

श्मशानक दोसर पीपड़ पर किछु फड़फड़ा उठलैक। चन्दर कनेको भयभीत नहि भेल। ओकरा बुझल छलैक जे ओहि पीपड़ पर घोड़करैत राति भरि फड़फड़ाइत रहैत छैक। मुदा आश्चर्य भेलैक। जाड़ ठार मे साँप-कीड़ा अपन बोंगरि धऽ लैत अछि, त्यन ओ घोड़रैत किएक फड़फड़ाइत छलैक।

बीच श्मशान मे आबि देह सिहरि उठलैक। चन्दर डरबुक नहि छल। मुदा भूत प्रेतक अस्तित्व मे ओकर अखण्ड विश्वास छलैक। अपन गाम मे कतेको ओझा गुणीकेँ भूतप्रेत झाड़ैत देखने छल। भूत-प्रेतक अस्तित्वक संग-संग ओकर भलमनसाहुतियो पर चन्दरक अटूट आस्था छलैक। भूत-प्रेत अनेरो तंग नहि

करैत छल—चन्दर अदिचन बाजय। भूत-प्रेतक अलमनसाहुति पर विश्वास रहबाक कारणे चन्दर राति-बिराति सम कुठाम चल जाइत छल। मुदा तैयो ओकर देह सिहरि गेलैक। एना कहियो कतेक बेर भेल रहैक। चन्दर अपन अभ्यास वश ठोर पटपटाक' गायत्री पाठ कर' लागल। आँखि बन्द भ' गेलैक मुदा डेग आगू बढ़िते गेलैक।

श्मशानक दोसर छोर पर आबि चन्दर आँखि खोलि तकलक। सन्न रहि गेल। किछुये दूर पर तीनटा चुड़ैल ठाढ़ि छलैक। अन्हार मे ओकर उज्जर सपेत नूआ तेना चमकैत रहैक जेना पाठशाला मे ब्लैक-बोर्ड पर खड़ीक चेन्ह। तीनू किदन सभ भनभनाइत रहैक जाहि मे नाकक ध्वनि स्पष्ट रहैक। डरे फेर आँखि मूनि लेलक। गायत्री पाठ शुरू कयलक। डेग आगू रखैत ओकरा भेलैक जेना सामने ठाढ़ मृत्युक मुँह मे बढ़ल जा रहल छल।

समीप अयला पर स्वर किछु परिचित सन लगलैक। आँखि खोलि देखिते चन्दर चीन्हि गेलैक जे तीनू पतुकटोलीक मौगी छलैक जे निकासक हेतु ओम्हर आयल छलैक। निकासक सुविधा नहि रहबाक कारणें ओ सभ निकासक हेतु धारक कात आबि जाइत छल, भोरे किरिन फुटबासँ पहिने वा रातिक' अन्हार पसरलाक बाद।

डर कम भेलैक तँ चन्दरकेँ हँसी लागि गेलैक। ओहैत मौगीकेँ चुड़ैल बना देलकै ओ? कतेक डेरा गेल छल? अपन कमजोरी पर लाजो भेलैक।

पुल पार करैत चन्दर देखलक, सिगनल भ' गेल रहैक। गाड़ी जे घड़ी मे पहुँचलैक। पथरक गति बढ़बैत पानिटंगे मुश्किल पड़ल भोड़ैक सन रेलकीकें टीहुपौलक। मात्र सैंतालीस नबका पैसा। पूरा टिकटक दाम एक रुपैया। आधा टिकट पचास नबका पैसा। ताहूमे तीन नबका पैसा कम। आधा टिकट पर टी० टी० टोकहो लागल छलैक। कहीं पकड़ियो ने लैक। चन्दर चिन्ता मे पड़ि गेल—कोना गाम पहुँचत? लगलैक, जेना लाइनक बीच आ कात मे बिछाओल पाथर उड़ि-उड़ि क' तड़ातड़ ओकर देह पर बरसि रहल छैक। चन्दर विवश निरूपाय मायक केश नोचं लागल। डेग थकथका गेलैक।

गुमती पर अबैत-अबैत ट्रेन हड़हड़ाइत स्टेशन पर आबि गेलैक। दौड़ि क' ट्रेन पकड़बाक चेष्टा नहि कयलक। बिनु टिकट जयबाक साहस कहाँसँ अबैत?

मालिकसँ विदा होइत दोबारा सप्पत खाइत संकल्प कयने छल जे घुरि क' औत' नहि आओत। भले केहनो दुर्दिन आबि जाय। कोनो दोसर ठेकान रहितैक तँ राति बिता भोरे विदा होइत। पयरे दस कोससँ कम नहि पड़ितैक। भरि राति चलैत रहत, तँ भोरे गाम पहुँचि सकत। दोसर कोनो रस्तो नहि छलैक। चन्दर गुमतीसँ नीचा उतरि टेढ़-मेढ़ एकपेरिया बाटे बाधे-बाध गामक रस्ता धयलक।

अन्हारमे पयर बेर-बेर पिछड़ि जाइक। खस' लागय। मुदा अपन निश्चय पर अड़ल रहल। घुरि क' मालिक नहि जायत। रातिक अन्हार, कीड़ा-मकोड़ा वा भूत-प्रेत—कथुक भय चन्दरक संकल्प नहि तोड़ि सकलैक। निर्भय आगू बढ़ैत गेल। ओकरा विश्वास छलैक जे प्राणनाशक जन्तुओ कानितु जानकेँ चिन्हैत छैक आ ओहि पर अपन घातक अपव्यय नहि करैत छैक।

"एक बेर आइये पड़तीक चन्दर। दोसर कोनो रस्ता नहि छैक। हम सभ ठाम हाथ पसारि थाकि गेलियौक।" माय एना कहलैक, जेना कनैत होइक जे चन्दरक मोनकेँ ठेस लगलैक।

चन्दर छटपटा उठल आ मायक डबडबायल आँखि देखि मोन भेलैक जे दुनू आँखिसँ बहैत ममता अपन आँजुर मे भरि बुन्द-बुन्द क' पीबि जाय।

"तोँ चिन्ता नहि कर माय, हम जयबो आइये चल जयबो।" चन्दर बाजल कण्ठसँ बाजल आ पपनीक तर मे डबडबाइत अश्रुकेँ मायक दृष्टिसँ बचयबाक हेतु शीघ्रतापूर्वक दलानमे चल आयल, जेना कोनो बरिसबा लेल आतुर मेघ धरती पर झुकैत-झुकैत हवाक झोंका पर दूर फेका गेल हो।

माय बड़ी काल धरि ओम्हरे तकैत रहलैक जेम्हर चन्दर अचानक हाथसँ छूटल बकरा जकाँ पड़ा गेल छलैक आ ओ तेना स्तब्ध ठाढ़ि छलैक जेना कोनो माय अपन अबोध रुग्ण शिशुकेँ दवाक धोखा मे जहर पिया देने होइक। अपन बेटाक भलाइये सोचि ओ जयबाक बात कहने छलैक। ई जनैत जे ओकरा दुख हेतैक। किएक तँ ओकर धारणा छलैक जे ई दुख सहि लेला पर ओ जिनगी भरि दुखक कँटाह झाड़मे ओकरा क' ओझरौटि-ओझराम हैबासँ बाँचि जयतैक। ओ जनैत छलि, चन्दर ओकर बात नहि टारतैक, तेँ जयबाक बात कहने छलैक। मुदा कहि देला पर ओकर आकृति पर उभरल दर्दक छटपटाइत रेखा देखि ओकरा लगलैक, जेना अपने हाथे अपन पुत्रक घेंट दबा मारि देने हो।

"माफ क' दिहैं, अपन निरूपाय मायके माफ क' दिहैं बन्दर। अभागलिक ममताक कोनो मोल नहि। लगातार तोहर मायक मोन मे जतेक ममता, ओकर छाती मे जतेक दूध देलकैं, तकर आधो यदि सामर्थ्य दितैक।" माय एकसरि ठाढ़ बड़बड़ा उठलैक। ठोरबड़ी कान धरि काँपैत रहलैक। आँखि शून्य मे पथरायल जकाँ अँटकि गेलैक। लगैक, जेना कोनो निष्प्राण प्रस्तर-प्रतिमाक ठोर थरथर काँपि रहल होइक।

पश्चिमी आकाश पर सूर्य तेँ दिनक चिर रोगी जकाँ आखिरी साँस गनि रहल छल आ किछु-किछु झलकैत लाली नेहुन लगैत छलैक, जेना मुक्तिक सम्भावना मात्रसँ चिर रोगीक आकृति पर प्रसन्न हँसी पसरि गेल होइक।

बन्दर सप्पत खयने छल'''''मामा गाम नहि आयब। ई जनैत जे सप्पत राखब मश्किल छलैक। ओकर दुनू जेठ भाइ मायकेँ अपनसँ पोसायल छलैक आ ओ स्वयं बरखो बिता आयल छल। गाम मे बँचल-खुचल जमीनसँ मायेक निर्वाह कठिन छलैक। ऊपरसँ मश्किल ई जे जेठ भाइ मात्रिक मे बरखो बिता पाँचम वर्गसँ आगू नहि बढ़ि सकलैक। नहि जानि केहन मोह भ' गेलैक। पाँच बरख एकेटा क्लास मे बिता मायक कपार पर आबि बैसलैक। दोसर भाइ तेजगर रहैक, मैट्रिक पास कयलकै, मुदा दुखिया मायक दुख दूर करबाक बदला ओकर भुजबी-भुजबी मेल करेज मे एकटा आर काँट भोंकैत अ सास्य रोगक फेर मे पड़ि गाम आबि बैसलैक।

बाँचि गेलैक बन्दर—आसक अन्तिम किरण। अन्हरिया रातिक एकाकी तारा।

मायक दूध छुटलैक, त' गामो छूटि गेलैक। मात्रिक मे अनिमन्त्रित पाहुन जकाँ उपस्थित भेल बन्दरक स्वागतार्थ क्यो नहि बहरयलैक। ने क्यो स्नेह-पूर्वक नाम पुछलकै आ ने कोरा मे उठा दुलारसँ चुम्मा लेलकै। खाली बुढ़िया नानी अपन उजड़ल-बिखड़ल छातीसँ सटा बड़ी काल धरि हुचकैत रहलैक।

बन्दरक नाना चारि कोसक राजा छलै। नाना नहि रहलैक। राजो नहि रहलैक, मुदा तैयो कोनो वस्तुक अभाव नहि छलैक। पैघ मकान, पैघ

पोखरि, पैघ दरबज्जा, पैघ आङन, पैघ आश्रम, पैघ-पैघ लोक आ एहेन राशि पैघ-पैघ वस्तुक बीच एकसर दुबकल छोट-छीन बन्दर।

भोरसँ दुपहरिया धरि आ साँझसँ निस्तब्ध राति धरि बन्दर चारूकात अपस्याँत दौड़ैत रहय। सम्पूर्ण परिवार ओकरे आस पर रहैक, बन्दर ई ला, बन्दर ओ ला, बन्दर एत' जो, बन्दर ओत' जो। बिना बन्दरक ककरो निबहता नहि छलैक।

—"बन्दर फूल तोड़ि ला।" भोरे आँखि मलैत नानी कहैक।

—"बन्दर कने ओइ पार सँ हमर दवाइ आनि दे।" किरिन फूटैत बड़का मामा कहथिन।

"बन्दर कने खेतपर चल जो।" छोटका मामा कहथिन।

"बन्दर, कने भगवानक पूजा क' ले।" थाकल-ठेहिआयल बन्दरकेँ मामा कहि बैसथिन।

आ सूर्य माथ परसँ उतर' लगैक त' नानी छाती पीटि-पीटि क' चिकर' लगैक—"रक्षसबाके भूखो-पियास नहि लगैत छैक। हजारो बेर कहलियैक जे पहिने पानि पीबि ले, तखन मर जा' मरबाक होउ। मुदा हमर के सुनैत अछि?"

नानी थारी परसि सामने राखि दैक। भरि पेट खयबाक संग-संग नानीक दुलार, बन्दर तृप्त भ' जाय।

खाइत-खाइत एक बात्रि आइक आ तकर बाद स्कूल जयबाक हेतु ने पयर मे शक्ति बचैक ने मोनमे इच्छा। मोन करैक जे कतहु आँखि मूनि पसरि जाय। सभ दिन देरीसँ जयबाक लेल मास्टर डँटैत छलैक। किताब नहि रहलाक कारणेँ कतेको बेर बेंत लागि चुकल छलैक। बन्दर कतेको बेर कहलक, मुदा आङनमे क्यो कान नहि देलकै। डाँट सुन' आ मारि खाय लेल स्कूल जायब बन्दरकेँ नहि रूचैत छलैक। अनठा दैत छल। बस, समटा दोष ओकरेपर आबि जाइत छलैक। ककरो पुछलापर घर भरिक लोक एक स्वरसँ बाजि उठैत छलैक—"ओकर मायमे तँ गोबर भरल छैक, पढ़त की खाक'? आ ऊपरसँ स्कूल जयबाक नामपर बोखार सेहो लगैत छैक।"

तँयो चन्दर संतुष्ट छल। भरि दिन खटलापर भरि पेट अन्न भेटब ओकरा लेल सौभाग्य छलैक। बेसीक ओकरा आकांक्षा नहि छलैक। मात्र कोखन अपन ममियौत भाइ-बहिनकेँ नीक खाइत, नीक पहिरैत देखि मोनमे किछु कचकि उठैक। कोखन संगहि भोजन कर' बैसलापर अपन आ ओकरा सभक थारीक फर्क देखि इच्छा होइ जे थारी छीनिक' खा लेअय, मुदा मुँहमे भरि आयल लेर घाटि क' रहि जाय।

दिन बितलैक।

राति ससरलैक।

आ कतेको बरख बीति गेलैक।

मामाक परिवार विशाल भ' गेलनि। आमदनी घटैत गेलनि आ खर्च गमरैत रहलनि। रहन-सहनक स्तर उठैत गेलनि आ फलस्वरूप अन्न कोट' आ लुटाइ' बला घरमे बेसाहो लाब' लगलनि।

नानी प्राय: बेहु दिन देखबा लेल अँटकल छलैक। सभ किछु देखि-सुनि विदा भ' गेलि - चन्दरक एक मात्र स्नेहाश्रयकेँ उजाड़ैत।

ओकर क्रिया कर्मसँ फुरसति भेटलनि तँ मामा लोकनि दोसर चिन्तामे लगलाह। सम्पत्ति आ घर घड़ारी बाँटि लेलनि। मुदा एकटा पेंच समस्या सामने आबि गेलनि—चन्दरक समस्या!

"आब चन्दरक कोन व्यवस्था हेतैक।" बड़का मामा पुछलथिन!

"ओ तँ रहबे करत! बाँर कत' जायत?" छोटका मामा कहलथिन!

"मुदा ओकर खर्च?" बड़का मामाक प्रश्न छलनि!

"दुनू गोटे उठा लेबैक। पौनबरामे रहत।" छोटका मामाक समाधान छलनि।

चन्दर पौनबरामे रहि गेल। दुनू मामाक काज देखनि आ भोजन एक मास बड़का मामा देथिन आ एक मास छोटका मामा।

मुदा एहि व्यवस्थामे असुविधा बढ़ि गेलैक। काज सेहो बढ़ि गेलैक। ऊपरसँ भरिपेट भोजनोमे कटौती होब' लगलैक। आजधरि तँ ओकर पेटक तुलना कोहा आ बोरासँ होब' लगलैक। भरि-भरि दिनक खटनी, आधा पेट भोजन। चन्दरक मोन टूट' लगलैक।

आ एकदिन तेहन घटना भ' गेलैक जे मारिकते टिकब अपमानजनक बुझि पड़लैक।

ओहि दिन थारी सामने अयलैक तँ परसन आधो पेटक हेतु यथेष्ट नहि छलैक। थारी परसन मड़लकै तँ ओकरासँ छोट ओकर ममियौत भाइ दीपक खुलखुआ लेलकै, पेटाहु कहि बैसलैक।

"तौं बीचमे नहि बाज। तोरासँ नहि मङकियौक अछि।" चन्दर ओकरा रोकलकै।

—किएक नहि बाजब हम? हमरे खा क' हमरे पर रोआब? पेटू नहितन। भरि बट्टुक भात खा गेलहुक, आब की हाथी-घोड़ा खयबेँ?

"चुप रह दीपक! तोहर मुँह नहि लगैत छियौक हम?"

"तोरा सन एक-तेककेँ मुँह लगबिते के अछि? बैसल-बैसल अन्न गीड़ैत छेँ। 'बड़ आनिबला छेँ, तँ अपन घरक रस्ता किएक ने लैत छेँ?" दीपक चुनौती देलकै।

तामसे आँखि नोरा गेलैक। जबर्दस्ती रोकल तामस नोर बनि टघरि गेलैक। अपन विवशता, दारिद्रय आ दुर्भाग्यपर पहिलबेर मोन भरि कानल चन्दर जेना कोनो बाल विधवा अपन वैधव्यक कतेको बरख बित, सज्ञान भेलापर अपन दुर्भाग्यपर कानि उठैत अछि।

आ कनैत-कनैत चन्दर संकल्प कयलक जे मात्रिकमे नहि रहत। भूखेँ मरि जायत, कष्ट सहत, मुदा घुरिक' मामा गाम ता' धरि नहि आओत जा धरि पढ़ि-लिखि कोनो योग्य नहि बनि जायत।

ओही दिन गाम आबि आयल चन्दर। मामा-मामी लोकनि किछु उदास छलथिन। मुदा ओ उदासी वियोगक दु:खक परिचायक नहि छलनि। ओहिमे मात्र एकटा चिन्ता छलैक जे चन्दरक अभावमे एतेक पैघ गृहस्थीक टहल-टिकोरा के करत। चन्दर अपन महत्व बीनहि गेल छल।

घुरिक' मात्रिक नहि गेल चन्दर। कोनो ने छलैक जे मामा गाम गेना कतेक वर्ष भेलैक।

आ मात्र फेर ओतए ओकराक बात कहि बैसलैक। चन्दर नीक जकाँ अनुभव कयलक जे दोसर कोनो रस्ता नहि छलैक। मात्रिक छोड़ि देलापर दिन राति

अथक परिश्रम करैत चन्दर अपन पढ़ाइ जारी रखने छल– पूर्ण उत्साह एवं मनोयोगक संग । मैट्रिकमे आबि गेल छल । बोर्डक फीस देबाक छलैक । माय सभठाम हाथ पसारि निराश भ' गेलैक । अन्ततः निरुपाय नहि भेने ओ चन्दरकें अध्ययनक कथा नहि कहलैक । ओ चन्दरकें नीक जकाँ चिन्हैत छलैक ।

"हम जायब, अवश्ये जायब......।" चन्दर निश्चय कयलक ।

× × ×

"बड़कीटा भ' गेलें चन्दर ।" प्रणाम करबा लेल झुकल चन्दरकें ध्यानसँ देखैत बड़का मामा कहलथिन ।

"आब त' विवाह कराब' पड़त तोहरा" मामी हँसी कयलथिन ।

"हमरा सभकें बिसरिये गेलहुँ चन्दर । फुरसत पुछारियो धरि ने कयलहुँ कहियो ।" बड़का मामाक पुतोहु, चन्दरक भौजी उलहन देलथिन ।

चन्दर दबि गेल, छोट भ' गेल । एकके संग अपनत्व आ स्नेह भरल एतेक बात चन्दर कहियो नहि सुनने छल । स्नेहक भूखल चन्दर कान'-कान' सन भ' उठल –गदगद, भावातिरेकमे विह्वल ।

साँझ भ' पहुँचल छल । राति कोना बितौलक चन्दर नहि बूझि सकल । मायकमे ओतेक स्वादिष्ट भोजन ओतेक आग्रहसँ कहियो ने खयने छल, सुतबा लेल ओतबा नीक बिछाओन कहियो ने भेटल छलैक । भरि राति टाङ पसारने सूतल रहल ।

राति बितलैक ।

दिन उगलैक ।

—"चन्दर कने ओहि पारसँ हमर दबाइ ल' आ ।" बड़का मामा अपन कोठलीसँ बाजि उठलथिन ।

"चन्दर, कने खेतपर चलि जो, धनकटनी छैक ।" छोटका मामा दतमनि करैत कहलथिन ।

"चन्दर कने पूजा क' दियहक ।" भनसाघरसँ मामी बाजि उठलीह ।

"चन्दर कने बच्चाकें घुमा अबियौक ।" अपन दू बरखक बेटीकें कोरामे दैत भौजी कहलथिन ।

चन्दरकें लगलैक, जेना राति सपना देखने छल । ओ त' वैह चन्दर छल जे अपन कौतूहल-जानल मामा गाममे घर-बाहर अपस्याँत दौड़ि रहल छल ।

सप्ताह बीति गेलैक । मुदा चन्दर अपन अयबाक उद्देश्य प्रकट नहि क' सकल । आठम दिन अपन अयबाक चर्चा चलौलक । सभक मुँहसँ एकहि बात बहरयलैक—"तों एतहि रहि जो चन्दर । हमरा लोकनिकें एकटा आदमी चाहबे करी, दौड़-धूप करबा लेल । फेर तों तँ अप्पन लोक छें । गोसयाँमे रहबें । कोनो तकलीफ नहि हेतौक ।"

चन्दरक मुँहमे कोनो कठाह गप्प आबिक' रहि गेलैक । अपनाकें संयत रखैत सभकें नम्रता पूर्वक एतबे कहलकें– "बहुत दिन देखना भ' गेल छल, तें मोन भेल जे सभकें देखि आबी । सभसँ भेट भ' गेल, आब जाय भेटय ।" आ शीघ्रतापूर्वक सभकें प्रणाम क' आङनसँ बाहर आबि गेल ।

पहिने बभनटोली, तखन धनुखटोली, फेर शिव मन्दिर आ अन्तमे गामक सिमानपर बहैत बागमती ! चन्दर बढ़िते चल गेल ।

घुरतीमे उतरि एकपेरिया धयलक आ वामे-वाम गामक रस्ता पकड़लक ।

दूर धरि पसरल अन्हारमे डूबल खेतमे एकटा सर्द चुप्पी व्याप्त छलैक । चन्दरक अस्तित्व ओहि अन्धकारमे पूर्णत क्रमशः विलीन भ' गेलैक ।

अन्हार जमकल रहलैक । ◉

फरवरी १९९४

गिरगिट

पोस्तोसँ कहियो ई नहि सोचि सकलहुँ जे हम तोरा बिना मरल जाइत छियौक ! जखन तोरा हमरा लेहाज नहि छौक तखन हमरे कोन फिकिर अछि ? दू बरख बीति गेल, ने कोनो चिट्ठी, ने कोनो समाद ! जेना निपत्ता छें जेना अंगरेजिया कौंटीक नोंचवाँ सेन्ट्रल रेल, तकलो पर भेटब मश्किल ! निपत्ता छें, त' रहल कर । ताहिसँ हमरा की ? तोरा की बुझाइत छौक जे हम तोरा लाल' सेल जमीन आसमान छानि मारबौक ? कहियो अयनामे अपन चेहरा देखने छें ? नहि देखने छें, तँ आब देखि ले ! भूत बैसल जकतौक ! साग, बैमान !

तोहर चालि हम ठीक जकाँ चीन्हि गेल छियौक । भेटबे त' तेना जेना कहियो फराके नहि भेल रहीं, जेना दूधमे पानि, फराक-फराक अस्तित्वे ने रहि जाय जेना । वियोगक विस्तारकेँ अपन मस्त हँसीसँ पाटि देबें आ झपटा मारि-उपरागकेँ चुम्बन-आलिंगनक आड़िमे नुका देबें । जाइत काल गरा जोड़ि क' कहबें आ हफ्तामे दू टा चिट्ठी लिखबाक सप्पत खयबें । तोहर मस्त हँसी तोहर चल गेलाक बादो हमर चारूकात छिड़ियाएल रहत, एहन भ्रम बेर-बेर होइत जे तों कतहु लगे मे छें, हमर अत्यन्त समीप । आ मस्तीक हँसी क्रमशः घटैत-घटैत शेष होइत, बिला जाइत आ तखन महिना दू-मास धरि कोनो खोज नहि रहत जे तों जीबैत छें कि मरि गेलें जेना पत्रकि जाइत छें जेना हिमालयक चोटी पर योगीक जकाँ, सर्वथा अप्रत्याशित ! आइ कतबो हाँहिक भरोसे उदयपोहइत हमर सांसक निश्वासँ निश्चिन्त पगरी अपन करेजमे सटने बेर-बेर कहबें—"पहिने मरिजाँव छातीसँ लगाय' दे, तखन कोनो बात । युग बीति गेल तोरा देखना ।" फेर कने दूर हटि ध्यानसँ हमरा देखैत मुसकिया उठबें ! तोहर मोहक मोहक कोन पत्रिका' नाम भ' जयतौक आ हमरा फेरसँ अपन आलिंगनमे समेटैत कोनो फिल्मी नायक जकाँ बाजि उठबें—"तोहर रंग तँ दिन-दिन निखुरिये भेल जाइत छौक ।"

हमर दबाक' राखल क्रोध भड़कि उठल । तोरा जोरसँ झटकैत कहलौक —"चल हट, सार ! एखन तोहर प्रेम उमड़ि रहल छौक ! एतेक दिनसँ कहाँ मरि गेल छलें ?" तों ओहिना मुसकियाइत रहलें, विश्वासपूर्वक, सहज भावसँ जेना हमर क्रोधक क्षणिकतापर अतिशय विश्वास रहौक । ओही अन्दाजक स्टाइलमे कहलें—"बिगड़लापर तोहर मुँह आर नीक लगा जाइत छौक, विश्वास नहि होउ, तँ अयना देखा दियौक !"

भीतरसँ हुमड़ैत हँसीकेँ बड़ मश्किलसँ जाँति हम कोपित मुद्राकेँ कायम रखबाक प्रयास करबौक, मुदा तों नहि मानबें ! हँसाइये क' छोड़बें ।

"देख, पहिने हमर एकटा बात सुन । बहुत दिन धरि बबरीमे फुलायल रहलाक बाद जे फान बहराइत छैक से केहन लगैत छैक ? अनमन तोरे सन । कहीं हमर नजरि ने लागि जाउ ! रहलौ चिट्ठी नहि लिखबाक उपराग, से विश्वास कर, सब दिन तोरा चिट्ठी लिख' बैसैत छियौक मुदा लिखि नहि होइत छल । कलम उठबिते लगैत छल, जेना कान' लागब । इच्छा होइत छल जे उड़ि क' तोरा लग चल आबी । सुन, एकटा बात कर ! आ, हम तों मिलि क' भगवानसँ प्रार्थना करी जे दू टा प्रेमीकेँ उड़ि क' एक दोसरक लग जयबाक हेतु पाँखि सेहो देल करथिन । दुनिया भरिक लैला-मजनू हमरा तोरा आशीर्वादक बोझसँ दाबि देत ।"

हम भजाक' हँसि देलौक, जेना बान्हल पानि बाट भेटलापर हुड़ात' बह' लगैत अछि । बड़ी काल धरि हुहुरैत रहल ओ हँसी । आ अन्तमे अपन पाकिटसँ एकटा फोटो बहार क' हमर तरहत्थी पर रखैत कोनो नवकनियाँ जकाँ लजाइत बाजि उठबें—ले, अपन भौजीकेँ देख... — ।

ई गट्टो फकरो बानवेँ पढ़बियहिक यार ! हम तोहर चुट्टी-चुट्टीकेँ चिन्हैत छियौक । सार, ई फोटो हम कोन स्टुडियोक आलमारीसँ चोराक' अनैत छें ! फुटानीक हद क' देलें तोंहू ! प्रेमक झूठ-फूस किस्सो सुनयबाक लेल हमहीं भेटैत छियौक । चोरा नहितन ।

पछो कहैत छल जे बनारस गेल छें । बनारस आ कि बाराबंकी, हमर बलायसँ । मर, जत' मरबाक होउ ।

काज ! काज !! काज ! जेना तों एकटा लेबोरेटरी असिस्टेंट नहि, आणविक शक्तिक नवीनतम परीक्षणमे व्यस्त रूस आ अमेरिकाक कोनो श्रेष्ठतम वैज्ञानिक रहह जकरा (हो) पता नहि रहैत छैक जे ओकर आविष्कार सृष्टिक केहन-केहन विध्वंस करैत छैक। चल, मानि लैत छियौक जे श्रम काज कयलासँ जीवन शक्ति क्षीण होइत छैक। मुदा इहो जानिते छें बाउ, जे अधिक काज कयलासँ मृत्यु समयसँ पहिने घराओड़ी दैब' लगैत छैक। मरबें त' लोग पछतौक जे कोनो अपन लोक कुधियारीवला बात कहने छल !

अनुका खेल एतबे काफी छौक ! निर्लज्ज तें तों पुरान छें। मुदा कोनो मनमे जरूर लाज बोधस हेतौक।

आब एकटा सत्त बात सुनि ले— सबा सोलहु आना।

जखन कखनो एकान्तमे बैसि अतीतक परछाइँ के छुबाक अहुधक प्रयास करैत छी, परछाँही हाटिक' दूर, बहुत दूर पड़ाइत चिला जाइत अछि। हमर पसरल बाँहि छलछिक' रहि जाइत अछि, आन्हि नहि पबैत अछि ओकरा ! परछाँहीक आकार, नाम, तकेक बाम भ' जाइत अछि जे ओकर स्पर्श असम्भव भ' जाइत अछि। चुपचाप अवश-विवश बैसल पसरैत-समटैत अतीतक परछाँही देखि कोनो कोमल क्षणक स्मृतिसँ अपन मोनकेँ परतारि लैत छी।

आ अतीतक अन्हार बाटपर छिड़िआयल जाहि कोनो बीतल क्षणकेँ टोहियबैत छी, ओहि प्रत्येक क्षणमे तों जीवित छें, हँसैत छें, ठहाका लगबैत छें। ओहि क्षणमे तोहर मस्त ठहाकाक अतिरिक्त किछु नहि रहैत छैक। एहन लगैत अछि जेना हमर व्यतीत तोरे हँसीमे बन्दी बनल हो।

तोरा हेतौक जे दस टा गारि सुनौलाक बाद ई सुच्चा समनभूत देखाक' पतरारि रहल अछि ! मुदा विश्वास कर, हम सत्त बात नहि रहल छियौक, एकको मिसिआ झूठ नहि। एखन जखनो अवकाशक क्षण हाथ अबैत अछि, अतीतक स्मृतिमे तोरा ताकि भरि मोन गप्प क' लैत छी !

हम जनैत छी जे हमर एहि बातपर तोरा विश्वास नहि हेतौ ! सोचबें जे दिनभरि कॉलेजमे क्लास कयलाक बाद जहाँ-तहाँ ,ट्यूशनक अतिरिक्त

काजे कोन अछि ? आब तोरा कोना कहियौक जे परिस्थिति कतेक बदलि गेलैक ! तोरा अपन दिलचस्प भुनभुनोंक' विश्वास नहि हेतौक ? सोचबें, सार गप्प हाँकि रहल अछि। मुदा ई कनिको झूठ नहि छैक जे अन्हारे उठि, नहा-धोक' तैयार होइत छी जे भोरमे अपन किताब देखलाक बाद आठ बजेसँ दस बजे धरि ट्यूशन क' सकी, मात्र तीस रुपैयाक हेतु ! साढ़े दससँ चारि बजे धरि एम० ए०क क्लास करैत छी। फेर साँझमे दू टा ट्यूशन ! एकटा पाँचसँ सात आ दोसर सातसँ नौ बजे धरि, मात्र तीस आ पचास रुपैयाक हेतु। एहि सब रुपैयामे मास भरिक खर्च चलब' पड़ैत अछि। परन्तु रुपैया नहि अबैत अछि ! भोरसँ राति दस बजे खटलाक बाद धरि राति निश्चित सुतैत छी—सपनाक निन्न नहि, मुर्दाक निन्न ! प्रत्येक राति आ प्रातमे आबये फर्क होइत अछि, जतबा एकटा मृत्यु आ पुनर्जन्ममे ! रातुक मुर्दा भोर होइत मशीनक बान्हल गतिसँ काज शुरू क' दैत अछि, ओहि सूर्यक संग जे राति भरि मृत्यु क' भोरे अपन माथापर वहुरा जाइत अछि।

तों फेर हँसबे जे भाजि रहल अछि। स्कूलमे जकरा घरसँ दुइ सय रुपया मास खर्च अबैत छलैक से एम० ए०मे आबिक' सय रुपैयाक हेतु छौ घंटा ट्यूशन किएक करत ?

ई भाग्यक क्रूर परिहास अछि। आइ पहिल बेर तोरा एकटा सत्त बात कहि दैत छियौक जे तोहर एहि नवाब दोस्तक बाप एकटा गरीब आदमी छैक, औसत हिन्दुस्तानी जकाँ रोटी कमयबाक हेतु दिन राति खट'बला बुद्धिजबी। तोहर ई भाग्यहीन दोस्त सौभाग्यवश ओहि बापक सभसँ पैघ बेटा छैक जे ओकरा राजकुमार जकाँ पोसलकै, प्रायः एहि आशापर जे ओकर बेटा एकदिन असली राजकुमार बनतैक आ ओ एकटा राजा बेटाक भाग्यशाली बाप बनबाक गौरव प्राप्त करत। मुदा तोहर दोस्त किछु नहि बनि सकलौक—एकटा आदर्शवादी भीरु नवयुवक, हवाक झोंका पर उड़ैत सुखायल पात।

आ ई जुआनी हमरा पर बड़ अन्याय कयलक अछि। जीवैक वास्तविकतामे परिचय करा देलक अछि, कल्पनाक आकाशसँ यथार्थक खजभूमिमे उतारि देलक अछि। किछु-किछु अज्ञान भेल जाइत छी। आ ई ज्ञान दिनमे ओकर मस्ती आ रातिक स्वप्नक निन्न छीनि नेने अछि। आब दिन क' कर्तव्यक बान्हल मशीनी गति आ राति क' मुर्दा निन्न। तें कहलियौक जे जखन कखनो अवकाशक क्षण हाथ

अबैत अछि, अतीतक अनुसार बाटपर छिड़िआयल कोनो सुखद क्षणकेँ बीछि तोरासँ भरि मोन गहिया लैत छी। तोहर ई काल्पनिको सम्पर्क मोनमे एकटा नव उत्साह भरि दैत अछि। तों तँ अबैत छेँ, हम पक्का बीछ छी।

तोरा की दिन मोन छौक कहिया हम डरे थरथर काँपैत तोहर डेरापर गेल रहियौक ? यद्यपि बेहदखानि तोरासँ दुगना छलियौक आ ताकतिओ तोरासँ कम नहि छल। किन्तु तँ हमरा बुझल छल जे तोहर घुस्सामे बड़ शक्ति छौक। कहाँसँ कहाँ वस्तु पड़ि जाइत छ फाये। हमरा डर छल जे कहीं तों हमर कपार दु फाँक ने क' दे ? किएक तँ हम मास्टर लग हम तोरा पर नालिश कयने छलियौक आ हेडमास्टर तोरा खूब छड़ुपिटौने छलौक।

हम गामक स्कूलसँ नव नव आयल रही। तोरासँ एकबेर मामूली गप्प भेल छल। हम शहरका तौर तरीकामे अपरिचित रही, देहाती भुच्चर। एकदिन रमेश हमरा सामने तोरा कहलकौक—"अरौ दरबा रमेन, तों हमर बिताब नहि अनलें ?" हमरा ई बात बड़ अधलाह लागल छल। रमेश तोरा सार कहलकौक, एकेक भारी बात, बहिनक गारि। मुदा तों चुप रहि गेलें। हमरा भेल जे प्रायः तों ओकर बात नहि सुनलहिक। कहलियौक—"तों नहि सुनलहिक रमेश ? रमेश तोरा बहिन लगा क' गारि पढ़लकौ।

हम अपन बात समाप्तो ने कयने रही कि तोहर कसरती हाथक जबर्दस्त घुस्सा मुँहपर लागल छल आ हम जमीनपर चितंग पसरि गेल रही। कागत सन दाँत झड़ि गेल। आँखिक आगाँ अन्हार घुप्प।

हम कनैत कनैत हेडमास्टर लग गेल रही आ नालिश कयने छलियौक। सफाइमे तों विचित्र बात कहने छलहिक। कम सँ कम ओहिदिन हमरा ओ बात विचित्र लागल छल। तों कहलहिक जे—"सार कहब कोनो गारि नहि छैक। मुदा बहिनक नाम लगा हम तोरा गारि देने छलियौक।" जकरा ठक कोनो कयलहुँ सेहो कहलक मोरा।

हेडमास्टर साहेब किछु नहि सुनलखुन। खूब पुराइ भेलौक तोहर, मुदा ओतेक मारि खाइयो क' तोहर चेहरापर कष्टक कोनो अभिव्यक्ति नहि आयल छलौक। हम आतंकित भ' गेल रही।

सःकालमे हमरा देरीलक जे हमर जयपण्यो आबि गेल। तों हमर ओठा कम सँ कम अवश्ये तोड़ि देबें जाहिसँ हम जिनगी भरिक हेतु बेकार भ' जायब, पढ़ि लिखि नहि सकब। हम गाम जायब जयबाक बात सोच' लागल रही।

ओही बीच एक दिन छुट्टी भेलापर तों कहि बैसलें—"चल, हमर डेरा चल।"

हम डरे थरथरा गेलहुँ। अपन ओंठाकेँ सशंकित भावेँ मुट्ठी बान्हि झुका लेलहुँ। कायल जेना आब पढ़ाइ-लिखाइ छूटल। मुदा तों कहने छलें—"तों तँ बड़ नीक लड़का छें। मिला हाथ, हमर तोहर दोस्ती पक्का।" मैथिली नीक बाजि लैत छलें तों।

हम डेराइत-डेराइत हाथ बढ़ौने छलियौक जे कतहु आइ ने मचोड़ि दे। मुदा बड़ आत्मीयता आ उत्साह सँ हाथ मिलौने छलें। तोहर डेरा जायमे तैयो डर लागल छल। तों हँसि क' बजलें—डेरो नहि, आब नहि पिटबौक।

हम तोहर घर गेलियौक। एकटा बड़का हातामे पैघ सन पीरा मकान उदास ठाढ़ छल। बाहर सँ लगैत छलैक केनाबरखोसँ खाली पड़ल होइ—उजाड़। देबाल पर कतेको बरख सँ पोचारा नहि करओल गेल छलैक, कतेको ठाम कारी दाग पड़ि गेल छलैक। हाता बड़ पैघ, मुदा जंगल-झाड़ आ पैघ-पैघ घास उगल। पयरे लगातार चलबाक कारणेँ मुख्य द्वार सँ मकान धरि रस्ता बनि गेल रहैक। पयरक रगड़िसँ घास खिड़ि गेल रहैक आ नीचाँक चिकनी माटि झलकैत छलैक।

हम दरबज्जा पर लजायल ठाढ़ रही। तों दौड़िक' भीतर गेलें। तोहर कुनु जेठ बहिन बाहर आयलीक आ हमर हाथ पकड़ि भीतर घीचैत कहलक—बाबरे कोनो दौड़िए आओ ! भीतरे एसो।

भीतर जा क' चुपचाप एकटा कुर्सी पर सिकुड़ि क' बैसि गेल रही। भीतर एकटा वृद्धा बैसल छलीह—तोहर माय। साठिक लगभग वयस। समटा केश उज्जर आ आँखि पर मोटगर फ्रेमक चश्मा। तों सब सँ परिचय करौलें—आमार माँ मेज दी, छोट दी "आ फेर हुनका लोकनि केँ कहलहुन"—आमार नतून बन्धु, प्रकाश।

तोहर डेरा सँ बहराइत काल हम ने खाली तोहर पक्का दोस्त बनि गेल

रहियौक, तथापि ओहि अनुसार शहर मे हमरा एकटा ममता भरल माय आ दू टा स्नेहमयी बहिन भेटि गेलि छलि। पहिलबेर तोहर घर गेलापर लागल, जेना पहिनो बेर-बेर एत' अबैत रहल होइ, घर चिन्हार अछि— ।

पहिले दिन तोरा बारेमे सभ किछु जानि लेने रही। तों अपन बाप आ माइ सभके' आ गेल छलें'। बाप शहरक नामी वकील छलथुन। मरनहिते हुनका तों सांसारिक कष्टसँ मुक्त क' देलहुन। फेर छवो भाइके' बिदा कयलहुन—एक-एक क'। खाली तीनटा पँच बहिन बाँचलि छलीक। पड़की बहिन सासुरमे छलीक, आ छोटकीक सेहो बियाह भ' गेल छलैक। मंझिली बहिन कुमारि छलीक, पचीस बरखक। हमरा सन देहातिक लेल ई बात बड़ विचित्र लागल रहए जे पचीस बरखक बड़की बहिन कुमारि छलैक आ छोटकीक बियाह भ' गेल रहैक। ओहि दिन हमरा नहि बात छल जे बाद-कालहि बियाहक हेतु कुमारि कन्याके' प्रदर्शनीमे बैस' पड़ैत छैक। सेहो ज्ञान नहि छल जे मंझिलीक कारी चामसँ छोटकीक गोर चाम बाजी मारि लेने रहैक। जो प्रदर्शनीमे चुनि लेल गेल छलि—हमर गमार बुद्धिमे सेहो नहि धँसियल सकल.......।

तोहर माय हमरा सेहो कहि देने छलीह जे कोना तोहर बापक कमाइपर तोहर कका लोकनि मौज करैत रहलीक आ कोना हुनकर बाद आँखि फेर लेलकी। दू टा कका कलकत्तामे नौकरी करैत छलीक आ परिवारक संग ओतहि रहैत छलीक। मकानमे खाली तोहर सबसँ छोट विधवा काकी रहैत छलथुन। तोहर दुनू कका हुनकर आ हुनकर दुनू बेटाक खर्च-वर्चक हेतु रुपया पठबैत छलथिन। मुदा तोरालोकनिसँ कोनो मतलब नहि छलनि। मकानक चौथाइ हिस्सा मे तोरालोकनि उपेक्षित जकाँ रहैत छलें'। ओ सभ बात सुनिक' हमर आँखि नोरा गेल छल जकरा नुकयबाक हेतु हम, जयबाक हेतु उठिक' ठाढ़ भ' गेल रही। बिदा होइत नमस्कार कयलियनि तँ तोहर माय हमर माथपर स्नेहसँ हाथ फेरैत कहलनि—"जाते ? किन्तु मौन रखो। दोनाके रोज आसते हुए......।"

नमन देने छलियनि आ बाटमे बेर-बेर तोहरबैत अपन डेरा पुरल रही—"मँझ दी......छोट दी......माँ......छोट दी......मँझ दी......माँ......।"

...तकर बाद प्रत्येक प्रात लोक सभ हमरा दुनूके' एक संग जगैत देखलक। प्रत्येक दिन स्कूल हमर तोहर हंगामा आ शैतानी देखलक। प्रत्येक साँझमे शहरक सड़क सभ हमर दुनू गोटेक पैरक ध्वनि संग-संग सुनलक। प्रत्येक राति एक दोसर

सँ चिपटल सुतल हमरा लोकनिके' अपन कोरामे समेटि दुलार कयलक। संगतुरिया सभ हमर तोहर दोस्तीपर जरि मरल आ बुढ़बासभ अनेरे टीका टिप्पणी कयलक।

तोरा हम अपन गाम सेहो ल' गेलियौक। हमर माय अपन देहाती स्वभावक

कारणे तोरा सामने आब'सँ लजाइत रहय। हमरा लोकनि खाय बैसलहुँ त' ओ केबाड़क फाँकसँ देखैत रहय। तों घुप्पे जाय लग जा पयर पकड़ि कहलहिक—"अपन बेटाके' आशीर्वाद नहि देबैक माँ ?"

आ हम छोट भ' गेल रही—एक दम बाओन। सभदिन तोहर मायके' नमस्कार करैत छलियनि; मुदा पयर कहियो नहि छुने रहियनि। हमर मायक पयर छूबि तों हमरा बाओन बना देलें'।

गामसँ घुरलाबिर रातिमे संग-संग सुतल दुनू गोटे मायक गप्प मोन पाड़िक' हँसि रहल रही कि तोहर माय लग आबि फुसफुसा क' बाजलि छलीह—"एकटू आस्ते बोलो बाबा।"

हम अचकचा क' चुप भ' गेल रही। तों फुसफुसा क' बाजल रहुँ—"ओहि कातमे हमर काकी रहैत अछि—नम्बरी खुराफाती। हमरा लोकनिके' बदनाम करबाक ठीके लेने छथि। जे क्यो एहि डेरामे अबैत अछि, सभपर सी. आइ. डी. जकाँ नजरि रखैत छथि। बहिन सभक संग झूठ-फूस खिस्सा बना लोकके' कहैत फिरैत छथिन। आब तोरोपर नजरि पड़ि गेलनि अछि। हमरालोकनि नहि किछु करैत छी, तें माथ चढ़ल जाइत छथि। हमर दोस्तके' आयब जायब अधलाह लगैत छनि, मुदा अपन घरटी भौजाइके' बैसोने रहैछीह। फुसियोके' भगतिन बनलि रहैत छथि।

तों सामसे लाल भ' गेल रहुँ आ हम लाजे गड़ि गेल रही। हमरा गेला-अयलासँ कोनो दिन एहन बात उठतैक, तकर कल्पनो नहि छल। कमसँ कम हुनका अवस्थाक फर्क तँ देखबाक छलनि।

दू-चारि दिन तोरा ओत' जायमे कनेको कटैत रहलहुँ। मुदा मानैत के अछि ? पकड़ि क' ल' अनलें आ माय लग नालिश कयलें—"परसावा क्या लौक माँ।"

माय पुछलनि—"कैसे बाबा। मामेर ऊपर कीसेर राग ?"

"नहि माँ, कथीक फिकिर ? सोचलहुँ जे हमरा अयलासँ बहुत लोकनिक बदनामी होइत अछि तेँ नहिए आयब ठीक।"

'सुनलेँ माँ। सार हमरा लोकनिक उपकार कर' चलल अछि, बदनामीसँ बचाब' चाहैत अछि। अरे डर ककरा छैक एहि बदनामीक ? जेना अबैत छलेँ, आयल कर, नहि तँ हड्डी-गुड्डी तोड़ि देबौक।"

हम फेर कोहिना आब' जाय लागल रही। काकी तोहर बहिन सभसँ बड़ काज लागय। काकीक लगाओल आरोप किछु नहि बिसरब।

एक दिन तोहर डेरा अयलहुँ तँ तोँ मायक संग अस्पताल गेल रहय। खाली मँझिली दीदी डेरामे रहथि। छोटका दीदी सेहो सासुर चल गेलि छलीह। मझिली दीदीक हम बड़ इज्जति करैत छलियनि। मुदा आजे हुनकासँ पड़ाइत रही। हुनका एकसरिये डेरामे देखि हम घुर' लागल रही।

"कहाँ जाइत छेँ, रमेन अबिते हेतौक। बैसि जो। आ कि हमरा सब बैस'मे डर लगैत छौक ?" मँझिली दीदी सेहो नीक मैथिली बाजि लगैत छलीह।

"नै दीदी, कहाँसँ कोन डर ?" हम हुनका लग बैसि गेल रही। मुदा भीतरे भीतर डेरा जरूर गेल रही।

मझिली दीदी मुसकिया उठलीह—पीड़ासँ सानल मुसकी। हमर हाथ पकड़ि बजलीह—कुछ नहि बाज। तोँ डाकें डेरा गेल छेँ ? देख, तोहर हाथ थर-थर काँपि रहल छौक। डेरयबेँ कोना नहि। मौगी जाति होइते तेहने भयंकर अछि—आदमखोर। मौगी अपन सन्तानोकेँ चिबा जाइत अछि। तोँ हमरा सामने कतेक बच्चा छेँ, रमेनोसँ छोट। तैयो काकी अपवाद लगबैत छथि। मौगीक कोनो ठेकान नहि। अपन चेहरा कथी नहि देखत। खाली ककरो दोष निहारैत चलत। कह तँ, कहाँ तोँ आ कहाँ हम...?

मझिली दीदीक मुट्ठीमे हमर हाथ फँसा गेल। उत्तेजनासँ हाँफ' लगलीह। हाथ गर्म तव जका लहकि उठलनि आ आँखिमे कोनो चिनगी चमकि उठलनि। कने काल बाद मुट्ठीक पकड़ि ढील भ' गेलनि। मुँह फेरि लेलनि, भरिसक बहुत नोरकेँ नुकयबाक हेतु। मर्द भ' गेल हुनकर हाथ बड़ी काल धरि हमर जाँघपर पड़ल रहल।

तोँ मायक संग तुरंत पुछलेँ—"कखन अयलेँ ?"

"बस आबिये रहल छी।"

तोँ जल्दीमे छलेँ। हाथ घिचैत कहलेँ—"आ' हमरा संग चल।"

तोरा संग अस्पताल गेल रही—मौगी वार्डमे। एकटा बेडपर तोहर काकी आँखि मुनने पड़लि रहथुन। एकदम उज्जर, जेना देहक सभटा खून गेल नहि गेल होनि। आँखिक नीचा कारी झामि, एकदम थसल-थसल।

'की भेलनि अछि ?' हम तोरासँ पुछने छलियौक। तखने ठाढ़ि नर्स ठिठिया उठलि छलि। बड़ तामस भेल। एहिमे हँसबाक कोन गप्प भेलैक ? तोँ तरेरैत आँखिये नर्सकेँ तकलहिक। ओ सिटपिटा क' चुप भ' गेलि।

"तोँ नहि बुझबहिक। आ, चल।"

तोँ हमरा बाहर ल' अनलेँ। तखने हम किछु नहि बुझलियैक। मुदा ओहि दिन सभटा बुझि गेलियैक जहिया तोहर काकीकेँ स्वस्थ भ' डेरामे घुरि अयलाक दू मास बाद पीलुआकेँ हुनकर कोठलीमे जाइत देखि तोँ दाँत पीसिक' बाजल रहय "हम कोनो दिन एहि सारकेँ जानसँ मारि देबैक।"

मैट्रिकक परीक्षा नजीक आबि गेल रहय। दुनू गोटे भरि-भरि राति जागि क' तैयारी करलहुँ। कोर्स पछुआ गेल छल। सभटा कॉपी किताब पसरल छोड़ि भोर होइत होइत दुनू गोटे सूति रही। दिन चढ़लापर हमरा झिकझोरैत तोँ उठा दैत छलेँ—रौ चण्ठ। हमर छातीपरसँ अपन पहलमानी जाँघ हटा। हमर सौत बकल जाइत अछि :

तोहर बात कहियो ने मनलौक, मुदा हमर गरामे फँसरी लागि गेल छल। गुण्डासभ जान लेबाक धमकी दैत छल। हम डरेँ अधमरु भ' गेल रही आ तोँ तामसे काढ़ु—'बस, एहि साहसपर प्रेम कर' चलल छलेँ'। हजार बेर कहलियौक जे ओकर ध्यान छोड़ि दे। ओ हरामजादी तोरा जोग नहि छौक। मुदा के सुनैत अछि ? तोँ रोमान्स कर' चलल छलाहू। ले रोमान्सक स्वाद। लैलाक भाइ सभ छूरा लेने घुमि रहल छौक, एकाध नहि दर्जनक दर्जन। बाहर भरिसक भाइ। ओकरा मजनूक नाम ल' क' शहीद भ' जो तोँ।"

हम खाली कनिते रही आ तोँ किछुओ उठा नहि रखलेँ। गुण्डा सभक

प्रत्येक चालि के बेकार करैत अपन आश्रय मे सुरक्षित रखलैं। मुदा मैट्रिक पास कयला पर हम गुण्डा तरहक हुनकें शहर छोड़ि पटना चल आयल रही। विदा होइत काल प्लेटफार्म पर छातीसँ लगा बाजल छले—आखिर ओ हरामजादी तोरा''' हमरा सँ छीनिये लेलक'' हम प्रतिवाद करैत कहलियैक—''ओकरा मारि पढ़ला सँ कोन लाभ ? एहि मे ओकर'' तौं फेर तमकि उठल छले—''फेर वैह सवतू वला बात। ई बात हमरा कहियो ने बिसरत जे ओकरे कारण सँ तौं ई शहर छोड़ि क' जा रहल छँ''। हमरा छोड़ि क' जा रहल छँ।

एम्हर हम कालेज मे एडमिशन लेलहुँ आ ओम्हर तौं मेडिकल कालेज मे नोकरी धयलँ—आसिस्ट कम लेबोरेटरी असिस्टेन्टक। कहियो तोहर चिरचिरी चाइब देखि क' हम हँसि दैत छलियौक। की पता छल जे ओहि चिरचिरीक बलें जीविका भेटि जयतौक।

दूर भ' गेला पर पत्रक क्रम आरम्भ भेल छल। प्रत्येक हफ्ता चिट्ठी भेटय, लिखी। कतेको बेरी भेला पर रूसी, मान करी।

साल भरिक बाद भेंट भेल छल। तौंही पटना आयल छलैं। मौसिली दीदीक विवाह भ' रहल छलनि ओहि मास। तौं उत्तरदायित्व सँ मुक्त भ' रहल छलैं। विवाह मे बजौने छलैं।

हम नहि जा सकल रही। अपन शुभकामना पठा देने रहियौक मुदा साल भरि बाद ओहिठाम पहुँचल रही। खूब नीक समय कटल। कतेको पुरान गप्प, कतेको नवका चलती। आ अन्त मे टेबुल पर राखल अपन फ्रेम मे जड़ल फोटोकेँ हाथ मे उठा ओकरा खोलि पाछाँ सँ एकटा फोटो बहार क' हाथ मे दैत नवकनियाँ जकाँ लजाइत कहलैं—ले भाय, भौजी केँ देख।

एकटा सुन्दर कन्याक फोटो। पन्द्रह सोलहक वयस। लजायलि। अर्धविकसित। सिकुड़लि सिमटलि। हम तोरा बधाइ देने छलियौक।

साल भरि बाद फेर गेल रही। तौं घर सँ निपत्ता रहय, माय एकसरि बैसलि, उदास दृष्टिये बाट निहारैत छलथुन। हमरा देखिते प्रसन्न भ' उठलि छलीह। बड़ी काल गप्प भेल। ओ अपन निर्णयताक बात कहलनि।

तोहर अयला पर हम मायक दुखक गप्प चलौने छलियौक। तौं फेर अपन फोटो उठा ओकर पाछाँ सँ फोटो बहार क' हाथ मे दैत कहलैं—ओकरो इन्तकाल भ' गेल छैक। ले, देख।

फोटो कोनो दोसर छौड़ीक छलैक। पहिलकीक नहि। पुछला पर कहलैं—ओकर गप्प नहि कर। ओकर परवला सभ बड़ स्वार्थी छैक। हम चीज वस्तु दैत छलियैक तें स्वागत करैत छल। विवाहक गप्प कयलियैक त भड़कि गेल। अखनो हमरा सँ प्रेम करैत अछि। मुदा ओकर लोक सभ नहि मानतैक। तौं ओकर गप्प छोड़। अपन नवकी भौजी केँ देख। केहन छौक ?

हम नीक जकाँ फोटो देखलियैक। सरल सुन्दर देहवाली युवती, चंचल नचैत आँखि, देहमे अनाकर्षक उभार आ कसाव। हमरा नहि पसिन्न भेल छल। तैयो खूब तारीफ कयने छलियौक।

साल भरिक बाद फेर भेंट भेला पर एकटा दोसर छौड़ीक फोटो दैत कहलैं—काजल पढ़ैत छलि। मुदा हमरा पर हमरा पक्का विश्वास अछि। ले देख।''

हम फोटो बिना देखने घुरा देने छलियौक। देखबाक इच्छे नहि भेल छल। जानि गेल छलियौक जे किस्सा अखन आगाँ चलतैक, फोटो अखन आगाँ बदलतैक। तोरा सब साथ रुपया कमाय बला किरानी आ लेबोरेटरी असिस्टेन्ट अपन फोटोक पाछाँ नुका क' फोटो राखि सकैत अछि, मुदा ओकरा अधिकारपूर्वक अपन फोटोक संग ओछिक' टेबुलपर नहि राखि सकैत अछि। इ फोटो अखन आगाँ बदलतैक, आगाँ'''

आ दू साल सँ फेर निपत्ता छैं। ने कोनो चिट्ठी, ने समाद ? ने भेंट-घाँट। एक बेर दू घण्टाक लेल तोहर डेरा पर गेल रही। माय सँ पता लागल जे तौं कोनो आनन्दमार्गी स्वामीजीक फेरा मे छैं। घूमि लेलौं। मोन केँ परतार' लेल रहौ रस्ता बेजाय नहि। मुदा कहियो भेटलैं त' देहन मरम्मति करबौक जे स्वामीजीक नाम बिसरि जयतौक। चिट्ठी लिख' मे हाथ टुटैत छौक ?

गर्मीक छुट्टी मे भेंट कर' अयबौक। स्वामीजीक चक्कर छोड़ि हमरा संग घूम' पड़तौक। नहि तँ हमर तामस बड़ खराब अछि, तोरा बुझले छौक।

आ खबरदार जे एहि बेर फोटो देखा क' कहलें जे ले, अपन भौजी केँ देख। हमर बात मान आ ई कुचालि छोड़ि दे। गिरगिट जकाँ रंग नहि बदल। नहि तँ यदि एहिना स्टुडियोक अलबम सँ फोटो चोरा क' गप्प हुकैत रहलें तँ एकदिन बड़का हवेली जा क' रहबें। आ तखन पुलिस डण्टा लँ क' कहतौक—ले, अपन बाप केँ देख।

अप्रैल १९६४

क्लान्त

आँखि फुजला पर राम अपना कें कोठलीमे एकसर पौलक !

ओ सबेरे कहियो नहि उठैत अछि ! दिन चढ़लापर रेडियो सिलोनक एनाउन्सरक चिकरैत स्वर, धीयापुताक चलचली, मनसाधरक खटपट आ गम्हाइल "चाल" क घोंघाउज ओकरा जगा दैत छैक । एकटा खौंझायल तिनतला मोनसँ तैं ओ आँखि खोलिकँ खाली कोठली मे भरि रहल कोलाहल कें देखऽ चाहैत अछि । जेना ओहि कोलाहलमे जुटल भिन्न-भिन्न स्वरक अस्तित्व कें चीन्ह' चाहैत हो ! सभटा स्वर आँखिक बाटे मोनमे पैस' लगैत छैक । घबरा क' आँखि फेर मूनि लैत अछि । गेरूआ मे मुँह गाड़ने पेटक बलें पड़ल-पड़ल प्रत्येक दिन प्रातःकाल पहिल सप्प मोन पड़ैत छैक—विश्रामक राति गेल आ काजक दिन शुरू होब'बला अछि—बड़कीटा अकछल फटाह सन दिन । पचनी पर जोर द' क' फेर सँ आँखि कें नीक जकाँ बन्द कर' चाहैत अछि । प्रायः एहि व्यर्थ आशापर जे आँखि फेर लागि जाय आ राति फेर घुरि आबय !

आँखि फुजला पर सभ दिन जकाँ कोठलीमे भरि रहल कोलाहलकें देख' लागल । ओहि कोलाहल मे जुटल भिन्न-भिन्न स्वरक अस्तित्व कें चीन्ह' चाहलक आ ओकरा आँखि बाटे भीतर पैसैत देखि भय सँ आँखि मूनि लेलक । मुदा ओ कोलाहल नीक जकाँ भीतर पैसि गेल छलैक । रेडियो सिलोन सँ सलीमक अनारकली चिचिया रहल छलैक—"जब प्यार किया तो डरना क्या ?" आब ओकरा कें बुझाइलैक जे बिछाओन पर पेटकुनियाँ देने पड़ल क्षुद्र प्राणी मामूली सम्पादक छल, शहंशाह अकबर नहि । बेकार ठोंठ फाड़ला सँ की लाभ ? जगलक कोठलीमे धीया-पुता सभ कोनो वस्तुक हेतु आपसमे छीना-झपटी करैत गर्द मचौने छल । ओहि गर्दम-गोलमे जुटल प्रत्येक स्वर कें ओ नीक जकाँ चिन्हैत छलैक, फराक-फराक सँ ! ओहि चारू अबोध स्वरक ओ स्वयं निर्माता छल ! इच्छा भेलैक जे एक बेर अपनो जोर सँ चिचिया उठय जाहि सँ ओहि स्वरक नीचाँमे कराहवलीक निर्बंध घोषणा आ धीया-पुताक चलचली दबा-पिसा क' चूर भ' जाइ ! मुदा एना नहि क' सकल । मनसा घरसँ बर्तन उनटबयबाक आ कड़छु-पिटबाक स्वर लगातार सुनीताक उपस्थितिक एलान क' रहल छलैक । ओ नीक जकाँ अनुभव कयलक जे विश्रामक राति बीति चुकल छलैक आ काजक दिन शुरू भ' रहल छलैक । आरामक लोभमे पड़ल रहब नितान्त मूर्खता हेतैक ।

चिचिआइत-चिचिआइत अनारकलीक ठोंठ बैसि गेलैक आ ओकर निर्भय प्रेमक समर्थक कोनो अलबेला 'मोहब्बत जिन्दाबाद'क नारा लगाब' लागल ! ओकरा तेहन क्रोध भेलैक जे उठि क' कान ऐंठि' दू-चारि थापड़ लगा दियैक । मुदा ओ ओहिना पेटकुनियाँ देने पड़ल रहल । एहि अकछल वातावरण सँ ओ समझौता क' चुकल छल । समझौता करबाक हेतु विवश छल ! पत्नी छलैक, चारिटा सन्तान छलैक मुदा ओ एकसर छल । चारू कात जिनगीक चहल-पहल आ गति छलैक, मुदा ओ एकसर छल । ओहि कोलाहलपूर्ण एकसरपन सँ ओ अगुताइ छल, कतहु भागि जयबाक मोन होइत छलैक । मुदा विवश छल घरमे जिन्जिर बान्हल छलैक । समझौताक हेतु विवश छल । किएक तँ जीवनो एकटा विवशते छलैक । ओकर कारण कहब सम्भव नहि छलैक । किएक तँ विवशता विवशता थिक ! ओकर कारणो विवशते हेतैक ।

ओकर जिनगी ओही विवश समझौता पर टिकल छलैक । प्रत्येक वस्तुसँ समझौता, प्रत्येक लोक सँ समझौता, अपन मोन सँ समझौता । पड़ाय चाहैत छल, मुदा पड़ा नहि पबैत छल । किएक तँ तोड़' नहि चाहैत छल । ओ चाहैत छल जे घरक चार पर सँ एकटा खड़ जकाँ उड़ि जाय । मुदा ओकरा लगैत छलैक, जेना ओ घरक खड़ नहि, बरेड़ी छल । भले ओकरा सम्पूर्ण घरक बोझक नीचाँ दबिये क' किऐक नहि रह' पड़ैक । सैह ओकर समझौता छलैक—विवश समझौता !

कौखन दिन भरिक श्रमसँ थाकल ठेहिआयल बिछाओन पर मुर्दा जकाँ पड़ि रहैत अछि । तखन ओकरो मोन होइत छैक जे मनपसिन्द गीत सुनी ! कोनो नीक स्टेशन लगाकऽ पड़ि रहैत अछि आ आँखि मूनि लैत अछि । कोनो शास्त्रीय गीत गबैत-गबैत बड़े गुलाम-अली खाँ भोंगियाही स्वरमे "ओ बसन्ती पवन पागल" गाबऽ लगैत छथिन आ आँखि खोलि देखैत अछि जे सार महाशय मोस्तैदीक संग रेडियो

पर मुक्त छथि। कोखन सितार बजबैत-बजबैत रविशंकर मानि क' गबिआइत स्वरमे "रूक जा ओ जानेवाली रूक जा" गाब' लगैत छथि आ सुनीताक एहि कार्य पर ओ चाहियोक' किछु नहि बाजि पबैत अछि। आ कोखन बी० बी० सी० सँ वैद्य चिल्लीक पाठशालाक घटा सुनि बमकि क' मरज' चाहैत अछि तँ रेडियो लग जुटल चाक सन्तानक उल्लास देखि मुँहमे ताला लागि जाइत छैक। एहि स्थिति मे समझौता-निर्वाहक ओ चेष्टा क' रहल अछि—प्राण-प्राण सँ।

एकाएक ओकरा किछु जाड़ लाग' लगलैक। राति मेघ ओरतर पसाद कयने छलैक आ बूँद लगातार बरिसल छलैक। तैयो पंखा राति भरि कोठलीमे नचैत रहलैक। रातुक भीजल हवा प्रायः बहिये रहल छलैक! उठि क' स्विच आफ क' देलकै।

लटकल पंखा परपराइत ठाढ़ भ' गेलैक। पंखाक तीनू ब्लेड कें ओ बड़ी कालधरि देखैत रहल। ओकरा लगलैक, जेना ओहो पंखे सन छल जकर तीनू ब्लेड कें पेंच सँ जोड़ि क' नचा देल गेल छलैक आ नचैत काल तेहन लगैत छलैक जेना एकटा पंखा नाचि रहल होइ, ब्लेडक पृथक अस्तित्व जेना रहबे नहि करैक। मुदा वास्तविकता ई छैक जे पंखाक प्रत्येक ब्लेड एकसरुआ छल, नितान्त एकसरुआ, पेंच सँ जोड़ल। ओकर सह-अस्तित्व मात्र धोखा छलैक।

पंखा निर्जीव अछि, ओकर ब्लेड निर्जीव छैक, ओ यांत्रिक जोड़पर राति भरि नाचि सकैत अछि! मुदा राम त' जीवित मनुक्ख अछि एखन मुर्दा नहि भेल अछि! आ कोना यांत्रिक बल पर जिनगी भरि नचैत रहय! ओकरो देखिक सभकें भ्रम होइत छैक जे ओ सभक संग जुटल अछि, फराक ओकर कोनो अस्तित्वे नहि छैक। एकसरे बैहटा जनैत छल जे ओहो पंखा जकाँ पेंच पर जोड़ल सभक संग नाचि रहल छल—बिलकुल एकसरुआ। जिनगी गतिक नाम छैक आ गतिमे नचैत ब्लेडक पृथक् अस्तित्व देखब सम्भव नहि छैक। गति रुकले पर ओकर दूरी देखल जा सकैत छैक।

केवाड़ीक भिड़कल पल्ला कें ठेलि' सुनीता हुलकी देलकै आ रामकें बिछाओन पर बैसल देखि फेर सँ केवाड़ बन्द करैत चल गेलैक। राम ओकरा हुलकी द' क' जाइत देखलकै आ बुझि गेलैक जे कनिये कालक बाद चाहक पियाली हाथमे

लेने ओ फेर औतैक। पियाली राम कें द' क' बड़ी काल धरि चुपचाप ठाढ़ि रहतैक आ राम हरेँ एकको बेर मूड़ी उठाक' नहि देखतैक जे कहीं भोरे-भोरे कोनो तगादा नहि क' बैसय—बच्चा सभक स्कूलक फीस, मकानक किराया, दूधवलाक हिसाब आ.........।

कोखन ओकरा लगैत छैक, जेना सुनीता सम्पूर्ण रूपेँ ओकर भैयो क' ओकर नहि छैक। ओकर पत्नी छैक, ओकर चारू सन्तानक जननी छैक, ओकर गृहस्थी ओकरे बलपर टिकल छैक, मुदा तैयो ओ ओकर नहि छैक। ओकर इच्छा सुनीता कोखन नहि बुझैत छैक। कोनो राख' नेल ओकर आग्रह नहि मानैत छैक! दिन-राति गृहस्थीक जंजाल मूड़ीपर लदने अपस्याँत भेल रहैत छैक। कोखन दू-चारि पलक हेतु लग आबि बैसिते छैक तँ ओकर आकृति पर पसरल क्लान्ति आ व्यग्रता देखि राम कें किछु कहि नहि होइत छैक! कहियो कहि दैत छैक तँ बादमे अपन कमजोरी पर तामस होइत छैक! ओकरा लगैत छैक, जेना ओकर आग्रह टारिक' सुनीता जानि-बुझिक' ओकर मोन तोड़ैत छैक। कहियो ओकरा बुझबाक चेष्टा नहि करैत छैक, नायक लाथें टारैत छैक। पहिने जखन धीया-पूता नहि भेल छलैक, सिनेमा आ संगक कोनो आन प्रस्ताव कें पैसाक तंगीक बहाने टारि दैत छलैक। आब जखन पैसाक कोनो तेहन तंगी नहि छैक, ओकर प्रस्ताव कें धीया-पूताक बहाने टारि दैत छैक। वास्तविकता येह छैक जे सुनीता ओकरा टारैत छैक। कम सँ कम राम येह सोचैत छल! ओकरा ई सिकाइत छलैक जे ओकरा कियो नहि बुझैत छैक! ओकर अपने दु सभसँ ऊपर छलैक! जनता बारे मे ओकरा फुरसतिये नहि छलैक।

ओकरा लगैत छैक, जेना ओ तेहन खेत अछि जाहिमे बीयाक धान खसाओल जाइत छैक आ फेर सबटा बीया उखाड़ि क' दोसर खेतमे रोपि देल जाइत छैक! तहिना सभ ओकरा सँ किछु लेबहि चाहैत छैक, देबाक क्यो नहि सोचैत छैक! ओकर कमाइ ओकर सम्बन्धक गेंठ छैक जेना।

ओकर स्वभाव तेहन भेल जाइत छैक जे धीया-पूताक स्नेहमे सेहो ओकरा स्वार्थक गंध भेटऽ लागल छलैक। मुँहमे मुँह सटा जखन कोनो सन्तान किछु माँगि बैसैत छलैक, ओकरा लगैत छलैक जेना घूस देल जा रहल होइ, माङक पूर्तिक हेतु। सभ सोचैत छलैक जे हाड़-मासक इच्छा ओकरा नहि छैक। ओ मात्र एकटा माध्यम छल—आवश्यकताक पूर्तिक! एक निर्जीव यंत्र जकाँ, यांत्रिक-विधिमे बिना कोनो

प्रतिदानक अपेक्षा रखैत हुनकें किछु दैत रहैक, सभ यैह ओकरा सँ एतबे आस रखैत छलैक।

माध्यम बनबा सँ ओकरा कहाँ आपत्ति छलैक। बापकें पैतृक भूमिसँ स्नेह छनि, तँइ नहि छोड़ताह ! हुनकर आवश्यकता समदपर जुटा दैत छनि। भतीजा-भतीजीक भरण-पोषण आ भविष्यक चिन्ताक भार सेहो सम्हारैत अछि ! पत्नी आ बाल सन्तानक प्रत्येक सुख-सुविधाक ध्यान ओकरे रहैत छैक ! सर-सम्बन्धीक दाबा बेर-कुबेर मानिये लैत छनि ! एतबो पर ओकरा ई अधिकार नहि छैक जे हुनको सभसँ किछु आस राखय ? कम सँ कम अपनाव आ स्नेहक जोर तँ रहैक। मुदा ओकरा लगैत छैक, जेना प्रत्येक सम्बन्धक न्यों ओकर दाने पर टिकल छैक ! ओ देब' सँ असमर्थ भ' जायत, तँ प्राय: सम्बन्धो टूटि जयतैक।

चाहक पियाली लेने सुनीता कोठली मे अयलैक। राम चुपचाप चाह पीब' लागल। सुनीता गुमसुम ठाढ़ि छलैक। किछु बाज' चाहियैक तँ सुनीता बाजलि—आइ सबेरे उठि गेलहुँ।

राम टेबुल पर राखल घड़ी दिस तकैत बाजल—सबेर कहाँ ? नौ बाजि गेल। दस बजे आफिसक लेल बिदा होयब।

सुनीता मुसकिया उठलैक—रवि दिन कोन आफिस जयबाक अछि ?

राम आराम सँ पसरि गेल। सुनीता खाली पियाली उठा चल गेलैक।

पड़ल-पड़ल राम सोच' लागल, किछुवे काल बाद प्रीतम औतैक, नवीन पीढ़ीक कथाकार ! बड़ी काल धरि अपनेंतो देखौलाक बाद अन्तमे पाकिट सँ एकटा पुलिन्दा बाहर करैत कहतैक "ऐ बेर तेहन चीज आने छी जे देखिक' फड़कि उठब।" आ पुलिन्दा जबरदस्ती हाथमे ठुसैत कहतैक—"तँ अगिला हप्ताक आस करू ? आश्वासन पाबि कोनो आवश्यक कार्यक बहाना बना बिदा भ' जयतैक ! तखन जमुना औतैक, अपन नवीनतम उपन्यासक छपल प्रति लेने किछु काल भूमिका बन्हलाक बाद मतलब पर औतैक—"यदि अपने अपन पत्रमे एकर एकटा सुन्दर समालोचना छापि दी, तँ आभारी रहब।" श्याम सरकुलेशन डिपार्टमेंटमे नौकरीक सिफारिश ल' क' औतैक आ मोहन जाइत-जाइत किछु टाका पेंच मङतैक। आब' जायबलाक ई क्रम राति धरि चलत। बिछाओन पर टुटतैक आ दिन भरिक स्वार्थ पूर्ण क्षण सभ सँ थाकल—थकाएल राम निन्नमे शान्ति पाओत ! प्रत्येक रवि कें यैह क्रम दोहराओल जाइत छलैक आ राम चाहियो क' एकरा नहि तोड़ि पबैत छल !

ओकर दृष्टि अपन छोटसन सेल्फमे कोंचल किताब पर गेलैक ! सजलैक जेना ओहि सेल्फक प्रत्येक किताब पर ओकर जिनगीक अर्थ लिखल छैक। प्रत्येक किताब पहिल पृष्ठ पर लिखल छैक— समालोचनार्थ ! ओकरा लग बिना मतलब के क्यो नहि अबैत छैक ! ई किताब सभ ओकरा समर्पित नहि कयल गेल छलैक। काज लेबाक हेतु अपनत्व अढ़मे ठकबाक प्रयास कयल गेल छलैक।

राम उठि क' ठाढ़ भ' गेल ! खूँटी पर टाङल कमीज पहिरैत सोचलक जे आइ स्वार्थपूर्ण वातावरणसँ दूर रहत। मैदानमे बौआयत, निरुद्देश्य घूमत, मुदा कोठलीक औनाइत वातावरण सँ दूर रहत ! पयरमे जुत्ता पहिरि बाहर आबि गेल।

भोरे-भोर बहराइत देखि सुनीता कें आश्चर्य भेलैक ! रास्ता रोकि पुछलकै—भोरे-भोर कहाँ बिदा भेलहुँ ?

'बेकार पड़ल छलहुँ ! सोचलहुँ, दोकानसँ जहांक समाने आनि दी !" राम झूठ बाजल !

"सामान तँ पहिले हपता आनि देने रही ! आइ तँ दस तारीख छैक।

"हँ, हँ, मोन पड़ल। जाउ, झोरी दिअ' ! तरकारी हाट सँ ल' अबैत छी।

—तरकारीवाली भोरे आयलि छलि। सभ चीज कीनि लेने छी।"

कनेककाल राम चुपचाप ठाढ़ रहल ! कोनो बहाना नहि फुरलैक ! फेर बिना किछु बजने बिदा भ' गेल।

"—कहाँ चललहुँ ?" सुनीता टोकलकै। "—बस, कने घूमि-फिरि अबैत छी।"

"—पहिने अयनामे अपन चेहरा देखि लिय'। घूमि क' उठलहुँ आ बाहर बिदा भ' गेलहुँ। एना कोनो आदमी घूमैत अछि ?

राम बमकि उठल—हँ, हँ जे मोन मे आबय कहि लिअ', हम आदमी नहि, बड़द छी, धोखा उघ' बला गदहा छी। बस।

सुनीता नहि बुझि सकलि जे एकाएक ओ कोन अनर्गल बात बाजि गेल। दु:खसँ आँखि नोरा गेलैक, भीतर मे किछु उमड़' लगलैक। मुदा राम किछु नहि देखलकै। तामसे हनहनाइत बहरा गेल !

सड़क पर रातुक बरखाक असरि छलैक—कादो-कादो भेल ! कादो मे लेढ़ाइत—पयजामाक मोहरीक बिना कोनो चिन्ता कयने आगू बढ़ैत गेल ! गुमती सभ दिन जकाँ बन्द छलैक ! बाट खुजबाक प्रतीक्षामे रिक्सा मोटर आ टांगाक

मोहन लागल छलैक। चक्करदार रास्ता सँ निकलि राम लाइनक बीचमे आबि गेल। बहुत रास लाइन एक दोसरक समानान्तर बिछाओल छलैक —दूर-दूर धरि पसरल। ओकरा लगलैक, जेना ओहो लाइन जतय पसरल अछि, दूर धरि, प्रत्येक व्यक्तिक समानान्तर! सम्बन्धक मुखावल काठक पटरी ठाम-ठाम एहि समानान्तर लाइन केँ जोड़ने छैक! मुदा वास्तविकता एहू छैक जे प्रत्येक लाइन समानान्तर पसरल अछि एक दोसर सँ सदा सर्वदाक लेल दूर! बगल सँ देखनिहार केँ भ्रम होइत छैक जे एकेटा लाइन बिछाओल छैक! लाइनक बीच मे ठाढ़ भ' ठीक-ठीक देखल जा सकैत छैक जे बहुत रास लाइन समानान्तर बिछाओल छैक। दूर पर ई लाइन सभ मिलैत सन देख' मे अबैत छैक मुदा ओत' पहुँचला पर इहो मिलन धोखा प्रमाणित भ, जाइत छैक।

राम लाइन पार क' प्लेटफार्म पर आबि गेल! लगले एकटा गाड़ी आयल छलैक। बेस चहल-पहल रहैक!

एकाएक ओकर मोनमे एकटा विचार अयलैक! इच्छा भेलैक जे गाड़ी पर चढ़ि कतहु बिदा भ' जाइ! सभ झंझट सँ चैन! ई विचार तेहन वेगसँ अयलैक जे बिना किछु विचारने ओ एकटा डिब्बा दिस लपकल।

तखने चारिटा हाथ ओकर रास्ता रोकि लेलकै! बाधा पाबि किछु बाज' चाहलक, मुदा सामने पसरल चारू तरहत्थी जेना ओकर मुँह पर बैसि गेलैक। फाटल मैहुँजल पैण्ट आ हाफ शर्ट पहिरने ठाढ़ दू टा शिशुक हाथ ओकर सामने पसरल छलैक। ओहि दुनू शिशुक चेहरा ओ ध्यान सँ देखलकैक।

"—नहि।" ओकर मोनमे बड़ जोर सँ चिचिया उठलैक, जेना कोनो हेराओल चेहरा सामने आबि गेल होइ। दुनू शिशुक तरहत्थी पर ओ एक-एकटा चौअन्नी राखि देलकै आ दुनू शिशुक अंतिम क्षण भरिक हेतु निनसीक हेरायल चमकी चुरैत देखलकै। दोसर-दोसर मुसाफिरक सामने हाथ पसारैत दुनू शिशुकेँ बड़ी काल धरि ओ देखैत रहलैक।

कनेरो हाथ सँ छुटि क' शीशाक गिलास तड़ द' प्लेटफार्म पर खसलैक। रामक पयर लग शीशाक छोट-छोट कुची छिड़िया गेलैक आ ओकरा लगलैक, जेना पपनी तर बन्द नोरक चमकैत कुची जमीन पर छिड़िया गेल होइ!

गाड़ी तखन प्लेटफार्म छोड़ि रहल छलैक, राम मदोआइ सड़कपर भारी डेगेँ डेरा दिस घुरि रहल छल, कोलाहलपूर्ण एकसरपन मे!

मई १९६४

—मेखान्त

दिनचर्या

कैन्टीनक देवाल कॉप' लगैत छैक, व्यग्रयीत दौड़ैत बेरा सभ बर्तन-बर्तन बँचैत अछि, सभल हाथसँ कोर छुटि जाइत छैक आ अभ्यस्त आङुरसँ दबल चम्मच काँटा छिटकि क' टनटना उठैत छैक—एक बेर नहि, दू बेर नहि, अनेक बेर, बेर बेर।

उत्तर दिस गंगाक पसरल विस्तार आ सुदूर दोसर कछेरमे पनियातीमे ठाढ़ गाछक स्याह हरियरी झलकैत छैक आ बीच गंगा मे उपल दीयरि पर जकरा सभ "आइलैण्ड आफ रोमान्स" कहैत छैक, बालुक रजत-कण चमचमा उठैत छैक जखन ओकरा सूर्यक स्वर्णिम किरणक स्पर्श भेटैत छैक। सुनैत छिऐक जे साँझक झलफल मे अनेको छोट-छोट नाव पर युनिभरसिटीक कतेको युगल जोड़ी लहरिक हिलकोर पर झुलैत एहि दियरि पर अबैत अछि आ एकर निर्जन उदासीकेँ अपन मधुर सम्भाषण आ प्रसन्न क्रीड़ा सँ सजीव बना दैत अछि। इमानदारीक गप्प, हम अपने कहियो ने देखलियैक अछि। मुदा एतेक लोक अनेरो किएक बजतैक?

घंटी बजैत अछि। पीरियड शुरू होइत अछि आ खतम सेहो भ' जाइत अछि। मुदा हमरा लोकनि अपनामे मस्त, फिकर नॉट, परवा इल्ले।

गप्प आ ठहक्का। ठहक्का आ गप्प। हमरा लोकनि मस्त हँसीक अभद्र ध्वनि आ उच्च अट्टहासक प्रतिक्रियासँ अनभिज्ञ नहि रहैत छी। मुदा एकटा बलधकेल उन्मुक्तता प्रदर्शित करबामे नहि जानि कोन आन्तरिक सुख भेटैत अछि। जेना बाजी लागल रहैत अछि, ककर ठहाका कतेक दूर जायत, ककर स्वर कतेक उच्च हैत। एकटा अतिरिक्त उत्साहक निष्प्रयोजन आ अभद्र मुदा सप्रयास अभिव्यक्ति।

सभ दिन सबेरे नौ बजे एक दू टा पावर सभ एक्सरसाइज कॉपी ल' क' युनिभरसिटी दिस बिदा होइत छी। मुदा अशोक राजपथ पर आबि डेग दरभंगा हाउसक बदला मेडिकल कालेजक कैन्टीन दिस बढ़ि जाइत अछि—अनायास।

आ खोत' कैन्टीनक कोनवला टेबुल पर चण्डाल चौकड़ी पहिनेसँ जूटल रहैत छैक। हमहुँ एकटा कुर्सी घीचि बैसि जाइत छी आ चारूकातसँ "हेलो राइटर, हेलो पोयट, हेलो डार्लिंग" क स्नेह सिंचित सम्बोधन छिड़िया जाइत अछि। अन्तरसँ फूटल सम्बोधन, कतहु कोनो कृत्रिमता वा अभिनय नहि। आ छूटल क्लास आ ट्यूटोरियलक ध्यान तखन अबैत अछि जखन कैन्टीनक देवाल घड़ी दिस दृष्टि जाइत अछि—छोटका सुइ पाँच आ बड़का बारह पर। मात्र एतबे सन्तोष रहैत अछि जे सरवा सभ प्रोफेसी अबरते कमाने हैत—रॉयल फोर्ड्स जिन्दाबाद।

चौकड़ीक सदस्य संख्या कहबाक हेतु हमरा अपनो फेरसँ गन' पड़त। कैन्टीनक कोनवला टेबुल पर जकरा चारूकातसँ घेरिक' दस आदमी आरामसँ बैसि सकैत अछि, साधारणतया दोसर साइन लगाब' पड़ैत अछि। परमानेन्ट मेम्बर कहियो गैर हाजिर नहि होइत छथि मुदा कोखन मस्तीक हेतु नवका रंगरूट सभ सेहो जुटि जाइत छथि।

दोस्तक बीच पहिल नाम निश्चय राजेशक लेबैक—राजेश शर्मा, पिण्डश्याम रंग, पैन-पैन किछु बजैत सन आँखि आ सुन्दर रोबियल मोंछ। कद ६ फीट १ इंच। पछिला छः बरखमे हमरालोकनि कोना एतेक समीप आबि गेल छी, से कहब हमरा लेल असंभव। राजेश एकटा नामी डाक्टरक बेटा अछि, हमरा सँ कतेक गुना बेसी हैसियत वला। मुदा ओकरा सँ आ ओकरा परिवार सँ जे आत्मीयता आ स्नेह हमरा भेटल अछि, ओ कहियो नहि बिसरत। जखन कोनो आवश्यकता पड़ि गेल अछि, ओकरा सँ सहायता लेब' मे कहियो संकुचित नहि भेल छी—केहनो आवश्यकताक हेतु। दोसर नाम प्रमोदक अबैत छैक। ओ लम्बाईमे राजेशसँ बड़ छोट अछि मुदा रंग खूब साफ छैक। सुदर्शन अछि, धनिक बापक एकमात्र पुत्र। विचार मे पूर्ण प्रौढ़ रहितो व्यवहार मे बाल-बुद्धि देखायब ओकरा पहिचान छैक। पहिले भेंट मे ककरो प्रभावित करबाक क्षमता ओकरा मे छैक। रंजन समाद मे राजेशो सँ पैघ अछि। क्रिकेटक बेस शौकीन, सिनेमाक प्रेमी। (हमरा लोकनि बचकचब' लेल कोखन ओकरा "बंगरी पैक" सेहो कहि दैत छिऐक।) गोल रखबाक मे बड़ यत्नशील अछि आ ओकरा कारो आ चमकदार बनयबाक हेतु ओहि मे "किसलो" लगबैत अछि। दीपक एकटा रईस बापक रईस बेटा अछि जकर चेहरा मे मैथ आ सिन्दुरक मिश्रण छैक आ केश मे स्वर्णिम चमक।

अंग्रेजी आ हिन्दीक बायलन बड़ स्टाइल सँ बजैत अछि हरदम, सभक संग, पूरी नाटकीय ढंग सँ। दुरीवाक बाप आइ० ए० एस० छैक। ओकर प्रारम्भिक शिक्षा कानवेन्ट मे भेल छैक। नीक कपड़ा सीटिक' पहिरबाक शौकीन अछि आ गप्प-सप्प मे कान्वेन्टक वातावरणक असरि ओखन छैक। अशोक कें हमरालोकनि "प्रदीदी" कहैत छिऐक। दिन भरि मे पचास सिगरेट फूकि देब ओकरा लेल सहज बात छैक। राजू आ मुन्नू लम्बाइ सँ भरि आ गेल अछि, नहि तें चुस्ती आ मस्ती मे ककरो सँ उनैस नहि। जीवन राजनीति सँ दिलचस्पी रखैत अछि आ घंटो कोनो राजनैतिक विषय पर वाद-विवाद करब ओकर हौबी छैक।

फराक-फराक नाम अनयथा सँ नीक हैत जे एकटु कहि दी जे नाम आ रूपरंगक अन्तरे भ' सकैत अछि मुदा भीतर सँ हमरालोकनि एकके रंग छी। जिनगीक बड़ सहज भाव सँ लैत छिऐक जेना कैन्टीनमे बैसल-बैसल दिन मे पचीस बेर चाय पीबि लिऐ वा दर्जनो सिगरेट फूंकि देब। एहि सँ बेसी नहि।

हमरालोकनि जुटैत छी आ गप्प शुरू भ' जाइत अछि—प्रत्येक लोकक गप्प, प्रत्येक विषयक गप्प, लोकल, नेशनल आ इन्टरनेशनल। (नेहरूक मृत्यु, लालबहादुर शास्त्रीक पद ग्रहण, अब्दुल्लाक स्थिति, जयप्रकाशक डिसएप्वाइन्टमेन्ट, कामराजक जादू आ चीन आ पाकिस्तानक खुरापात सँ ल' क' दिलीप कुमारक एक्टिंग, मीना कुमारीक संभावित डाइभोर्स, कृष्णनक निराशाजनक फार्म आ भारतीय टेनिसक भविष्य, केनिया भारतक हाकी संघर्ष, आस्ट्रेलियाक दुर्बल टेनिस टीम आ डेविस कप मैच, विश्व विजेता कैसियस क्लेक गर्वोक्ति धरि।) आ सभसँ अन्त मे बिहारक राजनीतिक उथल-पुथल। मिनिस्टीरीयलिस्ट आ डिसिडेन्टक लेटेस्ट न्यूज। जातीयता आ गुटबन्दी, पुनिभरपिटीक राजनीतिक स्थिति आ जातीयता—किछुओ नहि बचैत अछि। सभटा चाटि जाइत छी।

बीच बीच मे मस्ती'क हेतु ककरो बोर करब शुरू क' दैत छिऐक—टिपिकल अपन गोष्ठीक बोलीमे—की रे बाबू! हम तोहर बाप कें कहैत छियौ जे बेटा बरबाद हो गेलौ (लौंडिया सभ कें फेर मे।)

—अरे बाबू, हमर बाप तोरा से बेसी चालाक छौ। ओ तें हमर शादी ठीक क' देलकौ!

—अरे कहाँ रे बाबू!

—हो एक गो ! इहो मगध महिला कालेज मे पढ़ै छी।

—अरे कर छै रे बाबू ! तर जेबे, बड़ा टफ्फर छौ !" आ फेर ठहाका। ठहाका आ मस्ती। मस्ती आ ठहाका। आर किछु नहि।

मुदा ककरा सोचल छलैक जे एक दिन इ ठहाका मलिन पड़ि जयतैक आ मस्ती पर एकटा उदास दुश्चिन्ता जमि जयतैक।

ओहि दिन कैंटीन दिस जाइत रही तँ रस्ता मे प्रमोद भेटि गेल। उदास आ चिन्तित। संगे घाट पर बैसि रह' गेल।

—की बात छैक प्रमोद ! एना चिन्तित किएक छँ ? हम पुछलिऐक।

प्रमोद बड़ उदास स्वरमे बाजल—की कहियौक भाइ ! एहिबेर बिना बेइज्जत भेने उपाय नहि अछि। इन्टरमीडियट मे सभकेँ आन रहैक जे एनाटोमीमे आगसँ आनत। मुदा हम सभकेँ निराश कयलिऐक। फर्स्ट एम. बी. बी. एस.मे तँ पैथोलोजीमे गुड़कैत-गुड़कैत बचलहुँ। आब फाइनल आबि रहल अछि ! पास करब कि नहि, तकरो चिन्ता भ' गेल अछि। कहीं रिजल्ट खराब भेल तँ लोकके कोना मुँह देखयबैक ? की कहियौक भाइ, तेहन ने धूपमे पड़ि गेल छी...।

प्रमोद उदास स्वरमे बजने जा रहल छल आ हम गंगाक पसरल विस्तारमे भुतिआयल सोचैत रही जे आइसँ छौ वर्ष पूर्व हम डाक्टर बनबाक सपना देखैत पटना आयल रही। डाक्टरीक स्वप्न पाछाँ छूटि गेल आ रहि गेल अछि खाली डाक्टरी पढ़'बला किछु पुरना दोस्त। आइ. एस. सी मे साइन्स छोड़ि देने रही, तहिया लागि माथ कोना झुकि गेल रहय ? आ एम. ए.क इम्तहान फेर माथपर अछि। पढ़ाइक वैह हाल। माथ ऊँच रहत तँ कोना ?

प्रमोद ओहि दिन बड़ व्यस्त बुझाइत रहय। घंटी बजैत देरी क्लासमे दौड़ल। हम फेर कैंटीन दिस विदा भेलहुँ। कैंटीनमे हमरा लोकनिक टेबुल आइ खाली छल। खाली रंजन एकसरे बैसल छल—शान्त आ उदास।

—आइ ई सन्नाटा केहन ? हम बैसैत पुछलिऐक।

—बैस, सभ आबिते हेतैक। सभक लेक्चर पड़ि रहल छैक। सेन्ट-अप हैब मोस्किल। सिरामीक फेरामे गेल अछि सभ।

—तोँ नहि गेलें। तोहर लेक्चर कम्प्लीट छौक ?

—लेक्चर कम्प्लीट भेलासँ की हैत ? परीक्षामे निकलैक की ? इन्टरमीडिएट आ फर्स्ट एम. बी. बी. एस.मे सप्लीमिन्टरीसँ धुसकलहुँ। एहि बेर सात बूड़ि जायत तेहने लगैत अछि। पढ़ाइ, खेल सभ चौपट। स्कूलमे क्रिकेट नीक खेलाइत रही। मुदा एहिठाम प्रैक्टिसक हेतु फुरसतिये नहि। की कहू, तेहन ने धूपमे पड़ि गेल छी...।

एक क्षणक हेतु हमरा भेल जे रंजन हमरापर आरोप लगा रहल अछि। हमहीं अपन कालेज छोड़ि अड्डा मारैत छियैक, क्लास छोड़बैत छियैक। मुदा ओकर चेहरापर कोनो तेहन भाव नहि छलैक। आश्वस्त भेलहुँ।

साँझखन राजेशक ड्राइंगरूममे बैसल-बैसल दिनभरिक घटनापर विचार करैत रहलहुँ—कालिहसँ दिनचर्या बदलबाक, पढ़ाइक लेल सचेष्ट होयबाक। मोने-मोन नीक जकाँ बुझैत जे दिनचर्या नहि बदलत, पढ़ाइक वैह हाल रहतैक।

बीचमे टेलीफोनक घंटी टनटना उठलैक। राजेश लपकल आ हमरा ठोरपर मुस्की आबि गेल। ओहि टेलीफोनक इतिहास हमरा लोकनिक दोस्ती जकाँ छौ साल पुरान छैक आ हमर मुस्कीक इतिहास ओकरे संग जुटल अछि। राजेश फुसफुसाक' उल्लासपूर्वक गप्प करैत अछि। अपन सम्भाषणक दोसर पार्टीकेँ हमर उपस्थितिक ज्ञान करा हमरापर उपकारक बोझ लदैत अछि। हम कोनो अखबार उठा लैत छी। बनेरो पढ़लो समाचारके फेर पढ़ैत छी—बड़ी काल धरि।

टेलीफोन राखि राजेश पुछलक—बेसी बोर तँ नहि भेलें ?

—नहि, नहि, बोर किऐक हैब। हमरा तँ आनन्द आयल। बहुत दिन पहिने एकटा कथा पढ़ने रही "डेमोक्रेटिक लव", आब हमरो एकटा कथा लिख' पड़त—"टेलीफोनिक लव।"

राजेश मरिमोने हँसल आ हम ओकर हँसैत आकृतिमे एकटा दोसर आनर्थक आकुलिक हँसी ताक' लगलहुँ।

राति चितसागर होटलसँ भोजन क' राजेन्द्र नगर फ्लैट दिस विदा होइत छी। फ्लैटक सीढ़ीपर अन्हार छल। टोइया-टापर दैत अपन नम्बरक सामने ऊपरका तल्लापर पहुँचि दरबज्जा खटखटाब' लगलहुँ। किछु काल बाद मकान-मालिक औंघायल स्वरेँ किछु बड़बड़ाइत दरबज्जा खोललनि। हम झट द' अपन कोठलीमे पैसि गेलहुँ, एहि डरे जे कहीं कह' लागथि ने जे आइ किऐक देरी भ' गेल।

अन्हारेमे जूता खोलि बिछौनपर पड़ि रहलहुँ। दिन भरिक घटना अन्हारेमे जगजियार होइत सामने पसरि गेल।

कोठीमे असन्तोष पसरि गेल अछि। एक दोसरपर तौँसा। अपराधबोध सँ सभ ग्रस्त। पाठ्यक्रम सम्बन्धी अज्ञानता आ परिणामक कल्पना क' सभ डरा जाइत अछि। दोस्तीमे, बरखो पुरान दोस्तीमे दरार पड़ि रहल अछि।

मुदा ई सभ निरर्थक किए? आबो सम्हारलासँ सभटा ठीक भ' जायत। अभ्यास छुटि गेलासँ आनुमे पसरल सभटा पाठ अनर्थान्हार लगैत अछि। हमरा लोकनिमे अविश्वास जन्म ल' रहल अछि। एकरा मार' पड़त। कमजोरी हमरा लोकनिक चिन्तनक दिशामे अछि। मस्ती आ उल्लासक संग जिनगी बितबैत कर्त्तव्यक पालन नहि भ' सकैत छैक? बरखो अपन कर्त्तव्यमे पछुआयाक कारणेँ एकटा अपराध-बोध जकाँ जकड़ि लेने अछि। एकरा झटकि क' दूर फेंक' पड़त।

सोचैत-सोचैत एकटा वृद्ध चेहरा सामने आबि गेल परास्त, निरन्तर संघर्षरत, लोखड़ल। ओकर संग एकटा नारी चेहरा— दिन राति खटैत, क्षण क्षण कार्यरत। चरुकात किछु अबोध चेहरा, छोट-छोट, सभ आशा भरल दृष्टिएँ हमरे दिस तकैत। चारूकात हँसैत लोक ठहाका दैत, अपमान करैत। मुदा सभ किछु सहैत हुनका लोकनिक दृष्टिमे एकटा आस, एकटा विश्वास।

हमरा लागल जेना काँटक बिछौनपर सूतल होइ। छटपटा उठलहुँ। ओही छटपटीमे नहि जानि कखन आँखि झँपि गेल।

पूब रेखा खिड़कीसँ सूर्यक पहिल किरण आबि जगौलक। प्रात भ' गेल। नव दिन शुरू भेल।

नहि, नव नहि। पुरने दिन फेर घुरि आयल अछि। ❀

जुलाई १९६४

असाध्य

एना कहियो नहि भेल रहैक—आश्चर्य!

भोरे सँ ओहि बाटे क्यो नहि गेलैक जाहि बाटे भोर सँ निरबद्ध राति धरि आब' जाय बलाक लाइन लागल रहैत छलैक! बिना ओहि बाटे गेने ने क्यो गाम सँ बाहर जा सकैत छल, ने भीतर आबि सकैत छल! मुदा ओहि दिन जेना सभ घर मे नहि बहरयबाक सपत खाने बैसल छल। उदास निस्तब्धतामे ठाम-ठाम सँ मुड़ल ओ बाट तेहन लागि रहल छलैक जेना कोनो विरहिणी ककरो तलाशमे आस्ते बौआ रहल हो।

एना पहिने त' कहियो नहि भेल रहैक।

जनवरीक धोअल-पोछल आकाश सामने उपरल पड़ल छलैक जाहि पर बरसातिक करोआह मेघक कतहु नामो-निशान धरि नहि छलैक! करोआह बौआइत मेघ केँ जेना क्यो लठिया क' भगा देने रहैक! मात्र हाथे धोअल-पोछल निरभ्र जकाँ स्वच्छ आकाश आ ताहि मोलायम सोनपंखी सूर्य किरण! मुदा सभ किछु सहमल, उदास-उदास! कोनो भयावह शांति। वातावरणक ताजगी केँ उदासीक झपसी झपने छलैक जेना! आश्चर्य!

ओना गामक पुरना रौनक नहि रहलैक आब! लोक सभ नोकरिहारा भ' गेलैक! छुट्टीमे कहियो कोनो साल सभकेँ जुटला सँ गामक हेरायल रौनक घुरि अबैत छैक। नहि तँ सौंसे गाम खाली आ सुन्न! गाममे खाली वृद्ध, स्त्रीगण आ धीया-पुताक अतिरिक्त वैह लोकनि रहैत छथि जिनकर नोकरी गामक पंचायत, खादी भण्डार आ स्कूलक छनि वा जे लोकनि अशिक्षित रहबाक कारणेँ गाममे अपन पुस्तैनी जमीन जोति-कोड़ि गुजर करैत छथि। गामक पुरना बाबति आब नहि रहलैक जहिया सैकड़ो पढ़ल-लिखल बेकार घरक अन्नक विध्वंस करैत दिन राति ताश शतरंजक अड्डा मारैत छलाह, नोकरी करब अपन शानक खिलाफ बुझैत छलाह! वैह शानबला सब गलत-गुदल नोटक हेतु फाइलक गर्दी झारैत छथि! समय-समयक बात!

बीरेन बाबू कें लागि रहल छलनि जेना गामक खालीपन बढ़ि गेल होइ, जेना सौंसे गाम श्मशानक स्तब्धता ओढ़ि लेने होअय ! भोर सँ एकोटा चेहरा नहि अभरल छलनि ! नहि जानि कहाँ मरि गेल सभ !

जेना-जेना समय बीति रहल छलैक, बीरेन बाबूक छटपटी सेहो बढ़ि रहल छलनि ! बाहर दलानमे चटकुनी बिछा आइक रौदमे बैसल छलाह । सभ दिनाक अभ्यास छलनि ! पातर मन खाली देबाल सँ लागल ठाढ़ छलनि आ अपने बिना खोलक मैल गेरुआ पर ओङठल बैसल छलाह । चेहराक हड्डी पातर चमड़ाक अवरोध हटा हुलकी देब' चाहैत छलनि आ हफ्ताक बिन बनाओल दाढ़ी ओकरा सफलताक असफल चेष्टामे लागल छल । तकियाली एक कात ओंघराएल आ गेरुआक दुनू पुड़ामे मैलिक तह जमल ! चारू कात किताब सभ छिड़िआयल—बालकाण्डक दुनू स्टोरीज वाल्मीकि रामायण, महाभारतक शान्तिपर्व आ गीता आदि पर राखल चश्मा फेर सँ मनामे शुश्वाक हेतु लगल रहल छलनि ! बीरेन बाबू एहि सभ वस्तुक अस्तित्व सँ असम्पृक्त व्यग्रतापूर्वक बाट निहारि रहल छलाह—अजीब छटपटीक स्थितिमे ।

दलानक ठीक सामने बड़का पोखरि छलैक जाहि मे हरियर सेंवार आ करमीक पूर्ण जनपद छलैक । पोखरि मे पानियो छलैक वा नहि से कहबे बुझब मोस्किल ! चारू कात सेंवार आ करमीक हरियरी पसरल छलैक जेना ओ कोनो पोखरि नहि, निचला जमीनक चौखुट टुकड़ा छलैक जाहि पर हरियर सेंवार आ करमी पसरल छलैक । मच्छड़ गौंवा देखि अपन डेरा बसा लेने छल आ सड़ैत सेंवारक दुर्गन्धि चारूकात पसर' लागल छलैक ! गामक उत्साही नवयुवक सभ कतेको बेर ओहि पोखरिक जीर्णोद्धारक प्रयास कयने छल ! मुदा गामक अनुभवी जाति सभ नव वयसक अज्ञानता कें सफल नहि होब' देने छलैक ! हुनका लोकनि कें विश्वास छलनि जे इलाकाक बी० डी० ओ० ओहि पोखरिक जीर्णोद्धार हेतु अवस्से सरकारी अनुदान देतैक ! व्यर्थ श्रमदान किऐक कयल जाय ?

बेचारा पोखरि मुदा सरकारी अनुदानक प्रतीक्षा करैत-करैत सेंवार करमीक तरमे औंता क' दम तोड़ि रहल छल आ सड़ल सेंवारक दुर्गन्ध चारूकात पसरि क' अनुदानक काज सहज बना रहल छलैक ! बीरेन बाबू कतेको बेर सोचने छलाह जे दलानक बैसकी छोड़ि देथि, बड़ गन्ध अबैत छलैक ! मुदा अभ्यासवश ओ चाय क' जाड़मे रौदक लोभमे आबि बैसैत छलाह । रहल ने जाइ छलनि !

मुदा ओहि दिन एना लागि रहल छलनि जेना दलाने मे नहि उजाड़मे बैसल छलाह आ' चारूकात अभिशप्त स्तब्धता व्याप्त छलैक ! पोखरिक चारू भीड़ पर सँ रस्ता अबैत छलैक आ पुबरिया दखिनबरिया कोन पर समटा रस्ता मिलिक' एकटा मुख्य बाटमे बदलि जाइत छलैक आ वैह बाट गाम सँ बाहर निकलि हाट दिस जाइत छलैक ! हरदम बाट पर चुट्टी जकाँ लोकक पतियानी लागल रहैत छलैक ! मुदा ओहि दिन क्यो नहि अभरलनि ! आश्चर्य !

बीरेन बाबूक दृष्टि चाकि क' किछु काल हेतु बगलक दलानमे चल गेलनि । दलान सून छलैक ! उदास ! ओही सून दलानमे नहियो गामक एकटा व्यक्तित्व बैसैत छलैक । महेश बाबू, बीरेन बाबूक बाल-सखा । लंगोटिया दोस्ती छलनि, जान दैत छलाह एक-दोसर पर ! महेश बाबू डील-डौलमे बीरेन बाबू सँ दस गुणा बेसी छलाह आ हरदम हँसैत-हँसबैत रहैत छलाह ! बीरेन बाबू खौंझाब' लेल कहथिन—ढोल सन मोटकू ! आ महेश बाबू जवाब देथिन—अघोरहरण मने जकरा चोरयबाक लोभ चोरो कें नहि होइ ! महेश बाबूक अभावमे बीरेन बाबूक एकाकी जीवनक एकमात्र आत्मीय सम्पर्क सेहो टूटि गेलनि ।

बीरेन बाबूक आँखि नोरा गेलनि । भरल आँखिसँ सून दलान आ दलानक सामने पसरल बड़का मैदानकें डेंगैत रहलाह ! ओही मैदानमे भालसरीक विशाल गाछ छलैक जाहिपर नहि जानि कत' कत' सँ रंग-बिरंगक चिड़ै आबि वास करैत छल । गामक लोक भालसरीक फूलक माला गँथैत छल आ बच्चा सभ भालसरीक फलक खसबाक आस मे दिन भरि ओकर छायामे बौआइत रहैत छल । ततेक विशाल गाछ छलैक जे ओकर मथनी दू-चारि कोस फराके सँ झलकैत छलैक । गामक कोनो व्यक्ति जखन कोनो नवागन्तुक पाहुनक संग स्टेशनपर उतरैत छलाह, तँ ओतहि सँ भालसरी गाछक मथनी देखा कहैत छलाथिन—वैह देखू हमर गाम । आ पाहुन दू माइलक रस्ता कोना पयरे नापि जाइत छलाह से हुनका बुझाइते नहि छलनि ! आ गाममे प्रवेश करैत बेरी हुनका गामक दू टा महान व्यक्तित्व सँ साक्षात्कार होइत छलनि—महेश बाबूक भव्य व्यक्तित्व आ भालसरीक विशाल गाछ ! जे एकबेर देखथि बेर-बेर देखबाक लोभ भ' जानि !

गामक ई दुनू महान व्यक्तित्व एक्के संग विदा भ' गेलैक ! पट्टीदार सभक ध्यान बरखोसँ भोलबरियामे पड़ल मैदान पर गेलनि आ बाद ओकरा टुकड़ी-टुकड़ी क' आपस मे बाँटि लेलनि । गाछ बेचि लेलनि आ टाका बाँटि लेलनि ! चारि मास धरि व्यापारी ओहि विशाल गाछक जड़ि, धड़ आ डारि-पात कें लादिक' ल' जाइत

रहल ! ओहि ठाँ महेश बाबू सेहो फिर त भ' गेलाह ! गाम श्रीहीन भ' गेल। आब रंग-बिरंगक चिड़ै नहि अबैत छलैक, घर-घर सँ भालसरीक फूलक सुगन्धि नहि पसरैत छलैक, धीया-पुता सभ भरि दिन भालसरीक फलक लोभमे नहि बौआइत छल, एकटा मस्त हँसीक ध्वनि सौंसे गाममे पसरल नहि रहैत छलैक। भालसरी तर बौआइत प्रत्येक धीया-पुताक मात्र ऐंठि आब क्यो नहि कहैत छलै—आ, नानीक सगाइ देखबियौक।"

बीरेन बाबू जखन ओहि दलान दिस देखैत छलाह, बाल-सखीक स्मृति कचोटैत छलनि आ लगैत छलनि जेना ओहि शून्य दलान मे बैसल क्यो बौआ रहल छनि—अनोहरण।

आ अपन अस्तित्वक यथार्थता आ निस्संगताक इतिहास आर स्पष्ट भ' क' टीसैत छलनि ! निताइ भाइ कहैत छलथिन—सुनलह बीरेन ! हमरा लोकनि बेसहुँ ओतहु मे पेड़ल कुसियार, रस पालू खसल, अपने सिट्ठी जकाँ आगू भागल जा रहल छी ! बस आब सुखायल सिट्ठीमे चिनगी पड़बाक विलम्ब अछि। सभटा समाप्त भ' जायत।" निताइ भाइ सेहो नहि रहलाह मुदा हुनकर स्मृति बीरेन बाबू कें सविघ्न होइत छलनि।

बीरेन बाबू दलान सँ हटा अपन दृष्टि फेर बाहरपर लगा देलनि ! कोनो अज्ञात रिक्तता भीतर-बाहर भरि गेल रहनि ! एना सतत होइत छलनि ! भीतरक शून्यता कें बाहरक चीजसँ भर' चाहैत छलाह, मुदा शून्यता आर बढ़ि जाइत छलनि ! बाहर भीतर सभ खाली !

नहि जानि किएक ओहि दिन ककरो एकको बेर नहि बहरायल छलथिन। कोनो आर दिन रहितनि तँ हुनकर खड़ामक खटर-पटर कतेको बेर सुनबा मे आयल रहितनि। आ आइनमे ओ भ' गेल छलैक। कालिह केहन चहल-पहल रहैक भरि दरने धुमस-गमस छलैक ! बीरेन बाबूक जेठका भातिज शहर सँ गाम आयल छलनि ! ओकरा घेरि धीयापुता सभ नवे मचौने रहल ! घरमे उल्लास पसरल छलैक !

ओहि गदंभ गोलमे बीरेन बाबूक आँखि खुजि गेलनि। दू दिन सँ मोन बड़ अस्वस्थ छलनि ! भरि राति नीन नहि भेल छलनि। भोरे आबि क' फलेक आँखि झपल छलनि। दू-दिन सँ देहक पोर-पोरमे दर्द छलनि। लगैत छलनि जेना बोखार

होनि, थर्मामीटरमे सन्तानबे सँ ऊपर चढ़िते नहि छलनि। खाली भितरे-भीतर बोखारक ज्वाला हरदम सुझाइत छलनि ! ततेक कमजोरी जे बिछौना सँ उठबाक मोन नहि होइत छलनि, मुदा भोरे-भोर हल्ला-गुल्ला सुनि उठिक' बाहर आबि गेल छलाह ! भातिज प्रणाम कयने छलनि आ बीरेन बाबू फुसफुसाक' आशीर्वाद देने छलथिन। प्रणाम क' भातिज अपन चीज-वस्तु सरिआब' लागल छल आ बीरेन बाबू चुपचाप ठाढ़ छलाह। राम नव विवाह कयने छल, बहुत रास चीज अनने छल। प्रणाम करबाक बाद तेना व्यस्त भ' गेल जे ओकरा बिसरि गेलैक जे लग मे काका ठाढ़ छलथिन।

"—कोनो छुट्टी छैक ? बीरेन बाबू तेना पुछलथिन जेना गप्पक क्रम जोड़' चाहैत होथि।

"जी नहि, ओहिना दू-चारि दिन लेल चल अयलहुँ।" रामक जवाब छलैक आ ओ पूर्ववत अपन वस्तु निकालि तैंत रहल छल। गप्पक क्रम फेर छुटि गेलैक। बीरेन बाबे सोचैत छलाह जे आब की पुछियैक ?

"—कोनो मैगजीन अनलह अछि ? बीरेन बाबू फेर पुछलथिन।

—हँ-हँ बहुत रास अछि। "राम कहलकनि आ बहुत रास पत्र-पत्रिका सूटकेस सँ बहार क' देलकनि। पत्रिका लैत काल बीरेन बाबू अपन हाथ रामक हाथ सँ छुआ देलथिन। मुदा ओ ध्यान नहि देलकनि।

"—हमर हाथ गरम नहि अछि"। बीरेन बाबू असली बात पर अयलाह
—जी नहि तँ, मोन खराब अछि की ? पुछबा लेल राम पूछि लेलकनि मुदा ओ अपन काज मे पूर्ववत् लागल छल। ओकर प्रश्न महज औपचारिक छलैक।

मुदा एतबे सँ बीरेन बाबू उत्साहित भ' उठलाह—दू दिन सँ बड़ बिकल छी। कमजोरी सँ उठलो नहि जा रहल अछि।

—टेम्परेचर लेने रही ?

—टेम्परेचर ल' क' की हैत ? ओना सन्तानबे सँ ऊपर चढ़िते नहि अछि। मुदा नाड़ी मे वेग अछि ! देखू, देखि लेह।" बीरेन बाबू अपन हाथ बढ़ा देलथिन। मुदा राम अपन काज मे लागल रहल। माथ झुकौनहि, मात्र एतबे बाजल ककरो पठा क' ओहि पार सँ दवाइ मङबा लिय'।" रामक स्वर मे एहन किछु नहि छलैक जाहिसँ आत्मीयतापूर्ण आशंकाक आभास भेटनि।

राम नाम मे धुम' निकलि गेल आ बीरेन बाबू ओतहि ठाढ़ रहि गेलाह। डाक्टर मड़ा क' की हेतनि ? पुरान जीर्ण रोगी छलाह, डाक्टर रोगक रहने जाइते नहि छलनि, बाहरी सिमटम दे सैत छलनि, भितरिया तकलीफ क्यो नहि बुझैत छलनि ! पेटेन्ट दबाइ आ टेबलेट ! पुरना जमानाक वैद्यक बात दोसर छलैक। नाड़ी हाथमे अबतैक कि रोगीक सभ हाल बुझि गेलैक। पछिला बेर छः मास दरभंगाक नामी डाक्टर सँ इलाज करबौलनि मुदा ओकरो वैह रटल रटाओल बात—कोई टुबुल नहीं है ! टेम्परेचर नहीं है, महज कमजोरी है ! टानिक खाइये।" आब एहि नवका जमानाक डाक्टर सभकेँ के बुझाबय जे खाली ओखारे रोग केँ लक्षण नहि होइत छैक ? टौनिके खयला सँ कमजोरी नहि दूर भ' जाइत छैक ! रोगक जड़ि हटब' पड़ैत छैक, तखन दबाइ असरि करैत छैक। मुदा क्यो नहि बुनलकनि। बुरि अछलाह ! पछिला तीन बरखमे भरिसकें एहन कोनो पाल भेल हेतनि जाहिमे बाहर जा क' नीक डाक्टर सँ इलाज नहि करौने हेताह। मुदा डाक्टर सभ हुनका नीरोग प्रमाणित करबाक ठीका लेने छनि जेना ! रोगकेँ मनक भ्रम कहैत छलनि। दूर भ' गेल।

ताहूसँ दुखक बात ई छलनि जे अपन परिवारोक लोक डाक्टरक संग द' ब' लागल छलनि। बीमारीकेँ मोनक भ्रम बुझैत छलनि ! जाधरि परिवारक एहि भ्रमक इलाज नहि हेतैक, बीरेन बाबूक इलाज के करतनि ?

बीरेन बाबू ई सभ सोचैत बड़ी काल धरि ठाढ़ रहलाह ! फेर भारी डेगे बाहर दलानमे अयलाह ! कका पहिने सँ बैसल अखबार उनटि रहल छलथिन ! ई अखबार अबसँ तीन दिन पुरान हेतैक ! ककाक अभ्यासे सैह छनि। नव पुरान जे भेटि जाइत छनि एहिपारसँ ओहि पार चाटिम जाइत छथि समय काटबाक एकटा बहाना।

'केहन मन छह बीरेन ? कका बड़ सिनेह सँ पुछलथिन। स्वरक आत्मीयता बीरेन बाबू केँ छुलकनि। एकदम छोट बच्चा जकाँ बाजि उठलाह—मोन ठीक नै अछि कका ! भरि राति नीन नहि भेल, बड़ बिकल छलहुँ !

—तेँ त' कहैत छिअ' जे एहि रोगक चिन्ता छोड़ि देह। दुखित आ पड़ब मकरा क्यो देखनिहार होइ, सेवा करनिहार होइ। तोहर कनियो केँ बेर-बेर सैह कहैत छियनि जे दुखित पड़ैत अछि भाग्यशाली लोक जकर बीमारीमे अपस्यांत दौड़निहार अनेको लोक रहैत छैक। अहाँ केँ के देखत ? पुतहु बाहर रहैत छथि। हम भेलहुँ बूढ़ लोक। असगरि छी अहाँ ? के देखत अहाँकेँ ? तखन बीमारीक मोह किएक ?

हम त' तोरो कहैत छिअह बीरेन, एहि रोगक मोह छोड़ि देह। जीवाक एतेक मोह किऐक ! एकटा बेटा छह—नीक कमाइत खाइत छह। बेटी सासुर गेलह। पोता-पोती सेहो देखलह। 'कनियाँ' अपन चिन्ता सँ पहिने मुक्त क' गेल छथुन। आब के रोकैत छह तोरा। आब जीबाक मोह होइते किएक छह ?

कका एके साँस मे बाजि गेलथिन। बजैत-बजैत उत्तेजित भ' उठलथिन ! मुदा बीरेन बाबू अनैत छलाह जे ओहि उत्तेजना मे क्रोध नहि, विवशता छलैक, अपन अनुभवक अभिव्यक्ति छलैक। दुनू गोटेकेँ एकके रंगक उपेक्षा आ निस्संगता घेरने छलनि। बीरेन बाबू बजलाह—मोह नहि कका, जीवाक कनियो मोह नहि ! गलि-गलि क', सड़ि-सड़ि क' मरबाक भय ! प्राण एकके बेर कहाँ छुटैत अछि ? ई पीड़ा, ई रोग—बस एकरे भय ! मोह कथुक नहि...किन्नहु नहि।

बीरेन बाबू फेर उठि क' आँगन मे आबि गेलाह ! छोट भाइ अपन धीया-पुताक संग बैसल रहथिन। बीरेन बाबू लग जा बैसि गेलाह। अपन हाथ बाबू बढ़बैत कहलथिन—कनेक नाड़ी देखह त' नरेन, किछु वेग बुझाइत अछि।

नरेन बाबू नाड़ी देखबैत बजलाह—नहि त' "नाड़ी त' खूब पुष्ट अछि।" आ फेर बच्चा सभक संग खेलाय लगलाह। बीरेन बाबू उठि क' बेटाक कोठली दिस अयलाह ! बेटा गामेक हाइ स्कूल मे मास्टरी करैत छथिन। स्कूलक समय भ' गेल रहैक, जयबाक हेतु अपन साइकिल झाड़ि-पोछि रहल छलाह ! बीरेन बाबू कहलथिन—छुट्टीक बाद कने डाक्टर केँ बजौने अबियहक।

बेटा कोनो जवाब नहि देलथिन ! किछु काल ठाढ़ रहि बीरेन बाबू आँगनसँ बहरा गेलाह !

रस्ता पर गामक बूढ़ किसान गणेश आ रहल छल। बीरेन बाबू ओकरे रोकि क' नाड़ी देख' कहलथिन। नाड़ी टोहियबैत ओ बाजल—कनेक वेग त' बुझाइत अछि।

बीरेन बाबू प्रसन्न भ' उठलाह। बस, एैह सभ हिनकर रोग बुझैत छनि। नाड़ी देखब आसान बात छैक ? बड़का-बड़का चूकि जाइत छथि। तेँ बीरेन बाबू गणेश आ ओकर सन-सन आर अनपढ़ मुदा गुणी किसान मजदूरक बड़ सम्मान करैत छलथिन, वैदराज नहि बजबैत छलथिन। जखन जे भेटि जानि ओकर हाथ मे अपन नाड़ी थम्हा दैत छलथिन। ओहो सभ मोनक बात सुना दैत छलनि।

गणेशाक बात सँ वीरेन बाबू आश्वस्त भेलाह। अपन नहि बुझलकनि, डाक्टर नहि चिन्हलकनि मुदा क्यो त' चिन्हलकनि हुनकर रोग।

मुदा ओहि राति नीन्न नहि भेलनि। बेर-बेर लगलनि जेना सिरमा मे क्यो ठाढ़ होथि। वीरेन बाबू चिन्हैत छथिन। भरिसक तीस वर्ष भ' गेलैक। निस्संगताक इतिहास भरिसक ताहू सँ पुरान छलनि। लगलनि जेना सिरमामे ठाढ़ भौ छाया किछु बाजि रहल छलनि, फुसफुसा रहल छलनि। कनबो कयलनि। बड़ी काल धरि सिरमा मे ठाढ़ कनैत रहलनि। भरिसक सभटा भ्रमे छलनि! रोगी मनक भ्रम...कि आनय?

आ सबेरे सँ चटकुष्मी बखान पर रौद दिस बिछा वीरेन बाबू अपन वैद्यराज सभक प्रतीक्षा क' रहल छलाह। मुदा पता नहि, आइ कहाँ मरि गेल छलनि सभ? आर त' आर, आइ ककरो नहि बहरैलथिन एकको बेर। आश्चर्य। भयावह सन सुन्न बाट पर दृष्टि अनेरो बौआ रहल छलनि। रौद माथ पर आबि गेल छलैक, तैयो रौद नीक लागि रहल छलनि—जाड़क कोमल रौद।

थाकि क' वीरेन बाबू आँखि मूनि लेलनि। सोच' लगलाह—"नहि आयल क्यो त' नहि आबह। ताहि सँ हमरा की? सभे बहैत छैक, बेर पर तुच्छ चीज सेहो अनमोल भ' जाइत छैक। आब नहि करबैक ककरो प्रतीक्षा, नहि कहबैक अपन रोगी मोनक हाल। कोन फायदा? सभ हमर बीमारी के' मोनक भ्रमे बुझैत अछि। कोन ठेकान इहो सभ सेहो बुझैत हो, मोन रखबा लेल हमरा परतारि रहल हो। आब नहि कहबैक—ककरो नहि कहबइ।

—"काका चलू ने; थारी परसल अछि।"

वीरेन बाबूक आँखि खुजि गेलनि आठ वर्षक भातिज श्याम खयबा लेल बजब' आयल छलनि, उठि बैसलाह। श्याम के' आर लग बजौलथिन। अपन हाथ ओकर मुट्ठी मे दबबैत कहलथिन—"कनेक देखू त' बाउ, नाड़ी मे वेग त' नहि अछि।

आ आठ वर्षक श्याम मुट्ठी मे दबल नाड़ीक धुकधुकी गनबाक बदला टुकुर-टुकुर अपन काकाक मुँह देखि रहल छल।

अगस्त १९६४

अरगनी

आङनमे किछु खसबाक स्वर अबैत अछि आ हम दौड़ि क' भीतर पहुँचैत छी। अरगनी टूटि क' खसल छैक आ आङनक कदोबाहु माटि मे छिड़िआयल बिछाओन आ भीजल कपड़ाक ढेरी लग माय चिन्तित सन ठाढ़ि अछि। कात-मड़क दुनू खम्भा ओहिना ठाढ़ छैक। मुदा दुनू खम्भाक कान्ह पर राखल बाँसक टुकड़ा बीचेसँ टूटि क' दुनू कात झुकि गेल छैक।

हमरा हँसी लागि जाइत अछि—नीक भेलैक। आब कमसँ कम कपार तँ नहि फूटत। हमर बस चलैत तँ कहिया ने उखाड़ि क' फेंकि देने रहितिऐक। मुदा माय हरदम बीचमे आबि जाइत छलि। हमर किछु सुनिते नहि छलि।

नहि जानि, कतेक बेर अन्हारमे एहि अरगनीसँ ठेहा लेने हैब? नहि जानि कतेक बेर कपार छोनितायल हैत, आ पैघ सन टेटर उगि आयल हैत, मुदा जहिया कहियो अरगनीकेँ उखाड़ि क' फेंक' चाहलिऐक, माय सभ बेर टोकि देलक—देखि क' चलब सीखह। ई बेचारा तँ अपन जगह पर ठाढ़ अछि, अनेरो तोरासँ ठेहा लेब' नहि अबैत छह। अपने देखि क' चलबह नहि आ सभटा तामस निरपराध अरगनी पर।" मायक एहि तर्कक आगाँ हम विवश भ' जाइत छलहुँ।

आङनक नक्शा कतेक युगसँ नहि बदललैक अछि। जहियासँ ज्ञान-प्राण भेल अछि, एहिमे कोनो हेर-फेर नहि भेलैक अछि। चारूकात ईंटाक मकान आ सभक ऊपर मे टीन पाटल। वर्गाकार आङनक बीच मे एकटा आयताकार मड़बा, छोट मुदा सजल-सजाओल, सुन्दर। बाबी कहैत छलि जे पहिने ई मड़बा आर सुन्दर छलैक। १९३४क क्रांतिकारी भूकम्पमे पुरान दुमहला-तीनमहला कोठा सभक संग ई मड़बो धसकि गेलैक। दुमहला-तीन महलाक जगह पर पुरान ईंटा जोड़ि क' टीन पाटि देल गेलैक आ बिआहक काम मड़बाक एकटा छोट मुदा सुन्दर संस्करण सेहो जेना-तेना बनिये गेलैक।

एहि मड़वाक पुबारी कात मे कनेक उत्तर दबि क' ई अरगनी ठाढ़ अछि। भोर दस बजे धरि जे रौद एत' पहुँचैत छैक से साँझ धरि रहैत छैक। दिन भरि अरगनी पर हमर छोट भाइ-बहिनक मूतल भीजल कपड़ा सब सुखाइत रहैत अछि।

ई अरगनी वयस मे हमरासँ जेठ हैत। छोट छलहुँ, तँ ई हमरा बड़ प्रतिन्न छल। स्नान कयलाक बाद भीजल पैंट कूदि-कूदि क' एहि अरगनी पर फेकब अपूर्व सुख दैत छल। आहि दिन एकर ऊँचाइ हमरा लेल एवरेस्टसँ कम नहि छल।

मुदा जहियासँ ई हमर कान्ह धरि आबि गेल अछि, हमरा फूटलो आँखिये नहि सोहाइत अछि। कन्हार मे बेर-बेर हमरासँ ठेहा लैत रहैत अछि। मायक लेहाज नहि रहैत तँ कहिया ने उखाड़ि क' फेकि देने रहितियैक।

आइ बार अपने चित्त भ' गेलाह। हमरा हाथे एकटा हत्या होइत-होइत बाँचि गेल। आब नहि बरदास्त होइत हमरा। उखाड़ि क' फेकिए दितियैक।

मायो हद करैत अछि। हमरा हँसैत ठाढ़ देखि टोकैत अछि—"ठाढ़ भेल ठिठियाइत की छह? बिलसबाकेँ कहक, एकटा नव बाँस आनत।"

—"जाय दही माय, आङनक बीच मे ई अरगनी हमरा नीक नहि लगैत अछि।" हम अपन मनक बात कहैत छियैक।

माय किछु काल हमर मुँह देखैत अछि, जेना कोनो सोचमे पड़लि हो। फेर उदास मुदा, तिक्त स्वर मे बाजि उठैत अछि—"तोरा नहि नीक लगलासँ काज नहि चलतह। कोनो इन्तजाम तँ चाहबे करी, नहि त' काल्हिसँ कपड़ा कत' सुखायत।"

हम निरुत्तर भ' जाइत छी। माय बिलसबाकेँ सोर पाड़' लगैत छैक। हम चुपचाप बाहर चल अबैत छी।

आइ सात दिनुका बाद रौद उगलैक अछि। झड़ी लागल छलैक, दिन-राति टिप-टिप। कोखन झहर-झहर। दिन-रातिक फर्क मेटा गेल छलैक। आइ सभ किछु साफ छैक—बदलल आ धोअल-पोछल। कतहु-कतहु मेघक एकाध

टिक्कर बौआ रहल छैक, मुदा निःशक्त। रौद प्रखर भ' रहल छैक मुदा तैयो नीक लागि रहल छैक।

दिन-राति घरमे गोँजल लोकसभ बाहर रौदमे बैसल अछि। हमहु अपन बरण्डासँ नीचा उतरैत छी।

बाट एकदम कदोआह। चारूकात पानि ओहिना चमकल छैक। चमकल पानि आ पिच-पिच कादोकेँ लाँघैत आगू बढ़ैत छी। बरखाक बाद एना खाली पयर घास पर भीजल माटि पर चलब नीक लगैत अछि। अपन नेनपन मोन पड़ैत अछि।

आ नेनपन संग मोन पड़ैत अछि भोलू आ मन्टू—अपन लंगोटिया दोस्त। विचारैत छी, ओकरे घरसँ भ' आबी। बहुत दिन भ' गेल।

भोलूक माय अनसायरसे भेटैत छथि। प्रणाम करैत छियनि। बीतिहु क' प्रसन्न होइत कहैत छथि—"धन्न भाग। तोहर तँ आब दर्शनो दुर्लभ भ' गेल। पैघ लोक भ' गेल छँ।"

—"नहि काकी। से बात नहि। गाम आयब तँ बिना अहाँ लोकनिसँ भेट कयने कोना जायब? आइ-काल्हि अबिते कम छी। भोलू कोना अछि, कत' अछि?

काकी उपराग दैत कहैत छथि—'दोस्त छौक तोहर आ खबरि हमरा पुछैत छेँ! तोँ तँ ओकरो चिट्ठी नहि लिखैत छही। आइ-काल्हि झरिया मे अछि, ओतहि "मनीजर" भ' गेल अछि।

—"सुनि क' खुशी भेल काकी। ओ चोरा त' हमरा खबरियो नहि देलक। अहाँ ओकर पता दिय' हमरा, हम दू-चारि दर्जन गारि लीखि क' पठा दैत छियैक।

काकी हँस' लगैत छथि। हमहुँ हँसैत छी आ हँसैत-हँसैत सोचैत छी जे बार की बाजू। काकी हमरा टोकैत छथि—'आइ-काल्हि तोँ की करैत छेँ'?

—"किछु नहि काकी।"

—"तोहर पढ़ाइ त' खतम भ' गेलौक?"

—"हूँ काकी।"

—"तखन आब की करैत छें ?"

—"काज तकैत छी काकी।"

—"आ ओ जे हाकिमबला इम्तिहान देलहिक, तकर की भेलौक ?"

—"एखन ओइमे देरी छैक काकी। एके बेरें नहि होइत छैक। कय-कय बेर इम्तिहान देब' पड़ैत छैक।"

—"पास भेलापर की बनबे ?"

—"हमर एहन भाग कहाँ काकी, जे पास करैत अछि, सोझे एस.डी.ओ. बनि जाइत अछि।"

—"एस. डी. ओ. के कतेक दरमाहा भेटैत छैक।" काकी बड़ उत्सुक भ' उठैत छथि। हम मोनक बात बुझैत छियनि। हँसी लगैत अछि मोने-मोन।

—"इंजीनियरसँ कम्मे भेटैत छैक काकी। फेर अपन भोलू तँ माइनिंग इंजीनियर अछि। ओकरा रुपैयाक कोन कमी।

काकी प्रसन्न भ' जाइत छथि। आश्वस्त। हम उठि क' ठाढ़ होइत छी।

—"आब चलैत छी काकी।"

—"कतेक मन्टू, ओना कोना जाय देबौक। किछु पनपियाइ......।"

"नहि काकी, एखन नहि, फेर कहियो......।"

बाहर आबि किछु काल बाटपर इतस्ततः करैत ठाढ़ रहैत छी। फेर अनायास मण्टूक घर दिस विदा होइत छी। मण्टूक माय नहाक' कपड़ा पसारि रहलि छथि। झुकि क' प्रणाम करैत छियनि।

—"अरे तों छें, कखन अयलें ?"

—"आइ सात दिन भेल काकी। बरखा झारें कतहु बहरायब मस्किल भ' गेल छल। मण्टू कोना अछि ?

—"ओ तँ एखन आसनसोलमे अछि। ओतहि एक टा "माइन" मे नौकरी लागि गेल छैक। एखन अढ़ाय सय रुपया दैत छैक।

—"तखन मधुर खुआउ काकी।"

हम प्रसन्नतापूर्वक कहैत छियनि। मण्टू माइनिंगक डिप्लोमा कोर्स कयलक अछि आ भोलू डिग्री कोर्स। एही सान। आ घट हुनुके नौकरियो लागि गेलैक।

सभ कहैत छैक गाममे लोक, आइ-कालि जे 'सेन्स' नहि पढ़लक, से कात पड़लक। नहि तँ एम. ए. पास क' क' एना बेकार किएक बैसल रहितहुँ, हम सोचैत छी।

—"की मधुर मङाउ ? कोन एहन मनीजर भ' गेल अछि।" काकीक स्वर उदास छनि। हम हुनकर व्यथा बुझैत छियनि।

—"मैनेजर नहि भेल तँ भ' जायत। ई कोन मस्किल छैक।"

—"सत्ते कहैत छें ?"

—"झूठ किएक बाजब काकी।"

—मुदा भोलूक माय कहैत छलीह जे मण्टू 'मनीजर' नहि भ' सकैत अछि, ओ छोट पढ़ाइ पढ़ने अछि आ भोलू बड़का पढ़ाइ पढ़लक अछि।" हमरा हँसी लागि जाइत अछि, चेष्टा पूर्वक रोकैत छी।

—"नहि काकी। भोलू मण्टू दुनू बड़का पढ़ाइ पढ़लक अछि—साइन्स। छोटका पढ़ाई तँ हम पढ़लहुँ अछि। एकटा परीक्षा हेतैक तकर बाद भोलू बकाँ मण्टूओ मैनेजर भ' जायत।"

—"तोरा मुँहेमे अमृत" काकी गदगद होइत बजैत छथि। किछुकाल दुनू गोटे चुप रहैत छी गुमसुम। फेर काकी टोकैत छथि—"तोहर हाकिम बला इम्तिहान कहिया हेतौक ?

—"हाकिम कपारसँ बनैत अछि काकी, आ हमरा कपारमे त' बौआयबे लिखल अछि।"

—"एना जुनि बाज। बौअयतौक तोहर दुसमन। तों अवस्से हाकिम बनबें। मण्टूक बाबू तोहर बड़ तारीफ करैत छथुन, सदिखन। कहैत छथिन जे एहन विद्यार्थी देखबे नहि कयलहुँ जिनगीमे। तों सभ दिन फस्ट करैत छलें, मण्टू सेकिण्ड आ भोलू थर्ड। तों सेन्स छोड़ि देलें तें कनेक गड़बड़ा गेलौक।

तखने हमर छोट बहीन हमरा तकैत ओत' पहुँचि जाइत अछि। सौंसे गाम औंसा आयलि अछि हमरा तकैत-तकैत। दादा (बाबूजी) बजौने छथि। हम चुपचाप ओकरा संग विदा होइत छी। काकी फेर अयबाक आग्रह करैत छथि।

हमर घरबाइ बिलसबा तीन-चारिटा घरबाहुक संग बथानपर बैसल अछि। हम आनू बढ़ैत छी।

"ई मालिक की करै छइ बाब" पाछाँसँ एकटा स्वर अबैत अछि।

"पढ़ै छइ" खिलखिलाक स्वर हम चिन्हैत छियैक।

"बूढ़ हो गेलै आ अभी ले पढ़िते छइ" दोसर स्वरमे आश्चर्य छैक।

हम आगाँ बढ़ि जाइत छी। स्वर पछुआ जाइत अछि। एकटा दोसर स्वर कानमे पड़ैत अछि। माय आ दादामे कोनो बातपर बहस भ' रहल छनि जकर स्वर बाहर धरि आबि रहल छैक। हमरा देखिते देरी माय बाजि उठैत अछि—"आब तोँही फैसला करह।"

"की भेलौक अछि माय।" हमरा किछु नहि बुझाइत अछि। माय कागज कलम हमरा हाथमे दैत कहैत अछि "लिखह।"

बहुत रास सामान सभ, ओकर मात्रा आ मूल्य माय लिखबैत अछि, हम लिखैत जाइत छी।

बड़का फिरिस्त तैयार भ' जाइत अछि।

—"आब तोँही कहह जे महीना भरिक हेतु एहिमे कोन वस्तु बेसी छैक।" माय पुछैत अछि।

हम फेर एक बेर फिरिस्त पढ़ैत छी—ई तँ बड़ कम छौक माय।'

—"आब एकर दाम जोड़ह" माय हमर बात जेना नहि सुनैत अछि।

हम मूल्यक टोटल करैत छी—"ढ़ु सय भेलौक।"

—"आब कनेक अपन बापकेँ बुझाबह। हम डेढ़ सय मङैत छियनि तँ कहैत छथि जे आर कम करू। एहिसँ कममे कोना चलतैक, तोँही कहह?

हम दादा दिस तकैत छी। ओ हमरा नहि देखि रहल छथि, ओ ककरो नहि देखि रहल छथि। दृष्टि देवालपर अटकल छनि। कहैत छथि—"चलत से तँ हम नहि कहैत छी कहै छी जे चलाब' पड़त।

कनेक काल चुप्प रहि हमरासँ कहैत छथि—मायक फिरिस्त तँ लिखि चुकलह, आब कनेक हमरो फेरिस्त लिखि देह।

हम फेर कलम उठा लैत छी। दादा लिखबैत छथि।

दरमाहासँ आमदनी—३५० रुपैया।

पिछला कर्जक किस्त कटौती—२००) रुपया
सुनील (हमर बहनोइक) पढ़ाइ—६०) रुपया
लाइफ इन्स्योरेंस प्रीमियम—४०) रुपया
रमेश (हमर छोट भाइक) पढ़ाइ—५०) रुपया

हम हाथ रोकि लैत छी—'आब तँ एक्को पाइ ने बाँचल।"

"सैह तँ हमहुँ कहैत छियनि तोहर मायकेँ जे एक्को पाइ नहि बँचैत अछि तँ हम कहाँसँ दिय'।" दादा कहैत छथि।

"तँ फेर हम की करू। सभक मुँह सीबि दियैक। जवाब दिय'।" हमरा लगैत अछि जे ई सवाल माय हमरेसँ क' रहल अछि—मात्र हमरेटासँ।

हम ओकरा दिस तकैत छी। ओ दोसर दिस ताकि रहल अछि। हम दादा दिस तकैत छी, ओ पूर्ववत् देवाल दिस ताकि रहल छथि।

हम किछु बाज' चाहैत छी। की बाज' चाहैत छी, नहि बुझाइत अछि। किछु बाजले नहि जाइत अछि।

सभ चुप्प अछि। ई स्थिति हमरा असह्य लगैत अछि। हम उठि क' आङनमे चल अबैत छी।

अरगनी फेर बना देल गेलैक अछि। दुनू पुरना खम्भा पर नव बाँसक एकटा टुकड़ा राखि देल गेल छैक। हम बड़ी काल धरि ओकरा देखैत ठाढ़ रहैत छी। माय पाछाँमे आबि क' ठाढ़ होइत अछि—'चलह, परसि दिय' ।,

हम मनसा चरक ओसारा पर पीढ़ी पर बैसि जाइत छी। माय थारी परसि क' आगाँमे दैत अछि।

खाइत-खाइत हम ओहिना ओसारा पर बैसल रमेशकेँ टोकैत छियैक—"स्कूल नहि गेलहिक आइ?

—"किताब नहि अछि, गुरुजी मारैत छथि।"

—"आ दिनेश तोँ। तोँ कियैक ने गेलहिक?"

—"हमर स्लेट फुटि गेल। माय दोसर नहि मँगा दैत अछि।'

हम माय दिस तकैत छी। ओ मुहु घुमा लैत अछि।

अबसेबरक ओसारापर हमर सभसँ छोटकी बहीन नकटे खेला रहलि अछि। ओकरे सन ओकरासँ पैघ बहीन पुरान-फाटल सायाक कपड़ाक सीयल फाक पहिरने बैसल अछि। ओकरासँ पैघ दुनू बहीन कलपर अपन ओ बौजीक संग कपड़ा खीचि रहल अछि।

हम हाथ-मुँह धो क' अपन कोठलीमे बिछाओन पर पड़ि रहैत छी। बड़ थकानी बुझाइत अछि, आँखि झलफला रहल अछि।

"सूति रहलहुँ ?" नहि जानि कतेक कालक बाद ज्योति हमरा हिलबैत छथि। हुनकर कपड़ासँ हरदि आ धनी-मेरचाइक गन्ध आबि रहल छलनि। आँचरसँ कण्ठ लगक पसेना पोछैत ठाढ़ि छथि। हम चुपचाप हुनकर आँखिक नीचाके स्याह रेखाकेँ देखैत छी।

"की सोचैत छी ?" ओ टोकैत छथि। "किछु नहि। सोचैत छी जे आइ राति चल जाइ।" हम करोट फेरि लैत छी।

"कोनो खबरि आयल अछि की ?"

ज्योतिक स्वर मे आकुल उत्कण्ठा छनि।

"एखन तँ कतहुसँ किछु खबरि नहि आयल अछि। मुदा गाम मे बैसल रहलासँ की हैत ?"

ज्योति चुप भ' जाइत छथि। हम खिड़कीसँ बाहर आङन दिस तकैत छी।

एकाएक ज्योति हमर पीठ पर छिड़िया जाइत छथि जेना टूटि गेलि होथि। एकदम हारल, पराजित, याचना भरल स्वर मे बजैत छथि—

—"हमरा कहिया ल' चलब ?"

हम कोनो जवाब नहि दैत छियनि।

ओहिना पड़ल-पड़ल खिड़कीसँ आङनमे ठाढ़ अरगनीकेँ देखैत छी जाहि पर आइ नीलक नव टुकड़ा राखि देल गेल छैक आ ओहि पर बहुत रास कपड़ा सूखा रहल छैक। ●

फरवरी, १९६५

सूर्यास्त

परेश बाबू पड़ल पड़ल अखबार उनट' लगलाह। अखबार तीन दिन पुरान छलनि, आ दि इण्डियन नेशन सँ प्रिन्टेड एण्ड पब्लिश्ड बाई'—... तक अनेक आवृत्ति पहिलहि क' चुकल छलाह ! अखबार हाथमे लेने किछु तारतम्य मे रहलाह जे कहाँ सँ शुरु करी ! फेर शुरूयेसँ आवृत्ति शुरु कयलनि।

भोजनक उपरान्त विश्राम करबाक अभ्यास सभ दिन छलनि। जहिया ओकालति करैत छलाह तहियो। छूटा मोट-मोट गेरुआ दुनू जाँघ तर आ एकटा पैघ मसलंग सिरमा मे। मोट गद्दा पर अलस भाव सँ पड़ल अढ़ाइ मोनक विशाल थुदा वृद्ध शरीर। प्राचीन मिस्रक कोनो वृद्धकेरो सन आकृति आ आकृति पर ओहने कान्ति आ रोब।

सुन्न दुपहरिया मे बैसाखक तीक्ष्ण रौद चारकात आधिपत्य जमौने छल। अपेक्षाकृत कने नीच कोठाक छत तबि गेल छलैक आ पसेना सँ परेश बाबू तरब-तर भेल जा रहल छलाह। पड़ले पड़ल कने क्रुद्ध होइत बजलाह—"रे रमचरना ! सूति रहलें की ? डोरी खींच जोर सँ।"

पतिक क्रुद्ध स्वर सुनि दोसर चौकी पर पड़लि महामाया दाइक हाथ मे अनवरत चलैत बिअनि रुकि गेलनि। पड़लि-पड़लि भर्त्सनाक स्वर मे बजलीह—'बुढ़ बयस भहुँ' के मति-भ्रम भेल जाइत अछि। रमचरना पन्द्रह बरख पहिने अहाँक नोकरी छोड़लक, सेहो की हमरे मोन पाड़' पड़त।"

परेश बाबू पत्नीक भर्त्सना पर कने सकपका गेलाह। फेर एकटा शुष्क हँसी ठोर पर आबि गेलनि—गत गौरवक अवसाद भरल हँसी। रमचरना हुनकर खास खबास छलनि, चौबीस घंटाक ड्यूटी। चालीस वर्ष धरि संगे रहलनि। आब संगहि कियो नहि छलनि, रमचरनो नहि रहलनि, पुरना चीज सभ एक एक क' छोड़ि गेल छलनि।

स्मृति खेब छलनि। कोठाक छत सँ अखनो तीन हाथ लम्बा झालरिदार पंखा लटकल छलैक जकर डोरी टुगर जकाँ छिमेंट पर ओंघरायल छलैक।

अखनो कतेको दिन बिछौन पर पड़लहि लगैत छलनि जेना बोरी भयने रमचरना औंघा रहल होनि आ टोकि दैत छलथिन—"रामचरना, सूति रहलें रौ ?" मुदा रमचरनाक "बहि सरकार"क बदला मे कान मे पड़ैत छलनि पत्नीक उपहासपूर्ण भर्त्सना आ सकपका क' चुप भ' जाइत छलाह।

सभ दिन जकाँ आइयो परेश बाबू पत्नीकेँ कोनो उत्तर नहि देलथिन। हाथ बढ़ा डोरी खीचि लेलनि आ घीचैत रहलाह। पसेना सँ भीजल देह पर पंखाक हवा बड़ सुखद लगलनि। मुदा भीतरमे जेना एकटा अवसाद आ रिक्तता भरि गेलनि। बामा हाथमे दबल अखबार फरफराइत रहलनि।

कौखन परेश बाबू अपनो मुट्ठी मे दबल अखबार जकाँ फरफराइ उठैत छथि—मुक्तिक हेतु व्याकुल। अइ संसार आ सांसारिक बंधन सँ मुक्ति। आब कोनो मोह नहि, कतहु कोनो गाँठ नहि। सभ अपन अपन बंधन सँ मुक्त क' देने छनि। जिनगीक कगार पर ठाढ़ परेश बाबू एकसर मुक्तिक प्रतीक्षा क' रहल छथि। मुदा समयक अन्तराल जेना बढ़िते जा रहल होनि। आ सभ किछु असह्य लाग' लगैत छलनि। जेना रमीक खेलमे मात्र एकटा पत्ता लेल कतेको कालधरि रुकल होथि आ रुकले रहि जाइत होथि, बाजी हारि जाइत होथि।

वस्तुतः बाजी हारि गेल छथि परेश बाबू ! जिनगीक कगार पर ठाढ़ मुक्तिक प्रतीक्षामे बाजी हारि गेल छथि। यदि ओ मुक्ति दस बरख पहिने भेटितनि तँ जीति जैतथि। एकदम भरल बाजी ! एकदम भरल घर। एक एकटा बंधन मजगूत। एक-एकटा तन्तु सटल। फुट प्वायन्ट्स।

आब सभ किछु टूटि गेल छनि। लगाओल ट्रेल, लगाओल सीक्वेंस, सभटा बेकार भ' गेल छनि। परेश बाबू हारि गेल छथि—ए मोस्ट अनएक्सपेक्टेड डिफीट।

मुक्ति बाट मुदा भेटैत छनि। आँगनक मुँहथरि पर ठाढ़ ललन इशारा द' रहल छनि। परेश बाबूक ठोर पर हँसी आबि जाइत छनि। हाथसँ इशारा करैत छथिन जे तों चल, हम अबैत छी।

ललन आश्वस्त भेल चल जाइत अछि। परेश बाबू व्यस्त भ' उठैत छथि। सभसँ पहिने पत्नीक बिछौन पर दृष्टिपात करैत स्थिर कर' चाहैत छथि जे ओ सूतलि छथि वा जागलि। हुनका निद्रित बुझि आश्वस्त होइत छथि, अखबार

के' नीक जकाँ मोड़ि बामा काँख तर लैत छथि आ दहिना हाथमे अपन मोट छड़ी उठा जमीन पर टेकैत छथि। चौकी तर राखल खड़ाम पहिरि लैत छथि। उठबा मे कष्ट होइत छनि, जमीन परसँ उठ'मे आरो बेसी। ठेहुनक ओड़ पकड़ि लेने छनि। आस्ते-आस्ते उठि क' ठाढ़ होइत छथि। तखन कोनो कष्ट नहि। छिड़िआएल दुर्बल देह अखनो सोटल छनि आ आँखिक रोशनी अखनो तीक्ष्ण। डेग आगू बढ़बैत छथि।

विशाल शरीरक बोझसँ दबल खड़ाम सीमटी पर खटखटा उठैत छनि। औंघाइत महामाया दाइ उठि बैसैत छथि आ आग्नेय दृष्टिसँ पति दिस तकैत छथि। परेश बाबू चुपचाप डेग आगू बढ़ौने जाइत छथि।

महामाया दाइ पाछाँसँ गरजि उठैत छथि "लाज नहि अछि अहाँक कोनो मन मे। काल्हिये सप्पत खयलहुँ अछि जे फेर सीध तोड़िक पड़ब मे नहि... मिसराबय मुदा आइ फेर बैह चालि। हम एकसरि सुन आँगनमे किलोल करैत रहु आ ई धीया-पुता संग भोग करैत रहताह। लोक ने देखू, बुढ़िया घोड़ी लाल लगाम।"

सभटा सुनैत परेश बाबू निर्विकार भाव सँ खड़ाम खटखटबैत आँगन सँ बाहर भ' जाइत छथि। तखन महामाया दाइक भर्त्सना क्रन्दन मे बदलि जाइत छनि आ ओइ बेर दुपहरियाक सुन्न पर आँगनमे अहुरिया काटैत रहैत छनि।

× × × × ×

—नो ट्रम्प्स।

—टू स्पेडस।

—थ्री हार्ट्स।

—फोर क्लब्स।

—फोर स्पेड्स।

—डबल ! परेश बाबूक विड रहि जाइत छनि। ललन कनी बर्गेत अछि। परेश बाबूक ताश देखैत छनि—"नो ट्रम्पसक अगेन्स्ट अहाँ कोन फोसा ओपेन क' देलियैक बाबा ? अहाँ के तँ एकको ट्रिक नहि अछि। आ फेर फोर सेहो बाजि देलिऐक।" ललन कने रुष्ट होइत कहैत छनि। लगातार हारि रहल छल।

—"तों सपोर्ट किऐ केलह ?"

—"हमरा तँ अढ़ाइ टा ट्रिक अछि। अहाँ सभ बेर अहिना फौल द' दैत छियैक बाबा।" ललन उलहन जकाँ दैत छनि।

परेश बाबू ओकर व्यथा बुझैत छथिन। ओ स्कूलिया छौड़ा अछि। जीत' लेल खेलाइत अछि, हार कथुक लेल नहि। ओकर छुटा संगतुरिया छौड़ा ओकरा ओ अपना सँ कमजोर खेलाड़ी बुझैत छलैक से जीति रहल छलैक, सैह ओकरा अखरि रहल छलैक। ओ परेश बाबूक परमानेन्ट पार्टनर छल। परेश बाबू सभ दिन हारैत छलाह मुदा बिड़ समयेँ हाइयेस्ट दैत छलथिन।

आइ बेर ओकर कोन छलनि! पाँच हाथ डाउन खेलाह! तखनक मुँह लटकि गेलैक।

परेश बाबू ओकरा आश्वासन दैत कहलथिन—मुँह नहि लटकाउ पार्टनर। अहाँ जेना छी, जीत' सँ प्रसन्न होइत छी। मुदा हम त' हारि-जीत लेल नहि खेलाइत छी।"

बाबाक अन्तिम वाक्यक अर्थ स्कूलिया छौड़ा सबके नहि लगैत छैक। टुकुर टुकुर परेश बाबूक मुँह ताक' लगैत अछि।

परेश बाबू ताश बाँट' लगैत छथि आ ताश उठबितहि अति प्रसन्न होइत बजैत छथि—"ट्रू नो ट्रम्प्स।"

तखनक कोड़ फेर चढ़' लगैत छैक।

\+ \+ \+ \+ \+

हालफल अन्हार भरि ताशक अड्डा जमल रहैत छैक। जखन ताश बूझ' मे कष्ट होम' लगैत छैक, तखन परेश बाबू उठैत छथि।

उठैत छथि आ अपना दिस बिदा होइत छथि! आँगनक मुँहपरि तम बाबि किछु मौन पड़ैत छनि। फेर घुरैत छथि। अगले मे हाइ स्कूलक हेडमास्टरक घर छनि। परेश बाबूक भातिज! दालान मे कुर्सी पर बैसैत परेश बाबू काँख तर सँ अखबार बहार क' दैत कहैत छथिन—"ई अखबार राखह। कल्हुका देह। अजुका त' स्कूल पर हेतह? कोनो खास न्यूज?

—"नहि काका! कोनो नहि!"

अखबार ल'क' परेश बाबू फेर आँगन दिस बिदा होइत छथि। नीक जकाँ अन्हार भ' गेल छैक। अन्हार मे पैर थरथराइत छनि। मुदा आँगन पहुँचि जाइत छथि। ओसारा पर लालटेन बारिक' राखल छनि। इजोतमे परेश बाबू ओसारा पर चढ़ैत छथि। अपन चौकी पर महामाया दाइ गुमसुम बैसलि छथि। बौतेक टा आँगन आ ओहन पैघ पैघ घरक बीच एकसरि। परेश बाबू प्रविश भ' उठैत छथि।

महामाया दाइक मुद्रा तनल छनि। तामसे कछमछ लेल मौन बैसलि छथि।

अकारिन साँझे चल गेलनि। रातिक' नीक जकाँ सुझैत नहि छनि तेँ साँझे थानस क' लैत छथि। अकारिनक छुटल कोना अयतीह?

परेश बाबू चुपचाप अपन बिछौन पर बैसैत छथि आ हाथ बढ़ा लालटेन उठा सिरमामे खिड़की पर राखि पढ़ि रहैत छथि। अखबार खोलिक' आँखिक आगाँ पसारि लैत छथि।

किछु क्षण मौन। संझिया रातिक निस्तब्धता—'खायब? परसि दिय'? एकटा प्रश्न!

—"जे विचार हो"।

सभ दिन एकटा उत्तर।

भोजनक उपरान्त परेश बाबू फेर अखबार पसारि लैत छथि। महामाया दाइ भोजनक उपरान्त अपन बिछौन पर पड़ि बिझनि होक' लगैत छथि।

फेर एकटा चुप्पी, असह्य मौन।

महामाया दाइ कुहर' लगैत छथि, पहिने कने आस्ते सँ, फेर जोर-जोर सँ। परेश बाबू अखबार सँ आँखि नहि उठबैत छथि।

कुहरब बन्द बन्द भ' जाइत छनि! फेर मौन —किछु काल!

—"बहीर भ' गेल छी?" पत्नी अप्रत्याशित प्रश्न पर परेश बाबू चौंकि क' अखबार सँ दृष्टि हटबैत छथि।

—"आइ सात दिन सँ हम मरि रहल छी। सभ राति बोखार होइत अछि, दर्द सँ माथ-कपार फटैत अछि आ अहाँ अखबार पसारने निश्चिन्त पड़ल रहू!

—"उपाय?" परेश बाबू जेना प्रश्न करैत छथिन।

—"हमरा बरदनि दवाक भारि दिय'" महामाया दाइ लोहछिक' बजैत छथि।

—"नीक त' सैह होयत।" परेश बाबू बुदबुदाइत छथि।

महामाया दाइ सुनि रहैत छथिन । तिलमिलाक उठि बैसैत छथि । माल पर बीर टघरि आइत छनि ।

'आब किछैक ने कहब छै । आब हम छी कथी जोगरक । पचपन वर्ष धरि मुदा अहीं लेब खिसरी कटैत रहलहुँ अछि सदिखन । आइ हमरा घेंट दबाक मारि दिय' । मुदा अपन की हैत ? क देत कोनो पागल राक्षिक आर्मा मे ?

—'हें' त' कहैत छी जे चुपचाप पड़ल रहू, जे होइत अछि चुपचाप सहैत रहू । माथमे दर्द होइत अछि, बोखार अछि मुदा हम की करू ? अइ अन्हार मे डाक्टर लब ? नोकर बैसल अछि ककरा दौड़बियौक इम्हर-ओम्हर ! बेटा-बेटी नाति पोता अछि लग मे जे सेवा-सुश्रुषा करत ! माथ दबाओत, तरबा मालिश करत ? तखन की करू हम ? तें कहैत छी जे नीक होइत जे घेंट दबा बहूँ के मारि दितहुँ आ अपनो फाँसी लगा लितहुँ । बस, सब झंझट चैन !

परेश बाबूक विशाल शरीर थर-थर काँप' लगैत छनि । क्रोध, उत्तेजना आ विवशता, नहि जानि कथीसँ ? महामाया दाइ आहत आ विदीर्ण भ' क' अपन बिछौन पर पड़ि रहैत छथि । आगू एक शब्द नहि बजैत छथि । परेश बाबूक थरथर काँपैत देह क्रमशः स्थिर भ' जाइत छनि ? फेर अखबार पढ़' लगैत छथि ।

महामाया दाइक पतिक संग बितावल अनेको वर्ष मोन पड़ैत छनि । सुख ऐश्वर्य आ प्रेमसँ भीजल जीवनक पचास टा वर्ष । परेश बाबू सभ किछु देने छलथिन हुनका - सुख, सन्तति आ स्निग्ध प्रेम ।

आइ पाँच वर्ष सँ सभ किछु बिला गेल छलनि जेना । सन्तति, सुख आ पतिकप्रेम, सभटा हेरा गेल छलनि । सभ किछु रहियो क' किछु नहि छलनि । भीतर-बाहर सभ सुन्न ।

पैघ आँगन ! आँगनक चारूकात पक्का मकान ! पैघ कोठली, पैघ केबाड़ पैघ खिड़की । सुन्दर सज्जित ! कतेको वर्ष सँ मुदा लोल लटकल सभ पर । सभ मे ताला बन्द । मात्र एकटा कोठली आ भंसा घर खुजल । ककरो कुंजियो नहि छलनि महामाया दाइक संग । पुतोहु लोकनि कुंजी संगहि रखैत छलथिन । दू-बरख सँ नहि अबैत जाइत छथि तें ओ कोठली सभ ओहिना बन्द रहैत छनि ।

जेठ बेटा पहिने फराक भेलथि । ओ महामाया दाइ सँ रूष्ट छलथि जे ओ छोट बेटाकेँ बेसी मानैत छलीह ! माय भ' क' दू रंग व्यवहार ! कहिक' बेटा फराक भ' गेलनि ! आँगन मे पोता पोती खेलाइत रहैत छलथि आ महामाया दाइकेँ नहि बुझाइत छलनि जे बेटा फराक छनि !

एकटा बेटी छलनि ! कम्मे वयस मे विधवा भ' गेलनि ! एकटा नतिनी सेहो छलनि ! बेटी-नतिनी सभ दिन महामाया दाइक संग रहलनि !

नोकर-चाकर भनसीया आ जिरतिया ! भरि दिन आँगन मे हूलि मचल रहैत छलनि ! महामाया राजरानी छलीह ।

फेर सभटा बिलाय लगलनि ! घर जमीन, कट-कचहरी, नोकर-भनसीया सभटा बिलाइत गेलनि । तैयो महामाया दाइ सुखी छलीह ! भरल घर छलनि ! पोता-पोती आँगन मे खेलाइत छलनि । छोट पुतोहु सेहो अयलनि । सुन्दरि, पैघ घरक । हुनको धीया-पुता भेलनि । फेर छोटको बेटा फराक भ' गेलनि । महामाया दाइ ककरो दोष नहि देलथिन । आँगन मे पोता पोती खेलाइत रहलनि । कहियो कोनो दुख कचोट नहि भेलनि । सभ दिन भरल पुरल रहलीह ।

भरल घर खाली होम' लगलैक । नतिनीक विवाह करौलनि आ नतिनीक संग बेटियो चल जाइत रहलनि ।

आ जर जमीन घटलैक त' बैसल खाइ मे असुविधा होम' लगलैक । दुनू बेटा नौकरी कर' लगलनि । आँगन सुन्न भ' गेलैक । दुनू बेटा अपन-अपन परिवार संग चललक । बूढ़ा-बूढ़ी, कोनो परिवारक नहि छल । ओम्हरा कियो नहि पुछलकैक । सुन्न घर आँगन मे दुनू पड़ल रहल, पाँच वर्ष सँ पड़ल अछि । जिनगीक कगार पर ठाढ़ दू टा बुड़-एकसर आ अबश ।

× × × ×

एक बेर महामाया दाइ जगलीह ।

राति बहुत बीति गेल छलैक मुदा परेश बाबू अखबार पसारने जागल छलाह । पसरल अखबारक अक्षर सभ अदृश्य छलनि । आँखिक आँगा झलफला रहल छलनि—गत जीवनक कतेको गौरवमय दिन । भविष्यक कल्पना सँ आतंकित भ' उठल छलाह आ आँखिक नीन्न पड़ा गेल छलनि ।

महामाया दाइ पतिक मोनक अस्थिरता बुझलनि । बड़ स्निग्ध भ' उठलीह ।—"नीन्न नहि होइत अछि ।" पत्नीक स्निग्ध स्वर पर परेश बाबू चौंकलाह । ई स्वर आब कतेक अनचिन्हार भ' गेल छनि ।

"बस आब भ' गेल ।" अखबार मोड़िक सिरमा तर रखैत परेश बाबू कहैत छथिन ।

—बड़ गर्मी छैक ! बिअनि होंकि दिअ' ?" महामाया दाइ उठबा लेल उद्यत होइत छथि !

"नहि, नहि अहाँ पड़ल रहू । अहाँक मोन खराप अछि । सबेरे सुति रहू ।" । खिड़की पर सँ लालटेन उठा ओकर टेमी कम क' क' ओकरा चौकी तर रखैत परेश बाबू कहैत छथिन ।

घुप्प अन्हार मे हुनू मोटे बड़ी काल धरि जगैत छथि । मोन मुदा निनद्य अतीत मे भोतिआयल ।

× × × ×

एक बेर परेश बाबू जगलाह ।

प्रात हैबा मे बेसी विलम्ब नहि छलैक । भोरक ठण्ढा हवा रातुक उष्णता कें कष्ट करैत सिहकि रहल छल । मुदा परेश बाबूक मोन भारी छलनि । अपन चौकी पर महामाया दाइ कुहरि रहल छलीह—अनवरत ।

आइ कतेको दिन सँ ठीक अही बेर मे परेश बाबूक नीन्न टूटि जाइत छनि आ सब दिन नीन्न टूटला पर पत्नीक कुहरनाइ कान मे पड़ैत छनि ।

आ मोन तड़फड़ा क' रहि जाइत छनि । मोन होइत छनि जे कहुना उठथि आ लग मे बैसि माथा दबा देथिन । मुदा अपनो देह थकड़ल सन लगैत छनि । अवश भाव सँ पड़ल रहैत छथि आ पत्नीक कुहरनाइ सहस्रमुखी भ' कान मे गोंगिआय लगैत छनि ।

आ फेर नीन्न नहि होइत छनि परेश बाबू कें ।

× × × ×

फेर महामाया दाइ जगलीह ।

चाकचाक रौद पसरि गेल छलैक । परेश बाबू मुँह हाथ धो क' अपन बिछौन पर बैसल पत्नीक उठबाक प्रतीक्षा क' रहल छलाह ।

खवासिन आबि गेल छलनि । बर्तन-बासन माजि क' भेले पर ओ चूल्हा चनकीक इन्तजाम मे लागल छलनि ।

महामाया दाइ बिछौन सँ उठबाक चेष्टा कयलनि । मुदा असफल रहलीह । लगलनि जेना अंग अंग अथाह भ' गेल होनि । आँखि मे डाही बलनि आ देहक पोरह् कनकना रहल छलनि । विवश पड़लि रहलीह आ गाल पर नोर टपर' लगलनि । रोकबाक चेष्टा कयलो पर दाबल हिचकी स्पष्ट भ' उठलनि ।

परेश बाबू भोरे-भोर पत्नी कें एना कनैत देखि चिन्तित भेलाह—"की भेल ? एना कनैत कियैक छी ?

महामाया दाइ अश्रुपूर्ण दृष्टि सँ पति के देखलनि आ फेर आँखि मूनि लेलीह—"आइ त' उठबो सँ असमर्थ भ' गेलहुँ । काँचो बासिड के देत रान्हि क' ? साँझे राति खयने छलहुँ ।"

—"अहाँ अनेरो चिन्ता नहि करू । हम आइ बासिड किछु आ लेब । खवासिनी कें कहि देत छियैक, इन्तजाम क' देत" परेश बाबू उठि क' पत्नीक बिछौन लग अयला । माथ पर हाथ देलथिन । माथ जरि रहल छलनि धाह सँ । महामाया दाइ आँखि मुनने पड़लि रहलीह । पतिक स्पर्श नीक लागि रहल छलनि ।

—"अहाँ लेल बार्ली दूधक इंतजाम करबा देत छी ।" परेश बाबू कहलथिन ।

"नहि, हम नहि खायब बार्ली दूध ।" महामाया दाइ बच्चा जकाँ मूड़ी डोलौलनि । परेश बाबू कें हँसी लगलनि । पचास पचपन बरख पहिला बात मोन पड़लनि । तहियो बार्ली खयबाक नाम पर एहिना महामाया दाइ मूड़ी झाँट' लगैत छलीह ।

मुदा हँसी तत्क्षण बिला गेलनि । मोन पड़लनि जे कोना एक्को दिन बोखार लगला पर फलक ढ़ेरी लगा दैत छलथिन—अंगूर बेदाना आ मसतोला । महामाया दाइ मात्र फलक रस पीबैत छलीह । एकटा खवासिनी तरबा रगड़ैत छलनि आ दोसर माथ ।

आइ ज्वर सँ तप्त शरीर लेने महामाया दाइ एकसरि बिछौन पर पड़लि छलीह आ लगमे परेश बाबू असहाय ठाढ़ छलाह । बार्ली दूध नहि खयतीह ? तखन उपाय !

परेश बाबू घुरि क' अपन चौकी पर बैसि रहलाह ।

× × × ×

परेश बाबू पैर दबने ओसारा पर चढ़लाह । आध घंटा लेल सोचने छलाह मुदा तीन घंटा सँ ऊपर लागि गेल छलनि । बैसलाह त' फेर उठिये नहि भेलनि ।

ललन अखन आंगनक मुहथरि लगसँ इशारा कयने छलनि त' ओकरा हाथक इशारा सँ घुरा देने छलथिन । महामाया दाइ ज्वर मे बेसुध पड़लि छलीह आ परेश बाबू मसलंग पर पड़ल चुपचाप सुन्न घर आंगन मे पसरल रौद के' देखि रहल छलाह ।

ललन के घुरा देलाक बाद मोन आगू-पाछू कर' लगलनि । भोर सँ बैसल-बैसल अकाछ गेल छलाह । आध घण्टा लेल भ' अबैत छी, अखन त' आंखि लागल छनि । लगले घुरि आयब, बुझबो नहि करतीह ।

आ आध घंटा लेल उठला त' सांझ भ' गेलनि । परेश बाबू चोर जकाँ दाबल पयरे ओसारा पर चढ़लाह ।

सुवासिन नहि आयल छलनि । महामाया दाइ ओहिना बेसुध पड़लि छलीह । परेश बाबू लाचवस्त भेलाह ।

आकाश पर कारी मेघ जुटि रहल छलैक, बिहाड़िक लक्षण बुझा रहल छलैक । पश्चिमी आकाश पर डुबैत सूर्य मेघाच्छन्न भेल जा रहल छल ।

अकस्मात एकटा सिसकी परेश बाबूक कानमे पड़लनि । महामाया दाइ कानि रहलि छलीह । सम्पूर्ण देह कानब के' रोकबाक चेष्टा मे काँपि रहल छलनि । अस्फुट स्वर मे बाजि रहल छलीह—'एक गिलास पानियो देनिहार नहि अछि घर मे क्यो । आब बड़ अमनलो कें उठा लिअ' भगवान ।

आ परेश बाबू के' लगलनि जेना आकाश पर मड़राइत सभटा कारी मेघ हुनकर मोन के' झाँपि देने होनि । कोनो प्रचण्ड बिहाड़िक' आशंका सँ थरथरा उठलाह आ आकाश पर मेघ मे डुबैत सूर्य के' देखि बुदबुदा उठलाह—इ ससबेट लेऽ बी हारीबुल । □

नवम्बर १९६५

अनचिन्हार अप्पन

ओहि दिन स्टीमर पर अनायास तरुणसँ भेंट भ' गेलैक ।

दरभंगा—पहलेजा घाट पैसेन्जर कनेके काल पहिने पहलेजाघाटक बलुआह माटि पर ससरैत ठाढ़ भेल छलैक । गाड़ी आ जहाज सभ दिन जकाँ खचाखच यात्रीसँ लदल छलैक । पूनक सूर्य उगिते धधक' लागल छल । जहाज खुजबा मे बेसी बिलम्ब नहि छलैक, तैयो कतेको यात्री गंगा स्नानक पुण्य हथिअयबा मे तत्परता देखा रहल छलाह—ओहि पार मगाह मे कोना नहयताह ? गंगा स्नानक पुण्य मे रूचि नहि रखनिहार यात्री जहाजक कलक पानिक छिटका मारि-मारि चेहरासँ रात्रि जागरणक चेन्ह मेटा रहल छलाह । किछु यात्री अलस भावेँ कुर्सी आ बेंच सभ पर पसरल भोरक ललहुआक थपकी पर झपकी ल' रहल छलाह ।

स्टीमरक टी-स्टाल पर सभ दिन जकाँ ठेलमठेल मचल छलैक । मस्किलसँ एक प्याला चाह त' भीड़क धक्का सँ बचनाके' बचबैत प्रकाश जहाजक कात मे, रेलिंगसँ भिड़ले ठाढ़ भ' गेल । चाह पिबैत ओ ओहिना एम्हर-ओम्हर तकैत रहल । कोने, वहिनाकात, एकटा नव जोड़ा रेलिंग पर झुकल चाहक चुस्की लैत पसरल फूलल गंगाक हिलकोर निहारि रहल छल । ओ ओम्हरसँ दृष्टि हटा लेब' चाहलक । तखने ओहो एम्हर तकलकैक आ दुनू एक दोसरके चीन्हि गेलैक । ओ तरुण रहैक ।

दुनू लपकि क' भरि पाँज धयलक एक दोसरके ! दुनूक हाथक प्याला खसैत-खसैत बँचलैक । बड़ी काल धरि दुनू लपटल रहल ।

—"तों तँ बड़ मोटा गेल छेँ रौ ! डाइटिंग' कर !" ओहिना लपटल तरुण कहलकै ।

प्रकाश किछु नहि बाजल । खाली मुसकियाइत रहल ।

—"बहुत दिन पर भेंट भेल छै रौ ? पाँच बरख भेल हेतैक ?"

तरुण बोहिना लपटल फेर बाजल ।

—"हूँ, पाँच वर्ष पहिने कनेकालक हेतु मेडिकल कालेज—हास्पिटल मे भेंट भेल छल । तों अपन बाबूक डेथ सर्टिफिकेटक हेतु आयल छलें पटना । मुदा नीक जकाँ गप्प भेला तं आठ वर्षसँ ऊपर भ' गेल ।" कनेक हँटैत प्रकाश बाजल ।

दुनूक हाथक प्याला मे बाँचल-खूचल चाय सेरा क' पानि भ' गेल रहैक । अवशिष्टकें गंगा मे फेकि दुनू गोटे प्याला काउन्टर पर राखि देलकै । प्रकाश पैसा देब' लगलैक तँ तरुण बाँहि पकड़ि घीचि लेलकैक "दैत छ देलकै गीता !"

—"के गीता ?" प्रकाश अकचकायल ।

—"आ ने, परिचय करा दैत छियौक ।"

रेलिंग पर झुकलि ठाढ़ि नवयुवती लग आबि तरुण बाजल—"तोरा दुनू गोटेकें आपसमे परिचय करा दियौक । ई थिकीह गीता चटर्जी आ गीता, ऐंह प्रकाश थिक, जकर हम बरोबरि चर्चा करैत छलियौक ।

गीता परिचित भावसँ हाथ जोड़ि मुसकिया उठलैक । प्रकाशो नमस्कार कयलकैक ।

गीता सत्रह—अठारह वर्षक पिण्डश्याम सन छौंड़ी छलैक । चश्माक भीतरसँ चमकैत ओकर' दुनू पैंच-पैंच आँखि, बड़ सुन्दर होइक—प्रकाश अन्दाज कयलक । पातर ठोरपर मुसकी नीक लागि रहल छलैक । गीता सुन्नरि नहियो होइत, आकर्षक छलि—प्रकाशके मोने-मोन स्वीकार कर' पड़लैक ।

तीनू रेलिंग पर झुकल-झुकल, अपन आकृति पर जलहवाक स्पर्श अनुभव करैत गप्प करैत रहल । गीता बजैत कम छलैक, मुदा हरदम मुसकियाइत रहैत छलैक । प्रकाशकें ई बड़ नीक लगलैक ।

तरुण गीताकें स्कूली—जीवनक बहुत रास गप्प उत्साहपूर्वक सुनबैत रहलैक । गीता मुसकियाइत रहलैक । प्रकाश कखनो तरुण, कखनो गीताकें निहारैत रहल । जहाज पानि पर ससरैत रहलैक ।

रौद मुहँ पर आबि गेलैक । पसेना छूट' लगलैक । प्रकाश बाजल—चल' दोसर दिस ठाढ़ होइ ।

—"रह' बही ! एतबा रौदक कोन डर ? की गीता ?"

गीता जवाब नहि देलकै । खाली मुसकिया देलकै । ओहिमे जिनगी भरल छलैक—लबालब । प्रकाशकें अपन प्रस्ताव पर अकारण लाज भेलैक ।

—"तों बहुत बदलि गेल छें प्रकाश ?" एकाएक नहि जानि, की सोचि तरुण बाजि उठलैक ।

"के ? हम ?" प्रश्न करैत प्रकाशकें लगलैक जे आब फेर सभटा उलहन दोहरौतैक तरुण—"विवाहमे नहि बजौलें, एकटा बेटीक बाप बनि गेलें मुदा मौजीसँ भेंटो नहि करौलें ।" ओकर उलहन उचित हैतै, प्रकाश सोचलक ।

तरुण फेर बाजि उठलैक—हूँ, प्रकाश तोंही । एकदम बदलि गेल छें तों ! तोहर गप्प-सप्पक ढंग बदलि गेल छौक । लगैत अछि जेना तों हमरा सँ बड़ पैघ भ' गेल छें—एकदम बूढ़ ।

—"बूढ़ तँ भैये गेल छी । बेटीक बाप बनि गेल छी । दस-बरखमे ससुर बनब । आब ओ गप्पक का ओ ढंग कहाँसँ आउ ?" बात मजाकमे टारबाक चेष्टा करैत प्रकाश शुष्क हँसी हँसल ।

—"बातकें टार नहि, सत्त-सत्त बाज ।" तरुण अपनत्वसँ बाजल ।

—"लुकयबाक कोन बात छैक । समयक संग परिवर्तन होइते छैक । देख, कतेक मोटा गेल छी । पहिने एहने रही ?

तरुण बूझि गेलैक जे ई प्रसंग प्रकाश टार' चाहैत अछि । ओ फेर चर्चा नहि कयलकै ।

लगातार रौद मुँहपर पड़लासँ गीताक पिण्डश्याम मुँह पर लाली आबि गेल छलैक । रौदसँ बचबा लेल ओ माथ पर आँचर राखि कनेक घोघ जकाँ काढ़ि लेलक । ई देखि दुनू गोटेकें हँसी लागि गेलैक । हँसैत-हँसैत तरुण गुनगुना उठल—

आमि चेये छी तोमाय
से की मोर अपराध ?
शुधु एइ जीवनेर नेइ
दवी जेनो आमार कतो जनमेर
साध ……

गुनगुनाइत ओ दुष्टतापूर्वक गीताकें देखि रहल छलैक। गीता लजा क' हँसि रहल छलैक। प्रकाशो हँसीमे संग देत एकटा दुष्टता क' बैसलैक। तरुणकें डाँड़सँ पकड़ि अपना दिस झीकि गुनगुना उठलैक—

आमि चेये छी तोमाय——

× × × ×

तरुण आ गीताकें पटना जंक्शन पर दानापुरवला गाड़ी मे चढ़ा जखन प्रकाश डेरा पहुँचल दस बाजि रहल छलैक।

ओकरा एना असमय आयल देखि किरण चिन्तित भ' उठलैक। ओकरा एना चिन्तित होइत देखि प्रकाशकें अकारण प्रसन्नता भेलैक। विलम्ब हेबाक कारण ओ ओकरा कहि देलकैक।

किरण आश्वस्त भ' चाह बनाब' भनसा घर चल गेलैक। जाइत-जाइत टेबुल फैन ऑन करैत गेलैक।

जूता खोलि प्रकाश बिछाओन पर पसरि गेल। बड़ थकनी लागि रहल छलैक। सौंसे देह टूटि रहल छलैक।

तरुण परसू अयबाक वादा कयने छलैक। आइ ओ सभ नहि रूकलैक। आइ ओकर गुरुजीक भाषण छलैक। तरुण कोनो स्वामीजीक चक्करमे छल आइ-काल्हि।

कनेक काल बाद चाह लेने किरण कोठली मे अयलैक। चाह पीलासँ किछु स्फूर्ति अयलैक। कमीज खोलि किरणकें देलकैक आ फेर ओहिना खाली देह बिछाओन पर पसरि गेल।

—"ओझाजी कत' छथि।" पड़ल-पड़ल किरणसँ पुछलकैक।

—"ड्यूटी पर गेल छथि—बख्तियारपुर। राति क' घुरताह।" जबाब भेटलैक।

—"आ प्रभा?" ओ जनैत पुछलकैक।

—"ओहि कोठलीमे छथि। अहाँक बेटियो ओतहि अछि।" किरण बेना ओकर अगिलो सवालक जबाब दैत बजलैक।

"ओकर धाओ कोना छैक आब?" प्रकाश कनेक व्यग्रतासँ पुछलकै।

—"एकदम छुटि गेल छलैक, मुदा तम्हूर फेर दाना बिकसि गेलैक अछि, पछिला हप्ता डाक्टर बजौने छल, कहाँ गेलियैक?

प्रकाश कोनो उत्तर नहि देलकै। बेबी दोसर कोठली मे कानि उठलैक। किरण ओम्हरे दौड़लि।

किरणकें एहि डेरामे अयला दोसर मास बीति रहल छलैक। दू मास पूर्व प्रभा एकाएक दुखिताहि भ' गेल छलैक। पेटमे जनमारा दर्द उठलैक। डाक्टर कहलकैक जे एपेण्डिसाइटिसक आपरेशन कराब' पड़तैक।

प्रभा एकसरि छलि। ओझाजीक ड्यूटी रेलवेमे, रिलीविंग ड्यूटी। आइ एत' काल्हि ओत'। माय-बाप कहलथिन, नहि जानि, कहिया कोन प्रयोजन पड़ि जानि। कनियाँकें पहुँचा दहुन।"

किरण आबि गेलि एहि डेरामे : तकर दू मास बितलैक, आपरेशन एखन धरि नहि भेलैक अछि। आब तँ दर्दो नहि होइत छैक। सैकड़ो एण्टीबॉयटिक कैपसुल खोआ देलकैक डकटरवा सभ। आब कहैत छैक—एपेण्डिक्स नहि, इन्फिशाक एबसेस छल। कैपसुलसँ सुखा गेल।

मुदा घाओ सुखयलैक वा नहि, किरण नीक जकाँ सुखा गेल छैक। कुमारि तँ पहिनो बड़ छलैक, मुदा एहि बीचमे एकदम निष्प्रभ भ' गेल छलैक। टोकला पर टारि दैत छलैक।

—आब अहाँ चश्मा लगाउ।

ओकर एना सुखयबाक कारण प्रकाश जनैत छल। बिना कारण, बिना कष्टक ओ सुखायलि जा रहल छलैक। कारण प्रकाश जनैत छल। जहिया एहि डेरा पर आयल छलैक चेहरा उत्साहसँ चमकि रहल छैक। रातिक एकान्तमे प्रकाशक चौड़ा छाती पर ओंघराइत पुछने छलैक—"अहाँ कहिया धरि आयब काज शुरू कर'।"

—"बस दू-चारि दिनमे बजाहटि अयबाक चाही। प्रकाश पूर्ण विश्वाससँ कहलकैक।

दू मास पूर्व एकटा सरकारी नोकरीक हेतु प्रकाशक सेलेक्शन भ' गेल छलैक। केरेक्टर भेरिफिकेशनक हेतु फार्म भरि देने छलै। दौड़—बरहा क'

पुलिस आ सी० आइ० डी० रिपोर्ट पठबा देने छलैक। आब बस नियुक्ति पत्रक प्रतीक्षा छलैक।

—"शुरूमे कते भेटत ?" किरण ओहिना छाती पर ओंघराइत बाजल छलि।

—"अढ़ाइ तीन सय।"

किरण चुप भ' गेलैक जेना मोने-मोन किछु सोचि रहल होइ।

"बहुत कम अछि ने ?" प्रकाश टोकलकैक।

—"नहि तँ। शुरू-शुरू मे कोन कम अछि ? आरो नीक कतहु भेटि जायत तँ छोड़ि देबैक।

—"कहाँ चला लेब एतबा मे ?" प्रकाश प्रश्न कयलकै।

—"नीक जकाँ।" किरण उत्साह मिश्रित विश्वाससँ बाजलि।

—"सय-पचास गामो पठाब' पड़त ?" प्रकाश चेतौलकै।

—"सेहो भ' जायत।" किरण ओहिना विश्वास पूर्वक बजलैक।

—"बड़ चतुर गृहिणी छी तखन तँ नहीं ?" ओकर पीठ पर मुक्का मारैत प्रकाश हँसल।

—"अच्छा बाबा, छी चतुर गृहिणी। मुदा एना हड्डी-गुड्डी किएक तोड़ि रहल छी।"

किरण सत्ते बड़ प्रसन्न छलैक। गुनगुना रहल छलैक। अपन देह पर ओकर स्पर्श अनुभव क' रहल छल प्रकाश। ओही दुलारि देलकैक ओकरा।

एकाएक किरण कोनो निश्चयसँ तनिक' बैसि रहलैक—"मुदा पहिल दरमाहा हमरा देब' पड़त। ओहि मे सँ एकको पाइ नहि देब।"

—अच्छा बाबा देब। मुदा की हेतैक ओहि रुपयाक, कने हमहूँ तँ सुनी ?

—"अहाँ लेल कपड़ा सिआयब, जूता लेब। बेहन फाटल कपड़ा पहिरने चप्पल घट्ठी घिसियबैत इन्टरभ्यूमे जाइत छी।"

प्रकाश मुग्ध भ' गेल। आर सब सोचि कहलकै—"आर की करब ?"

कोनो उत्साहित नेना जकाँ किरण बाजलि—"एकटा बढ़ियाँ डेरा लेब। ओकरा खूब सजायब। तखन एकटा रेडियो लेब आ नीक-नीक फर्नीचर। नहि, नहि, रेडियो, फर्नीचर बाद मे लेब। पहिने एकटा गाड़ी लेबैक, बेबीक हेतु जाहिमे बैसि ओ भोर साँझ घूमत।"

प्रकाश खौंझौलकै—"मुदा गाड़ी कने पैघ लेब' पड़त। बेबीक संग बेबीक मायो बैसतैक ओहिमे।"

"जाउ, हट्टू।" किरण लजाक' ओकर छातीमे घुसिया गेलैक।

......दोसर कोठलीमे बेबी जोर-जोरसँ कानि रहल छैक। एखन एहिना कनतैक। किरणक दूध सुखा गेल छैक। छ मासक अछि आ मायक दूध सुखायल। किरण बहुत रास बेबीफुड आ ड्राप्सक पुरजा लिखा चुकल छैक, मुदा प्रकाश एखन धरि एकोटा नहि आनि सकलैक अछि।

बेबीक पैराम्बुलेटर सेहो नहि आबि सकलैक। ने नव डेरा भेटलैक, ने प्रकाशक नव-नव कपड़ा बनलैक। एहि डेरापर अखबाक दसम दिन खबरि अयलैक—नियुक्ति पत्र नहि भेटतैक। ओ अण्डरएज अछि।

प्रकाश सुन्न भ' गेल। अण्डरएज डिटेक्ट करबाक ई नव तरीका छलैक। ने इन्टरभ्यू कालमे देखलक आ ने सेलेक्शनक काल। प्रकाश मोने-मोन हजारो गारि देलकैक।

ओकरा हताश देखि किरण साहस देलकैक—जाय दियौ। अहाँकेँ तँ मोने नहि छल ई नोकरी करबाक। हमहीं जिद कयने छलहुँ।"

मुदा किरण सुखायलि जा रहलि छलि। कारण प्रकाश अनेर छल। बेबीक पैराम्बुलेटर नहि अयलैक। किरणक दूध सुखा गेल छैक आ बहुत रास लिखल पुर्जा प्रकाशक पाकिटमे पड़ल छैक कहियासँ।

डेढ़ वर्ष पहिने जहिया प्रकाशक विवाह भेल रहैक, ओकर गिनती होनहारमे होइत छलैक। उज्ज्वल भविष्य छलैक लोकक दृष्टिमे। वर्षे दिन बाद बेबी आबि गेलैक। आ ओही दिन अखबारमे एम० ए०क रिजल्ट सेहो आबि गेलैक। छः मासमे एकटा छोटछीन नोकरी नहि तानि सकल प्रकाश।

चारिटा इन्टरभ्यू देने छल—तीनटा लेक्चररशिपक आ एकटा सरकारी कार्यालयक हेतु। दू ठाम बिना भेकेन्सीक विज्ञापन भेल रहैक, आफिसक अनियमितता प्रशस्त करबाक हेतु आ तेसर ठाम एकटा मंत्रीक सारक नियुक्ति भ' गेल रहैक, इन्टरभ्यूसँ पहिने।

चारिम नोकरी ओकरा भेटि गेलैक। किरण बेबीक लेल पैराम्बुलेटर पसिन्न कयलकै, नव मकान देखलकै। बड़ प्रसन्न छलि ओ।

प्रकाश अप्पर एज भ' गेल। ओ पच्चीसममे पचर देने छल आ अधिकारी वर्ग कम सँ कम पच्चीस पुर उम्मीदवार चाहैत छलाह। मुदा एहि अनिवार्य शर्तक परीक्षा सेलेक्शनसँ पूर्व क' लेबाक गलती ओ लोकनि किएक करितथि। सभ तँ अपने हाथ छलनि।

दोसर कोठलीमे बेबी कनिते जा रहलि छलि। अकरा चुप्प करयबाक चेष्टामे किरण जोर-जोर सँ चिचिया रहल छलैक—"चुप्प करमघट्टी बिछाओन पर नहि रहतौ, हरदम बयो टकने रहौन, जेना आर कोनो काजे नहि अछि हमरा। बाप चारिटा नोकर जे रखने छथिन......

प्रकाशकेँ इच्छा भेलैक जे किरणकेँ कहैक जे बेबी केँ एम्हर द' जाउ, हमरा लग। मुदा कण्ठलेँ बकार नहि फुटलैक।

तेसर दिन तरुण अयलैक। प्रकाश सभकेँ कहि देने रहैक ओकरा बारेमे......।

कनेके कालमे तरुण सभसँ हँसि मिलि गेलैक। बेबीकेँ कोरामे खेलबैत रहलैक, किरण सँ बेर-बेर हँसी करैत रहलैक। बेबी ओकर पेंटकेँ भिजा देलकै तैयो ओहिना खेलबैत रहलैक।

प्रकाशकेँ ओ दिन मोन पड़लैक जहिया कपड़ा कने छू देला सँ तरुण बिगड़ि उठैत छलैक। ओकरा एके टा पैंट रहैत छलैक जकरा निरय धोचि ओ पहिरैत छल। आब ओ नीक कमाइत अछि। पढ़ाई त' मैट्रिकेक बाद छोड़ि देने छल मुदा एकटा नीक फर्ममे मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव भ' गेल छल।

तरुण कहलकै—भौजी त' नीक अननि छैं प्रकाश, मुदा हमरा एक टा संदेह भ' रहल अछि। तोहर पहलवानी डिजाइनक संग एहन छड़ीकेँ शहर बाजारमे देखि लोक सोचैत हेतौक जे तोँ हिनका बियाहिक' नहि, भगाक' ल' जा रहल छहुन आ बेचारी डरक मारे मदति लेल चिचिआइयो ने रहल छथि।

तीनू गोटे केँ तेहन हँसी लगलैक जे हँसैत-हँसैत पेट दुखाय लगलैक।

जाइत काल तरुण कहलकै— त' परसुक्का प्रोग्राम निश्चित। परन्तु तोँ भौजीकेँ ल' क' दानापुर आबि रहल छेँ। माय देख' चाहैत छथि भौजीकेँ दानेपुरमे अछि अखन बड़की बहिन लग।

तरुणकेँ रिक्सा पर बैसा अखन ओ घुरल त' कोठलीमे भ' रहल गप्प सुनिक' पयर बाहरे थकमका गेलैक। ओझाजी कहि रहल छलथिन—मास दिन सँ प्रकाश बाबू कहैत छथि जे बेबीकेँ देखयबा' लेल रुपया नहि अछि। मुदा दानापुर अयबाल बातपर तैयार भ' गेलाह।

—"भैया" तँ एहिना कहैत छथि सभ दिन जे एको पाइ नहि अछि, मुदा सैर-सपाटामे सैकड़ो रुपैया फुकि दैत छथि।" प्रभा बाजि रहलि छलि।

—"फुकैत नहि छथि तँ टाका होइत की छनि ? सय पचास त' रेडियो आ मैगजीन सभसँ भेटिये जाइत छनि।"

प्रकाश चुपचाप दोसर कोठलीमे घुरि गेल। ओ जनैत छल, सभटा गप्प किरणकेँ सुनाओल जा रहल हेतैक। ओकरा किछु दिन पहिलुका गप्प मोन पड़लैक। सप्ताह भरि दौड़लाक बाद गामक सभटा तात्कालिक समस्याक समाधान क' आहि दिन पटना जाय चाहैत छल, आङनमे खूब पहुल भ' रहल छलैक। ओ ओहिमे सम्मिलित न ह छल, मुदा सभटा सुनि रहल छल।

ओकर छोट भाइ मैट्रिक कयने छलैक एहि साल। कालेजमे नाम लिखा देल गेल छलैक। खर्चक हेतु ओ मासमे डेढ़ सय माङि रहल छलैक, मुदा माय-बाबू एक सयमे चलाब' कहि रहल छलथिन।

बिगड़िक' प्रमोद बजलैक—"भैयाकेँ तँ सभ दिन डेढ़ सय-दु सय बिन मङने देलियनि। हमरा बेरमे एक सय मे आँखि लगैत अछि।

बाबू दुखबैत कहलथिन—"देबामे कहाँ आपत्ति अछि हमरा। मुदा आइ-काल्हि हाथ एकदम सिकस्त अछि। प्रकाशक नोकरी लाग' दहक, तखन जे मङबह, देबह।"

"लागि चुकलनि नोकरी हुनकर। साल भरि सँ तँ सुनि रहल छी। आ नोकरी लगली सँ की ? लेब रुपैया हुनू हाथे ? पहिने अपन परिवारक बोझ तँ उठाबथु।" प्रमोद उदण्डता पर उतरल छलैक। माय-बाबू चुपचाप सुनि लेलथिन। हुनका अपनो भरिसक एकरे डर छलनि। प्रमोद भरिसक हुनके मोनक बात बाजल छलनि। एना स्पष्ट रूपसँ तँ नहि मुदा एहने गप्प सभ साल भरिसँ एहि घरमे ओ सुनि रहल छल। आइ प्रभा ओ ओझाजी सेहो बाजि रहल छलथिन। सभ एकके बात बाजि रहल छलैक।

गामसँ विदा होइत काल कतहु सँ पँच आनि दस टाका ओकरा हाथमे दैत माय कहने छलैक—"कहुना किरायाक इन्तजाम कयने छियह, मुदा चिन्ता नहि करिह' । जहिना इन्तजाम हैत आर पठा देबह । मुदा एना कतेक दिन चलतह ? कोनो काज ध' लैह ।

प्रकाश यैह सोचि रहल छल । कोनो काज शुरू क' देबाक चाहियैक । कोनो काज, केहनो काज । सोचबाक-विचारबाक आब समय नहि छलैक ।

ओकरा घुरबामे बेसी देरी देखि किरण कोठलीसँ बेबीकेँ कोरामे लेने बहरयलैक । ओकरा बिछाओन पर पड़ल देखि चुपचाप लग आबि बैसि रहलैक । प्रकाश खटका सुनि गेल छलैक, ओ बुझि गेलैक ।

किरण लगमे बैसल ओकर माथक केश छिड़ियबैत रहलैक । प्रकाश बेबीकेँ छातीपर बैसा खेलाइत रहल । दुनू बातकेँ टार' चाहैत छल । अन्तमे किरण मौन तोड़लकै—"अहाँ जयबाक बातपर हँ किएक कहलियैक ? रुपैया अछि ?"

"भ' जायत ।" प्रकाश ओहिना पड़ल कहलकै ।

—"कोना ?" किरणकेँ विश्वास नहि भेलैक ।

"काल्हि एकटा कथाक रेकार्डिंग अछि । पच्चीस टाका भेटत !"

किरण फेर कोनो प्रश्न नहि कयलकै । प्रकाश बेबीक संग खेलाइत रहल । बेबी ओकर नाक अपन दाँत विहीन मुँहमे ल' चिबाब' लगलैक ! ओकरा गुदगुदी लगलैक, ओ हँस' लागल !

किरण बेबीकेँ लेब' चाहलकै । ओ मना कयलकै 'खेलाय दियौ ।'

× × × ×

बड़ मनहूस दिन छलैक—गर्मीसँ चिपचिप करैत ।

प्रकाश दिन भरि कोठलीमे पड़ल रहल । साँझ बितलैक आ राति सेहो आबि गेलैक । भोरे आइ० ए० एस०क परीक्षाक परिणाम बहार भ' गेलैक । सफल व्यक्तिक सूचीमे प्रकाश दू-बेर तीन बेर अपन रोल नम्बर ताकि गेल । मुदा ओकरा निराश होब' पड़लैक । ई ओकर पहिल आ अन्तिम वर्ष छलैक । अधिका साकक हेतु एज नहि छैक ।

ओकरा सफलताक आशा छलैक । ई बकका ओकरा नीक जकाँ तोड़ि देलकै ! दिन भरि कोठलीमे नुकायल रहल । बाकी एक घण्टा लेल घा क' रेकार्डिंग करा आयल ।

ई चारि टा सम्बन्धी आ शुभ चिन्तक सान्त्वना देब' सेहो अयलथिन ! जाइत जाइत किछु उपदेश सेहो—"परिश्रम करू ! बिना परिश्रम कम्पीट करब मुश्किल ! ई खिस्सा-पिहानी लिखब छोड़ू किछु दिन ।"

प्रकाश किछु नहि बाजल । ओ पिछड़ि गेल छल आ पछड़ि क' असफल व्यक्तिकेँ सभ किछु सहबाक चाहियैक ।

राति क' अन्हार किरण बिछाओन पर अयलैक त' बाजब आवश्यक भ' गेलैक—भोरे उठि क' चाह जलखै बना लेब । भोरे सात बजेक गाड़ीसँ जायब आ साँझ धरि घुरि आयब ।

किरण किछु नहि बजलैक । ओ बुझलक जे किरण सुनि लेलक अछि । सुतबाक उपक्रम कर' लागल !

—"अहाँ जाबत बहिनसँ बीस टाका पैंच लेने छियैक ।" किरण एकटा दोसरे सवाल कयलकैक ।

—"हँ ।" ओ कहलकैक ।

—तँ फेर घुरौलियैक किऐक ने ?"

किरणक प्रश्न आ प्रश्न करबाक ढंग ओकरा नीक नहि लागि रहल छलैक ।

—"घुरा देबैक । इन्तजाम होब' दियौक ।"

—"आ प्रभाक दस रुपैया ?"

किरण जेना खाता पसारने छलैक ।

—"ओहो घुरा देबैक ।"

—"घुरा देबैक नहि, काल्हि भोरे घुरा दियौक । हमरा लोकनि दानापुर नहि जायब ।" किरण निर्णयक स्वरमे बजलैक ।

—"किएक ?" प्रकाश कनेक खिसिआइत पुछलकैक ।

—"किएक की ? अहाँ केँ बहुत संग घुमबा-फिरबा लेल टाका अछि, मुदा पैंच घुमएबा लेल नहि । तकर टाका घुरा दियौक ।" किरण अपन बात पर अड़लि छथि ।

—मुदा हम तखनके वचन देने छिएक।

—"अहाँक वचनक कोन मूल्य ? वचन तँ अहाँ रुपैया लेत काल देने छलियैकजे तुरंत घुरा देब। दू मास भ' गेलैक। वचन तँ सभ दिन तोड़िते छी, एकटा बेर नहीं !" किरण किछु कठोरता सँ बजलैक।

बात बड़ तीत छलैक मुदा ओ पीबि गेल। आइ ओ लड़' नहि चाहैत छल। ओ टूटल छल। सहानुभूति चाहि रहल छल। किरण ओकरा आर तोड़ि रहल छलैक !

—हमर वचनक कोनो मूल्य नहि ? ओ व्यथित होइत पुछलकै।

—"हँ हँ, अहाँक वचनक किछुओ मूल्य नहि। वचन तँ एकटा अहाँ अपन बापोकें देने छलियनि जे पढ़ि-लिखि अहाँक भार हल्लुक करब ! मुदा आखन धरि अपने बोझ बनल छी ! वचन अपन मायोकें देने छलियनि जे एहन पुतोहु देबौ जे तोरा चुलहा चनकाँसँ फुरसति देतौक। मुदा अहाँ एकटा फैशनेबुल मेम उठा अनलहुँ। वचन तँ एकटा अपन भाइयो-बहिनकें देने छलियैक जे ओकर हक नहि छिनबैक। ओकर आश्रय बनबैक मुदा आखन धरि अहाँ अपने आश्रय ताकि रहल छी। वचन तँ एकटा अपन पत्नियोकें देने छलियैक........बाय दिव'। कतेक गनायब, अहाँ उनटे अपन असमर्थता सुनाब' लागब।

प्रकाशकें लगलैक जेना धोखासँ कोनो दोसर स्त्रीक बिछाओनपर आबि गेल हो। किरणक चेहरा ओकरा एकदम अनचिन्हार लगलैक। उठि क' कोठलीसँ बाहर आबि गेल। राति बहुत बीति गेल छलैक— उमसल राति। ओ निरुद्देश्य सड़कपर बौआइत रहल। लगैत छलैक जेना कोठलीमे घुरिते ओकर साँस बन्द भ' जेतैक, ओ अनचिन्हार वातावरण ओकरा बरदास्त नहि हेतैक।

ओ बेर-बेर माय, बाबू, भाइ, बहिन किरण, बेबीक आकृति मोन पाड़बाक चेष्टा कयलक मुदा किछुओ मोन नहि पड़लैक। लगलैक जेना ओ एकदम एकसर अछि। संसारक सभ चेहरा ओकरा अनचिन्हार लागि रहल छलैक। परिचित चेहरा कतौ नहि, एकोटा नहि। प्रकाश सड़कपर बौआइत रहल—अशान्त आ उद्विग्न।

भोरुकबा चमक' लगलैक। प्रकाशक थाकल, हारल देह डेरा दिस घुरलैक। भोरुका हवा थाकल देहकें सुखद लागि रहल छलैक।

कोठलीक दरबज्जा ओहिना खुजल छलैक आ भीतर ओहिना बल्ब जड़ि रहल छलैक। प्रकाश कोठलीमे आबि गेल। किरण पेटकान देने सुतलि छलैक। बेबी चित पड़लि इबोत दिस तकैत हाथ पयर फेकि रहल छलैक। ओकरा देखिते हँस' लगलैक। बिनु दाँतक मुँहमे ओ हँसी बड़ नीक लगलैक प्रकाशकें आ लगलैक जेना किछुओ अनचिन्हार नहि छलैक।

सभ परिचित छलैक, सभ अपन छलैक। ओकरे बेटी हाथ-पयर फेकैत हँसि रहल छलैक।

ओ झुकि क' बेबीकें कोरामे उठा ओकर मुँह, गाल, आँखि, कान सभकें चुम्मासँ भरि देलकैक।

आ फेर दहिना हाथ बढ़ा सुतलि किरणक पीठ सोहरा देलकै—अपनत्व आ स्नेहक स्पर्शसँ।

ओकर स्पर्श मात्रसँ किरणक सम्पूर्ण शरीर थर-थरा क' हिलि गेलैक। ओ सुतलि नहि छलैक, कानि रहलि छलैक। ●

सितम्बर १९६६

धमकी

एना मुंहा क' कत' पड़ायल जाइत छें, गे ? आब एहि अभगली काकीक टुटली मड़ैया मे ककरो देत लाज होइत छौ ? पहिने तँ एहि आंगन मे तावरि नहि जाइत छलें जावरि अपन आंगनमे तीन-तीन बेर बजाहटि नहि होइत छलौ ! हमरे मनक्षाक जरल-पाकल कतेक स्वादि-स्वादि क' खाइत छलें ? अही लताम-क गाछ पर, अही घरीफाक फुनगी पर दिन भरि उछपैत रहैत छलें ? आब तोरा कोना मोन रहतौक ओ सभ गप्प ? आब तँ एकोबेर हुलकियो क' नहि देखैत छें जे एहि आंगन मे, रही देखबा लेल जे काकी जीविते अछि वा मरि गेल ? किएक देखबें आब ? आब तँ' तों बड़का लोक भ' गेल छें—हाकिम !

की कहलें ? हमरा लग कोना हाकिम बनबें, हमरा लग तँ आइयो ओहिबेटा छें । ······ से तँ ठीके कहैह छें रे । हमरा लेल तँ आइयो ओतबेटा छें । कोरा मे पलौन छियौ ! नडटे आंगन मे खेलाइत देखने छियौ । तोरे किएक, तोहर बापोके ! जहिया पहिल बेर एहि आंगन मे पैर देने रही, तोहर बापो नडटे खेलाइत छलौ ! खूब गुलथुल रही । फुलल-फुलल आ थुलथुल देह ! सेहो कचकचबैक—मोटमल !

तोरा हुँसी लगै छौ ? आइ तँ विश्वासो ने हेतौक जे कहियो तोहर बाप एहन मोटायल रही । लगातार बिमारीसँ कोना सुखा क' काँट भ' गेल छौ । मुदा हमर विश्वास कर, कहियो रही तोहर बाप एहन ! मुदा ! भेटब कठिन छलौक ! किछुओ मोनक खिलाफ भ' जाइक तँ अन्हड़ बिहाड़ि बनि जाइत छलें । सभटा नोचि-नाचि, उजाड़ि-पजाड़ि फेकि दैत छलें । सभटा चूरी लतामक आंगन मे पथार लगा दैत छलें । सभ डराइ छलो तोरासँ आ नाम राखि देने रहौक—गोरा पल्टन । ओरे सभ धन उज्जर-धपधप आ ओहने रोब दाब । हम तँ ओही दिन बुझि गेल छलियौक जे बड़का हाकिम बनबें ।

की कहबें, सब हमरे आशीर्वाद सँ भेल छे ? से तँ छोड़ि हमर आशिर्वाद तोहर संग हरदम ।······ मुदा तों एना ठाढ़ किएक छें, बैसि जो ! कतेक [illegible] जकाँ देखबौक ! आब आँखियो अन्हरा गेल अछि ! नीक जकाँ सुझितो [illegible] अछि ?

की कहलें ? नहि सुझैत अछि तँ चरखा लेने किएक बैसल छी ? सिव', आर सुनू ! चर्खा नहि काटब तँ पेट कोना चलत ? आर नहि अछि किछुओ संग मे, मुदा पेट मे अन्न तँ चाहबे करी । आ सिद्ध-असिद्ध किछुओ जुटय तखन तेल चर्खा छोड़ि दोसर साधने कोन अछि ? अही अन्हरायल आँखिये सूर सुतैत छी, पीर बनबैत छी, सूत कटैत छी आ अही सूत टौंहे अपने पोला ल' खादी भण्डार धरि जाइत छी । तैयो की भेटैत अछि ? बुझनकी छौंड़ी सभक मोटका पोला के नीक नम्बर भेटि जाइत छैक आ बुढ़ियाक मीकहा पोला छँटा जाइत छैक ! कपार तँ संगे लागल रहैत अछि ।

की कहलें ? हिस्सा ? सम्पत्तिये की छल जे हिस्सा भेटैत ? आ जेहो छल से तोहर मास्टर काका हथिया लेलथुन । हमरा हिस्सा मे किछु नहि रहल । बेटल एकटा फूसक थोपड़ी, छोट सन आंगन आ आंगन मे एकटा लताम आ एकटा घरीफाक गाछ ! तोरा कहाँ मोन हेतौक ई सभ ? बहुत छोट छलें ताहि दिन ।

तोरा तँ आरो बहुत रास गप्प नहि मोन हेतौक । इहो नहि बुझल हेतौक जे तोहर ई अभगली काकी जीवनक पचास वर्ष कोना एहि गाम मे बितौने छौक । सुनबें हमर खिस्सा ? तों तँ अपन सन्तान जकाँ छें । तोरासँ की लाज ? कथीक पर्दा ?

की कहलें ? सुनबें ? तँ फेर बैसि जो नीक जकाँ । ई ले, चारिटा लताम छौक, खाइतो रह ! बड़ पसिन्न रहौ तोरा ई लताम ! नहि जानि, आब नीक लगतौ वा नहि ?

की कहलें ? नीक छौ ? तँ' खो । आर अछिये की जे देबौ थारू मे । सूर्य माथ पर आबि गेलाह, मुदा चूल्हियो नहि पजारने छी ।

की कहलें ? बिवाह ? विवाह कोना मोन रहत ? पचि बरखक तँ रही । के ? तोहर काका ? ओ कोना मोन रहताह ? बिवाहे काल मे तँ देखने रहियनि ।

खाली एतबा मोन अछि जे खूब गोर रहथुन। सभ भरि दिन भरि घेरने रहथि। धीया-पुता सभ मौसर मौसर करैत रहैत छलथि। हमहुँ ओहि दोस मे मिलि जाइत छलहुँ आ 'मौसर मौसर' कर लगैत छलहुँ। माय झीकि क' ल' अबैत छलि, दोसर घर ल' जाइत छलि आ डँटैत छलि—"तों किएक मौसर कहैत छहुन? ओहि घर किएक जाइत छें, तोहर त' वर छथुन।" हम की जान' गेलिऐक वर, फेर पड़ा जाइ ओहि घर। अकच्छ भ' सभ छोड़ि देलक। हम दिन भरि हुनके संग बैसलि रही।

तोरा हँसी लगैत छौक मुदा हमर हँसी तँ भदवारि रौद जकाँ देखिते बिला गेल छल। विवाहक यात्रा तोहर काका घुरलथुन, सभ भरल मोने बिदा कयल-कनि! हमरो उदास उदास लागल! सभ चहल-पहल खतम! आ तकर बरखे दिनक बाद आङन मे कन्नारोहटि मचि गेल। माय छाती पीटैत आ बाबू माथ पर हाथ रखने बैसल! आङन मे भीड़ आ सभक मुँह तकैत अवाक ठाढ़ि हम जखन काकी हमर चूड़ी फोड़ि देलक आ हजमा के बजाक' माथक केश कटा देलक त' हमहूँ चीत्कार कर' लगलहुँ। केहन सुन्नर चूड़ी आ केहन घुघरू सन केश छल! हम कनैत कनैत आङन मे औंघराइत रहलहुँ। मुदा ताहूसँ बड़का काण्ड भेल श्राद्धक दिन। ब्राह्मण लोकनि चूड़ा-दही आ रहल छलाह। हम जिद्द ठानि देलिऐक, हमहूँ पाँती मे बैसि क' पात पर चूड़-दही खायब। माय पहिने मनौलक आ फेर दू-चारि हाथे धुन' लागलि। मुदा बाबू मायक हाथ छोड़ाक' पात पर बैसा देलनि—"आब जानेकों मारि देबैक की? खाय दियौक।" माय कनैत घर पड़ा गेलि आ बाबू मुड़ी झुकौने ठाढ़ रहलाह! हम खूब गब्बर-गाब्बर चूड़ा-दही खयलहुँ!

तोरा फेर हँसी लागि गेल छौक! कोना ने लगतौक। काजे तेहने कयने रही हम! स्वामीक श्राद्धक पाँती मे बैसि क' गब्बर-गाब्बर चूड़ा-दही खयने रही। तें देखि ल, आब बुढ़हो सुहग आङन म' गेल अछि।

की कहलें? एहि गाम मे कहिया अयलहुँ? पन्द्रहम बरख रहय तहिया। विधवा रही, मुदा बाबू कहियो तकर बोध नहि होब' देलनि। कहियो सासुर नहि जाय देलनि। तोहर मास्टर काका बेर-बेर दौड़ कर' लगलथुन, लाचार भ' बाबू कें बिदा कर' पड़लनि। पन्द्रहम बरख मे द्विरागमन भेल आ स्वामीविहीन

सासुर मे प्रथमबेर पयर देलहुँ। ने बाजा-गाजा, ने हर्षोल्लास! मृत्यु सन सर्द छलैक ओ द्विरागमन!

बाप रे बाप! ओहि दिनमे तोहर ई गाम रहौक। आइ पुत्र-पुत्रानुत तोरा सभ पर हँसैत छौक जे धीया-पुता सभ किछु कहल भ' गेल, उदण्ड आ अबारा भ' गेल। मुदा तोरा लोकनि तँ हुनका सभसँ सात कच्चे नीक छें। बाहर पढ़ैत लिखैत छें, नोकरी करैत छें, जे मोन मे अबैत छौक, करैत छें। मुदा अपन घरमे अपने तँ नहि घुर्ऐ छें! ओ जमीन्दारीक जमाना रहैक! तोरा लोकनि मालिक आ हमरा लोकनि अभिमान! चाकचकात रोबदाब! नौकरनी-बनिहारिनीक कथे कोन, घर-सम्बन्धीक सेहो लेहाज नहि रहैक! सभ गामे मे रहैक, नोकरी करब शानक खिलाफ बुझैक। धनक कमी रहबे ने करैक, आ ने खयबा पियाक चिन्ता। मस्त साँड़ जकाँ बौआयल फिरय! मुदा ई सभ तों कतहु लिखिक' छपबा नहि दिहहिक। गामवला सभ ओहिना तोरा पर बिगड़ल रहैत छौक! सभक नीक-बेजाय लिखिक' छापि देत छहीक। मुदा ई सभ नहि छपा दिहहिक, तोहर संग हमरो जानक आफत भ' आयत।

हँ, त' की कहि रहल छलियौक? हँ, पन्द्रहम बरख मे एहि गाम मे आयल रही! पन्द्रहम बरख आ ओ रूप! आइ ई जरल चेहरा तोरा देखि क' तोरा विश्वासे नहि हेतौक जे कहियो एहू चेहरा पर रूप अँटैत नहि छलैक। जे देखय आङनक चक्कर लगब' लागय। गामक सम्बन्धें ककरो भौजी, ककरो काकी। मुदा तकर ककरा लेहाज? सासु नहि, वृद्ध ससुर मतिभ्रम मे पड़ल, ननदि सासुर बसैत आ एक गाम देओर गामे गाम मास्टरी करैत! मास-दू मास पर गाम आबथि। लागए जेना सौंसे गाम गिधे-देखारे नोचि क' खा जायत।

नोचवा लेल पहिल हाथ घरे मे बढ़ल। ससुर सभ राति पयरमे तेल लगबाबथि। कहियो संकोच नहि होअय। वृद्ध रुग्ण ससुर। मोन लगा क' सेवा करी। एक राति वैह ससुर हाथ पकड़ि झीक' लगलाह। हाथ छोड़ा भागि पड़यलहुँ। लागल जेना चिनावौत विज़्आ सँ भरल खाधि मे खसि पड़ल होइ आ सौंसे देह सहनहू करैत हो विज़्आ सभ। घृणासँ जी ओकाय लागल।

की कहलें ? बाबू लग किएक नहि गेलहुँ ? कौना जइतहुँ ? की कहितियनि ? कहितियनि जे हमर ससुर······? चुप्पे रहि गेलहुँ। उनटे ससुरे बाज' लगलाह। आब रातिकें तेल लगाब' नहि आइत छलियनि, तें दिन राति गारि शाप देब' लगलाह। कहियो बेटा घर अबथिन तँ दस हजार शिकायति जे भरि दिन किलोल करैत छथि आ हम रंग रभसमे लागल रहैत छी। तोरा लाज होइत छौक एहन बात सुनिक'। मुदा आइ कह' बैसल छियौक तँ सभ कहबौक। बहुत दिनसँ सभ किछु भीतरमे औना रहल छल। आइ तोरा कहि देयौक, तँ मोन हल्लुक भ' जायत।

हुँ, तँ एहिना पाँच बरख बीति गेल। बूढ़ ससुर हमरा गारि-शाप दैत संसार सँ विदा भ' गेलाह। मरितो काल हमरा क्षमा नहि कयलनि। मुदा तोँ विश्वास कर, हमरा बड़ दुःख भेल हुनक मरबाक। जेहनो छलाह, आङनमे पड़ल रहैत छलाह, तँ एकटा विश्वास रहैत छल जे एकसरि नहि छी, एकटा पुरुष आङनमे अछि। हुनकार मृत्युक बाद आङनमे एकसरि रहि गेलहुँ। बीस बरखक विधवा। देओर परदेसी। मास-दू-मासपर घर आबथि तैयो मोन चौंकल रहय। देओर छलाह, मुदा बयसमे तँ दू बरख जेठे छलाह। नहि जानि, कखन मोन बदलि जानि।

एकटा रस्ता भेटि गेल। छोट बहिन कमला विवाह जोगरि भ' गेलि छलि। बाबूकेँ कहुना मनाक' तोहर मास्टर काकाक संग ओकर विवाह करा देलियैक। सोचलहुँ जे दोसर घरक बेटी आओति तँ उपद्रव करति, लांछन लगाओति। कमला छोट बहिनक दुख बुझति।

कमला माय बनलि। पहिने एकटा बेटी, फेर दूटा बेटा, फेर दूटा बेटी आ तखन फेर एकटा बेटा। घर भरि गेल। ओकरे सभक मुँहक देखि हमरो समय कट' लागल।

धीया-पूता सभ पैघ भेलैक तँ घरमे तंगी आर बढ़ि गेलैक। एकटा स्त्रीक पेट सभकें भार लाग' लगलैक। बहिन झगड़ा कर' लागलि आ देओर लात-जुत्तासँ मार' लगलाह। तंग भ' फराक भ' गेलहुँ। भेटल एकटा फूसक खोपड़ी, छोट छीन आङन, आङनमे एकटा लताम आ एकटा सरीफाक गाछ। ने एकछोटा बर्त्तन, ने एक्को चुटकी अन्न। तोँ तँ हरदम अही आङनामे देखने छेँ, तोँ की जान' गेलें ई सभ गप्प। आरो बहुत रास गप्प छैक, तोरा सेहो कहाँ बूझल हेतौक ?

नहि बूझल छौक तँ आब बूझि ले। आइ सभ कहबौ। आब सहि नहि होइत अछि। हमर निसाफ कर। बिना एक्को चुटकी अन्न आ एकछोटा पाइक एहि आङनमे आयलि रही। तैयो निराश नहि भेलि रही। हाथमे यश छल। दस घर कयनाइ बनौलहुँ। तोरो मुण्डन आ उपनयनमे सभटा हमहीं कयने रहियौक। दसटा टाका जमा भेल। चर्खा लेलहुँ आ सूत काट' लगलहुँ। तहियासँ आइ धरि ककरो आगाँ हाथ नहि पसारलहुँ अछि। बेर-कुबेर तोहर मास्टर काकाक मदति सेहो कयलियनि अछि। आखिर हमरे देओर छथि। हमरे बहीन पिक। ओकर परिवार पैघ छैक, अपने घरक खर्च नहि जुटैत छैक, ओकर कोन दोष ? अभावमे मति भ्रष्ट होइते छैक।

हमर शिकायति ओकरासँ नहि, तोहर बाप-पित्तीसँ अछि। बड़ मालिक कहबैत छथि, हुनका लोकनिकेँ ई शोभा दैत छनि ?

तोँ नहि बुझलें ? तँ ले, आब साफ-साफ कहैत छियौक। दस बर्ख चर्खा काटि पाँच सय टाका जमा कयने रही। तोहर मास्टर काका लग नहि रखलहुँ। रखलहुँ भोला बाबू लग जे पढ़ल लिखल प्रतिष्ठित लोक छथि, एकटा विधवाक संग बेइमानी नहि करताह। पछिला साल सभ मिलमण सभ बद्रीनाथ गेल। हमरो बड़ इच्छा रहय। मँगलियनि तँ कह' लगलाह जे खर्चमे पड़ि गेल छी, हाथपर अबिते द' देब। हम हुनकर परिस्थिति बुझलियनि, जिद नहि कयलियनि। मुदा आब नीक जकाँ सुझैत नहि अछि। चर्खासँ पेट नहि चलैत अछि एहि महगीमे। छौ माससँ मड़ँत-मड़ँत हारि गेलहुँ, कोनो असरियो नहि होइत छनि। परसू कहलनि "केहन रुपैया ? कथीक रुपैया ?" लोक सभकेँ जमा कयलहुँ तँ सभक सोझामे कथा कह' लगलाह। एहि बयसमे की-की नहि कहलनि, ककरो बकार नहि फुटलैक।

मुदा तोँ हमर निसाफ कर। हाकिम बनल छेँ, तँ पहिल फैसला घरमे कर। हमर रुपैया हमरा देया दे। तोँ चुप किएक छेँ ? नहि छौक साहस ? तँ सुनि ले, हमरा साहस अछि। हम चुप नहि रहबौक ? एहि बयसमे की क' बैसबौक जे आइ धरि नहि कयलियौक। बूढ़ि ब्राह्मणी विधवा भ' क' ककरो, कोनो जातिक घर जा बसबौक। तखन रहतौक तोरा लोकनिक इज्जति।

बाज, हमर निसाफ कर। एना चुपचाप उठिक' पड़ायल कत' जाइत छेँ ? हम खाली धमकिये नहि दैत छियौक। जे कहलियौक अछि, से क' देखबौक ! सत्ते······ ❑

जनवरी १९७०

दुःख

कार्यालयक डाकक मध्य ओहि लिफाफक टेढ़-मेढ़ परिचित लिपि हम देखि लेने छलियैक मुदा तत्काल ओकरा एकटा 'पेपरवेट' सँ दबा राखि देने छलियैक। कार्यालयक सभटा पत्र पढ़ि, चिन्हित क' ओकरा विभिन्न भागमे वितरणक हेतु आदेश द' जखने 'रेकर्ड क्लर्क' केँ विदा कयलियैक, फेर ओहि लिफाफ पर दृष्टि गेल। मायक पत्र। बड़ बेमनसँ बिना कोनो प्रसन्नताक अनुभव करैत ओहि लिफाफकेँ फाड़ि पत्र पढ़ैत छी। दुइये-चारि पाँती पढ़ि मुँह लटकि जाइत अछि। पत्रकेँ बिनु सम्पूर्ण पढ़ने ओहिना छोड़ि दैत छियैक आ एकटा कागत पर छुट्टीक आवेदन लिखि ओकरा टाइपक हेतु चपरासीक हाथे टाइपिंग सेक्सनमे पठा दैत छियैक। दराजसँ टाइम-टेबुल निकालि सभसँ पहिने भेट' वला गाड़ीक समय देख' लगैत छी।

तखने दरबज्जाक परदा उठा सेक्सन हेड शर्माजी हुलकी दैत छथि —"मे आइकम इन सर।"

—'कम इन प्लीज।'

शर्माजी भीतर आबियो क' ठाढ़े रहैत छथि, बैसैत नहि छथि। —'की बात छैक शर्माजी? कोनो विशेष काज?" हम प्रश्न करैत छियनि।

'हँ सर। विशेषे काज बुझू।" शर्माजी ओहिना ठाढ़ रहैत छथि।

—त' बाजू ने। तारतम्य मे किएक पड़ल छी? पहिने बैसू आ तखन कहू जे की बात छैक?" हम हुनका उत्साहित करैत छियनि।

हमरा अनुकूल देखि शर्माजी बैसि जाइत छथि आ पाकिटसँ एकटा कागज बहार क' हमरा दिस बढ़ा दैत छथि।

—"ई की थिक, छुट्टीक दरखास्त?" हम प्रश्न करैत छियनि।"

—नहि सर! छुट्टीक दरखास्त नहि। एक्सटेंशनक दरखास्त। एही साल दिसम्बरमे 'रिटायर' भ' रहल छी। छोट-छोट धीया-पुता अछि, एकटा बेटीक विवाह करबाक अछि, कमसँ कम एको सालक एक्सटेंसन भेटि जाय तँ···—।"

बीचमे बात काटि हम कहैत छियनि—'अहाँ तँ स्वयं जनैत छी शर्माजी जे एहि व्यवस्थामे ककरो एक्सटेंसन नहि भेटैत छैक, एको दिन नहि।"

—"जनैत छी सर। मुदा अपने यदि हेड आफिस स्पेशल केस बूझि रिकोमेण्ड क' दी तँ···"।

हम फेर टोकैत छियनि—'हमर रिकोमेण्ड कयलासँ की हैत? हेड आफिस नहि मानत, अहाँ नीक जकाँ जनैत छी। आ यदि मानि जायत त' की हैत? एक सालमे धीया-पुता सभ पैघ त' नहि भ' जायत।

—'भ' जायत सर। एक सालमे बहुत किछु भ' जायत। कमसँ-कम बेटीक विवाह त' अवस्से भ' जायत।' शर्माजी आशान्वित होइत बजैत छथि।

—'मुदा अहाँक दुनू जेठका बेटा तँ खूब कमाइत छथि, तखन अहाँकेँ चिन्ता कियैक? ओ लोकनि सम्हारि लेताह सभटा जिम्मेदारी। अहाँ किएक बुढ़ारी मे घाम-पसेना बहाब' चाहैत छी?'

हमर प्रश्न पर शर्माजी किछु काल मौन रहलाह आ फेर आस्तेसँ बजलाह— 'बेटाक निन्दा नहि करैत छी हम मुदा जखन जिम्मेदारी समानान्तर दौड़ैत छैक, बाप-बेटाक सम्बन्ध नहि रहैत छैक। हुनरे धिया-पुताक बयसक ओकरो बहुत नेना सभ छैक। अपने जिम्मेदारी सम्हारए मे बेहाल रहैत जाइत अछि।'

हुनकर उत्तर सुनि हम सोचमे पड़ि जाइत छी। हमरा चुप देखि शर्माजी लिड़बिड़ा उठैत छथि—'हम नहि मानब सर। यदि अपने हमर केस रिकोमेण्ड नहि करब, तँ पयर पकड़ि लेब अहाँक हम' 'शर्माजी सत्ते हमर पयर दिस हाथ बढ़बैत छथि।

—ई की करैत छी शर्माजी। हम अवस्स रिकोमेण्ड क' देब अहाँक केस। मुदा गामसँ घुरला पर। आइये हम छुट्टी पर जा रहल छी, बाबूजी बीमार छथि।'

तावत टाइपिस्ट हमर आवेदन टाइप क' स्वयं उपस्थित होइत छथि। ओहि पर दस्तखत क' शर्माजीकेँ ओकरा हेड आफिस पठा देबाक आदेशक संग

अस आवेश द' हम झटपट आफिससँ विदा होइत छी। बाटे मे क्वाटर अछि, हम डेग झटकारैत छी।

बाटे मे कपूरसँ भेँट भ' जाइत अछि, संगमे तीनटा अपरिचित युवक। देखिते हमरा दिस लपकैत अछि—"अहीं दिस जाइत छलहुँ। हिनका लोकनिसँ परिचय करा दी, ई मनोज वर्मा, बंगला फिल्मक सहायक निर्देशक, ई राजहंस, नव पीढ़ीक कवि आ कथाकार, आ ई नीरेन दास, संगीतकार।

हमरा लोकनि परस्पर हाथ जोड़ैत छी। कपूर बजैत अछि—अहींसँ भेँट करय आयल छलाह सब। बड़ प्रभावित छथि अहाँक लेखनसँ।" अपन प्रशंसा हमरा नीक लगैत अछि। झट आग्रह करैत छियनि—आउ, आउ, डेरे दिस आउ।'

असमयमे डेरा आयल देखि अकचकायल नोकरकेँ पाँच कप काफी आ पान सिकरेटक आदेश द' हम ड्राइंग रूममे बैसि जाइत छी। हमरा आयल देखि पिकी दौड़ैत देह' मे लपटि जाइत अछि। हमर आदेश पर ओ झट अतिथि लोकनिकेँ नमस्ते करैत अछि, बेर-बेर सबकेँ—नमस्ते अंकल···नमस्ते अंकल। हम सगर्व अतिथि लोकनि दिस तकैत छी। मनोज झट हमरा अनुगृहीत करैत बाजि उठैत छथि—बड़ी स्वीट बेबी है, आओ, मेरे पास आओ।

एहि बेर पिकी नीक जकाँ हमर पयरसँ लपटि जाइत अछि। ठेलओ पर मनोज दिस नहि बढ़ैत अछि। हमरा अकारण क्रोध होइत अछि आ खिसिआयल हँसी हँस' लगैत छी।

नोकर एहि अप्रिय स्थितिसँ हमरा उबारैत अछि। एकटा ट्रे मे पाँच कप काफी आ प्लेटमे पान सिकरेट राखि जाइत छथि। अतिथि लोकनि काफीक चुस्कीक संग सिकरेटक धुआँ छोड़' लगैत छथि। पिकी अवसर पाबि भीतर पड़ा जाइत अछि।

सिकरेटक एकटा लम्बा कश लैत आ नाक मुँहसँ धुआँ छोड़लाक बाद कपूर बजैत अछि—'असल बात कहबे बिसरि गेलहुँ। आइ साँझ एकटा गोष्ठीक आयोजन कयलहुँ अछि अहाँक डेरा पर। किछु आर मित्र लोकनि आबक छथि, सबक आग्रह छलनि अहाँसँ भेँट करबाक। बिन पुछने सबटा तय क' लेलहुँ, माइण्ड नहि करब।"

"एहिमे माइण्ड करबाक कोन बात छैक। ई तँ खुशीक बात थिक। अवस्से करू गोष्ठी।" हम उत्साह पूर्वक बजलहुँ, मुदा तखने पाकिट मे राखल मायक चिट्ठी मोन पड़ल आ सबटा उत्साह बिला गेल। कपूर एकाएक हमरा चुप होइत देखि प्रश्न कयलक—"की बात छैक? कोनो असुविधा?"

"नहि, असुविधा कथीक। गोष्ठी अहाँ लोकनि अवस्स करू मुदा हम नहि रहि सकब। आइये गामसँ मायक पत्र आयल अछि। बाबू बड़ दुखित छथि। हम गाम जा रहल छी।

अतिथि लोकनि समवेत स्वरे सहानुभूति प्रकट करैत छथि आ काफीक अन्तिम घोँट घोँटि, सिकरेटक आखिरी कश लs पान मुँहमे दबा विदा भ' जाइत छथि। कात धय जाइत एकटा आग्रह—'एकटा पत्र अवश्य लिखि देब बाबूजी बीमारीक सम्बन्ध मे। हमरा लोकनिक मोन लागल रहत।

अतिथि सबकेँ बाहर धरि अरियाति जहिना कोठली मे पयर दैत छी, श्रीमती बाट छेकि ठाढ़ भ' जाइत छथि—'ई गाम जयबाक गप्प की कहलियैक?' कोनो उत्तर नहि द' हम पाकिटसँ मायक पत्र बहार क' हाथमे द' दैत छियनि। पत्र पढ़ि ओहो उदास भ' जाइत छथि—'कहिया जायब?

—आइये, एखने।

—हमहूँ चलब?

—जयबाक त' चाही!" हम औचित्य पर जोर दैत बजैत छी!

आध घण्टाक भीतरे मीरा तैयार भ' गेलीह। पिकी आ गुड्डूकेँ सेहो तैयार क' लेलनि! नोकर टैक्सी ल' आयल आ ओकरा डेराक सुरक्षाक आवश्यक निर्देश द' हमरा लोकनि विदा भ' गेलहुँ! भरि बाट पिकी आ गुड्डू खुशीसँ चहकैत रहल। मीरा सेहो प्रसन्न छलीह! मुदा टैक्सी जखन सिनेमा हौल लगसँ आगू बढ़ल, मीरा उदास होइत बजलीह—'कतेक मोन छल ई सिनेमा देखबाक! आइये ई सिनेमा आयल आ आइये हमरालोकनि जा रहल छी! जा धरि घूरब, ई चलिये जायत! अइ जरलाहा शहरमे कोनो सिनेमा एक सप्ताहसँ बेसी चलबे नहि करैत छैक! हमरो हुनकर दुखमे सम्मिलित भ' उदास होब' पड़ल!

स्टेशन पर मीरा पुनः प्रसन्न भ' गेलीह! फर्स्ट क्लासक डिब्बामे खाली हमरे लोकनि रही! मीरा प्लेटफार्म पर ठाढ़ अन्य यात्रीकेँ हेय दृष्टिसँ तकैत

रहलीह ! रातिक' सभकेँ तेहा नीन्न भेल जेना गाड़ीक डिब्बामे नहि, अपन घरेमे सूतल होइ !

भोरे गामक स्टेशन पर उतरैत मोन पड़ल जे बाबूजी दुखित छथि आ मोन उदास भ' गेल ! मीराकेँ वेटिंगरूममे जा क' अंग्रेजी आखरकेँ हिन्दी मानि उनटा आखरकेँ सोझ कर' पड़लनि आ ओहो असन्तुष्ट सन बूझि पड़लीह ! पिंकी गुड्डू खुशी-खुशी नव-नव सीनकेँ देखैत रहल !

बाबूजी अपन कोठलीमे बिछौना पर आँखि मूनने पड़ल छलाह ! ततेक दुब्बर भ' गेल छलाह जे चीन्हब मस्किल छल ! पयर छूलियनि त' आँखि खोलि देलनि ! एक क्षण देखैत रहलाह आ फेर आँखि बन्न भ' गेलनि ! ठोर पटपटयलनि मुदा शब्द नहि बहरयलनि ! बन्न आँखि सँ दूपटा पैघ बुंद ढबरि गेलनि । भीजल मोन लेने हमहुँ लगमे बैसल रहलहुँ । एकटा टेबुल पर दवाइक बहुत रास शीशी सभ राखल छलैक आ दोसर टेबुल पर पेशाब जँचबाक हेतु टेस्ट ट्यूब, बेनिडक्ट सोलूशन, आ स्प्रीट लैम्प । हम बैसल बैसल खाली ओकरे निहारैत रहलहुँ आ भीजल रोगिआह चुप्पी कोठलीमे पसरल रहल ।

छोट भाइ रमेश बहुत रास प्रेसक्रिप्सन आ रिपोर्ट हाथमे द' देलक । सारी मोनसँ सभटा प्रेसक्रिप्सन आ रिपोर्ट देखैत रहलहुँ । फेर सभटा मोड़ि-माड़ि पाकिटमे राखि कोठली सँ बाहर आबि गेलहुँ ।

बाहर ओसारा पर मीराक संग माय आ हमर भाइ-बहिन सभ ठाढ़ छल । सभ हमर पयर छलक मुदा हम जहिना मायक पयर छूबा लेल झुकलहुँ ओ हाथ पकड़ि भगवती घर ल' अनलक । भगवतीकेँ प्रणाम क' जहिना मायक पयर छूलियैक, ओ कनैत ओहिठाम माटि पर ओंघरा गेल । ओकरा चुप्प करबाक चेष्टामे अपनो कनैत कहलियैक—चुप्प भ' जो, कनैत किएक छैं ! सभ ठीक भ' जयतैक । आब हम आबि गेल छियैक, सभ ठीक भ' जयतैक······

बाबूजीकेँ दरभंगाक बड़का डाक्टर सँ देखा अनलियनि ! सभटा दवाइ शुरू भ' गेलनि ! बाबूजीक हताश आकृति पर आशाक रेख उग' लगलनि आ माय आश्वस्त लाग' लगलनि ।

गामक सभकेँ मुदा डाक्टरक आश्वासन पर विश्वास नहि भेलैक । भोर

सँ साँझ धरि स्त्री-पुरुषक गोल बना बना क' हमरालोकनिकेँ सान्त्वना देब' अबैत रहल ! एहन मौका पर अपन सामाजिक दायित्वसँ पिछड़ि जयबा लेल क्यो तैयार नहि छल । भोरे फूलकाकी टोलक चारिटा स्त्रीगणक संग अयलीह ! हमरा आँगनमे देखि सकपका गेलीह ! उठिक' पयर छूलियनि त' आँखिमे नोर आनि बजलीह—तोहूँ आबि गेलह ! की करबह ! भगवान दुखे टा देखयने छथि ।

—तेहन कोनो बात नहि छैक काकी ! डाक्टर कहलक अछि, सभ ठीक भ' जयतनि !

फूलकाकीकेँ हमर बात पर विश्वासे नहि भेलनि ! सान्त्वना देबाक उत्साह अपेक्षित उत्तर नहि पाबि ठण्ढा पड़' लगलनि ! हमरा बुझबैत बजलीह—तोँ पैघ छ', साहस करहैक चाहियह ! तोँ घबड़ा जयबह, त' सभ घबड़ा जयतह ! एहन असाध्य रोग······

फूलकाकी बहुत आगाँ की की कह' जा रहल छलीह कि हम बीचेमे टोकि देलियनि—रोग पैघ छैक त' डाक्टरो पैघ छैक । घबड़यबाक कोनो गप्प नहि छैक ।

फूलकाकी एकदम हतोत्साह भ' गेलीह ! हमरा अनुपयुक्त पात्र मानि अपन टोलक संग मनसा घर दिस बढ़ि गेलीह । माय मनसे घरक ओसारा पर एकटा पटिया बिछा देलकनि आ पटिया पर बैसितहि जहिना माय अपन जेठकी देयादनीक पयर छूब' लागल, फूलकाकी ओकर कान्ह पर माथ राखि हिचुकि हिचुकि कान' लगलीह—भगवान बड़ पैघ दुःख देलनि कनियाँ ! साहस करू !

माय भरिसक सान्त्वनाक एहि पद्धतिक अभ्यस्त भ' गेल छलि । ओ कोनो विरोध नहि कयलकनि । फूल काकी अपने चुप्प भ' गेलीह आ आँचरसँ अपन नोर पोछैत बजलीह—बऊआ आयल अछि, आब तँ चिन्ताक कोनो गप्प नहि । रुपया-पैसा त' खूब अनने हैत ।

माय एहि प्रश्न पर चुप रहलि । फूलकाकी बाज' लगलथिन—ओहुना त' सभ दू सय माय अबस्से पठबैत हैत ।

माय गप्प टारैत कहलकनि—"अबस्से पठाओत" कथन अपने नहि बचैत छैक । ओकर अपने खर्च पैघ छैक :

एहि बेर फूलकाकीक आँखि आश्चर्यसँ पसरि गेलनि— बेहुन आन्हरि छी अहूँ कनियाँ। ओकरा खर्चे की छैक ? सुनैत छी, अफसर अछि, हजार रुपया दरमाहा छैक। ऊपरी आमदनी सेहो हैबे करतैक।

माय चुप रहलि। प्राय: ई चुप्पी सहमतिक छलैक। प्रसंग टारैत बाजलि— हुनका नहि देखलियनि बहिन ?

फूलकाकी ठाढ़ उठैत बजलीह —नै कनियाँ। हमर कलेजा बड़ कमजोर अछि। कोनो दुखिताह कें देखबे ने आबैत अछि। आब जाय दिय' हमरा...।''

फूलकाकी उठि क' ठाढ़ भ' गेलीह। माय दौड़िक' सुपारी अनलक आ सभक हाथमे बारि-बारि खण्ड द' देलकनि। सुपारीक टुक मुँहमे दैत फूलकाकी बजलीह—आइ एकर कोन काज ?

आँगनसँ बहराइत काल फूलकाकी आ हुनकर टोलक मौगी सभ हमरा विचित्र दृष्टिये देखलक। माय फेर मनसा घरमे पहुँचि गप्प, भानस-भातक व्यवस्थामे व्यस्त भ' गेलि। हम आङन सँ उठिक' दरबज्जा पर आबि गेलहुँ। सामने पोखरिक भीड़पर किछु गोटेक संग मास्टर काका गप्प क' रहल छलाह। हमहूँ ओम्हरे बढ़ि गेलहुँ। सभ बयस आ सम्बन्धमे पैघ छलाह। पयर छूबि प्रणाम कयलियनि। प्रश्नक झड़ी लागि गेल—

—कखन अयलहुँ ?

—काल्हिये अयलहुँ काका।

—एखन रहबह, छुट्टी छह ?

—छुट्टी कहाँ, छुट्टी ल' क' आयल छी। बाबूजी दुखित छथि :'

—हँ, हँ से त' बिसरिये गेल। कोना छथुन बाप ?

—पहिने सँ नीक छथि, दबाइ भ' रहल छनि।

—नोकरी केहन चलैत छह ? मोन लगैत छह ?

—मोन त' लगाब' पड़ैत छैक भाइ।

''किएक ने लगैतह ? सुनैत छी, हजार रुपया दरमाहा दैत छह, ऊपरी आमदनी सेहो होयबे करतह।

—नहि भाइ। ऊपरी आमदनीक ने समावेश छैक, ने इच्छा।

—किएक झूठ बजैत छह। कमाइते छह, अपने माय-बापकें दैबह। हमरालोकनि त' हिस्सा नहिये माँगबह। झूठ किएक बजैत छह ? बिना ऊपरी आमदनीक अफसरी केहन ?

विरोध करब बेकार बूझि हम चुप भ' गेलहुँ। किछु एम्हर-ओम्हरक गप्प क' फेर अपने दरबज्जा दिस बढ़लहुँ। मास्टर काका हमरे संग अयलाह। दरबज्जा लग आबि आस्ते सँ बजलाह—तोरा सँ एकटा बात कहबाक अछि बउआ ! अयलाह नहि मानिह'। तोहर बाप बड़ दिक्कतिमे छथुन। बीमारी आ एतेक टा परिवार। बड़का बेटा धरनि होइत छैक। घर भरिक बोझ सहैत छैक। फेर तोहर सन बेटा। ओकरा पै तँ बाटो आशा रहैत छैक। हम पहिने छियह तोरा, तें कहैत छियह, अयलाह नहि मानिह'।''

मास्टर काका अपन घर दिस चल गेलाह, हम ओतहि ठाढ़ रहलहुँ। घर दिस ध्यान गेल। सत्ते बाबूजी कोना चला रहल छथि सभटा। दू माससँ विछौन धयने छथि। दरमहो नहि भेटैत छनि। अपन इलाज, सभक पढ़ाई-लिखाई, वस्त्र आ खोराक ? कोना चलि रहल छनि ई सभ ? हमरा घर दिस देखबाक चाही— मास्टर काका ठीके कहैत छलाह।

दस दिन बितैत-बितैत लागल जेना अनेरो गाममे बैसल छी। बोरा उदास रह' लगलीह। बेर-बेर टोक' लगलीह— पिकीक पढ़ाइ बरबाद भ' रहल छैक—मास्टर रोज घुरि जाइत हेतैक। अपनो लागल जेना छुट्टी अनेरो बरबाद भ' रहल अछि। आब तँ मोनो पहिने सँ नीक छनि।

बाबूजी सुनि क' बजलाह—चयबह, बेश जाह।'' फेर आँखि बन्द क' लेलनि। हमहूँ चुप बैसल रहलहुँ, आगाँ किछु बजबा लेल फुरबे नहि कयल।

कोक कालक बाद फेर कहुलियनि दबाइ सभ खाइत रहब, 'फल सेहो खाइत रहब। एखन कमजोरी बेसी अछि। दबाइ आ पथ्य परहेज बड़ जरूरी अछि।

हमर बातपर बाबूजी फेर आँखि खोलि देलथि। किछु क्षण हमर मुँह देखैत रहलाह आ फेर बजलाह—जरूरी अछि से तँ हमहूँ बुझैत छियैक। मुदा आरो बहुत रास चीज जरूरी अछि। खानो जरूरी रहले सँ की हैत ? तों अपने सँ मिला क' देखि लैह। तोरा एक हजारमे दू गोटेमे सिकस्ती भ' जाइत छह आ एत' पाँच सयमे दस गोटे छी। तीन माससँ ओहो पाँच सय बन्द अछि। तखन की जरूरी आ नहि जरूरी, से ओछिये क' की हैत ?

एक मासमे एतेक व्याधि क' प्राय: बाबूजी थाकि गेलाह। निश्चेष्ट बिछौन पर पड़ल रहलाह आ आँखि बन्द क' लेलनि। हमरा किछुओ नहि फुरल। चुपचाप उठिकेँ चल अयलहुँ।

माय बुझिक' बाजल—जयबह, बेश जाह। मुदा आब नहि पठेबह मासे-मासे किछुओ तँ बाप नहि बचतुन।

हम ओकरा बुझौलियैक जे पठेबामे कहाँ आपत्ति अछि हमरा। मुदा एखन बहुत रास सामान सभ किस्त पर लेने छियैक। सभक किस्त कटैत अछि। सात-आठ मासमे सभक सधि जयतैक तँ निश्चय पठयबौक।

"बेस सात-आठ मास बादे सही। सात-आठ मास हमरा लोकनिक पेट तँ भरितक आनि जायत मुदा बीमारी भरिसकेँ मानतहु।" माय कनैत दोसर दिन चल गेल। हम कोनो आश्वासन नहि द' सकलियैक।

ठसम-ठस्स भीड़मे हमर छोट भाय सभ ठेलि ठालिक' कहुना हमरा लोकनिकेँ गाड़ीमे चढ़ा देलक। चोंचल-खुचल पाइ सँ कहुना मई भलासक टिकटक इन्तजाम भ' सकल छल। गाड़ी जखन खुजल मीराक आकृतिपर आबि' काल वला परिमाणव मुद्रा नहि छलनि। कोनो हीन भावसँ ग्रस्त लागि रहल छलीह। बकसा आ नेबिनक ऊपर दुनू हाथसँ चिन्नी आ गुड़केँ सम्हारने अपस्याँत बैसलि छलीह। हमहुँ कहुना एक टाङ पर ठाढ़ छलहुँ। हमरा लागल एखन जेना दुनू गोटे एक्के बात सोचि रहल छी—निरर्थक एतेक टाका अथवा-अथवामे खर्च भेल। छुट्टी बरबाद भेल से फराक। एहिसँ तँ एतेक टाका मनिआर्डर क' दितियनि। कोनो तेहन दुखित्याहु तँ नहि छथा:……। ●

अप्रैल १९७०

आठम दशकक कथा : प्रभासक

- ☐ युद्ध-विराम
- ☒ पिता
- ☒ उत्तरकाण्ड
- ☒ द्वेष
- ☐ मलाहक टोल
- ☒ पुरान चरित्रक नव कथा
- ☐ भयाक्रान्त

युद्ध-विराम

एना त' कहियो ने भेल छलैक। ओसारा पर बड़की बैसलि छलि—उदास एकसरि। अन्हार ससरल जा रहल छैक। आन दिन भोरे अन्हरोखे फूलो तोड़ैत काल सँ शुरू भ' जाइत छलैक।

—"हमर गेनाक एहू बेर एहन-एहन थोका जेना पीयर गुलाब हो।" बड़की बजैत छलि।

—"हमर बीरासँ भरि गाम पूजा होइत छैक, दू-चारि थोका गेनाके'क पूछय!" अपन बाड़ीसँ छोटकी बजैत छलि।

बड़की फूल तोड़ि आङन मे अबैत छलि। नूआ ल' स्नान करबा लेल विदा होइत छलि। पाछाँ-पाछाँ छोटकी। पारक कातमे, जल लग दुनू पाँच हाथ दूरे दूर बैसैत छलि। बालुसँ दाँत मँजैत बड़की कहैत छलैक, बिना ककरो सम्बोधित कयने—'कमला माइ तँ प्रात होइते देरी हमरे बाट तकैत रहैत छथि, जा धरि हम नहि आबी, अनका अपन जल मे पयरो ने राख' दैत छथिन।"

पानिमे डूब द', नूआ बदलि, हाथमे एक लोटा जल ल', ऊपर महादेव मन्दिर दिस जाइत छोटकी बजैत छलि—'भोला बाबाकेँ तँ बिनु हमर लोटाक जल पीने कण्ठ सुखायल रहि जाइत छनि, भोरेसँ बाट तकैत रहैत छथि।'

बड़की पाछुए लागलि अबैत छलैक। दुनू बेराबेरी भोला के जल ढारि आङन दिस विदा होइत छलि। बाटमे बड़की बजैत छलि—लोको सभ केहेन-केहेन पाखण्डी होइत अछि, मुँह मे भोला-भोला आ मोन मे पाप......"

चारिये डेग पाछूसँ छोटकी बजैत छलि—"हँहु, कोना पार लगैत छैक ककरो? भगवानो लग प्रपंच!"

दुनू आङन आबि अपन-अपन ओसारा पर बैसि जाइत छलि। आगस-भागक कोनो जल्दी नहिये रहैत छलैक। एकसर प्राणी। कथीक हड़बड़ी?

निश्चिन्त बैसलि बिखनि होंकैत बड़की बजैत छलि— 'हमर नुनू । एकको दिन ।.नु चिट्ठी लिखने नहि रहैत छथि, चलि आ,...... एकसरि गाम मे की करैत छी', कोना मोन लगैत छौक ? कोना लिखिथीन जे ऐ ठाम बड़नियाँ सभकें आँखि कँटकल रहैत छैक । चारि दिन घर छोड़ि दिय' त' सभटा नोचि-खसोटि क' ला जायत ।"

अपन ओसारा पर पाथा स ओ'ठगलि छोटकी बजैत छलि— 'हमर मुन्नू त' तार पर तार दैत रहैत छथि— चलि आ, चलि आ । छोड़ गामक मोह । मुदा कोना छोड़ि दिय' ई राजपाट । हड़ाशंखिनी सभ चारिये दिन मे उजाड़ि-पजाड़ि क' सभ टा चौपट क' देत ।"

बड़की आङन मे बैसलि-बैसलि अगुता जाइत छलि । उठि क' बाहर दलान दिस अबैत छलि—"एहन-एहन सजमनि क्यो देखने हैत ? पकवाँ एक बोरा नूनूकें पठा देने रहितयनि त' भरि टोलक लोक अकच्छ क' देने रहतनि— आर मङाउ, एहन स्वादिष्ट सजमनि बजारमे कत भेटत ?'

छोटकी पाछाँ-पाछाँ अपन हिस्साक मचान दिस चल अबैत छलि । कनेक जोरसँ सुनबैत बजैत छलि—अनेरुआ सजमनिकें के पुछय ? हमर मुन्नू जे अपन कुम्हरक मोरब्बा शहर मे अपन संगी सभकें देलथिन से आइ धरि सभ हाथ चटैत अछि । कनिआँकें बनयबाक लूरियो तेहने छनि । सभक हाथ मे थोड़े ओ गुण रहैत छैक ।

बड़की सहूँट क' लग आबि आरो बेसी जोरसँ कहैत छलैक—नूरि त' क्यो हमर बड़की कनियाँ सँ सीखय ? तेहने शामिल बनबैत छथि, तेहने अचोड़ी । बाहर जा क' तँ आरो किदन-किदन बनायब सीखि लेने छथि ! छुः जो, हमरा की नामी मोन रहैत अछि ।

छोटकी मुँह बिचकबैत फेर आङन दिस जाइत बजैत छलि—'छोटकी कनियाँ त' हीरा छथि । तेहने भानस-भात, तेहन सियाइ-कढ़ाइ । ऊपरसँ पढ़लि-लिखलि, अपर पास ।

आङन आबि नुनू मनसा मे लागि जाइत छलि । कनेक काल लेल आङन मे मोन पसारि जाइत छैक । कोना पूछियो जन नुनू किछुने किछु

बजैत रहैत छलि, मुदा मनसा घर दू छोर पर रहलाक कारणें एक दोसरक बात सुनि नहि पबैत छलि । एके गोटेक मानस । समये कतेक लगैत छलैक ? फेर वैह क्रम ।

मुदा एना त' कहियो ने होइत छलैक ? आङन मे अपन ओसारा पर बड़की एकसरि बैसलि छलि । चारूकात अन्हार पसरि गेल छलैक । आङन सुन आ भयावह लागि रहल छलैक । पैघ सन आङन, चारूकात चारिटा घर, बीच मे मड़बा बाड़ी । मे ठाढ़ पैघ-पैघ आमक गाछ आ ओसारा पर एकसरि बैसलि बड़की । अनेरो बिसरलाहा कतेक बात मोन पड़लैक, नहि जानि, कतेक दिन पर । एना त' कहियो ने मोन पड़ल छलैक ।

पहिने बड़की आयलि छलि एहि आंगन मे । आँगन-घर पसिन्न पड़ल छलैक । पैघ आंगन पैघ-पैघ घर, कोनो वस्तुक कमी नहि । जखन जे चाहिय, भेटि जाइत । खाली एकसरुआ हैब कखनो-कखनो अखरि जाइ । ने सासु-ससुर ने ननदि । खाली एकटा देवर, सेहो चेतन, बियाहक योग्य । बड़की के एकटा बाट सूझि गेलैक । छोटकी दस बर्खक भ' गेलि रहैक, बाबूसँ गप्प कयलक । बाबू एके घर मे नुनू बेटी देबा लेल तैयारे ने होइत छलथिन । बड़की जिद्द पकड़ि लेलक । छोटकीकें ल' अनलक एही आंगन मे ।

दस बरखक छोटकी । सदिखन जेठकी बहिनक पाछाँ लागलि रहय—भोरसँ राति धरि । राति के बड़ मश्किल भ' जाइ बड़कीकें । छोटकी अपन कोठली जयबे ने करैक, बहिने लग सूति रहैक । तखन कोनहुना उठा-पुठा ओकरा अपन कोठली मे द' अबैक बड़की ।

सन्तान पहिने छोटकीये के भेलैक—बेटा । बड़की भरि आंगन नचैत-फिरलि । छठिहार मे भरि गामक भोजिकें खुऔलक । फेर अपनो बेर अयलैक—पहिल बेटे भेलैक, फेर दूटा बेटी आ तखन फेर एक टा बेटा । छोटकीयो कें चारिये टा भेलैक—दू बेटा, दू बेटी । एकदम हिसाब बराबरि ।

मुदा भगवानक एहि बराबरि हिसाब जकाँ घर-द्वारक हिसाब संभव नहि भेलैक । नहि जानि क' हेबा, दू बहिनक स्थान पर दूटा पट्टीदार ठाढ़ भ' गेलैक आ बात-बात पर कलह शुरू भ' गेलैक अकर अन्त आङनक बटवारासँ भेलैक ।

पुबरिया आ दछिनबरिया घर बड़कीकेँ तथा पछबरिया आ उत्तरबरिया घर छोटकीकेँ। आंगन आ मड़वा साझी। बाड़ी-झाड़क पाछाँवला, घरक बृद्धीक संग।

मुदा झगड़ाक अन्त कहाँ भेलैक? दुनूक मुँहायन्जी त' फराक हैबाक पहिनेसँ बन्दे छलैक, मुदा अप्रत्यक्ष सम्बोधनक संग आक्रमण-प्रत्याक्रमण भोरेसँ आरम्भ भ' जाइत छलैक। दुनू अपन-अपन ओसारा पर बैसि जाइत छलि आ बाज' लगैत छलि जेना अपनेसँ गप्प क' रहलि होथय।

—"लोकी केहन-केहन बेमान होइत अछि। एकटा फुलही लोटा आ थारी नुका लेलक बाँट बखराक बेरने। एहिसँ बड़ भारि लैत। एकटा फुलही लोटाकेँ के कहय, सभटा बर्तन ओहिना छोड़ि दितिऐक" बड़की बजैत छलि।

छोटकीयो कनेक कण्ठस्वर केँ ऊँच करैत बजैत छलि जे—"बेमान के भरि दुनियाँ बेमाने बुझाइत छैक। दू भरिक बाजूबन्द छल, से तँ नहि जानि कत' निपत्ता क' देलक, ओकरे लोहाक' गहना गढ़ौलक। लोक नहि बुझैत छैक?

एहि प्रकारेँ भोरसँ साँझ धरि दुनूक स्वागत भाषण चलैत छलैक। प्रत्यक्ष युद्ध कहियो नहि होइत छलैक। भोरसँ साँझ धरि दुनू बजैत रहैत छलि, अपन दिनचर्या सेहो करैत रहैत छलि।

समय बितलैक। धीया-पुता सभ पैघ भेलैक। बेटा पढ़'-लिख' लगलैक। बेटी विवाहक योग्य भेलैक। पहिने छोटकीक जमाय अयलैक। बड़की मुस्त भेलि सभटा देखैत रहलि। सभटा काज विहारक बाद, जमायकेँ विदा क' छोटकी एक दिन अपन ओसारा पर बैसलि बजलि—"हमरा समकेँ तँ नहि पार लागत जे लोढ़ी सन सन छाती तने कुमारि बेटी गाममे बौआयल फिरत आ हम निश्चिन्त बैसल रही। नहि जानि लोक समकेँ कोना रहि होइत छैक निश्चिन्त?"

बड़की अपन ओसारा सँ कनेक जोर सँ बाजलि—"लोढ़ी सन छातीवाली खेल खेलक अछि बिनु दाँतवला बर आ गुमान ने देखू लोकक? एना तँ क्यो दुश्मनोक गरदनि नहि कटैत अछि।"

छोटकी कनेक आरो जोर सँ बाजलि—"महादेव सन पाँजि छैक आ घरमे सोना चाँदीक पथार। लोकक छातीपर त' साँप लोटयबे करतैक।

बड़की चेबर्‌ नहि बैसलि। दोसरे मुहूर्तमे अपन बेटी बियाहलक। छोटकी मुस्त भेलि सभटा देखैत रहलि। जमायकेँ बिदा क' एक दिन अपन ओसारापर बैसलि बड़की बाजलि—"एकरा कहैत छैक राधा-कृष्णक जोड़ी। जेहने बर तेहने कनियाँ। एहनो कोन बियाह जे बाप-बेटी लागय। लोको सभ केहन आन्हर होइत अछि।"

छोटकी आँगनमे पटिया पर चादर पसारैत बाजलि—"छोटहापर एहन गुमान। जकर पानि त' क' लोक लग्गी नहि करैत छल, तकरा भार साँठि रहल अछि लोक।"

समय आरो बितलैक। छोटकी पहिने विधवा भेलि। श्राद्धकर्म भ' गेलापर एक दिन दुनू नहीन जकाँ अपन ओसारापर बैसलि छलि। बड़की बाजलि—बेचारा काज बिहाजवला छल। एहन एहन कुकर्मी सभक फेरामे पड़ल जे आखिरे मुनि देब उचित बुझलकैह। आब तँ ओहो रोक टोक नहि रहलैक, उमकल फिरौ जत'-तत'।

छोटकीक कण्ठ किछु बेसी तीव्र भेलैक—"अमृत पीबि क' के अयलैक अछि से देखबैक। कोना तँ बेचारा जिनगियेमे काठ भ' गेल अछि।"

भगवान फेर जल्दीये हिसाब बराबरि क' देलथिन। बड़काकेँ सेहो भाद लग बजा लेलथिन। छोटकी गुम-सुम बैसलि छलि काज-तेहारक बाद। बड़की अपन ओसारासँ बाजलि—"लोकक करेज ठंढा भेलैक, कबुला-पाती कयने छलि।"

छोटकी किछु कहितैक मुदा बेटा सामने आबि गेलैक। जवान भ' गेल छैक। पुतोहु घरमे आब'क चाही—छोटकी बिचारलक। अगिले साल पुतोहु आबि गेलैक—सुन्नरि आ काजुल। छोटकी अपन ओसारासँ बाजलि—"एहन पुतोहु लोक के भागसँ भेटैत छैक। जेहने सुन्नरि तेहने काजुलि। एकटा काठो ने उठब' दैत अछि। रानी जकाँ बैसलि रहैत छी।

बड़की के बात अखरलैक। सभ मे पछुआ गेल छलि ओ। बियाहि क' पहिने ओ आयलि, मुदा पहिने माय बनलैक छोटकी, जनाबो ओकरे पहिने अयलैक आ पुतोहुओ। बड़की के हड़बड़ी लागि गेलैक। एके मुहूर्तमे दुनू बेटाक बियाहु-

द्वि गमन करा छोटकीयेँ अनुआ गेल। फेर अपन ओसारा पर बैसि निश्चिन्त भ' बाजलि—"बैसलि-बैसलि ओथ भेल जाइत छी हम। ने कोनो काज, ने झंझट। बड़ो उसकयबाक काज नहि। एक टाक छोटकी कनियाँ दबैत छथि तँ दोसर बड़की कनियाँ। भागसँ भेटैत छैक एहन पुतोहु आइ-काल्हि।"

छोटकीयो बेसी पछुआयलि नहि रहलि। दोसरो पुतहु ल' अनलक। बेटी एके रहि गेल छलैक, ओकरो सासुर बिदा कयलक। बड़कीयोक दोसर बेटी सासुर गेलैक। पोता-पोती दुनूक आंगनमे खेलाय लगलैक। बेटा सभ कमाय बाहर चल गेलैक। मुदा दुनू बहीनक दिनचर्यामे अन्तर नहि अयलैक। बड़की अपन ओसारा पर बैसलि बजैक—"हमर नूनू, बड़का हाकिम, चपरासी, नोकर, बंगला कथुक कमी नहि, लोक देखतैक त' छाती फटतैक।"

छोटकी अपन ओसारासँ बजैक—"छाती फटतैक ओकर जे कहियो अपने देखनहि ने होअय। हमर मुन्नू तँ अपने हेड। बाकी सभ मातहत। कथुक कमी नहि छनि, देखनिहारक छाती फाटि जयतैक।

बड़की तेना बाजय जेना सुनने नहि होअय किछु—"हमर बच्चा। कहबा लेल किरानी, मुदा बाइली आदमी तेहेन जे हाकिमी खुशामदो करैत छनि, तर-तरकारी लेल।"

छोटकीयो तेना बाजय जेना किछु ने सुनने होअय—"हमर वल्लभ त' पेशकार! सभ किछु काटिओ-छाँटि क' देउ-हू सभ रोज! बड़का बड़का हाकिम की परबर करतनि?"

आरो समय ससरि गेलैक। बाकू पुतोहु-धीयापुता संग अपन अपन बर लग चलि गेलनि। पाबनि-तिहारमे दू-चारि दिन अबैत छनि-वर्ष दू पर। कहनो सेहो नहि। मुदा दुनूकेँ कोनो अभाव नहि छलैक। खयबा-पीबा जोग खेत उपजा भ' जाइत छलैक।

"हमर बाड़ीक झिमनीयो तँ ऐ बेर गाम अथा गेल। ककरा ने पसेरी दू पसेरी देलियैक।" बड़की कहैत छलि।

"हमर बाड़ीक ओल त' ऐ बेर मालो-जालो ने पुछलक। डाकीक डाकी डबरामे फेकबा देलियैक। भरि गाम बाझिन्नरो खयलक, से फराक।" छोटकी अपन ओसारासँ बिधनि हौंकैत बजैत छलि।

बड़की करोट फेरि एक बेर आंगन दिस देखि फेर बिधनि हौंकैत बजैत छलि—लोककेँ झूठ बजैत लाजो नहि होइत छैक। एकटा सड़ल ओटो तँ ककरो देबाक हियाव छैके ने आ भरि गाम खुअयबाक गप्प करैत अछि।"

छोटकी उठि क' बैसि जाइत छलि—"सुन सन छातीवाली केँ की लोक चिन्हैत छैक? गूहोँ परसँ पाद उड़ाव' वालो भरि गाम दानक गप्प करैत अछि।"

मुदा आइ बड़की ककरासँ गप्प करओ? एना तँ कहियो नहि भेल छलैक। अपन ओसारापर बड़की एकसरि बैसलि छलि—उदास। आङनमे अन्हार पसरल छलैक। बाकी कतहु किछु नहि। छोटकीक घरक दरबज्जा खुजल छलैक, मुदा कतहु कोनो आवाज नहि।

बड़की एकसरि उदास स्तब्ध बैसलि छलि, भोरेसँ। भोरे शहरसँ पंचूबाबूक बेटा आयल छलैक समाद ल' क'। छोटकीक पोताक मूड़न बैद्यनाथ धाममे भेल छलैक, तकरे खबरि देब' आयल छलैक। किछु पेड़ा आ अक्षीदाना सेहो द' गेल छलैक। छोटकी सुन्न भेल बैसलि रहि गेल छलि। बड़की बाजलि छलैक—"हमर नूनू एना करतथि तँ जिनगी भरि मुँह ने देखितियनि। मूड़न करा क' समाद?" छोटकी जेना नीन्नसँ जागलि छलि। हाथक पेड़ा आ अक्षीदाना फेकि उठि क' कोठलीमे चलि गेल छलि। बड़की एकसरि बैसलि रहि गेलि। बारह बाजि गेलैक, चूल्हियो ने पजारलक। कोनादन लागि रहल छलैक। छोटकीक कोठलीक दरबज्जा खुजल छलैक मुदा भीतर कोनो सुनगुनी नहि जेना घर एकदम खाली होइक। आइ पहिल बेर बड़की केँ आङन एतेक सुन्न लगलैक। दू वर्षसँ आङन मे क्यो नहि रहैत छलैक मुदा कहिओ ध्याने नहि गेल छलैक जे एतेक टा आङन एतेक खाली छैक। छोटकीक संग अप्रत्यक्ष सम्भाषणमे दिन-राति कटि जाइत छलैक। आइ छोटकी नहि छलैक, त' सभ किछु बेसी सुन्न आ उदास लागि रहल छलैक।

बेर खिसका पर बड़की चूल्हि पजारलक। भानस कयलक मुदा खायल नहि गेलैक। कयल भानस झाँपिक राखि देलक। भूख लागल छलैक, मुदा छोटकीक खुजल कोठलीक निस्तब्धता बेर-बेर निहारि बड़की भूख-पियास बिसरल जा रहल छलि। भनसाघरसँ उठि क' फेर युत'बला घरक ओसारा पर आयलि आ पटिया

चिट्ठी पढ़ि रहलि। मुदा आँखि बेर-बेर छोटकीक कोठली दिस जाइत रहलैक। ओहूने निस्तब्धता।

साँझ भ' गेलैक। अन्हार जमकले गेलैक। बड़की उठिक' बैसि रहलि। मोन कोनादन क' रहल छलैक? भितरे भीतर किछु खदकि रहल छलैक।

पछलो ओकरो पोताक मुड़न छलैक। सभ क्यो प्रयाग गेल छलैक। बड़की ई बात छोटकी सँ नुका गेल छलि। क्यो नहि बुझने छलैक। बड़कीकें समाद-चिट्ठी किछुओ ने आयल छलैक। बादमे चिट्ठी आयल छलैक। ओहो एहिना घरमे पड़ि रहल छलि। छोटकी ककरो आङन पूजामे गेल छलैक। क्यो नहि बुझलकै।

फेर जिनगी भरि मुँह नहि देखबाक गप्प कोना कहलकै छोटकी कें? मुँह देखबाक ओहिना कतेक अवसर भेटैत छैक। साल दू सालमे दू चारि दिन। ओहूमे बेसीकाल धीयापुताकें बहुरे छोड़ने अबैत छैक—ककरो परीक्षा, ककरो पढ़ाइ हर्ज हैबाक गप्प।

मुदा ई सभ गप्प किएक मोन पड़ि रहल छलैक बड़कीकें? ई सभ त' हैबे करैत छैक जिनगीमे। सभक घरमे होइत छैक। एहिमे नव की छैक?

तखन छोटकी एना भेटकान किएक दैत छैक—बताहि। ओकरा छोटकीपर तामसो भेलैक। फेर जेना मुँहमे कोराइन स्वाद आबि गेलैक, आँखि अन्हेरो भीजल! कण्ठ अवरुद्ध! एना किएक भ' रहल छलैक?

बड़की उठि क' ठाढ़ि भ' गेलि। आङन मे ठाढ़ि होइत काल एक बेर सिहरि गेलि। साँझे आङन अन्हार छलैक। ढेराओन चुप्पी आ पसरल अन्हार। बाड़ीक बसवाड़ीक गाछ सभ अन्हारमे ढेराओन लागि रहल छलैक। बड़की जल्दी जल्दी डेग उठबैत छोटकीक कोठली धरि आयलि। चौखटि लग कतेक धकमकायलि मुदा फेर धड़फड़ायल कोठलीमे पैसि गेलि। अन्हारमे पहिने किछु ने सुझलैक। फेर ठेकनबैत देखलक—छोटकी माटिये पर भेटकान देने पड़लि छलैक। बड़की लगमे बैसि गेलैक आ पीठपर हाथ फेरैत कहलकै—"एना क्यो मोन छोट करय सीता! बताहि, उठ, हमर संग आ। बिनेसँ आनल मखान पड़ल अछि, दुनू बहीन बाँटि कूटि खा लेब।"

मार्च १९७२

पिता

जीवकान्त एक बेर चिट्ठी लिखने छलाह। मुदा तकर गप्प बाद मे। पहिने एकटा गामक गप्प कहैत छी—कोनो, ककरो गामक। जेहन एकटा गाम होइत छैक, तेहने। मुदा खूब धनगर नहि, खेहर, दूर-दूर धर घर सभ। टोली सभ खूब पैघ नहि—छोट-छोट। दस घर, बीस घर सेहो। बाजी गामक बीच महक पोखरि बड़ी टा—दैत्यक खुनायल पोखरि सभ सँ कनियेँ छोट। मुदा सोँसे कुम्हीसँ छारल। जाठि धरि निपत्ता। जाठिक मूड़ी कें अगस्त छौँड़ा सभ हिला-हिला तोड़ि देने छलैक, हेलैत-हेलैत पचासो गोटे एके बेर मूड़कि जाइत छलैक। किछु दिन टुटलाहा टुनकी पानिक ऊपर लिबलिब करैत रहैक। फेर कुम्भी तर झँपा गेलैक। आब क्यो ने नहाइत छैक एहि पोखरि मे। मालसभ धसहुनो ओगर नहि रहलैक एकर पानि। सभ कहैक पानिसँ भानस-भात करैत अछि गाममे—धनुखटोली सँ बभनटोली धरि आ मलहटोली सँ खतबेटोली धरि। सभ टोल पर कल छैक—जय हो स्वराज के! जय हो सरकार के!

सरकार तँ आरो बहुत रास बात कर' चाहैत छलैक गाममे। कल त' पहिले एलेक्शन मे लागि गेल छलैक टोले-टोल। ओही दिनमे दरभंगा सँ अबैबला कच्चिया सड़क पर खूब माटि द' क' रोड़ा छसा देने छलैक। पिच बनतैक—सेहो इलाका मे ढोल पिटा गेल छलैक। मनेरी आ प्राइवेट बस ओही पिच पर चलबाक लाइसेंसक ओगार मे लागि गेल छल आ मन्नू कण्डक्टरीक सपना देख' लागल छल। बिरजू सा अपन चाहक दोकान चुनका क' चौराहा लग ल' जयबाक योजना बना लेने छल आ एकटा मोक सन साइनबोर्ड अपन चाहक दोकान लेल तनबदकि आर गामक कलाकार फुद्दन चौधरीकें द' देने छलनि। बिजलीक खम्भा सभ बाधे-बाध अबैत कल्लू बाबूक पछुआर धरि आबि गेल छलनि आ गामक लोककें कनेगो कल्लू बाबूसँ ईर्ष्या होब' लागल छलैक जे बिजलीक पहिल लाइन हुनके भेटि जयतनि।

मुदा से सभ त' एलेक्शनक गप्प छलैक। वोटक बाद रोड़ा सभ निपत्ता होइत-होइत एकदम लोप भ' गेलैक आ खेतमे खसल बिजलीक खम्भा नहि जानि

कहिया उठलैक—तीको ध्यान नहि देल्कैक ठीकसँ। गणेशो झा एखन धरि झोंटा-धक्की चलाक' संतोष कयने छथि आ हमरा लाइसेन्सवला गप्प पर आब तामस होइत छनि आ लोकके मार' दौड़ैत छथिन। मन्नू कण्डक्टरीक सपना देखैत-देखैत बहुलमान बनि गेल अछि। एकटा टायरगाड़ी कीनि भट्ठा परसँ सभकें ईंटा खसबैत छैक आ दरभंगा गुदरी बजार सँ सामान लादिक' अनैत अछि। निरसन झाक बाहुक दोकान एखनो सड़कपर छुटिक' खसै लग छैक, बत' पानि पड़लासँ डबरा बनि जाइत छैक, आ कल्लू बाबूक घरमे आइयो डिबिये टिमटिमाइत छनि।

दरभंगा सँ आब'बला कचिया सड़क कुसमठीलीक कात दने जाइत छैक, हाइ स्कूलसँ सटिक'। स्कूलक हाल भाइ स्थापनाक तीसो बरखक बाद ओहिना छैक—टूटल फूटल घर, ढनमनायल देवाल आ उजड़ल सन पैघ प्रांगण! आजादीक दोसरे बरख जखन बहुना जोर लगा वित्तमंत्रीकेँ इलाकाक लोकसभ एहि स्कूलमे अनने छल, त' प्रधानाध्यापकक करुण विवरण सुनि वित्तमंत्री बाजल छलाह जे वित्त मंत्रीके देखि प्रधानाध्यापककेँ लोभ भ' गेल छनि। अपन विशाल काफिलाक संग मंत्री महोदय चल गेलाह आ वित्तमंत्रीक आगमनसँ आशान्वित स्कूल आइयो ओहिना ढनमनायल-उजड़ल सन पड़ल अछि। छात्रक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जाइत छैक मुदा आर हालत सोचनीय छैक। मासो भरि हेडमास्टरीक लेल मोकदमाबाजी होइत छैक, मास छौ मास पढ़ाई होइत छैक। मास्टर सबहक गुट जकाँ विद्यार्थियो सभ गुटमे बटल अछि आ कने मौका भेटलैक कि छुटले—ले-ले···पुर्र···।

ई त' भेलैक बाहुरो सिमानपरक स्कूलक गप्प। भितरिया हालति सेहो तेहने छैक। तीन बेर कन्या पाठशालाक लेल चन्दा भेलैक, परनि-चारि बेर सेहो टाइ भेलैक, जमीनक रजिस्ट्री भेलैक, मुदा आइयो स्कूल-मास्टरनीक दलाने पर क्लास होइत छैक। अपर स्कूलक हालति आर बिगड़ल। तीस' कनाशक हेतु मास्टरनीक दलानो नहि, केवल गाछक छाहरि। कटहा छाँह आ छोटछीन बीयाबुता। रौद-बसात आ शीतलहरी। किछु सरकारी अनुदान कहियो भेटलैक, कोनो पता नहि छैक बाइ। गामोक लोक सभ चन्दा कयलक एक-दू बेर, ओकरो कोनो पता नहि छैक बाइ। एक बेर बालु पर टैक्स लागल। जे कोनो अनयोजी नदीक कछेरसँ बालु त' जायत, त' की टायरगाड़ी दू टाका टैक्स। एहि विलक्षण 'आ:ड़िया' सँ लोक

आशान्वित भेल जे आब स्कूल बनि जायत। मुदा टैक्स कलक्टर ओकरो उठान भ' गेलाह। के कहिया ओसूलकक ओकर कोनो हिसाब नहि। योजना फल। केवल गाछक छाहरि जिन्दाबाद। नव पीढ़ीक निर्माणक लेल दुइ ठाढ़, गामक एकमात्र व्यक्तित्व—केवल झमटगर गाछ।

घारक हाल सेहो कोनो नीक नहि छैक। सालमे दुइये-तीनमास, जेठ बैसाख मे हेलाह होइत छैक, ने त' अथाह पानि। नावक लेल घटवार, ओकर सीधा चाही। आ सभसँ पहिने एकटा नीक सन नाव। पुरना नाव मे भूरे-भूर। उपछैत-उपछैत तंग भ' घटवार पड़ा जाइत अछि। आब बुढ़बा मलाह लालबो थोड़े जीवित अछि जे कतबो बाजि-भूकि फेर घाटे पर पड़ल रहत! नवका घटवार कें सब साल चाहियैक आ नव नाव लेल चाहियैक चन्दा। से के देत? ककरा देत? कतेक बेर देत? नाव अधिक काल बालू पर उनटल रहैत अछि आ लोकसभ धुरि क' पुल पर दने घार पार करैत अछि। जेठ-बैशाखमे जखन हेलाह होइत छैक, लोक सभ धोती उठाहि क' हेलि जाइत अछि। स्त्रीगण सभ पर्यन्त एम्हर-ओम्हर ताकि जाँघ धरि नूआ उठारि पार भ' जाइत अछि। कोनो-कोनो नव-कनियाँ लाजे धुरल द' घारक कातमे बैसि जाइत अछि। घंटाक घंटा बैसले रहि जाइत अछि कि केम्हरोसँ क्यो···गे-माय-गे-माय··· हाथसँ उठाओल नूआ छुटि जाइत छैक। बोचरि भेल घर अबैत अछि। एकदम नवकी सभ लाजे कान' लगैत अछि।

मुदा कुम्भीसँ झाँपल पोखरि द्वारे तँ भीड़ परक सभ लोक कानि रहल अछि। पैंघ-पैंघ मच्छड़! दुर्गन्धि! दरबजापर बैसब मोस्किल। पोखरि गोतखरिया, पचासो मालिक। भीड़ पर दुइये-तीन पट्टीदार, बाँकी गोतसिया। विशेष चिन्ता ककरो नहि। मुदा पोखरिक भीड़परक लोग सभ अगुता गेल। निर्णय कयलक जे मच्छड़ कराओल जाय आ जे गाछ होइक ताही सँ पोखरिक सफाइ भ' जाय। दू-चारि टा अगुआ छौँड़ा सभ दौड़-धूप क' बाबू-भैयाकें मना लेलक। मच्छड़ भेलैक। शुरू मे सभ शान्त रहलैक। मुदा जहाँ महाजाल खसलैक आ पाँच-सात टा बड़का लसम् हाँ रहु आ भाकुर कुदलैक कि पट्टीदार सभ चारू कातसँ दौड़लाह—हिस्सा दिय', सफाइ सँ हमरा कोन मतलब? नहि, हम त' कहियो ने कहलहुँ जे हमर हिस्सा सफाइ मे जायत, हमरा बाँटि दिय'। हिस्सा बँटा गेल, पोखरि कुम्भी सँ झाँपल ओहिना पड़ल अछि··· दुर्गन्ध करैत—मच्छड़ भनभनाइत! की करबैक? आइ-काल्हि तँ मच्छड़ सभ ठाम रहिते छैक।

मुदा पढ़ल-लिखल गाममे एकटा लाइब्रेरी तँ रहिते छैक। एहि गाममे किएक ने हेतैक? स्वयुवक सभ जोर लगौलक, आ घर-घरसँ किताब आनि एकटा छोट-छीन घर ठाढ़ कयलक, दू-तीन टा कठही आलमारी आ दू चारि टा बेंच जुटौलक। नीक जकाँ चल' लगलैक। एक दिन ओकरा सभकें ध्यान गेलैक जे एहि गाममे एकटा कवीश्वर भेल छलाह, हुनके डीह पर स्मारक-स्वरूप लाइब्रेरी हेबाक चाही। हुनक डीह पर छोट छीन जगह घेरि घारि क' एक टा छोट छीन स्मारकक रूप देलक। दू बेर दीयाबातीमे दीप जरौलक आ फेर सभ समाप्त भ' गेलैक। टेबुल बेंच निपत्ता, किताब सभ आधा दाम मे बजारमे बिका गेलैक आ स्मारक लग भाटा-रामझिमनीक खेती होब' लगलैक। बात पुरना क' बिसरियो गेलैक लोक सभकें।

मुदा एकटा बात गामक लोककें कहियो ने बिसरैत छैक जे एहि गामक एकटा इतिहास छलैक, इलाकामे क्यो कहबैत छल, भलें आइ क्यो घर पैसि बात कहि जाउक। लोककें आइयो बड़ दाबी छैक जे हमरा लोकनि बड़ पढ़ल-लिखल छी, मिथिलाक प्रमुख गाम मारता आ भलमानसाहत मे! भलें आइ गामक स्कूल बेलक गाछ तर होइत छैक, एकटा लाइब्रेरी नहि छैक, अस्पताल आ डाक्टर नहि छैक, बिजली आ सड़क नहि छैक, बाट कादो आ विष्ठासँ घिनाइत रहैत छैक। ई सभ तँ होइते रहैत छैक। गाम-गाम छैक। सभटा होब' मे समय लगैत छैक। मुदा हमरा लोकनि क्यो कहबैत छी, आइयो लोक चिन्हैत अछि, मान-सम्मान करैत अछि। इलाका मे आर कोन गाम परतर करत? छोटहा सभ अछि।

× × × ×

क्षमा करब, ई त' हम कितन सभ कहि गेलहुँ। हम त' एक टा गामक गप्प कह' चाहैत छलहुँ, जत' हमर पिता रहैत छलाह, हमर जन्म भेल छल। गामक हाइ स्कूलक हेडमास्टर हमर पिता जे जिला मन्त्रीक समक्ष विद्यालयक विवरण पढ़ि अनुदानक सांकेतिक याचना कयने छलाह। जे गामक प्रत्येक सभाक सभापतिक हेतु पाँचो मिनट पहिने कहि देला पर स्वागत-गान लिखैत छलाह आ दुर्गापूजा - कालीपूजाक राति नाटक मे अभिनय करबाक लेल बयनाक समय ठाढ़ भ' घण्टो रिहर्सल करैत छलाह आ प्रदर्शनक राति मेक-अप करबा काल भरि घरकें दौड़ा क' अपस्यांत क' दैत छलाह। बजारसँ त' ह' तरकारीक बदला—फूलक

आछि, गामक कलम आ नव-नव फूलक फोटो आनैत छलाह आ बरहो रोज-मिस्त्रीक संग खिजाइत बनबैत काल शायद पित्त बिसरि जाइत छलाह। शिक्षक, कवि, कलाकार, इंजीनियर, आ सभसँ बेसी—एक टा पिता, सन्तानक हेतु सम्पूर्ण उत्सर्ग कर'वला पिता।

साँझ होइत देरी लालटेन ल' नोकर घरे-घरे तकैत छल, बेतनो भेला पर। गाड़ी मे बैसला पर प्लेटफार्म पर ठाढ़ देखि मिनटे-मिनट टोकैत छलाह—बैसि जाहु, चलती गाड़ी मे नहि चढ़ी। बाहर जाइत काल दू दिन पहिनेसँ आवश्यक निर्देश दैत छलाह आ जहिया स्कूल-कालेज बन्द भेला पर गाम अबैत छलहुँ, पहिनेसँ घारक कात मे ठाढ़ रहैत छलाह। घरक नव फल, नव अन्न—कतहु रही, पहुँचि जाइत छल आ सप्ताह मे दू टा नियमित चिट्ठी......। से 'दादा'......हमर पिता आइ नहि छथि......ओहि बेर गामसँ विदा होइत काल 'दादा'क पयर छूबि ठाढ़ भेलहुँ, तँ ठाढ़ रहि गेलहुँ। 'दादा' किछु नहि कहलनि। हम ठाढ़ रहि गेलहुँ जे दादा आब कहताह—ठीकसँ जैह'। चलती गाड़ी मे नहि चढ़िह'। सामान गनि लिह'। पहुँचि क' चिट्ठी दिह'। आ संगे-संगे घारक कात धरि चल अबताह। मुदा 'दादा' ईजरमे मूढ़ी गोतने पड़ल छलाह। भाव कने विचलित होइत कहलकनि—"हड़बड़ जाइत छथि, किछु कहबनि नहि।"

"जाउ।" दादा हड़बड़ा क' ओढ़ना हटबैत छथि। "जाइ छथि, बेस।" आ फेर ओढ़ना ओढ़ि लेत छथि।

हम कनेक आङनसँ बाहर भ' जाइत छी......भरि बाट कहिते चल जाइत छी। दादा आब कहियो किछु नहि कहताह......। जाइ छथि, बेस'......सँ अधिक नहि कहताह कहियो। 'पुरोगिया' ने पड़ल छथि, सभटा बिसरि गेल छनि......ममता......चिन्ता-क्लेश......सभटा। कहियो किछु नहि कहताह आब......प्रायः नहि देखबनि आब......

सत्ते नहि देखलियनि फेर। एतेक पथ निर्ममता कोना संभव भेलनि दादा सँ। बिनु भेंट कयने चल गेलाह......बिनु देखने......बिना किछु कहने......जिनगी भरि जे कहियो कोनो सुआव नहि देने छलाह, जयबाक काल एतेक कठोर दण्ड कोना द' देलाह? आइयो गामसँ घुरैत काल हुनक समाधिकें प्रणाम करैत काल एतबे प्रश्न पुछैत छियनि आ घुरि क' बिदा होइत काल लगैत अछि जेना

बचो पाछासँ कहि रहल होयब—'डीकसँ जैह'''—बलती गाड़ीमे नहि चढ़िह'——कोठरी-कोठरी गनि लिह'''''' ।'

नहि, दादा दण्ड नहि द' सकैत छथि । ई शब्द हुनक नहि छलनि । ओ त' मात्र ममता, स्नेह आ आत्मीयतासँ परिचित छलाह । हम कहियो ककरो नहि देखलथिन । मृत्युसँ पूर्व अपन जीविकाक हेतु संघर्ष करैत काल सेहो मात्र आत्म-रक्षामे लागल रहलाह, दण्ड वा प्रतिहिंसाक बात नहि उठलनि मोन मे । कहियो नहि, कखनो नहि ।

× × × ×

क्षमा करब, ई त' फेर बिदक सभ कह' लगलहुँ हम । बात तँ औपचारिक पत्र स' शुरू भेल छल । ओ लिखने छलाह, कने थम्हि जाउ, ओ की लिखने छलाह, से फेर कहब । पहिने 'दादा' की लिखैत छलाह, से कहैत छी ।

बादमे क्लासमे हम गामसँ बाहर रहैत छी—दरभंगा, पटना, भागलपुर, बिहारशरीफ आ फेर पटना । दादाक पत्र नियमित अबैत अछि आ पत्रमे अबैत अछि गाम-घरक सभटा समाचार—महेंच भाइ हमरा लोकनिकेँ छोड़ि गेलाह, छोटकी काकी दुनारसँ खसि पड़लीह, महादेव नहि रहलाह, मधु भाइ बिछौन ध' लेने छथि'''तुरन्ता दुखित पड़ि गेल, सम्पतिबाक बियाह भेलैक, धान नीक अछि, सजमनि फड़ल अछि, दुर्गाजीक काम लागि गेलनि, सोमनाथ बाबू बिमायल छैक, उठौना दैत अछि''''''

आ, गाम हमरा कहियो ने छुटैत अछि । गाम - घर हमरा संग लागल रहैत अछि । दादा अपन चिट्ठीमे गाम आ गामक लोककेँ हमरा संग क' दैत छथि ।

मुदा छुट्टीमे गाम अबैत छी त' देखैत छियनि गाम दादाक संग नहि छनि । बाहर दरबज्जा पर दादा आँखि बन्द कयने पड़ल छथि'''—ब्याक कात सुन्न, कतौ कतहु नहि''''कहाँ छनि दादाक गाम आ गामक लोक'''ओ त' एकसर कमा पड़ल छथि बिछौनपर ।

दस बजैत-बजैत स्कूल जयबाक लेल दादा तैयार भ' जाइत छथि । सभ देहुकेँ कहुना सोझ क' स्कूल बिदा होइत छथि । छड़ी हाथ मे लैत पहिल डेग

दैत बजैत छथि''—''सभ दिन बिदा होइत काल लगैत अछि जेना स्कूल नहि, युद्ध क्षेत्र मे जा रहल होइ ।''

मुदा युद्ध क्षेत्रक बात दादाकेँ बिसरि जाइत छनि । मोन रहैत छनि गाम आ गामक लोक । एकसरे पड़ल-पड़ल गामक लोकक चिन्ता—हुनक जमाय अयलथिन कि नहि, हुनक बच्चाक बोखार उतरलनि कि नहि, ओ पास भेल कि नहि''''—

सभ दिन स्कूल जयबाक काल फेर युद्ध-क्षेत्र जयबाक गप्प । तहिया शरीर आरो रुग्ण भ' गेल रहनि । लगातार मानसिक मदति सँ पहिरैत छलाह आ कहुना पकड़ि क' रिक्शापर बैसा दैत छलनि । हमहूँ गाम आयल रही । एना स्कूल जाइत देखि क' कहलियनि—''छोड़ि दिय' ने स्कूल । एना बिल्ब जयबाक कोन काज ?

दादा किछु नहि कहलनि । खाली हमर मुँह तकलनि जेना पूछि रहल होथि—काज की सभ नहि ? ओ चल गेलाह । जाइते रहलाह, अन्तिम समय धरि । हम फेर दोबारा नहि कहि सकलियनि जे जयबाक नहि काज । सामने सौंसे परिवार ठाढ़ल ।

तहिना दादाकेँ इहो नहि कहि सकलियनि जे चिट्ठीमे अपन गप्प लिखू, गाम भरिक गप्प लिखबाक कोन काज ? एकटा अनगोआँ दरबज्जापर आबि मायकेँ बात कहलक आ गामक लोक सुनलक, तेहन गाम आ गामक लोकक बात लिखबाक कोन काज ? जहाँ एकसर संघर्ष मे निमुखान छी, दिन-प्रतिदिन टूटि रहल छी आ जहाँक दुख-सुखसँ उदासीन गामक खबरि लिखबाक कोन काज ? मुदा से दादाकेँ नहि कहि सकलियनि । बूझल छल जे ओ एतबे कहताह—बाह, अपन गाम थिक, अपने लोक सभ अछि ।

आइ लगैत अछि जे तहिया यदि दादा नहि लिखतथि त' गाम हमरासँ बीस बरख पूर्वे छुटि गेल रहैत । सोरहम बरखमे गामसँ बाहर आबि गेल रही । मुदा गाम आइ धरि अपरिचित नहि भेल अछि, ओहिना लग अछि—अपन गुण-अवगुणक संग ।

एहि बेर सते क्षमा करू बहु! । एहि बेर अवस्से जीवकान्तक चिट्ठीक गप्प करब । ओ लिखने छलाह—''अहाँक कथाक नायक बड़ 'एकोमोडेटिंग' होइत अछि । अहाँक कथामे दू टा विन्दु रहैत अछि—एकटा पिता आ एक टा पत्नी आ कथाक नायक दुनूक बीच डोलैत रहैत अछि ।'' डोलैत प्रायः ओ नहि लिखने छलाह, प्रायः ओसिलेट करैत लिखने छलाह । ठीकसँ मोन नहि पड़ि रहल अछि ।

ओ पहिल विन्दु आब टूटि गेल अछि । दादा नहि छथि । दोसर विन्दुक बात जीवकान्त लिखने छलाह, हमर कथामेर्ं एक्के टा विन्दु छल, ओकरे बाद बात छोट-छोट बहुत रास विन्दु ''''माय, पत्नी, भाइ-बहीन, धीया-पुता, गाम-घर आ संसार''''एहि सभसँ पैघ विन्दु छलाह—छलाह नहि छथि, आइयो वैह सभसँ पैघ विन्दु छथि । दादा नहि छथि, ओ विन्दु अछि, हमर सम्पूर्ण लेखक आ व्यक्ति-सामर्थ्यक विन्दु । ओ सभ दिन रहत ।

मुदा से हम अहाँकेँ किऐक कहि रहल छी ? ई तँ हमरा पत्र लिखबाक छल जीवकान्तकेँ ।

आब सत्ते माफ करू हमरा । हम सत्य कथा नहि लिखि सकलहुँ । हम तँ फेर पुरने विन्दु पर अहुरिया काटि क' रहि गेलहुँ । ●

सितम्बर १९७१

उत्तरकाण्ड

गाड़ी ठीक दस बजे दिन मे पहुँचल छलैक । कम्पार्टमेन्टक खिड़की सँ नीक जकाँ चारू कात ताकि ओ प्लेटफार्म पर उतरि गेल छल, सभटा समान उतारने छल । सभ किछु ओहिना छलैक—अनमन । चौदह वर्ष मे कनिओ किछु नहि बदलल छलैक, जेना समय ठहरि गेल होइक । ओहने प्लेटफार्म पर बोआइत दू-एक-टा कुली—सेहो पुरने । ओ सभकेँ चीन्हैत छैक, मुदा ओकरा क्यो नहि चीन्हैत छैक । परदेशी बूझि ओकर सामानक ढेरी लग पुछिआइत छैक मुदा ओकरा अनमनस्क देखि दोसर दिस चल जाइत छैक । कतेको परिचित आकृति ओकरा दिस देखि, बिना कोनो परिचयक भाव अनैत आगू बढ़ि जाइत छैक । बहि जानि किऐक ओ वेटिंग रूमक भीतर जाइत अछि । ओकर मलिछौंह अयना मे अपन आकृति देखैत अछि—चौदह वर्षक वनवाससँ परिवर्तित अपन आकृति । बत्तीस वर्षक परिपक्व आ कठोर आकृतिक पाछाँ एकटा कोमल नौजवान आकृति कहिया ने बिला गेलैक । अयना मे ओकरा तकबाक ओ चेष्टा करैत अछि मुदा अपन ओ आकृति अपनो मोन नहि पड़ैत छैक । चौदह वर्षक प्रत्येक दिन अपन छाह चेहरा पर छोड़ि गेल छैक । आँखि मे एकटा कठोर उदासीनता पसरि गेल छैक आ ठोर कगार ताम्रवर्ण भ' गेल छैक । कनपट्टी पर दू-एक टा उज्जर केश—दुनू कात । माथक टनगी कने आरो पातर भ' गेल छैक जेना । दुनू गालक हड्डी बेसी उभरल बुझाइत छैक आ छो फीटक देह किछु आगू झुकल सन । अयनाक समक्ष ठाढ़ अपन आकृति ओकरा तमसायल आ उत्तेजनापूर्ण लगैत छैक, जेना घुरि अयबाक अपन निश्चय पर अखनो अपना सँ नाराज हो । एहि चौदह वर्ष मे हजारो बेर घुरि अयबाक विचार भेल छलैक, मुदा विचारक संग गर्मी गामक हुँसैन, भर्त्सना करैत लोकक बीच दबकल दादूजीक आकृति सोझाँ आबि जाइत छलैक आ ओकर निश्चय सहमि क' गलि जाइत छलैक—''हुनका सोझा कोना ठाढ़ हैब ? की कहबनि ? किएक पड़ायल छलहुँ ? आबो कहबाक काज पड़त ? गीता कहने हेतनि ? भरि गाम बोर करने हैत आ भरि गाम थू-थू कयने

हैत। बाबूजी घर मे नुकायल हैताह्। बाट-घाट सभक हँसी हुनका छेदैत हैतनि ! नहि, हुनका लग ठाढ़ हैबाक मुँह नहि छनि, जिनगी भरि नहि हैत। "आइ चौदह वर्षक बादो ओकरा सीता पर ओहिना घृणा आ तामस होइत छैक जेना गामसँ पड़यबाक काल सँ ल' क' आइ चौदह वर्ष भरि होइत रहलैक अछि—प्रत्येक दिन, प्रत्येक क्षण ! ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ स्वर्ग क' क' राखि देलकै, सभटा स्वप्न, सभटा महत्वाकांक्षा केँ ढाहि देलकै एकहि क्षण मे, मात्र एक क्षण मे। आइ एतेक वर्षक बादो ओहि क्षणक स्मरण सँ ओकर रोइयाँ रोइयाँ भुलकि जाइत छैक। अयना मे एकटा गाछी, गाछी मे एकटा एकान्त दुपहरिया, आ एकान्त दुपहरिया मे एकटा घटना। नहि, ओ अयना लग सँ हटि जाइत अछि। ई दृश्य ओ हजारो-लाखो बेर देखि चुकल अछि, ओकर मोनक अयना मे ओ स्थायी रूप सँ अंकित छैक। आ संगे-संग छैक एकटा कनैत धमकी—हम कहि देबैक··· ···लाल काकाकेँ कहबनि··· ···सौंसे गाम केँ कहबैक··· ···

ओ वेटिंग रूम सँ बहरा क' प्लेटफार्म पर घुरि आबैत अछि। मोन होइत छैक, टाइम समय-सारणी मे घुरबाक समय देखय। ओ गाम मे पयर नहि दैत। किनहु नहि। लोक सभक सोझा ठाढ़ नहि भ' सकत। बाबूजी सँ आँखि नहि मिला सकत।

मुदा, बाबूजी केँ देखबाक जे इच्छा ओकरा एहि चौदह वर्ष मे बेर बेर उसकबैत रहलैक अछि, सैह ओकर डेग फेर बढ़बैत दैत छैक। नहि जानि, बाबूजी कोना हेताह ! कोना बीतल हेतनि ई चौदह वर्ष ? के छनि देख' बला ? माँ त' मोनो ने छथि। जहिया सँ होश भेल, बाबूजी के एकसरे देखलियनि अछि। हुनहीं छलियनि सभ किछु, बाबूजीक सम्पूर्ण संसार। से बाबूजी हमर वनवासक बाद···

वनवास शब्द सँ ओकर देह सिहरि जाइत छैक। वनवासक बाद सँ फेर भेँट···। ओ जल्दी सँ विचारधारा केँ मोड़ैत अछि। नहि, ई वनवास नहि छलैक, ई त' आत्मनिर्वासन छलैक। खाली नाम भेला सँ सभ क्यो राम नहि भ' सकैत अछि। ओ त' राक्षस अछि, ओकर पापक हेतु बाबूजी कियैक दण्डित हेथिन ?

ओ ट्रेन सँ उतारैत सामान लिए आबैत अछि। दू टा कुली ओकर सभटा सामानकेँ ओगरैत बैसल छैक आ ओकरा दिस आश्चर्य सँ ताकैत छैक जे के [illegible] सामान छोड़ि क' निश्चिन्त निपत्ता छल। प्रायः ओकर परदेसी हेबाक विश्वास दुनू कुली केँ भ' गेल छैक। तीन-तीन रुपैया मँगैत छैक गाम जयबाक। ओ दुनू कुली केँ चीन्हैत छैक। ओकरा मोने मोन हँसी लगैत छैक जे चिन्हलापर दुनू कोना लजेतैक ? दू आनाक बदला तीन रुपैया। मुदा तत्क्षण बिलखाह चौदह वर्ष मोन पड़ैत छैक आ लगैत छैक जे कोनो बेसी नहि छैक, एतबा त' हेबेक चाहियैक आनो वस्तुक मूल्य-वृद्धिक हिसाबे। ओ कुलीक पाछाँ-पाछाँ गाम दिस विदा होइत अछि।

रौद नीक जकाँ पसरल छैक। मुदा, जाड़क रौद प्रिय आ सुखद लागि रहल छैक। तैयो गाम दिस बढ़ैत डेगक संग एक टा अप्रिय कठमछी ओकर मोनकेँ आकुल कयने जा रहल छलैक ! लागि रहल छलैक जेना कखनो क्यो ओकरा चीन्हि क' चिचिया उठतैक—ई अछि रमुआ ! चौदह वर्ष पर घुरल अछि मुदा चौदहो जन्म मे की ओहि पापक प्रायश्चित हेतैक ? तैयो कठमछी मे डेग अनेरो शुरु भ' गेलैक आ मोटा उठौने दुनू कुली बड़ी दूर निकलि गेलैक। जखन ओ गामक सीमामे प्रवेश कयलक, दुनू कुली समान राखि बाट पर बैसल छलैक— बड़ी देर लगा देली मालिक ! कखन सँ बैसल छी ! किनका ओतै जयबैक ?

बाबूजीक नाम लैत ओकर जीह किछु थरथरयलैक मुदा दुनू कुलीबाक आकृति पर सेहो भाव परिवर्तन भेलैक। किछु चिन्हार सन भाव। मुदा किछु बजलैक नहि। सामान उठा विदा भेलैक आ ओहो पाछाँ लागि गेल।

परिचित घर सभ सोझाँ आबे' लगलैक आ फेर अप्पन दरबज्जा। गामक बहुत रास धीयापुता ओकर अपरिचित आकृति, डील-डौल आ वेशभूषा देखि पछोर धयने दरबज्जा धरि अयलैक। दरबज्जा ओहिना छलैक मुदा किछु श्रीहीन-सन। एकदम्म सुन्न। ओकर करेज धकक द' रहि गेलैक। बाबूजी त' कहियो आङन मे नहि बैसैत छलाह। मोनक आशंका केँ ओ फेर एक बेर दबौलक। कुलीबा सामान लेने आङन चल गेलैक आ तकर बाद लाल काकाक स्वर ओ नीक जकाँ चिन्हलकनि—के छिकाह ?"

ओ आगू बढ़ि गोड़ लगलकनि। लाल काका कनेकाल ओकरा निहारैत रहलथिन आ फेर डंन पकड़ि चिचिया उठलथिन— राम छह हौ ? आ फेर छाती सँ लगा कान' लगलथिन। बड़ी बड़ी नोर खस' लगलनि। ओहो कान' लागल। बड़ी काल धरि कनैत रहल। नहि जानि कहिया सँ सुखायल आँखि भीजिक ठक्का भ' गेलैक। मुदा तखने एकटा शब्द ओकरा भीतर धरि दागि देलकै—देरी सँ अयलेँ राम, कने देरी सँ अयलेँ ! भाइ केँ विश्वास छलनि जे तोँ घुरबेँ, मुदा चौदह वर्ष बितला पर आस टूटि गेलनि आ आस टूटि गेलनि तेँ तोहर बाट नहि देखि सकलथुन आगाँ।

लाल काका एक बेर फेर हिचुकि हिचुकि क' कान' लगलथिन। मुदा राम एहि बेर नहि कानल। सुन्न भेल लाल काकाक दुनू बाँहि मे बन्हायल रहल। लाल काकाक कानब, हिचकब किछुओ ने सुनलकनि ओ। ओ त' जेना ज्ञान-संज्ञा शून्य भ' गेल छल। लाल काकाक बाँहि सँ छुटैत देरी खुद द' ओतहि माटि पर बैसि रहल···बैसले रहि गेल।

भरि गामक लोक दरबज्जा पर जुमि गेल छलैक आ आङन मे स्त्रीगणक भीड़। भीड़ बढ़ले गेलैक···गाम मे भरिसक्के क्यो रहि गेल होइ जे ओहि काल ओकर दरबज्जा पर नहि जुटलैक।

ओकरा होश भेलैक ? उठिक' ठाढ़ भेल। चारू कात तकलक। केम्हरो सँ कोनो मर्मभेदी स्वर नहि उठलैक। ओ आश्चर्यपूर्वक प्रतीक्षा करैत रहि गेल।

× × × ×

राति तेसिये बीति गेल छलैक। मुदा ओकर आँखि मे नीन्न नहि छलैक। साँझ धरि दरबज्जा पर ठेलमठेल छलैक। सभक एकेटा प्रश्न—एना किएक निपत्ता भेल छलाह, कोम्हर छलाह ? एतेक दिन पर घुरलाह कोना ? ओ ककरो सत्य बात नहि कहि सकलैक। मुदा ओकरा आश्चर्य भेलैक जे लोक सत्त बात किएक नहि जनैत छलैक। मुदा ककरो प्रश्न मे ओकरा कोनो छद्म वा कटाक्ष नहि बायल छलैक।

आ रातुक एकान्त मे एहि प्रश्न ओकरा मथने जा रहल छलैक। तखन त' व्यर्थ ओकर जीवन नष्ट भेलैक ? बाबूजीक प्राण अनेरो गेलनि आ ओ अनेरो बाबूजीक स्नेह आ अप्पन घर-समाज सँ दूर पड़ायल ? ओ बाबूजीवला कोठली मे पड़ल छल मुदा कोठली मे बाबूजीक स्मृतिस्वरूप किछुओ ने छलैक। प्रायः

लाल काका नीलाम बना देने छलथिन ओकरा। बाबूजीक एक एक वस्तु घुरि क' हटा देल गेल छलनि जेना। हुनक खड़ाम, गोधिदानी, छड़ी छाता, खड़ाम पुस्तक आ गीता कोनो वस्तुक अस्तित्व नहि छलैक घर मे। मायक बड़का फोटो आ माय-बाबूजीक संग-संग वला फोटो सेहो देवाल पर सँ विपत्ता छलैक आ बाबूजीक संग ओकर अपन जे एक मात्र फोटो छलैक सेहो गायब छलैक। ओकरा छमटा लगलैक आ जोरसँ चिचिया उठल—'लाल काका' !

काका प्रायः जगले छलथिन। खड़ाम खटखटबैत कनिबे काल मे पहुँचि गेलथिन—'की बात छैक राम ! किछु चाहियह ?

काका के एना आबि गेला सँ ओकरा अपन उत्तेजना पर ग्लानि भेलैक। कने लजाइत बाजल—किछु नहि काका ! अनेरो तंग कयलहुँ अहाँकेँ। एहिठाम देवाल पर बाबू आ मायक फोटो छलनि, से की भेलैक ?

ओकरा आश्चर्य भेलैक जखन ओकर प्रश्न पर काका तेना संकुचित भेलथिन जेना कोनो चोरी पकड़ा गेल होनि। सफाइ जकाँ दैत बजलथिन—'खराप भेल जाइत छलैक फोटो। दुनू देवाल एहि कोठलीक बेसी सर्द छैक, तेँ उतारि क' तोहर काकी बक्सामे राखि देने छलथिन। काल्हि टाँगि देबैक।'

काका चल-गेलथिन। ओकरा काकाक देल कारण यथेष्ट नहि लगलैक। फोटो केँ एना देवाल सँ हटा क' बक्सा मे राखि देनाइ, ओकर स्थान पर सस्त छबिवाला कलेण्डर सभ टाँगि देनाइ ओकरा अरुचिकर लगलैक। काकाक सहृदय आ सफाइ देब ओकरा मोनमे तरह-तरहक बातक जन्म देलकै। मुदा सभकेँ दबा पुनः बाबूजीक स्मृति आ बिछोह ओकरा बेर-बेर कचोट' लगलैक।

पढ़' लेल शहरक स्कूल जाय लागल छल त' बड़ी काल धरि करेजा सँ सटने रहि गेल छलथिन। प्रायः पीठ पाछाँ आँखिक नोर पोछने छलथिन। तैयो भीजल आँखि सटा देखार क' देने छलनि। जबर्दस्ती हँसैत कहने छलथिन—'मोन लगाक' पढ़िह'··· सभ शनि क' गाम पर जरूर अबिह' ! बूढ़ बापो केँ देखिह' !'

आ, ओ शनिये—शनि गाम अबैत छल—नियमित। प्रत्येक सप्ताह। भरि रिजल्ट भेला पर गाम अबैत छल त' सत्यनारायण पूजा करैत छलथिन। भरि गाम प्रसाद बटैत छलथिन आ सभ साल कहैत छलथिन—एहि परीक्षा मे

फस्ट कयला सँ की हैतहु ? मैट्रिक मे स्कोलरशिप चाही। सभसँ बेसी नम्बर लिखा मे फस्ट ! जहिया फस्ट डिवीजन सँ स्कॉलरशिपक संग मैट्रिक पास कयने छल खुशी सँ बताह भ' गेल छलथिन। दरबज्जा पर लाउडस्पीकर आ रसनचौकी बजबा देने छलथिन। भरि गाम कें भोज खोआ देने छलथिन।

कालेज सभ नहि खूजल छलैक। एडमिशनक हेतु मास दिनसँ बेसी गाममे रहबाक छलैक। जेठ-बैसाखक मास छलैक— आम सभ पाकब शुरू नहि भेल छलैक। डम्हायल डम्हायल, बताएल आम सभ ! अपन डमटगर गाछीक एकान्तमे मचानपर पड़ल छल कि सखने"''"" नहि, ओ सभ आब नहि मोन पाड़त। सभटा बिसरि जाय पड़तैक, नवसँ जिनगी शुरू कर' पड़तैक। गाममे लोक किछु नहि जनैत छैक, से नीके छैक। ककरो जनबोक नहि चाहियैक। ओ भुलबाक चेष्टा करैत अछि, मुदा भूतेसँ पहिने बेर-बेर मोनमे प्रश्न उठैत छैक जे गामक लोक कोना-ने जनैत छैक ओ बात ? आ बेर-बेर नीन्न उचटि जाइत छैक, भोरकवा धरि जगले रहि जाइत अछि। खिड़कीसँ भोरक हवा देहकें स्पर्श करैत छैक आ राति भरिक जागल भारी पिपनी झँपा जाइत छैक।

× × × ×

एकटा बारह तेरह वर्षक छौँड़ा बड़ी कालसँ दरबज्जापर बैसल छैक। टुकुर-टुकुर ओकर मुँह ताकि रहल छैक। जिज्ञासु आकृति बड़ सुन्दर आ अपन सन लगैत छैक ओकरा। आकृति पर कोनो परिचितक छाया सन मुदा ठीक ककर, से मोन नहि पड़ैत छैक। बेराबेरी कतेको लोक दरबज्जा पर अयलैक आ चल गेलैक। मुदा ओ छौँड़ा ओहिना बेंच पर बैसल रहलैक— टुकुर-टुकुर ओकर मुँह तकैत ! एकटा फाटल सन हाफ पैन्ट पर मोइल-मोचड़ल सन पुरान कमीज पहिरने छैक आ पैंच-पैंच कारी केश कपार पर लटकल छैक। दरबज्जा सुन्न भेलो पर ओकरा बैसल देखि राम ओकरा दिस ध्यानसँ देखैत छैक आ कने मुसकिया दैत छैक। ओकर मुसकी पर छौँड़ा कें बल भेटि जाइत छैक। कने ससरि क' लग अबैत पुछैत छैक—हमरा चिन्हैत छी राम मामा ?

'मामा' सम्बोधन पर ओ अन्दाज करैत अछि जे गामक कोनो बेटीक सन्तान अछि, मुदा चेष्टा कयलो पर ककरो आकृति ध्यान पर नहि अबैत छैक।

—अहाँ त' नहि चिन्हलहुँ, मुदा माय कहलक जे तों जो, तोरा अवस्से चिन्हथुन।

—ककर बेटा छें तों ? एहि बेर राम प्रश्न कयलकै।

—'सीताक'

छौँड़ाक उत्तरसँ स्पष्ट चौंकि गेल ओ। सीता गामे मे छलैक, ओकर बेटा छैक तेरह चौदह वर्षक, जीवनक सभ सुख भोगि रहलि अछि आ हमरा एना ठाम-ठाम ओखा देलक ! जीवनक सभ सुख छीनि लेलक। ओकर चेहरा कठोर भ' जाइत छैक। मुदा ओ छौँड़ा ओकर भाव परिवर्त्तन लक्ष्य नहि करैत छैक। ओहिना उत्साहित होइत कहैत छैक— 'हमरा ओहि ठाम नहि चलब राम मामा ! अहाँ त' मायक संगी छलियैक !'

ओ किछु जवाब नहि द' मुस्किया दैत छैक। छौँड़ा आरो उत्साहित होइत बजैत छैक—अहाँ तँ बहुत दिन पर गाम आयल छियै राम मामा ? कत' गेल रहियैक ? किए गेल रहिऐक ?

आब राम कें कनेक तामस जकाँ होअ' लगैत छैक। भरि गाम जकाँ इहो छौँड़ा वैह प्रश्न कर' चाहैत छैक ! मुदा फेर ओहि छौँड़ाक अबोध आकृति आ जिज्ञासा भरल आँखि पर ध्यान जाइत छैक आ अपन तामस कें रोकैत कहैत छैक—"ओ सभ सुनिक' तों की करबें ? तों अपन सुना। कत' पढ़ैत छें ?

एहि बेर ओ छौँड़ा लजा जाइत छैक—"कहाँ पढ़ैत छिऐक ? अपन स्कूल धरि कहुना पढ़लियैक। फेर नानी मरि गेलैक। एकसरि माय। आब त' एकटा महींस रखने छियैक अप्पन आ एकटा गामक पोसिया लेने छी। ओकरे मे लागल रहैत छी।"

ओहि छौँड़ाक बुझायल सन उत्तर पर ओकर मुँह बन्न भ' जाइत छैक। फेर मोन पड़ैत छैक जे जहिया गामसँ पड़ायल छल, एहि छौँड़ा सँ दुइये-तीन वर्ष त' जेठ छल हैत। मैट्रिकक रिजल्ट संग छलैक, सर्टिफिकेट त' भेटलो नहि रहैक। पटना आ कलकत्ता। पटना मे त' भूखे मर' लागल छल। दू चारि दिन मजदूरी कयने छल। फेर कलकत्ता। एकटा पंजाबीक संग दोस्ती, ओकरे संग एकटा छोट-छीन कोठली आ एक टा मिल मे नोकरी। आइ० ए०, बी०ए०, एम०ए० आ फेर 'ला' क परीक्षा। कालेजमे नाम लिखब' लेल चुपचाप एक बेर पुरना स्कूल आयल

ओ सार्टिफिकेट ल' क' घुरि गेल रहय। पढ़ाइक संग ट्यूशन। पढ़ाइ खतमो भेला पर ट्यूशन। एक डेरा, दोसर डेरा, फेर तेसर डेरा! मिलक नोकरीक बाद प्राइवेट स्कूल आ फेर एकटा पैघ फर्ममे नोकरी। नोकरीक संग स्त्री, कतेको स्त्री, बंगाली, पंजाबी, मद्रासी, क्रिश्चियन आ नेपाली। जखन जकर काज भेलैक। मुदा पहिल बेर ओहि दोस्तक स्त्री छलैक। दोस्त के नाइट ड्यूटी रहैक अधिक काल। ओम्हर ओ ड्यूटीपर एम्हर ओ बिछाओन पर। गाम छोड़' काल एकटा क्षणिक आवेश मे जे काज कयने छल, से एकटा अभ्यास मे बदलि गेल छलैक। रंग-बिरंगक स्त्री, अपन इच्छा सँ संग भेलि स्त्री, अपन दाइसँ कीनलि स्त्री, मुदा सीता जकाँ क्यो कानलि नहि छलैक. कानि क' क्यो धमकी नहि देने छलैक।

सीताक नामपर फेर ओहि बेंच दिस ध्यान जाइत छैक। ओकरा अनमनस्यक देखि ओ छौंड़ा खिच्चैमे घसकि गेल छैक कखनो। ओकरा बड़ जोर इच्छा होइत छैक जे सीताक आङन दिस जाय आ ओकरा देखैक। मुदा ओ दरबज्जा सँ उठि अपन कोठली दिस अबैत अछि। दोसर कोठलीमे लाल काका आ काकीमे किछु गप्प भ' रहल छलनि। बिन चाहलो ओ गप्प सभ सुन' लागल—

—"ई कहाँसँ आबि बसल हमर नेना सभक कपार पर। बारह वर्ष पर तँ लोक श्राद्धो क' दैत छैक। अहूँ के कहने रही जे करबा दियौक श्राद्ध, नहि मानलहुँ। तेँ ने मुर्दा जीबिक' आबि गेल।"—लाल काकीक स्वर।

—"आस्ते बाजू, दरबज्जे पर अछि, सुनि लेत। जे हेबाक छल, से भ' गेल। सभटा ओकरे त' छैक। भाइ संग राखि लेने छलाह, कहियो पितियौत नहि बुझलनि, अपन जकाँ रखलनि।"

—"मुदा मरबा काल कहाँ लिखि गेला एक्को धूर ओहीक नाम। बूढ़ा भितरिया छलाह। हेरायल बेटा लेँ सभ किछु छोड़ि गेलाह आ हमरा लोकनि जे जीवन भरि सेवा कयलियनि, से बेकार। स्त्री नहि छलथिन। पचीस-तीस वर्ष धरि तैयो जीवित रहलाह। के कयलकनि सभटा?"—लाल काकीक स्वर भारी तीव होब' लगलनि।

"अहाँ चुप्प हैब की नहि।—" लाल काका एहि बेर जोरसँ डँटलथिन —"दरबज्जे पर छथि राम, सुनता त' अनर्थ हैत।"

—"आब आर की अनर्थ हैत।"- लाल काकीक कनैत स्वर तीव्र छलनि—"भला त' कहि देलैन्ह चाह भाइक। तीन तीन टा के नाहिकमे देने छियैक! आब कहाँ सँ जुटत अर्थ? एकटा कमौआ छथि, तनिकाँ त' अपने बहु-बेटासँ नहि बचैत छनि। की हमरा-अहाँ के देता आ की भाइ सभके देता। कप्पारे फूटल अछि तेँ। ने तँ मरलो लोक घुरैत छैक कहियो?"

रामक छाती पर एक एक टा शब्द हथौड़ा जकाँ बजरैत छैक। लाल काकी ओकरा कोरामे खेला पोसने छलथिन, मातृहीन राम के अपन दूध पियौने छलथिन। से आइ ओकर घुरलापर दुखी छथिन। हुनक सन्तानक मुहसँ कौर छिना गेल छनि। मुदा ओ सम्पत्ति पर अधिकार कर' कहाँ आयल छल? ओ सँ बहुत रास कमा लेने छल अपनो। ओ त' बाबूजी के देख' आयल छल।

बाबूजीक नाम पर देबाल पर टाङल फोटो दिस दृष्टि जाइत छैक। काकीक कहला नहि, मकरजाल-मकरजाल बीच फँसल तीनू फोटोकेँ ताकि, ओकरा पोछि-पाछि क' फेर टङने छल देबाल पर। एकसरि मायक एकटा पैघ फोटो, आ एकटा मे माय-बाबूजी दुनू कुर्सी पर बैसल आ तेसर बाबूजीक संग सटि क' ठाढ़ राम– दस वर्षक राम। फोटो के निहारैत ओकरा गाम अयबाक अपन निश्चय पर अपने तामस होइत छैक। कोन काज छलैक? सभ गाम त' मुर्दा मानि लेने छलैक। एकटा बाबूजी केँ प्रतीक्षा छलथि, चौदह वर्ष धरि प्रतीक्षा छलनि। मुदा तकर बाद मासो दिन नहि रहलाह। आस टूटि गेलनि। घुरबेक छलैक तँ किछु दिन पहिने किएक ने घुरल? बाबूजी केँ एक बेर देखि त' सकैत!

फोटोक सोझाँ ठाढ़ राम कान' लगैत अछि। आब संसारमे क्यो नहि छैक ओकर। एहि बेर गामसँ घुरला आ पड़यला पर ककरो ओकर घुरबाक प्रतीक्षा नहि रहतैक। ओ निश्चय करैत अछि जे एहि बेर गामसँ जाइत काल तीनू फोटो अपना संग लेने जायत।

× × × × ×

मोन अकछ' लागल छैक। दुइये सप्ताहमे गाम अकच्छ लाग' लागल छलैक। आब गामबलाक जिज्ञासा खतम भ' गेल छैक। आब ओकर दरबज्जा पर भोरसँ साँझ धरि भीड़ नहि रहैत छैक। लाल काका आब लाल काकीके जोरसँ बजना

केल उँटैत नहि छथिन, अपनो संग रंग फुसुर-फुसुर कर' लगैत छथि। बड़ी-बड़ी राति धरि डुबुक फुसुर-फुसुर औ सुनैत छाल। गोसाँ सबक संग लालि काकाक फुसुर-फुसुर होइत रहैत छनि। किछु ओकरो लग अबैत छैक—बितलाहा चौदहो बर्खक हिसाब लियनु। मालिके बनल छलाह। सबटाक हिसाब लियनु पाइ पाइक। एतेक टा राज-पाट अछि। सभ टा हुथियौने छथि। अपन कब्जामे कक।"

राम सबटा सुनि क' अनठा दैत छलैक। गामक संग कोनो स्नेह-सम्बन्ध नहि जुड़ल छलैक आब। फेरसँ घुरि जयबामे कोनो बाधा नहि छलैक। कहियो कोनो क्षण बिदा भ' सकैत छल।

ओहि दिन ओहिना गाममे टहल' बिदा भेल छल। कतेको ठाम घुरलाक बाद सीताक घर लग पयर थकमका गेल छलैक। घर नहि, एकटा खोपड़ी सन। एकेटा घर आ ताहू परक टाटमे कोसि भुर। उजड़ल आङन, जंगलाह पछुआर, जेना कोनो बोनमे एकटा खोपड़ी ठाढ़ हो—उपेक्षित। बुढ़ा सँ बान्हल महींसक पाँजर सकटल जेना महीनोसँ खोराकी नहि भेटल होइक। बड़ी काल धरि ओतहि ठाढ़ रहल। भीतर आँगनमे जयबाक साहस नहि भेलैक। तखने एकटा स्त्री बहरयलैक घरसँ बाहर—पातर देह, उज्जर सन साड़ी, मुदा आँखिमे सुन्दर, पैंतीस-चालीसक वयस, रूक्ष केश आ मुखाकृति ओहिना कोमल आ स्वच्छ। ओकरा ठाढ़ देखि चौंकलैक आ मुँहक भाव परिवर्तित भेलैक आ ओहि क्षणमे ओ चिन्हलकै—ओ त' सीता छलैक। ओकर पाँच शरीर झनझना गेलैक। सीताक एहन स्वरूप ? ओकरा एक टा आर सीता मोन पड़लैक !

सीतो हँसैत लगमे ठाढ़ि छलैक— नहि चिन्हलहुँ ?

—"चिन्हबो कोना नहि ? मुदा एना किएक ? सीता ओहिना हँसैत रहलैक—"सब टा त' देखिये रहल छी।"

ओ एक टा मनाधिकार प्रश्न कयलकै— सासुर किएक ने चल जाइत छी ?

ओ ओहिना हँसैत रहलैक—"लैये ने जाइत छथि। जबर्दस्ती जाउ ?"

ओकरा आगू किछु नहि फुरयलैक। बड़ी काल चुप्प रहल। डेगो आगू नहि बढ़लैक। फेर पुछलकै—"तोहर बेटी बड़ सुन्दर छौक। हमरा सँ भेँट कयने छल। तों त' देखी ने अयलेँ'। ओ ओहिना हँसैत रहलैक—'कोना अबितहुँ ?

हमरे डरे ने पड़ायल रही। डर भेल जे हमरा देखैत बेरी फेर पड़ायब तँ फेर चौदह वर्ष धरि गामक दिस मुँह नहि करब।" एहि बेर ओकरो हँसी लागि गेलैक। अपराधी भैयो क' ओ अनेरो एतेक वर्ष धरि सीता पर खिसियायल रहैत छल। ई त' एकदम मुक्त छैक। आब गामसँ बेसी हल्लुक आ तृप्तिहीन भ' क' घुरि सकत। आब कोनो अपराध बोध नहि कचोटतैक।

सीता टोकैत छैक—'की सोच' लगलहुँ'— फेर डरा गेलहुँ'। सत्ते एतेक डर भेल हमर बातक ?"

चारू कात सँ लोक हुलकी देब' लागल छलैक। सभक ठोर पर मुस्की छलैक—कोनो विशेष अर्थ भरल। चौदह वर्ष धरि बाहर रहल ओकर चरित्र केँ रहस्यमय आ संदिग्ध बनैत छैक सभ। आनो स्त्री आ छौंड़ी सभक ठोर पर अर्थ-पूर्ण हँसी बेर-बेर देखने छैक एहि पन्द्रह दिनमे। सीताक उपेक्षित घर आ चारू कातक अर्थपूर्ण हँसी। बहुत किछु स्पष्ट भ' जाइत छैक।

राम सीताक बातक उत्तर बिनु देने जल्दी-जल्दी डेग उठबैत अछि—एकटा निश्चयक संग। आब ठहरब बेकार छैक। छाती पर राखल पाथर आब हटि गेल छैक। अपराध-बोधसँ मुक्त भ' गेल अछि। आब निश्चिन्त भ' गामसँ घुरि सकत। मुदा नहि जानि किऐक, सीताक उजड़ल उपेक्षित घर-आङन, ओकर बेटीक सुन्दर अबोध आकृति ओकरा बेर-बेर कचोटैत छैक। पढ़बा-लिखबाक वयस मे महींस चरबैत छैक। ओ किछु मदति देतैक तँ सीता लेतैक ? उत्तर ओकरा बूझल छैक। तैयो ई प्रश्न बेरबेर ओकरा मोन मे उठलैक—कतेक दिन धरि ई प्रश्न ओकर मोन मे अहुरिया कटैत रहलैक। मुदा ओकरा सीताक घर दिस जयबाक साहस नहि भेलैक।

× × × × ×

लाल काका बाबहु कयने छलथिन—"किछु दिन आर रहि जाह। एतेक वर्ष पर अयलह आ एतेक जल्दी जाइ छह। लोक की कहत हमरा।

लाल काकी खूब कनलथिन—"पहिल बेटा छह हमर। दूध पियौने छियह। एतेक कठोर नहि बनह। किछु दिन रूकि जाह।

तीनू फोटो अपन बकसा मे राखि ओ बिदा भ' गेल छल। बाबूजीक पोथिदानी, छड़ी, चश्मा, गीता आ पुस्तक सभ सेहो ताकि-ताकि क'

वन्हुवा कैने छल । लाल काका कनैत कहने छलथिन—"एकरा नहि ल' जाह । भाइक आखिरी निशानी अछि ।"

ओ सभटा वन्हुवा लेने छल । मोटरी-चोटरी ल' दू टा आदमी स्टेशन चल गेल छलैक । दरवज्जा पर फेर भीड़ छलैक । कतेको बात । कनफुसकी—"फेर सभटा राज-पाट छोड़ने जाइत छी, लूटि-पाटि करवा देताह । कमसँ कम व्यवस्था कयने जाउ तखन । कतेको मुँह पर अर्थपूर्ण भाव—"कतरी राखि आयल हैताह कलकत्ता मे । ने तँ एना सभटा छोड़ि-छोड़ि कियो जाइत अछि ।"

ओ विदा होइत अछि । घर-दरवज्जा, गामक लोक, पाछाँ छूटि जाइत छैक । एहि बेर प्रायः अन्तिम । ओ घुरि-घुरि क' तकैत अछि । गामक सिमानसँ बहरा जाइत अछि । अपन गाछी भेटैत छैक—ओहिना पैघ, किछु आरो बेसी झमटगर । ओ मचान कहाँ गेलैक ? मुदा मचान कहाँसँ रहतैक एहि जाड़ मास मे । ओ त' जेठ-बैसाख छलैक । मचान पर चित्त पड़ल छल राम ।

खिलखिल हँसी सुनि पलटल छल । सीता ठाढ़ि छलैक । गाछी मे सौंसे झम्हायल आम लटकल छलैक आ ओहि मे सीता ठाढ़ि छलैक—खिलखिल हँसैत । ओ टोकने छलैक—"एना हँसैत किऐक छैं गय ? दू मास मे बियाह हेतौक, तकरे खुशी मे मातल छैं ?"

ओ लजा क' चुप भ' गेलैक । तखन ओकरा आश्चर्य भेलैक जे दुपहरिया मे एकसरि ओ कोना आयलि छलैक । ओ टोकि देलकै—"दू मासक बाद बियाह छौक आ तों गाछिये-गाछिये औआइत छहीक ?"

सीता फेर हँस' लगलैक—"त' की हेतैक ।"

तखने ओ एकटा अनर्गल प्रश्न कयलकै—"आ बियाहक बाद की होइत छैक ?"

"दुर !"—ओ लजा गेलैक ।

"कहु ने, की होइत छैक ?"—ओकरा अपन जिदक औचित्यक ध्यान नहि छलैक ।

—"हम की जाने गेलियैक ? तोंही आस धुमनकड़ छैं, त' कहु ने ।"—लजाइतो सीता बाजि गेलैक ।

आ अनायास ओकर सम्पूर्ण शरीर मे तनाव भरि गेलैक—एकटा अपरिचित उन्मादक तनाव । सौंसे गाछी गमक' लगलैक आ ओहि गाछीक बीच ठाढ़ि भरलि-पूरलि घुनरि सीताकेँ ओ नव दृष्टि सँ देखलकै आ पूर्ण आवेग सँ पकड़ि देहसँ सटि लेलकै—"त' ले, हमही देखा दैत छियौक जे की होइत छैक ?"

कतहु विरोधक आभास ओकरा नहि भेल छलैक । आवेग शान्त भेला पर देखलकै जे ठेहुन मे मूड़ी गोतने ओ कानि रहलि छलैक, हिचुकि रहल छलैक । ओ लज्जित-सन लग मे ठाढ़ छलैक । कनैत-कनैत ओ ठाढ़ि भ' गेलैक आ ओकरा दिस तकैत बाजि उठलैक—हम कहि देबनि नूनू काकाकेँ । भरि गामकेँ कहबैक । तों—"तो——

सीता बात सम्पूर्ण करय छोड़ि कनैत पड़ा गेलैक । राम किछु क्षण सुन्न भेल ठाढ़ रहल । फेर आतंकित भ' गेल । सीता बाबूजीकेँ कहतनि, सौंसे गामकेँ कहतैक—...। आतंके देह सिहरि गेलैक—प्रान-परान सुन्न भ' गेलैक । ओ पड़ायल । पड़ायले चल गेल । दू दिन भरि भूखल-प्यासल दौड़ैत रहल......।

"राम मामा !——राम मामा ।" कियो पाछाँसँ सोर पाड़ि रहल छलैक । आइ राम पड़ायल नहि जा रहल छल । आइ त' गामक सामनेसँ जा रहल छल । तखन के पाछाँ सँ बेहारने आबि रहल छलैक ?

राम पाछाँ तकलक । सीताक बेटा दौड़ल आबि रहल छलैक । ओकर हाथ मे एकटा मोटरी छलैक । लग आबि ओ एकटा चिट्ठी हाथ मे देलकै । अकचकायल राम चिट्ठी खोललक—

'हमरा कुशल छल, अहाँ गाम मे नहि टिकब । जहिये अहाँ गाम आयल रही, तहिये तँ बुझल छल । चिट्ठी तहिये सँ लिखि क' रखने रही, मुदा द' नहि सकलहुँ ।

"हम अहाँ के की कहू ? कहियो किछु नहि कहलहुँ। जहिया गाम भरिक छौंड़ी नाम द्वारे अहाँक नाम लगा क' हँसी करैत छलि, जहिया जबरदस्ती अपना दिस झिकने रही, तहियो किछु नहि कहने रही। बाद मे कानलि रही, कानि क' धमकी देने रही। मुदा ककरो किछु नहि कहलियैक। मारयोकेँ नहि।

चतुर्थीक राति हुनका कहि देने रहियनि। नहि जानि कियैक ? अहाँ अपन क्षणिक आवेग मे हमरा किछु द' गेल रही, ओकरा हुनका सँ नुकयबाक पाप हमरा धुते नहि भेल। नीक लोक छलाह। हल्ला-फसाद नहि कयलनि। ककरो किछु नहि कहलथिन। चतुर्थीक प्राते जे गेला से फेर नहि घुरलाह। सुखी छथि, बाल-बच्चा छनि। हम अभागी छियनि।

मुदा, अहाँक देल भार आब नहि सम्हारि रहल छी। मायो नहि रहलि। एकसरि नहि सकैत छी। अहाँक बेटा महींस चरबैत रहय, से अहाँकेँ नीक लागत ?

हमर चिन्ता नहि करू। आत्महत्या नहि करब। असली सीतो नहि छी, हमरा लेल धरती नहि फाटत। बज्जर धरती पर ओंघि लेब हम। चौदह वर्ष हम अहाँक देल वस्तु कहुना सम्हारि क' रखलहुँ, आइ पूरा रहल छी। अहूँक हिसाब बरोबरि भ' जायत। सीता पर कोनो लाम्छन नहि रहत। लाम्छो हैत त' उपाय कोन ? आब हम नहि सम्हारि सकब। मुन्नूकेँ ल' जइयौक। मनुक्ख बना दियौक।"

पत्र पढ़ि क' राम एकटा नव आवेग सँ काँप' लागल। मुन्नूक हाथ पकड़ि लेलकै—"माय कहाँ छौ ?"

मुन्नू हाथ सँ संकेत कयलकै—"ओत', ओहि गाछक पाछू मे ठाढ़ि अछि।"

मुन्नूक हाथ पकड़ि राम ओम्हरे दौड़ल जेना सीता पड़ायलि जाइत होइ, जेना एखने धरती फाटि क' सीता के ग्रहण क' लेतैक। ओकरा ओहि सँ पहिने पहुँचबाक छैक।

गाछक ओट अढ़िक ओहिकात सीता ठाढ़ि छलैक। राम धाबि हाथ पकड़ि लेलकै। दोसर हाथ मे मुन्नूक हाथ छलैक—"अहाँक लेल धरती नहि, हम्मर बज्जर हृदय फाटल अछि सीता। अहाँ ओहि मे धँसि जाउ। मुन्नू के नहि, पहिने हमरा मनुक्ख बना दिय' ?"

सीताक आँखिक नोर प्रसन्नता सँ चमक' लगैत छैक। स्टेशन दिस डेग उठबैत कहैत छैक—"चलू।"

—"नहि सीता, ओम्हर नहि, गाम दिस चलू। चौदह वर्ष पहिने जे बात अहाँ लोकके नहि कहलियैक, से हम कहबैक, ने त' कथा असम्पूर्ण रहि जायत।"

सीता आ मुन्नूक हाथ पकड़ि गाम दिस घुरैत राम सोच पाड़बाक चेष्टा क' रहल छल जे रामराज्य मे की-की भेल छलैक ? ●

अप्रैल १९७४

ढ़ेप

वड़का काण्ड भ' गेलैक ओहि राति। चरवाह ढ़ेप फेकि सूति रहल आ भरि गाम घोल होइत रहलैक। भरि गाम नोत छलैक। भोरे-भोर रामेश्वर झा गामक आङनक मुहथरि पर जा जोरसँ चिचिया उठल छलाह—"लूटनबाबू ओइ ठामसँ पुरखवहा दिस नोत !" पुरखवहा दिस माने पुरखाहा दिन। आब ओइ ठामसँ स्त्रीगणे-पुरुष नोत कहियो-कहियो होइत छैक—पाँच साल, दस साल पर कमो साहस करैत अछि। नहि त' भरि गाम पुरखवहा दिस ! आ, आब त' भरि गामोक माने बड़ छोट भ' गेल छैक ! दुगोला आ मतबरी। भगिनमान टोलकेँ भगवानपुरसँ दुगोला छनि। अपना कारणे नहि ! चौधरी परक भगिनमान छथि ओ लोकनि। मुदा ओ लोकनि मानि लेने छथि जे चौधरी परिवार माने सुनील चौधरी। हुनका दुगोला त' हमरा लोकनिकेँ दुगोला ! ओना भगिनमान टोल कहलावए ओ लोकनि आब चिनाड़ि जाइत छथि। हमरा लोकनि कथीक भगिनमान ? जनिका जमीन देलथिन, बसौलथिन, से भगिनमान ! हम त' तेसर पीढ़ी मे छी ! अपन बाहुबलेँ उपार्जन करैत छी, जीबैत छी। एहि बात पर आब गाममे दू मत नहि छैक। उपार्जन चाहे जतबा कयने होथि, संचय ओहि सँ अधिक अवश्ये छनि। सभ घर-सुखी-सम्पन्न। एकाधे पर टूटल छथि, सेहो गामक मुँह धयने रहैत छथि। खाली नन्नू बाबू कोटमे ठाढ़ भ' अपन सभटा गमा चुकल छथि। अर्जित कयल जमीन निरंच जा रहल छनि। ने त' सभ किछु ने किछु जोड़ने जा रहल छथि। तेँ गाममे आब भगिनमान टोल नहि कहैत छनि, कहैत छनि 'बिड़ला टोल'। मुदा ताहू पर तामसे होइत छनि, व्यंग्य बुझाइत छनि। ओना भगिनमान टोलक लोक सभ बड़ प्रतिभाशाली। पढ़बा-लिखबामे आगू। बेढ़बा-गुनबामे भव्य—गोरनार-चारि हाथ लम्बा ! नीक-नीक ओहदापर। मुदा प्रवृत्तिसँ भेड़िया धसान। जे सुनील चौधरी कहथिन, ताही मे हाथ उठा देताह। अपन कोनो स्वतंत्र मत नहि। ई बात पछिला बीस-चालिस वर्षसँ चालि रहल अछि। अन्तर एतबे भेलनि अछि जे आ भरि सुनील बाबूक स्थिति ठीक छलनि, भेंसुका बैसार हुनके दरबज्जापर होइत छलनि। आब भोर साँझ सुनील चौधरी भगिनमान टोल जाइत छथि। भगिनमान टोल नहि, बिड़ला टोल।

सुनील चौधरी द्वारे बिड़ला टोलकेँ मतबरी भगवानपुरसँ आ भोला चौधरी द्वारे पछबारि टोलकेँ। मामिला-मोकदमा भेल छलनि भगवानपुरक चौधरीसँ। बहुत दिन धरि चललनि। आब ने मोकदमा छनि, ने भगवानपुरक चौधरी जीवित छथि। मुदा दुगोला ओहू टोलकेँ छैक। हुकारो-पिहार नहि।

मुदा, लूटन बाबू ने त' पछबारियेटोलमे छथि आ ने बिड़ले टोलमे। ओ तेँ गामक बीचमे छथि। ओकरा लोक कहैत छैक—बड़ टोल।

कहियो एकटा वड़का बड़क गाछ छलैक ओहि टोलमे। ओ गाछ कटि गेलैक, मुदा नाम छैक—बड़ टोल ! एहि दुगोलामे सभसँ बेसी फायदा वही टोलक लोक सभकेँ भेलैक। कोनो अवसर अवलापर अपने टोलमे निमहि जाइत अछि। झट कहत—हमरा लेल तँ सभ अरपाज्य। जेहने भगवानपुरक चौधरी, तेहने सुनील चौधरी ! जेहने पछबारि टोल, तेहने बिड़ला टोल ! ककरा छोड़ू, ककरा राखू। हम सभ नहि पड़ब एहि झगड़ामे ! अपने टोलमे निमहि लेब।

गामक आबादी बड़ कम आ गठन बड़ सोझ-साझ छलैक। एक परिवारक तीन पट्टीदार, तेँ तीन टा फराक-फराक पट्टी आ टोल। एक पट्टी, कने दूर जा बसलाह, भगवानक मन्दिर बनबौलनि तेँ भगवानपुर। चारि घर मालिक आ बादमे किछु भगिनमान। बेटीकेँ बियाहक बाद सासुर नहि पठौलनि, जमीन-जथा द' गामेमे बसा लेलनि। दोसर पछबारि टोल—दोसर फरीकक, गामक पछबारी सिमानपर। हुनक भगिनमान सभ सटले बसल छथिन, मुदा टोलक नाम फराक छनि—भीड़पर। कनेक ऊँचपर बसल छथिन, पोखरिक भीड़पर। पोखरि कहब ठीक नहि हैत, डाबियो नहि छैक, तेँ लोक कहैत छैक—बुढ़िया चला डबरा। आ तेसर टोल सुनील चौधरी बला, असल चौधराना, पुरना डीह, गामक बीचमे। मुदा, भगिनमान टोल कने हटिक' गामक उत्तरी सिमानपर, आठ-दस घर। पहिलुका भगिनमान टोल, आब लोक कहैत छैक—बिड़ला टोल।

एहि तीनू टोलकेँ—चौधराना, पछबारि टोल आ भगवानपुरकेँ लोक सवा पाँच आना कहैत छैक—फराक-फराक। तीनू मिला क' पौने सोलह आना। बचि गेल एक पाइ—पुरनका, ताहिमे बड़टोल जकर किनार गामक दक्षिणमे पीपड़ टोल

पुरना जमीन्दारीक मनेजर आ चरवाह आदिक परिवार। पीपड़क गाछ आइयो छैक—ओहिना झमटगर। दस-बीस घरक टोल। आ बड़ टोलमे आठ-दस घर। एकर अतिरिक्त एकटा धनुकटोली छैक—ई सभ पहिने ड्योढ़ीमे खवासी करैत छल, आब कलकत्ता—सिलीगुड़ी रहैत अछि। एकाध गोटे गाममे पकड़ा गेल त' खवासी छल. आब कलकत्ता—सिलीगुड़ी रहैत अछि। एकाध गोटे गाममे पकड़ा गेल त' खवासी कयलक। बिड़ला टोलक उत्तरमे खतवे टोली। कहार सभक टोल। पहिने ई सभ पालकी उठबैत छल आ जन-बोनिहारक काज करैत छल। आब त' ने पालकी रहलैक ने कहरिया। नवकी कनियाँ सभ स्टेशनसँ पयरे चल अबैत अछि। मुदा खतवे टोलीमे लोक भेटब मोस्किल। आधा लोक दूधमे पानि मिला दरभंगा जा बेचि अबैत अछि आ किछु आइसक्रीम आ कुल्फी बेचैत अछि। किछु जन-बनिहारी कयलक आ बाँकी रातिमे चोरि करैत अछि। पछवारि टोलक पश्चिम दक्षिणमे सेहो एकटा टोल छैक, मुख्य गामसँ बाहर—दुसाध सभक। ई सभ पहिने ड्योढ़ीक बर्त्तन-बासन मँजैत छल आ महींस चरबैत छल। आब दरभंगामे रिक्सा चलबैत अछि आ सिलीगुड़ीमे ईंजिनसँ खसाओल-चोराओल कोइला बेचैत अछि। मलेरियामे ई टोल एकदम पतरा गेल रहैक। दू-चारिटेटा बचि गेलैक—रोगियाहा सभ। तखन गामक किछु जमाय सभकें बसौलक। आब फेर टोल भरि गेल छैक।

पहिने तँ ई गाम एक परिवारक कहबैत छलैक। स्टेशनपर ककरो पाहुन उतरैत छलैक त' अपन पाहुन जकाँ लोक अरियाति क' अनैत छल। ककरो पुतोहु बेटी अबैत छलैक, सभक जन कहारमे जाइत छलैक। ककरो चरवाह ककरो महींस दूहि दैत छलैक आ खवास ककरो आङनमे पानि भरि दैत छलैक आ भार ल' कुटुम्बक गाम जाइत छलैक। आब दोसरक पाहुनकें लोक चिन्हितो नहि छैक। एक गोटेक जन दोसर गोटेक काज नहि करैत छैक—केहनो बेगरता होअय। बेटी-पुतहु स्टेशनसँ पयरे गाम अबैत छैक आ ककरो जँ अपन पट्टीक मालिककें छोड़ि दोसरकें प्रणामो नहि करैत छैक। 'हमरा कोन मतलब है, कोनो हमर मालिक छथि!' उचित बोनि देलोपर आनक पट्टीमे रोपनी नहि करत, मुदा कटनीमे आँटी देबैक त' चल आओत। माने रोपनमे नहि, लोभसँ सुनत।

तहिना बड़टोलक लोक आब मनेजरी आ चरवाहीकमे नहि रहैत छथि। मालिके मे ककरो लग काजो नहि छैक। एहू टोलक लोक सभ आब पढ़ि-लिखि बाहर नौकरी करैत अछि, डाक बाजिक' जमीन खरीदैत अछि आ साले-साल पक्का पिटबैत अछि। आ, ताहिमे पहिल नम्बर छैक लूटन झाक बेटा चन्दनक। बाहर रहैत

अछि, खूब कमाइत अछि। सभ साल जमीन खरीदैत अछि। ओहो गाम आयल छल। बाबा एक साल बर्ष जीवि स्वर्गवासी भेल छलथिन। बाप आ दुनू पित्ती सेहो गाममे छलैक। सभ मिलि निर्णय कयलक जे एहि बेर टोला ल'क' नहि निमहय। सभकें नोत देबैक। जनिका अबबाक हैतनि, औताह। आ भोरे-भोरे रामेश्वर झा गाममे सभक मुहपरि लग जा कहलथिन—'लूटन झा ओहि ठामसँ पुरखदहा दिस नोत दैत छी। पहिने रामेश्वर झा बीच अँगनामे जाइत छलाह आ जोरसँ सुनाक' कहैत छलथिन—'फल्लाँ बाबू ओहिठामसँ नोत।' मुदा आब वयस भेलनि। नवकी कनियाँ सभ सभ आङनमे आबि गेल छैक। तेँ मुहपरियेसँ तनसँ हाक द' देत छथिन। ई काज गाममे रामेश्वर झा के छोड़ि आर क्यो नहि क' सकैत अछि।

मुदा, ओहि साँझ गणेश ठाकुरक चरवाह जे काज कयलक से त' क्यो नहि कयने छल। पहिले पाँत बैसल छलैक—धीया-पुता सभ। वहीं परसले जाइत छलैक कि लूटन झाक आङनमे ईंपा बरिस' लगलैक। धीया-पुता सभकें चोट लगलैक, सभ उठि-उठि क' पड़ाय लागल। चारू कात सँ लोक दौड़ल। ईंपा बरिसब बन्द भ' गेलैक। तकबा हेरी भेल। ईंपा फेकनिहार नहि पकड़यलैक। धीया-पुता फेर बैसि गेल। तरकारी परसल जाय लगलैक। तखने फेर तड़ातड़ ईंपा बरिस' लगलैक। एहि बेर चन्दन धपायल छल। गणेश ठाकुरक बाड़ी मे नुकायल चरवाह बलेलवाकें पकड़लक आ पकड़ि क' चारि हाथ देलकैं। बाँकी छौड़ा सभ लुपकल। गणेश ठाकुरक भाउजि ओम्हरसँ दौड़लथिन—"एहन अन्हेर जुनि करू। निरपराध के नहि मारियौक।" तैयो लोक नहि मानलकनि त' चरवाह कें अपन पाछाँ नुका लेलनि। ओम्हरसँ गणेश ठाकुर सेहो धड़फड़ायल अयलाह. सभक संग बहुस कर' लगलाह—"अनेरो ईंपा फेकत हमर चरवाह। बूढ़के दोष लगा मारैत छियैक, ठीक नहि हैत।" विवाद बढ़ैत देखि चन्दन घूरि क' अपन काज मे लागि गेल। मुदा छौंड़ासभ गणेश ठाकुरक संग भीड़ि गेल। बहस होअ' लागल। मन्टू बाबूक बेटा अविनाश अगुआ छल। ओकरा के रोकतैक? मन्टू बाबूक बेटा सभकें हुनक जिबितो ओकरसभ बेकहल कहैत छलनि गाम मे, किएक त' ओसभ बजैत छल, सभ घटनापर स्वतंत्र रूपसँ बजैत छल। अविनाशक संग गणेश ठाकुरक बहस भैये रहल छलनि कि ओकर बहिन सेहो ओत' पहुँचि गेलि। गणेश ठाकुरक भाउजि हाथ नचा-नचाक' बाजि रहल

देलथिन । अविनाशक बहिन के' देखिते रुत आबि ओकर मुँहपर हाथ नचाक' बाज' लगलथिन—केहन अबण्ड छी तोहर भाए । मना नहि क' होइत छौक ?"

अविनाशक बहिन झुझुनुक जकाँ बाजलि—"अबण्ड जकाँ त बूढ़ो लोक सभ क' रहल अछि । ककरा-ककरा मना करिऔक ?"

बिगड़ि क' गणेश ठाकुरक भाउजि चाट उठा देलथिन । छोड़ी हँसैत आङन दिस पड़ा गेलि । बहसो कने कालक बाद शान्त भ' गेलैक । मुदा थप्पड़ मारिक बाद दोसर कुकाण्ड भेलैक । अविनाशक भाइ विभास रेडियापर सँ सुनलैक । ओहो विद्यार्थिये छैक एखन, बीस बाइस बर्खक । सभ टा सुनितहि आगि लेसि देलकै । तामसे रङल गणेश ठाकुरक आङनमे पहुँचि गेल । विभास के' देखिते गणेश ठाकुर सकपका गेलाह । ओकर उग्र स्वभाव सँ ओ परिचित छलाह । लग आबि विभास पुछलकनि—"अहाँ एकटा चरवाहकसँ, जे दोषी छल, एतेक टा काण्ड कोना कयलहुँ ? हमर बहिनपर चाट उठयबाक साहस कोना भेल अहाँ लोकनि के' ? जवाब दिय' ?" गणेश ठाकुर डरस केल ततेक सिटपिटा गेलाह जे बोल लाग' लगलनि । मुदा, हुनक भाउजि विभासक लग आबि मुँहपर हाथ चमकाब' लगलथिन । विभास एक-दू बेर रोकलकनि—"अहाँ हटि जाउ काकी, अहाँ स्त्रीगण छी, हम अहाँ सँ गप्प कर' नहि चाहैत छी ।" मुदा, ओ ओहिना मुँह पर हाथ चमकबैत रहलथिन । विभास हुनका हाथ सँ ठेलि तामसे बमकैत आङन सँ बाहर चल आयल ।

एक घंटा बाद लूटन बाबूक दरबज्जापर भीड़ छल । ब्राह्मण सभ जुटि गेल छलाह भोजनक लेल । आ, सभकेँ सम्बोधित करैत सुनील चौधरी कहि रहल छलथिन—"एकर पंचयती हैतनि । विभास अन्याय कयलनि अछि । स्त्रीगण पर हाथ उठौलनि अछि घर पैसि । ओ आङनमे ओतबा गेलाह, ऊपर सँ गणेश आ गणेशक बेटा त' डरे बेहोश भ' गेलनि । ई अन्याय नहि चलतनि गाममे हमरा लोकनिक रहैत ।"

कोम्हरोसँ विभास ओत' पहुँचि गेल । ओकरो भोत छलैक । सुनील बाबूक बात सुनि टोकलकनि—"अहाँ एहि बातमे नहि बाजू । हमरा अहाँकेँ आइ दस-बर्ष सँ दुगोला अछि, बाबुएक समयसँ । मामिलो-मोकदमा छल । आब बाबू नहि छथि, कोनो झगड़ा नहि अछि । नव झगड़ा नहि उठाउ ।"

ई प

सुनील बाबू बिगड़ि उठलाह—"हम कोना नहि बाजब ? तों ककरो घर पैसि जनीजाति के' बेइज्जति करबहक आ हमरा लोकनि चुप रहब ? पंचैती हैबे करतह ।"

विभास आरो उग्र होइत बाजल—"के ककर घर पैसैत छैक तकर पंचैती करब' लागब हमसब, त' सभ दिन पंचैतिये होइत रहत ।"

बात बढ़ि गेलैक । दुनू गरज' लगलाह । सुनील बाबूकेँ हुनक बेटा रोकलकनि—"अहाँ चुप रहू बाबू । अहाँ कियैक एहिमे पड़ैत छी ?" मुदा, ओ नहि मानलथिन । बजिते रहलथिन । विभासकेँ नवयुवक सभ अपना दिस घीचिके पाँतमे बैसा देलकै, पात परसाय लगलैक । भोजन शुरू भ' गेलैक । गणेश ठाकुर बिदका टोलक अश्वत्थामा झाक संग बैसल छलाह । भोजनक संग कनफुसकियो भ' रहल छलनि । अश्वत्थामा झा आस्ते सँ कहलथिन—"अहाँ काल्हि मोकदमा जरूर करू । रुपैया-पैसा, लाठी, जकर काज पड़त, हम देब ।

भरि राति सभ आङनमे एतबे कनफुसकी आ विवाद होइत रहलैक । प्रात भेने महादेव झा एकटा लिस्ट लेने विभासक दरबज्जापर ठाढ़ छलाह, डरे कने सिटपिटायल—"दूत अवध्य होइत अछि । दूत बनि आयल छी । पंचक सूची अछि बत्तीस गोटेक । एहिमे जनिका मानी कहि दिय' । पंचैती हैत ।"

सुनील चौधरीक दूत ठाढ़ छलनि । विभास लिस्ट ल' कहलकै—"की भेल ? मोकदमाक गप्प छल राति ! आब पंचैती पर अयलहुँ । लाउ, लिस्ट दिय' । बाद मे हम अपन नाम देब ।

दूत चल गेलाह । विभास लिस्ट देख' लागल ! पहिल पंच लग दस बर्खक तीन-तीन टा सरकारी फण्डक हिसाब बाँकी छनि, दोसर साइकिल चोरबैत काल पकड़ा क जेल भ' आयल छथि, तेसर बाघ-बोन बाड़ी-झाड़ीमे घरैत लोकक छाबर पर्यन्त मारिके आ जाइत छलाह, चारिम एकटा जोगीक संग......। विभास के' लिस्ट पढ़ि खूब हँसी लगलैक । ओकरा मोड़िक' पाकिटमे राखि ओ रसूलपुर बजार दिस बिदा भेल ।

बाटेमे अश्वत्थामा झा सँ भकभक भ' गेलैक । ओ किछु गोटेक संग रातुके खिस्सा पसारने छलाह आ विभास के' दोषी करार द' रहल छलथिन । पंचक लिस्टमे हुनको नाम छलनि । विभास टोकलकथि—"अहाँक नाम पंचक लिस्ट मे

ई प

देखलहुँ अछि आ अहाँ हुनू पक्षक सुनवाइ स पहिने अपन फंसला द' रहल छियैक । ओहूना, पंच अहाँ लोकनि भंये नहि सकत छी । अहाँ लोकनिक बुद्धि त' सुनील काका सन बंधक अछि ।''

विभासक उग्र रूप देखि अश्वस्थामा आ विशेष बहस नहि कयलथिन । ओतहि सँ ओ रसूलपुर बजार पहुँचल । ओत' बड़ सनसनी छलैक । अखबार आबि गेल छलैक । शानि रेडियोमे ओ न्यूज नहि सुनि सकल छल । बेटिया गोली-काण्ड अदेसा बढ़ल छलैक । मुदा, पटनाक घटना त' एकदम अप्रत्याशित छलैक । हिंसा, अगिलग्गी आ लूट-पाटि । पुलिसक गोलीसँ पाँच मृत आ कमसँ कम पचीसो घायल— अखबारक आँकड़ा छलैक । लोक पहिनेसँ उत्तेजित छल । विभासक पहुँचिते युवावर्गमे आरो उत्तेजना आबि गेलैक । झट एकटा सभा भेलैक । छात्र-संघर्ष समितिक गठन भेलैक । विभास ओकर संयोजक छल । एकटा जुलुस निकाललक । अंसि इलाकामे गामे-गाम नारा लगौलक । सुनील बाबूक घर लग किछु बेसी नारा लगलैक, पुतला सभ जरलैक । जुलुसक बाद सझुका गाड़ीसँ विभास दरभंगा चलगेल, ओतुक्का छात्र नेता सभसँ परामर्श लेब' ।

विभासक माथ दिन-राति चितामे रहैत छलैक । हरदम कोंढ़ धड़कैत । दस गोटे दस रंगक समाचार अनैत छलैक । ओ बेटीकेँ कागज कलम द' जेठका बेटाकेँ चिट्ठी लिख' कहलकै "मोन लागल अछि । पटनामे बड़ हल्ला छैक । तोरा लोकनि कोना की छह ? एम्हर मामो दुश्मन भ' गेल अछि

× × × ×

शहर जेना बदलि गेल छैक । कथयु नहि छैक आब, तैयो आतंक छैक, आशंका छैक । आफिसजाइत काल आकाश सोचि रहल छल जे एना कोना भ' गेलैक ? सोचलापर विलक्षाह किछु दिन एखनो स्वप्न जकाँ लगैत छैक, यद्यपि प्रत्येक घटनाक सबूत उपस्थित छैक शहरमे, कागजमे, लोकक ठोरपर आ आतंकित हृदयमे । ठाम-ठाम अनशनकारी । सत्याग्रही सभक टेन्ट आ टेन्टमे छात्र, स्त्रीगण आ बीयापुता सभकेँ देखैत ओ आफिस पहुँचि जाइत अछि ।

आफिसमे आइ-काल्हि उपस्थिति एकदम पतरायल रहैत छैक, ओना' त' आरो बेसी । घण्टा-दू-घण्टा लेट त' अधिकांश लोक ! लेट-मार्क त' होइते नहि छैक । शहरक असामान्य स्थितिक कारणेँ यूनियनक साधिकार मांग अयलोपर घण्टो समूहमे चर्चा, तर्क-वितर्क । साफ प्रशासन आ भ्रष्टाचार उन्मूलनक, छात्र— आन्दोलन, महगी एवं वस्तु-आतंक अभावक·····आ जयप्रकाश नारायणक·······।

आकाश चुपचाप अपन कुर्सीपर बैसि जाइत अछि । मोनमे बहुत किछु होइत छैक, मुदा, कुर्सीपर आबि गुमि भ' जाइत मोन स्थिर करबाक चेष्टा करैत अछि ! विभागमे आयल चारियो-पाँच व्यक्ति खूब जोर-जोरसँ बहस क' रहल छैक जाहिसँ ओकर ध्यान बेर-बेर उचटि जाइत छैक । दू एक टा शब्द ओकर कानमे पड़ैत छैक—आन्दोलन······ घेराव······ अनशन······ ''पुलिस जुलुम'' ·····।

ओकरा अनायास ओ दिन मोन पड़ि जाइत छैक । छात्र सभ गवर्नरकेँ विधान मण्डलमे भाषण देब सँ रोकबाक हेतु कटिबद्ध छलैक । बारह-एक बजे धरि ई इलाका एकदम शान्त छलैक । बाट सुन्न, सवारी बन्द । बीच-बीचमे हिजेक मात्र एकाध बस विद्यार्थी सभकेँ लदने एम्हरसँ ओम्हर चल जाइत छलैक । दूसर आर ककरो पता नहि । मुदा, बारह बजैत बजैत सनसनी पसरि गेलैक । दूरसँ धूआँ देखाइ पड़लैक । आफिसक लोक सभ जगह छोड़ि-छोड़ि ऊपर छतपर ठाढ़ भ' गेलैक । ओ सभ तखनो ठाढ़ रहलैक जखन मात्र किछु मोटेक टोल, जाहिमे छात्र एकोटा नहि बुझाइत छलैक, सभ सड़कपर कब्जा क' लेलकै······होटल जर' लगलैक······दोकान लुटाय लगलैक । ओ सभ तखनो ठाढ़ रहलैक जखन जरैत मकानक छतसँ उतरबाक चेष्टामे एक टा स्त्री चौमहलासँ फर्शपर आबि गेलैक ।

फायर ब्रिगेड नहि अयलैक । पुलिस नहि अयलैक । होटल-दोकान-मकान जरैत रहलैक आ ओकर दफ्तरक सभ लोक तमाशा देखैत रहलैक । आनो-आओ दफ्तर आ घरक लोक जत' आगि नहि लागल छलैक, जे नहि लूटल गेल छलैक, छत पर ठाढ़, गलीमे दुबकल तमाशा देखैत रहल आ मिनट-मिनट पर बिना बेतारक समाचार सुनैत रहल—गवर्नरक भाषण भ' गेलक······लाठी चार्ज भेलैक······छात्रनेता घायल भेलैक······सर्चलाइट आफिस जरि गेलैक । गोली चललैक अछि ।

आ, जखन-जखन कोनो एम्बुलेन्स सड़क बाटे गेलैक, लोक सभ बैंट गमरा-गमगा बिनु देखनो एक दोसरकेँ समाचार देब' लगैक—हे······ देहु······ओहूमे लाश छैक······ओसिल देखैत छियैक—

देखबाक बातपर आकाशकेँ एक टा बोल मोन पड़लैक ! कतेक दिनुका बाद साँझमे दू घंटाक हेतु कथयु हटल छलैक······। आकाश सेहो बन्द भेल-भेल अकछायल छल, सड़कपर आबि गेल छल । सड़क-बाजारमे भीड़-भीड़ छलैक । लोकसभ घूमि-घूमिक' सभ सड़ककेँ देखि रहल छल, अपन बहु-बच्चाकेँ देखा

रहल छल……—येह देखियौ………रहो कयल छैक……—ह येह, एखनहि गोली चलल छलैक…—। जेना कोनो प्रदर्शनी लागल होइ ! फर्क एतबे जे लोक प्रदर्शनी पुनीत काल जकाँ निश्चित नहि छल ! दुइये घण्टाक बाद फेर कर्फ्यू लगतैक । लोक जल्दीमे छल, । बजबामे आशंकित, कोम्हरो नयो सुनि ने लैक !

आब कर्फ्यू नहि छैक, ऊपरसँ सभ शान्त छैक । मुदा ओहि दिन त' स्थिति भयावह छलैक । ओ आफिसमे छल कि कर्फ्यू लागि गेल छलैक ! कोनो सवारी नहि ! ओ मुख्य बाट छोड़ि गलीक बाट धयने छल । कहियो गेलो नहि छल ओहि बाटे ! बाटमे कयो पाछाँ-पाछाँ अबैक त' होइ जे पाछाँसँ मारिये देतैक । जीपक आवाज सुनैत' लगैक जे कोम्हरोसँ आबि पुलिस ओकरे पकड़ि लेतैक । कहुना घर पहुँचल तँ दोसरे समस्या आबि गेलैक । गैस खतम, घरमे कोइला-लकड़ी नहि ! खालुक भोजन बनब मस्किल । वस्तु आत बर्तन उपास । घरक पछुआड़ मे एक टा कठही बकसा फेकल पड़ल छलैक ! ओकरे तोड़ि-ताड़ि कहुना खिच्चड़ि पाकि सकलैक । भोरे फेर देखल जयतैक……

ओहो दिन बितलैक । आब त' सिनेमा-होटल फेर चालू भ' गेल छैक ! ने त' दिन राति कोठलीमे बन्न ! ठाम-ठाम बेसार सभ । हवामे उड़िआइत गप्प-गोलैयार ! एक दिन त' एहन भ' गेलैक जे घरमे एकको कनमा चाउर-आँटा नहि ! सुन'मे अयलैक जे चौराहा पर एकटा दोकान खोलबाक' विद्यार्थी सभ दू दू रुपये किलो चाउर आ डेढ़ रुपये किलो गहूम बेचबा रहल छैक ! एक-एक किलो भेटतैक ! पहिने संकोच भेलैक ! एक किलो लेल लाइनमे ठाढ़ हैत ? मोहल्लाक कयो चिन्हतैक त' की कहतैक ? मुदा चूल्हि जरबाक समस्या सभटा संकोच के' लगले भगा देलकै । ओहो चौराहाक दोकान पर पहुँचि गेल । बड़का लाइन छलैक ! ओहो लाइनमे ठाढ़ भेल ! रौदमे डेढ़ घण्टा ठाढ़ रहला पर जखन ओकर नम्बर आब' लगलैक कि पुलिस-पुलिसक हल्ला मचलैक आ ओहो एकटा गलीमे बेजान पड़ायल । डेरापर आयल त' पसेनासँ नहायल छल ! दम फूलि रहल छलैक ! करेज धड़धड़ा रहल छलैक !

आब त' ओहो दिन बीति गेलैक ! साढ़े तीनिये रुपए किलो, भेटि त' जाइत छैक चाउर । मासमे दसे किलो, भेटैत त' छैक गहूम राशन कार्ड पर ! मंत्रिमंडलक पुनर्गठन भ' गेल छैक, । आरो बहुत रास बात भ' रहल छैक, । महगी आ भ्रष्टाचार रोकबाक एहन-एहन बहुत रास उपाय भ' रहल छैक ।

ओहिदिन आकाश सिनेमा देख' चल गेल छल ! करमुक्त सिनेमा छलैक—राष्ट्रप्रेमक सिनेमा ! हाउसफुल छलैक मुदा टिकट भेटबामे कोनो झंझट नहि भेलैक ! खुलेआम दू रुपयावला टिकट ब्लैकमे पाँच रुपयामे बिका रहल छलैक ! जकरा नहि भेटलैक ओहूमे, से मुँह बिधुऔने छल । ओतसँ किछुए हटि क' सड़कक कातमे विद्यार्थी सभ सस्त दाममे तरकारी बेचि रहल छल ! ओत' कम्म भीड़ छलैक ।

……आकाश चौंकि क' आँखि खोललक ! विभागमे कोनो बात पर जोरसँ ठहाका लागल छलैक ! सामने देबाल पर टाँगल घड़ी देखलक ! बारह बाजि गेल छलैक । अखनो आधासँ कमे लोक आयल छलैक ! चपरासीसँ हाजिरी-बही मँगबौलक । जहिना लेट' सील मार' लागल कि किछु गोटे भड़कायल आ उत्तेजित होइत लग अयलैक—ई त' बहाक अन्याय अछि ! शहरमे जनता कर्फ्यू-लागल छैक, तैयो लेट मार्किंग……

ओ सील राखि देलक आ फेर कलान्त मने ओठंगि गेल । विभागमे गप्प जारिये छलैक ! विधान सभाक विघटनक माँग, विधायकक घेराव आश्वासन । आदि बहुत रास बात कानमे आब' लगलैक । गयाक फायरिंगक न्यायिक जाँच पर बड़ी काल धरि गप्प होइत रहलैक आ फेर घुरि क' जे० पी०……जयप्रकाश नारायण ! ओ फेर आँखि मूनि लेलक ! पछिला कतेको अखबारी समाचार, संसदीय भाषण, ओ दू तरका तर्क ओनमे कहुरिया काट' लगलैक—ई नहि ओ……—ओ नहि ओ……।

हम नहि । ओ नहि । बहुत रास आरोप-प्रत्यारोप आ सम्पादकीय टिप्पणी ओनमे गानिआय लगलैक ! संगहि मोन पड़लैक सड़कक कातमे लागल एकटा चित्र-प्रदर्शनी आ नुक्कड़ कवि-सम्मेलन । ओहो गेल छल मुदा एकटा छौंड़ा जखन एकटा कागज दस्तखत कर' बासते देलकै, त' ओ पढ़ि क' घुरा देलकै । आन्दोलनक संग सहानुभूति फराक गप्प छलैक ! दस्तखत ओ कोना करैत ? सरकारी नोकर अछि ! मुँहजबानी बात आर छैक ।

तखने अपन टेबुल लग किछु गुलगुल बुझयलैक ! आँखि खोलि देखलक त' चारिटा छौंड़ा ठाढ़ छलैक ! ओ डरा गेल ! एहने तीनटा छौंड़ा किछु दिन पहिने बड़ा साहब लग आयल रहथि आ आफिस बन्द कर' कहने रहथि । झट गेट पर ताला लागि गेल रहैक ! ओ डरायल मन तकलक जे ओकरासँ कोन

फकूर भेलैक। एकटा छौंड़ा रसीद आगू बढ़ा देलकै- "भाइ साहब, संघर्ष समितिक हेतु चन्दा!" ओ झट पाकिटमे बचल एकमात्र पंचटकही बलजोरी हुँसैत हाथमे राखि देलकै। छौंड़ा सभ चल गेलैक। ओकर इच्छा भेलैक जे पुछैक जे अहाँ सभ कोन कालेजमे पढ़ैत छी? फेर अपन इच्छा अपने अनर्गल लगलैक!

ओ देह मोड़ करैत कुर्सी पर सम्हरि क' बैसि गेल। किछु कर्मचारी अपन-अपन सीट पर आबि गेल छलैक! टिफिन हेबामे आधा घण्टाक विलम्ब छलैक! चपरासी अनुका डाक राखि गेल छलैक! ऊपरेमे ओकर व्यक्तिगत पत्र छलैक—गामक चिट्ठी! एकदम मैल सन मोड़ल माड़ल लिफाफ, बहुत दिन पर पौआइत आयल छलैक बेचा! ओ लिफाफ फाड़ि चिट्ठी पढ़' लागल—

—तोरा लोकनि कोना छ'? पटनामे। बड़ हल्ला छैक! कोढ़ कँपैत रहैत अछि! एम्हर गाम सुनसान भेल अछि आ तोरा गामसँ मतलबे नहि छह। ओकरा गणेश ठाकुरक चरवाह ढ़ेप फेकलकै, लोक पकड़बो कयलकै। तैयो दोषी बिशाख, निर्वैक त' ओ बजला! गणेश ठाकुरक घर बेवा! अन्यायक विरोध कयलनि। असल बात तर पड़ि गेल। पंचैती हुनकेपर हैतनि! गाम माने मुँहगर लोक, जे जोरसँ बाजि सकय। वैह सत्य, वैह न्याय! एकटा दोषी चरवाह कें, एतेक पैघ काण्ड, पंचैती मामिला-मोकदमाक धमकी। मुदा धन्य कहौ गामक लोक कें। ओकरा कोनो मतलब नहि—'हम किएक बाजब? हमरा कोन मतलब?' ते' गाम माने सुनील बाबू——गाम माने अश्वत्थामा झा——गाम माने——

बिशाखकें आबू नहि पढ़ल गेलैक! लगलैक जेना एकटा माथ ओकरे लिखि रहल छैक! गाम माने ओ। ओ माने ओकरा सन लोक। दस्तखत कर' सँ डेरायबला, दलिकसँ टिकट-वालसा चीनी खरीद'बला आ जरैत मकान, घर-दोकान सँ कौतुकसँ तमाशा देख'बला। आ गाम माने सुनील चौधरी——गाम माने अश्वत्थामा झा······आ देश माने——

मई १९७४

मलाहक टोल

अपन बेपरी भेल नूआकें फाड़ि-फाड़ि क' फुलेसरी बुढ़िया मलाहटोलीक मुखेलहा पोखरिक भाठ तर नाचि-नाचि क' गबैत अछि। नचैत-नचैत आँचर माँटि मे खेढ़ाय लगैत छैक, माथक केश छिड़िआ क' धोकचल कारी मुँह पर पसरि जाइत छैक, सुखायल चोकटल स्तन कूद' लगैत छैक मुदा ओ नाचि-नाचि क' गबैत अछि—"हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता······"

बताहि छैक बुढ़िया। आकाशमे मेघक एककोटा टिकार नहि छैक। ऐ साल एकको दिन बुन्दो नहि खसलैक आ बताही हाली-हाली बरिसबाक गप्प क' रहल छैक। एही बरखाक गप्प पर ओहि दिन बभनटोली मे बड़का काण्ड भ' गेलैक। फिरंगी झा एकदम सीझा-सोझी ललकारने छलथिन सुशील मिसरकें—"एना नैं हैबे करत। ऐ साल सभठाम पानिये पानि छैक। पटना मे दिन-राति पानि, गंगा, पुनपुन–सोनमे बाढ़ि आ अहाँक नदी सुखायल, खेतमे दरारि। आर दिअनु भोट जातिक नाम पर। सभठाम जनता पार्टी जितलैक आ एम्हर अपन इलाका मे जातिक नाम पर मिश्रजीकें जिता देलियनि। ई त' हैबे करत।

सुशील मिसर जोरसँ हँसलाह—बेस कहल अहाँ। देश पर त' जनता पार्टीक राज भैये गेलैक, स्वर्गो पर अधिकार कयलक। बिना ओकर अनुमतिकें इन्द्र महराज धरती पर जल नहि ढारताह।

फिरंगी झा एकदम तरंगि उठलाह—"फेर वैह कांग्रेसी दलालबला गप्प। रस्सी जरि गेल मुदा ऐंठन नहि गेल।"

सुशील मिसर एकदम मार' लेल छूटलथिन—"हमरे दरवज्जा पर हमरे संग टेढ़ी। सभटा नेतागिरी घोसाड़ि देब एखने——।"

बीचेमे लोक सभ पकड़ि क' फोड़थाम क' देलकनि, फिरंगी झा बाँचि गेलाह।

ई इलाका कोना बचित ? असरेसा बितलैक, मघा बितलैक । एको बुन्न पानि नहि । खेत अफाड़े रहि गेलैक ।

आ, फुलेसरी बुढ़िया तैयो नाचि क' गबैत अछि— हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता ''''''।

ओना, सबं छल नीक गुलमा । जखन मलहटोली साँझ होइते अन्हारक चादरि ओढ़ि लैत छलैक आ घर-आँगन सभसँ माछ आ सितुआ जरबाक गन्ध पसर' लगैत छलैक, गुलमाक स्वर ओहि अन्हारसँ बहरा''''ओहि गन्धकेँ दबा दूर-दूर धरि पसरि जाइत छलैक । मेही आ दर्द भरल स्वर । पहिने आस्ते-आस्ते आ जहिना राति निसाँ चढ़ैत छलैक, स्वर तेज भेल जाइत छलैक आ तेज होइत स्वरमे दर्द बढ़ल जाइत छलैक आ बढ़ैत-बढ़ैत ओहि टोलकेँ लाँघि, नदीक धुनु घाटकेँ लाँघि, सौंसे गाम आ बाध-बोनमे पसरि जाइत छलैक ।

आ जहिना ओहि दिन ओ बातो पसरि गेल रहैक— भरि गाम, सौंसे बाध-बोन । सभ बुझि गेल रहैक । मुदा गुलमाकेँ ककरो दिस देखबाक होश कहाँ रहैक । ओ त' खुशीसँ बताह भ' गेल छल । भोरे नेनाक जन्म भेल रहैक आ तकर कनिये काल बाद किछु चेतन आ बेसी धीयापुताकेँ एक पतिआनीमे चलबैत आ आगू-आगू अपने झंडा लेने मही बाबू मलहटोली मे आयल छलथिन । पतिआनी मे चलैत लोक सभक हाथमे सेहो झण्डा छलैक आ सभ जोर-जोरसँ चिचिया रहल छल । ओ जुलूस ओकर घर-लग आबि गेल रहैक आ कने बिलमि मही बाबू कहने छलथिन— तोहूँ चल गुलमा । आ, लाइनमे आबि जो''''—

—''की बात छैक मालिक ?— गुलमा बिन किछु बुझने पुछलकनि ।

—''अरे, आइ बड़का खुशीक दिन छैक गुलमा । देशक गुलामीक दिन आइ समाप्त भ' गेलैक''''''अंग्रेज चल गेलैक । हमरालोकनि आजाद भ' गेलहुँ । सौंसे देशमे आजादीक जुलूस बहार भ' रहल छैक । आ' तोहूँ चल''''''

—''नहि मालिक । हमरा छोड़ि दिय' । आइ हमरो लेल बड़का खुशीक दिन हय । भोरे एगो ननकिरबा जनमल हय''''—''

—''वाह, ई तँ बड़ खुशीक बात । बड़ नीक दिनमे जनमल छौक । ओकर नाम हम राखि दैत छिऔक । तोहर नाम गुलमा नहि जानिके रखलकौ, मुदा ऐ ननकिरबाक नाम हम राखि दैत छिऔक— आजाद । गुलमाक बेटा आजाद, कोन रहतौक किने——''

आ, सैह नाम पड़ि गेलैक । मुदा बात पचबासँ पहिनहि बड़का कान्ह भेलैक । गाम-घर-बाध-बोन सौंसे बात पसरि गेलैक । गुलमाक बहु दस बर्षसँ बसैत छलैक, एकको टा धीयापुता नहि छलैक । मुदा जखन भेलैक त' एकदम गोर धप-धप । कारी-कारी केश, पैघ-पैघ आँखि । जे देखलकै घरसँ मुसकिआइत बहरेलैक, आ भरि गाम घूमि क' कनफुसकी कयलकै ।

मुदा, फुलेसरी त' सामनेमे कहि देलकै । जखन गुलमा कहलकै जे मही बाबू 'आजाद' नाम राख' कहलथिन अछि, फुलेसरी अपन बेटाक मुँह लग हाथ चमका क' कहलकै—''ठीके नाम राखि देलथुन हेँ बौआ । जखन बहुए आजाद भ' गेलौक, हुनकीमे ढ़ोड़ फूला तोहर बहुनामे अण्डा पाड़ि देलकौ, त' आजाद नाम पड़बे करतैक ।''

गुलमा माथ पर झपटल । मुदा, बुढ़िया नहि मानलकै । आर हाथ नचा-नचा क' कण्ठ फाड़ि-फाड़ि क' चिचिआय लगलैक । गुलमा तामसे बताह भ' गेल । मायक झोंट पकड़ि ओकरा लाति-मुक्के मार' लगलैक आ ओहिना मारैत-मारैत आङनसँ बाहर क' देलकै । मलहटोलीक पीपरक गाछ तर बैसलि, जोर-जोरसँ छाती पीटि क' कनैत फुलेसरी ओही बातकेँ दोहरबैत-तेहरबैत रहलि ।

बताहि भ' गेलि छलि फुलेसरी । एना कयो अपन घरक खिस्सा दुनियाँक सोझाँ पसरैत अछि । फुलेसरी कारी छलि आ कारिये छलैक गुलमाक बाप बुदरा । गुलमो कारी छल आ ओकरोसँ बेसी कारी छलैक ओकर बहु । मुदा ओकरा गोर धपधप बेटा भेलैक । मुदा एना त' हैबे करैत छलैक । मलहटोलीमे सभ कारिये-कारी छल । बीच-बीचमे कोनो उज्जर प्राणी आबि जाइत छलैक । पहिने कानफुसकी, फेर मारा-पिट्टी आ फेर सभ शान्त । मुदा एना कयो गाछ तर बैसि घरक खिस्सा त' नहि पसारैत छल फुलेसरी जकाँ ।

आ, एना अपन मायकेँ कहियो भगबितो नहि छल गुलमा जकाँ । ओहि दिन जे लाति-मुक्के मारि घरसँ बाहर कयलकै से फेर आँगन नहि ढुक' देलकै । गामे-गाम भीख माङ' लागलि फुलेसरी । मुदा साँझ होइते मलहटोलीमे पुरि

मरैत छलि आ पीपर-गाछ तर पड़ि रहैत छलि। बरखा-बुन्नी भेलैक तँ ककरो ओसारा आ ओलती——''''।

अलबत्त अछि फुलेसरी। तैयो तीस वर्षसँ जीबि रहल अछि बुढ़िया। ओकरा छाहरि आ आश्रय देब' बला पीपरक गाछ सूखा क' ठुट्ठ भ' गेलैक मुदा फुलेसरी ओहिना जीबैत अछि आ ओही ठुट्ठ गाछतर नाचि-नाचि क' गबैत अछि।

ओहि दिन नेना गुलमा कोनो जानवर भ' गेल छल। मायकेँ लाति-मुक्के मारि-पीटि आङनसँ बेला अपन घरमे आयल। घरमे खटिया पर सहमलि ओकर बहु पड़लि छलैक आ ओकर बगलमे छलैक एकटा कपड़ामे लपेटल ओकर नेना। गुलमा ने सहमल बहुक आँखिक याचना देखलकै आ ने नव जनमल नेनाक सुन्दरता। ओ त' आगू बढ़ि दुइये दिन पहिने खाली भेल कोखिमे समधानि क' लात मारलकै। चीत्कारक संग घेंचि देलैक ओकर स्त्री। फेर दोसर, फेर तेसर —फेर चारिम, नहि जानि कतेक लात मारि गुलमा बताह जकाँ कोठ घरसँ बहरायल आ एक दिस चला गेल। घरमे दर्दसँ कुहरैत ओकर स्त्री आ किलोल करैत नेना पड़ल रहलैक। टोलो पड़ोससँ क्यो चुप्प कर' नहि अयलैक।

मुदा, कोखिमे समधानि क' मारल लातक असरि लगले हुलकी देब' लगलैक। बिछौनसँ उठि नहि सकलैक गुलमाक स्त्री। जे छौ मास जीलैक बिसरिते कटलकै। गुलमाकेँ कहिओ कोनो दोष नहि देलकै, ने कनलैक खौंझलैक। खाली अपन नेनाक मुँहमे अपन सुखायल स्तन दैत काल आँखिमे नोर भरि-भरि आइक।

आ, गुलमाक आँखिमे त' जेना बाढ़िये आबि गेलैक। एकटा सोन सन बेटा देने छलैक ओकर स्त्री आ ओ मारलकै ओकर कोखिमे लात। सेहो बेकसूरी। हवेली जाइत छलैक ओकर स्त्री मुदा कोनो बाबू—भैया लग टाँग नहि पसारने छलैक। बबुआन हवेलीमे सुन्दर-सुन्दर गोर-नार धीयापूता सभकेँ देखै आ अपन कूखक पेट देखय, त' सभ ठाम हाथ-जोड़ब'—कोइला थानमे'''सलहेसक मन्दिरमे, बाबाक मन्दिरमे''''''हमरो एहने देथु बाबा, एहने सोन-सन बेटा।''

बाबा सुनलथिन। मुदा गुलमा नहि सुनलकै। सुनलकै गुलमो मुदा कोखिमे लात मारलाक बाद। आ तकर बाद कतबो बहुरिया कटलक गुलमा

ओकर स्त्री नहि सकलैक, छौओ मास नहि। आ छौ मासक बिन मायक नेनाकेँ लेने गुलमा राति-बिराति बिरहा गबैत छल—ताड़ीक निसाँमे भेर''''एकसर'''' सुतली रातिमे ओकर सेहो दर्द भरल स्वर गाम-घर आ बाध-बोनमे पसरि जाइत छलैक।

मुदा गुलमाकेँ बाध-बोन जयबामे बड़ दिक्कति होअ' लगलैक। जनकरमे अहुरोछ जाल फेक' जायमे असुविधा होअ' लगलैक। आजादकेँ ककरा लग रखितैक? एक बेर फुलेसरी बुढ़िया आयलि रहैक घरक मुँहपरि धरि—"हमरा बाउ' दे औआ। नेनाकेँ के देखतौ? कनियाँ त' गेलौ''''''

गुलमा तेना गुर्रा उठलैक जेना बुढ़ियाकेँ उठा क' ओहीठाम जमीन पर पटकि देतैक, बुढ़िया जान ल' पड़ायलि। फेर घुरि क' घरक मुँहपरि लग पयर नहि देलकै। गामे-गाम भीख माँगैत रहलि।

आ, गुलमा राति-बिराति बिरहा गबैत रहल। कतबो क्यो कहलकै—ककरो बना ले', नेनाकेँ सम्हारि लेतौक, गुलमा नहि मानलकै। ओ बहिना आँखि बन्न करय ओकरा एकटा तुरत जनमल नेनाक बगलमे पड़लि एकटा स्त्रीक सहमल आँखि मोन पड़ैक आ ओ बताह भ' टेर लगा दिय'''''''राति-राति भरि गबिते रहि जाय।

दिनकेँ सुखंवाक बहु राख' लगलैक आजादकेँ। ओकरा अपनो छौ मासक नेना छलैक कोरामे, दूध होइत छलैक। गुलमा किछु टाका द' दैक सुखंवाकेँ। चारि-पाँच टा धीयापूताक रहैक आ एकसर कमौनिहार छल सुखंवा। दिक्कति रहैत छलैक।

ओना, दिक्कति त' घरे-घर छलैक मलहटोली मे। सभ घरक एकके हाल। एकटा कमौनिहार आ खयनिहार बहुत। ताहि पर बेसार आ बेकारी। स्त्रीगण सभ सेहो काज करैत छलि, पानिमे पैसि सितुआ बिछैत छलि, घूर बनबैत छलि। तैयो सेहो काल बेहाल—ने पेटमे अन्न ने देह पर कपड़ा आ ने घर पर चार।

सोड़ पचासेक घर छलैक टोलमे। ओहमे रह'बला इएह सभ, मलाह सभ लोक। प्रति घरमे औसत चारिटा-पाँचटा लोक। प्रत्येक परिवारकेँ औसत

एकटा घर। घर माने झोपड़ी। जे बड़ ऊँच तें तीन हाथ। जे बड़ लम्बा-से आठ हाथ दस हाथ। एतबे टा संसार। घरक आगू किछु जमीन कोट-कुस आ करचीसँ घेरल। बस्स एतबे। आ एतबो जबर्दस्तियें। बेसी घर सड़के पर। सौंसे टोले लगैत छलैक जेना बान्हक कातमे खोंढ़ पर बसल होइ। कपचैत-कपचैत छोट भेल खेतक आरि आ धुसकैत टाटसँ घेरायल किछु गैरमजरुआ आम जमीन। बान्हक ओ दू धुर जमीन मालिकेक देल। सबँ कहाँ भेल रहैक ?

आ कारी-कारी मसकर चिम्मर देहवला पुरुष आ कारी-कारी गुदगरि मुदा सक्कत माँटिक बनलि स्त्रीगण सभ। पुरुषक देहमे मात्र एकटा चारि आङुरक चिप्ठी आ मौगीक देह पर दसहत्थी ननगिलाटक नूआ। दोसर कोनो वस्त्र नहि। बारहो मास उघार दलकैत देह आ छिट्टा सन ओझरायल माथक केश। हरदम माँटिमे लेढ़ाइत, धारक पानिमे चुभकैत धीयापुता सभ। वैह धीयापुता कखन बढ़ि क' जवान भ' जाइत छलैक आ कखन पुरुषक देह पर चारि आङुरक चिप्ठी अबैत छलैक आ स्त्रीक देह पर दसहथ्थी ननगिलाट, क्यो नहि बुझैत छलैक। मुदा एकक बाद दोसर, पुस्त-पुस्तैन एहिना मलह-टोलीक कोनो घरसँ एकटा पुरुष बहराइत छलैक—कारी चिम्मड़ देह, डाँड़मे एकटा चिप्ठी आ पीठ पर लटकल जालक डोरी छाती लग दहिना हाथमे आ बामा हाथमे नीचाँ लटकल माछक खोंगी। बहराइत छलैक एकटा स्त्री देह पर दसहथ्थी ननगिलाटक मैल बिन पाड़िक साड़ी, माथ पर छिट्टा, पेट खरियर आ ठुलकी चालिक संग ठुलकैत डेग। आ बहराइत छलैक ढौए-ढाकी धीयापुता नाकट-बकर्च, गर्दमे लेढ़ायल-कारी लोथाड़।

आ, वैह धीयापुता सभ बिन पढ़ने-लिखने, बिन स्कूल गेने एक दिन बुझगुक आ ढेकनगर भ' जाइत छलैक। धूरामे लेढ़ाइत, पानिमे चुभकैत ओकर मोलक पन्ही देखाइत छलैक आ ओइ पन्हीसँ पहिने ओकर हाथ मे जाल, खोंगी आ नावक कग्गा आ करुआरि आबि जाइत छलैक।

मछहर सभमे भेटैत छलैक आधा माछ। डबरा-खत्ता, पोखरि-नदीमे जाल फेकि दू सेर, चारि सेर माछ मारैत छल। मजूरीमे सुतरि गेलैक तँ सोलहन्नी, ने तँ अधिया। ओइ अधिया माछकेँ पेठियामे बेचि अन्न अनैत छल, पेट भरबा लेल।

आ जँ से नहि होइत छलैक, मछहूर नहि भेलैक, बेगारमे पकड़ा गेल वा बेमारी रहलैक वा माछक समय नहि रहलैक त' मलहाक मौगी बोझाइत छलैक आकड़-आकड़। कट' लेल जान लबैत छलैक आ चूड़ा पहुँचा अबैत छलैक। जे किछु बचलैक ताहीसँ पेट भरै छलैक। नहि त' वैह उपास आ उपास नहि त' वैह गरैक— घेंकनाक सन्ना, वैह डोका, वैह भाकोड़ आ काछुआ……।

गुलमा छल मुदा, ओस्ताद। कोनो मछहर होउ, एकटा दू टा माछकेँ डेना से पानियेमे मुट्ठी मचोड़ि कगहुँआलमे ओकरा दैत छलैक, जे कतबो ने ताकि लिअय, भेटब मश्किल! ओकर ओंगोंकेँ कतबो क्यो उनटि क' झाड़ि लौक, दू चारि माछ सटले रहि जाइत छलैक, तेहन ब्योंत करैत छल गुलमा। मुदा, कमैवाक असल ब्योंत करैत छल गुलमा आमक मासमे! आन-आन मास तीन-चारि मलाहक संग मिलि दू तीन टा पैंच-पैंच गाछीक आम खरीदि लैत छल। मेहनति बड़ होइत छलैक! राति-राति भरि ओगरबाही, मुदा तैयो किछु टाका बचाइये लैत छल।

मुदा, कतबो ओगरबाही कयलक गुलमा, आजादकेँ नहि बचा सकलै! ओकर बाप गुबरा औँठा छाप छलैक, गुलमा अपने औँठा छाप छल, सौंसे मलह-टोली औँठा छाप छलैक! मुदा आजादकेँ गुलमा स्कूल पठा देलकै। देहसँ झँगा, पैंन्ट आ गोरनार मुँह-कान! छौंड़ा बेछप लगैक टोलमे।

अपन नाम लिख' अबैत देरी स्कूलसँ मोन औना गेलैक आजादक! स्कूलक नाम पर घरसँ बहराइक आ गाछीमे गुल्ली-डण्डा खेलाइत रहैक! लोक सभ गुलमाकेँ कहलकै! तावत बहुत देरी भ' गेल रहैक। ओदसँ आगू नहि पढ़ि सकलैक छौंड़ा! तैयो गुलमाकेँ सन्तोष रहैक जे ओकरा जकाँ औँठा छाप नहि छलैक।

आ, छापक नाम पर गुलमाकेँ भोटवला छाप मोन पड़ैत छलैक। तेहन ने निशान लगौने रहैक आङुरमे जे छुटबे नहि करैक बहुत दिन धरि! आ ओ पाँचटा टाका सेहो बहुत दिन खोंइछे रहलैक, खूब मजा कयलक। मुखिया देने रहैक। ऊपरसँ, सरकार दिससँ बनतीस आयल रहैक भोट खसैबा लेल। भरि टोलमे सभकेँ देने रहैक मुखिया आ सभ संगे-संग भोट खसा आयल छल! मुदा दोसर बेर बाटाबाटी तकिते रहि गेल गुलमा! मुखिया पाँच टाका ल' क' नहि अयलैक। ओकरा भेलैक जे ओ छूटि गेल आ सभकेँ पँचटकही बकसीस भेटि गेलैक! ओ

टोलमे पुछारि कर' लागल ! परन्तु ओकरा विकल देखि कहलकै—"एना बेहाल भेने कथी बजब' नहि औतौक आइ आ ने भेटतौक पँचटकिया ! बकसीस बला टाका बहु सात आयल छलैक ! मुदा ऐ साल बाँटक काज नहि पड़लैक । मायक मुँहगर लोक आ इसकुलिया सभ सभकाज क' देलकै ! सभक गोट बैह सभ खाबा देलकै —एकके बेरमे एक बन्डिल ! आ टाकोक बण्डिल वैह सभ बाँटि लेतैक ।

गुलमाकेँ बड़ तामस भेलैक ! सभ लेल जे बकसीसक टाका आयल छलैक तकरा किछुए गोटे आपसमे किएक बाँटि लेलकै ! ई त' बड़का बेइमानी भेलैक ! मुदा कहितैक ककरा ? इसकुलिया सभ जाने ल' लितैक आ मुखिया बाट बन्द मश्किल क' दितैक !

असल मश्किल कयलकै आजादबा ! धोबापुलामे गुल्ली-डण्डा पर परिकल रहैक ! बैतन होइत देरी आन-आन चीज पर परकि गेलैक ! टोलक छलैक सुनरी । भरि टोलमे गोरि छौंड़ी बैह टा छलैक ! आजादक आँखिमे गड़ि गेलैक ! छौंड़ियो छलैक बदमास ! सासुरसँ पड़ा-पड़ा अबैक । ओकर माय छलैक सुनरी ! बड़ दबाब देलकै ओकरा पर गुलमा मुदा कोनो फैदा नहि भेलैक । आजादबा माय-बेटी दूनूकेँ फँसौने छलैक ! मायक हाथमे दैक टाका आ छौंड़ी हाथमे सिंगार-पटारक बस्तु ! अकच्छ भ' गुलमा सुनरीक सासुर गेल आ ओकर बरकेँ आनि टोलमे पँचैती बैसा देलकै ! सुनरीकेँ जाय पड़लैक ! मुदा गुलमाक धकियके गुम्म क' देलकै आजादबा ! सुनरी गेलैक त' रतिया ! कारी छलैक मुदा छलैक गोल्लगर आ पनिगर । आजाद सुनरीक लेल उदास हैबाक बदला सभ ठाम कह' लगलैक—"जाने दो ससुरी को ! महीनामे एक सय डेढ़ सय रुपिया दिया आ दिन-रातिमे सात बेर-आठ बेर घर पैसा" आजाद अधिक काल एहने भाषा बजैत छलैक, 'खासक' एहन-एहन मौका पर !

गुलमा कपार ठोकि क' रहि गेल । बेटा कारो अवण्ड होइत चल गेलैक । मारि-पीटि क' ओकरासँ रुपैया छीनि लैक आ ताड़ी पीबि साँढ़ जकाँ औनाइत फिरय । रतिबाक बाद फुलिया······फुलियाक बाद सुनरी······।

आ, जहिया-जहिया गुलमाकेँ मारै आजाद, फुलेसरी बुढ़िया खूब मगन भ' नाचय—"हमरो आँखि जुड़ायल ! करेज ठण्ढा भेल ! एही दिन लेल जीबैत रही !

ओर दिन मुदा बुढ़िया आर्त्तनाद क' उठलैक ! कतहुँसँ राति बितलापर

घुरल अबेर छल गुलमा । पथक्षमे किछु लटपटा गेलैक । जोरसँ आइलक पथार, तखने दाँत गड़ा देलकै । ओही पीपरक ठुट्ठ-गाछक जड़ि लग निश्चिन्त पड़ल बुढ़िया लग जा गुलमा कहलकै—"आब चललियौ माय, काल आबि गेलौ !

बुढ़िया हड़बड़ा क' उठि बैसलैक "के, बौआ ? एना किएक बजै छँ, की भेलौ ?······"

गुलमा ओकर कोरामे पड़ि रहलैक—एकदम सुच्चा गहुमन छलौ माय । सत्ते कहै छियौ, कैक दिन अभरल छल एहीठाम ! आइ डसिक लेलक ! ओँघी लगैए माय, सुत' दे कोरामे······।

—"नै रे बौआ । गहुमन नहि छलौ, धामिन हेतौ ! बड़ छैक ऐ बँसबिट्टीमे । परन्तु कलरीक मायकेँ दूध पीबि गेल रहैक······"

"नै माय···एकदम सुच्चा छलै गे ! बस्स, आब चलाचली । निरदोष पुतहुकेँ अकलक लगौलि तोँ आ निरदोष परसौतीक कोखिमे लात मारलियैक हम ! दुनू गोटे खूब भोगलहुँ······आब जाय दे······।

आ बुढ़िया चिकरि उठलैक । ओहुसँ बेसी जोरसँ जतबा कालमुच्चा आ क' गुलमाक परसँ निकलैत काल चिकरल रहैक ! भरि टोल जुटलैक···मती सभ अयलैक मुदा तावति गुलमा मायक कोरामे सुति रहल छल ।

आ जखन ओकर चितामे पाछाँ मुहेँ पंचकठिया फेकि लोक बिदा होब' लागल रहैक, नहि जानि किम्हरसँ मुर्दघट्टीमे आबि फुलेसरी बुढ़िया । अट्टहास कर' लगलैक—गेलैं किने अबने, बड़ निकालने छलौ घरसँ······ आब निकाल त' बुढ़ियाकेँ ······।

आ बुढ़िया बड़ी काल धरि मुर्दघट्टीमे बौआइत अट्टहास करैत रहलैक । रातियो क' नहि घुरलैक ! किछु दिन गामेसँ निपत्ता भ' गेल रहैक । जहिया घुरलैक एकदम बिलकुल पागल भ' गेल रहैक । देहक नूआ फाटल, माथक केश छिड़ियायल आ लाल-आँखि । फेर ओही गाछ तर डेरा जमा देलकै । आ, अपन फाटल चेथरी भेल नूआकेँ आर फाड़ि-फाड़ि क', नाचि-नाचि क' गबैत अछि ठुट्ठ पीपरक गाछतर सभ दिन ।

आ मलाहक टोल ओहिना छैक ! साठि-सत्तरि टा घर ! घर पाँछा ओहिना लोक बढ़ि गेल छैक ! सातो भ' सकैत छैक आ नवो ! मात्र चारि-पाँच सय

लोक । आ चारि-पाँच सय लोक लेल गाढ़ि-डसरि टा घर ! घर नहि झोपड़ी ! जे बड़ ऊँच से तीन हाथ, जे बड़ लम्बा-चौड़ा से आठ हाथ दस हाथ……!

आइयो ओहि घर सभसँ एकटा पुरुष बहराइत छैक—कारी चिक्कर देह, डाँड़मे चारि आङुरक चिथ्थी खोंसल, दहिना हाथमे पीठ पर फेकल जालक डोरी छाती लग आ वामा हाथमे नीचाँ लटकल माछक खोंगी । आइयो एकटा स्त्रीगण बहराइत छैक—देह पर दसहत्थी ननकिलाट आ माथपर पैंच भरिगर छिट्टा ! डुलकी चालिक संग दलकैत देह ! आइयो बहराइत छैक ढोए-ढाकी नाइट धीया-पुता सभ आ मलहटोलीक धूरामे लेटाइत, डबरा-पोखरिक कादोमे खेलाइत, बाथसलीक पानिमे चुभकैत कहिया कोन देह पर चारि आङुरक चिथ्थी लपेटैत छैक आ कौन देह पर दसहत्थी ननकिलाट, ककरो पते नहि चलैत छैक ।

आजादक सबटा काण्डक पता मुदा ओकरे छैक ! बाप छलैक त' डाट छलैक । ने कमयबा-खटयबासँ मतलब, नै पेटक चिन्ता ! बाप मरलैक त' आफत भेलैक । फुटानी छुटलैक, अन्न बेतरे बेसक्कल भ' गेल ! दौड़ल गेल सासुर आ अपन बहुकें ल' अनलक । पहिने दू-तीन बेर गुलमा अनने रहैक, मुदा आजाद मारि-पीटिक' बेला देने रहैक ! आब बुझलकै जे बड़ मेहनती मौगी छैक, कमाक' अपना संग ओकरो पेट भरि लेतैक त' दौड़ले गेल सासुर आ बहुकें ल' आयल ! एक बेर फेर निश्चिन्त भ' गेल ।

मुदा किछुए दिन ! बहुसल मोन छलैक ! बहु कमाक' खुअबैत छलैक मुदा कक्का-पुलक । आजादक मोन औनाय लगलैक । पहिने चोरीमे धरिकल ! पकड़ायल त' मारि-पीटि लोक छोड़ि देलकै ! फेर चोरी …… …… आ तखन डकैती ! चाक त' ओकर नाम आ नामक संग आतंक पसरि गेलैक ! लोक पहिलो डेराइत छलैक ओकरासँ टोलमे, आब इलाका भरि त्रस्त रह' लगलैक ! वारण्ट छलैक, पुलिस बेर-बेर घर पर छापा मारैत छलैक मुदा आजाद पकड़ाइत नहि छल । ओ निपत्ता रहैत छल टोल-गामसँ वर्षक-वर्ष मुदा ओकर आतंक इलाकामे बढ़िते जाइत छलैक—साले-साल ।

आ ओहि राति ओ साल भरि पर गाम आयल छल ! नुकाक' रातुक अन्हारमे—एकसर । ओकर गिरफ्तारी पर इनाम छलैक । ओकरा घरमे देखि ओकर बहु चौंकलैक ! ओकर चौंकब देखि बिगड़ैत आजाद बाजल—"ऐसे चौंकी काहे ! हमको देख के खुशी नहीं हुआ ?"

बहु कोनो उत्तर नहि देलकै । आजादक ध्यान बहुक फूलल पेट पर गेलैक आ सौंसे देहमे जेना आगि लागि गेलैक ! ओकरा चिचिया क' अँगनामे भरैत गुर्राक' बाजल—"तो ई बात है, कमाईमे बढ़ोत्तरी हुआ है ! बाज, किसका है ?" आ देलकै जोरसँ एकटा लात ओकर फूलल पेट पर ! ओकर बहु चीत्कारक संग अँगनामे ओंघरा गेलैक ! एक दिन ओकर बापो अपन स्त्रीक कोखिमे लात मारने छलैक । मुदा ओ कोखि खाली भ' गेल रहैक ! आइ ओकर लात ओकर बहुक फूलल पेटेटा पर नहि, ओकर भीतर जीवि रहल शिशुओ पर पड़ल छलैक ! मुदा चीत्कार बहरेलैक खाली ओकर बहुक मुँहसँ आ जावत दोसर लात देलकै ओहि पेटक शिशुक रक्षार्थ ओकर स्त्री एकदम चुक्कीमाली भ' दुनू हाथे दुनू ठेहुनकें छातीमे दबा बैसि गेलैक । तखन लात ओकर पीठ, पाँजर आ मुँह पर पड़ैत रहलैक आ ओ ओहिना चुक्की-माली बैसि एम्हरसँ ओम्हर ओंघराइत आर्तनाद करैत रहलि !

लोक जमा होब' लगलैक ! आजाद सावधान भेल । ओकर गिरफ्तारी पर इनाम छलैक । इनामक लोभमे क्यो पुलिस ने बजा लेअ । ओ दौड़ैत स्टेशन दिस पड़ायल ! मुदा गाड़ीमे नहि चढ़ि सकल ।

ओही ट्रेनसँ पुलिस सभ उतरलैक । चारूकातसँ ट्रेनकें घेरि लेलकै ! ओकरे घेरबा लेल आयल छलैक खबरि पाबि ! आजाद ओहि दिस पड़ायल अन्हारमे । ओम्हरो टॉर्चक रोशनी आ पुलिस ! ओहिसँ पिस्तौल निकालि फायर कयलक—धमधुन । जवाबमे तीन दिससँ गोली चललैक आ ओकरा छेदैत चल गेलैक !

आ, जखन पुलिस ओकर लहासकें घिसिया क' ल' जा रहल छलैक ओकर आङनमे भीड़ लागल छलैक । दर्दसँ छटपटाइत ओकर स्त्री बीचे आङनमे एकटा नेनाकें जन्म द' देने छलैक आ आङनमे ओकरा घेरिक' भीड़ लागल छलैक !

आ जखन नीक जकाँ फरीछ भेलैक, ओहू दिन एकटा जुलूस मलहटोली बाटे बहरयलैक ! मुदा ओहि दिन आगू-आगू मही बाबू नहि छलथिन, छलथिन फिरंगी झा ! गुलमाक आङनमे भीड़ छलैक ओहि दिन, मुदा दरबज्जा सुन्न छलैक ! जुलूस आगू बढ़ि गेलैक । मुदा ठुट्ठ पीपरक गाछतर बैसलि फूलेसरी बुढ़िया जुलूसक आगाँ ठाढ़ भ' गेलैक—"आइ की बात हइ बौआ ? कने हमरो कहू !"

"हट बुढ़िया, तों नहि बुझबहीन ! आइ बड़का महान दिन छैक ! आइ अत्याचारीक नाश आ एकताक जीत भेल छैक, जनतंत्रक जीत भेल छैक !

बुढ़िया किछु नहि बुझलकै ! बातपरसँ नहि हटलैक ! ओहिना बाट छेकने पुछलकै··· कने बुझाक' कहू बौआ । के जितलै आ के हारलै ?" फिरंगी आ कहलथिन—इन्दिरा गाँधी हारि गेलीह आ जे० पी० जीति गेलाह।

फिरंगी बाक बात बीचेमे काटैत बुढ़िया बाजि उठलैक—"ई जे० पी० के छै बौआ ?" फिरंगी आ खिसिआक बजलाह— चल हट बतही ! कहलियो ने, जे तों नहि बुझबहीक ! ओ लोकनायक छै, गान्धीजीक चेला—

आब बुढ़िया प्रसन्न होइत बाजलि—"त' से कहू ने ······ गान्ही बाबा के चेला छै ! गान्ही बाबाके त' सभ चीन्है छै ! आ ई इनिरा गान्ही त' गान्हिये बाबाक बेटी छैक — ···"।

फिरंगी बाक संग सभ जोरसँ भभाक' हँसलैक—"गय बतही ! छोड़ बाट ! ओ गाँधीजीक नहि-नेहरूजीक बेटी छैक !

बुढ़िया मुदा बाट परसँ नहि हटलैक—"सेहो बेसी किने ! गान्ही बाबाक नहि, नेहरूजीक बेटी··· —गान्ही बाबाक पोती ! सेहो ने । ओ हारि गेलै' मुदा ताहि सँ की हेतैक बौआ ?

अकच्छ होइत फिरंगी आ बजलाह—"हेतै तोहर कप्पार ! हट बागुसं बतही ! गय, आब जनताक राज हेतैक, तानाशाहक नहि !

बुढ़िया चरित्रक किच्छो नहि बुझलकै ! किछु काल जेना सोचैत ठाढ़ि रहलैक आ फेर बजलैक—"ई 'जनता' के हय बौआ, हम नहि चीन्है छिऐ ! मुदा हमरा त' कहाँ सभ चीन्है छी—फुलमाक माय, फुलेसरी बतही । हम त' तीस सालसँ एही गाछ तर छी — ···· आइयो !

आ, फुलेसरी आइयो अपन चेपरी भेल गुथाकेँ फाड़ि-फाड़िक' ओही मलाहक टोलक ओही ठुट्ठ गाछ तर नाचि-नाचि क' गबैत छैक—हाली-हाली बरिसू इन्नर देवता ।

आ धरित्री धरतीमे दरारि फाटल छैक ! ❀

सितम्बर १९७६

मलाहक टोल

पुरान चरित्रक नव कथा

माय लिखने छलैक—पटनामे बड़ उपद्रव छैक। हरदम कोनो पहर्रैत रहैत अछि ।

समय सधरि गेल छैक । ने शहरमे कर्फ्यू छैक, ने धारा १४४ । जनता राज समाप्त भेलैक । जनता (?) राज त' भैये नहि सकलैक कहियो । सभ किछु पूर्ववते रहलैक । खाली किछु लोक बदलि गेल छलैक राज-काजमे ··· —।

प्रकाशक डेरा बदलि गेल छलैक । डेरा बदलैत काल लोक सभ टोकने रहैक—नै लिय' ओ डेरा । मकान आ मोहल्ला त' ठीक ठाक अछि, मुदा मकान मालिक ··· —।

मकान मालिक छलथिन कैप्टन साहब ? ओना, पाँच भाइ छलाह मुदा पटनामे एकसरे रहबाक कारणेँ हुनके जिम्मा छलनि । मकानक उपरका तल्लामे अपने रहैतो छलाह । नीचाँ रहबा लेल प्रकाश आबि गेल ! लोक सभ बड़ कहने रहै किदन सभ !

कहने कैप्टनो साहब छलथिन—लोक सभ बहुत रास गप्प कहत । मुदा आदमीकेँ चिन्हबा लेल ककरो परामर्शक नहि, अपन दृष्टिक काज होइत छैक ! जेना हम अहाँकेँ चीन्हि रहल छी, बिना कोनो जान-पहचानक अपन मकान द' रहल छी । मुदा, ई आनन ठोपवला लोक सभ, ई 'ज्ञान-भारती' टाइप लोक सभ । जंजाल बुना अछि हमरा एकरा सभसँ । आइ सिम्पली हट दीज पीपुल···

कैप्टन साहबक हाथमे ह्विस्कीक गिलास छलनि ! प्रकाश जखन ड्राइंग रूममे पहुँचल रहय, ओ शुरू क' चुकल छलाह ! टेबुल पर आधा बोतल खाली छलनि आ हाथमे भरल गिलास । समय ल' क' पहुँचल रहय । देखिते कहलथिन- आउ, बैसि जाउ । माइंड नहि करब । बड़ थाकि गेल रही, प्रतीक्षा नहि क' सकलहुँ, सॉरी, एकटा गिलास ह्विस्की लेल दिय' त' !

कैप्टन साहबक पत्नी भीतर आबि प्रकाशकें नमस्कार क' रिकाड देखहुन राखि देलथिन। प्रकाश टोकि देलकनि—"नै, हमरा देल नहि। हम नै लैत छी कहियो।'

पेग बनब' लेल उद्यत कैप्टन साहब चौंकि क' प्रकाशकें देखलथिन जेना ओकर कथनक सत्यताक जाँच क' रहल होथिन! फेर सहज भावें हँसैत कहलथिन—"रह' दियनु मीरा! ई ठीके कहैत छथि, हम चेहरा पढ़ि लैत छियनि! ई सभ घर-हुँजी लोक छथि।" कैप्टन साहब जोरसँ हँसलथिन।

प्रकाशकें लगलैक जेना व्यंग्य क' रहल होथिन, मुदा ओ हँसि रहल छलथिन—एकदम निश्छल हँसी। कतहु कोनो सन्देहक गुंजाइश नहि छलैक। ओहो संग संग हँस' लागल आ गप्प कर' लागल।

आ, दू घण्टा हुनका संग बैसि, दू बोतल फैंटा पीबि आ बहुत राम भटकब' आ पटनी आ जखन ओ विदा होब' लागल छल, कैप्टन साहब कहने छलथिन—आइ सिम्पली हेट दीज पीपुल——

मोहल्ला वलाक लाख कहलोपर मुदा ओ कैप्टन साहेबसँ घृणा नहि क' सकल। जेना-जेना समय बितैत गेलैक, ओ हुनकर आर लग होइत गेल, स्नेह बढ़ले गेलैक। साँझ होइते कैप्टन साहेब निशाँ बुत भ' जाइत छलाह। पहिली तारीखकें ओ दानापुरसँ एक-दूटा काठक बक्सामे बोतल सभ ल' अनैत छलाह आ सन्ध्या होइते अपन कोठली वा बरण्डा वा छतपर टेबुल सजा बैसि जाइत छलाह। किछुए पेगक बाद हुनका निशाँ लागि जाइत छलनि। पत्नीकें चिन्ता बढ़ि जाइत छलनि, धीया-पुता सभकें कोठली सभमे बन्द क' दैत छलथिन आ अपने एकसरे लगमे बैसि रहैत छलथिन। कखनो असीम दुलार, कखनो अकारण डाँट-फटकार। हाथ तक उठा दैत छलथिन। देहपर निशान पड़ि जाइत छलनि। तेहन मे कखनो काल नुका क' हुनकर पत्नीनीचाँ पड़ा अबैत छलथिन, प्रकाशक पत्नी लग। कैप्टन साहेब एकसर बड़बड़ाइत ऊपरसँ हाँक दैत छलथिन—चौधरी जी जी यो।'

प्रकाश नीचाँ आङनमे आबि जाइत छल। जोरसँ कहैत छलनि—किछु चाही की कैप्टन साहब?

कैप्टन साहब निशामे झूमैत कहैत छलथिन—यू आर ग्रेट चौधरी जी! सभकें कहाँ एतबे पुछैत छियैक— किछु चाही? कहाँकि अपना किछु नहि चाही? हम अहाँकें नमस्कार करैत छी—हैट्स ऑफ टू यू!'

कैप्टन साहब गरदनि झुका अभिवादन कर' लगैत छलथिन त' हँसी रोकबा लेल प्रकाश ओत'सँ हटि जाइत छल। डेरायल सहमति, मारिक चोटसँ नोरायल, कैप्टन साहबक पत्नीक आँखिमे सेहो हँसी झलकि जाइत छलनि—"अहाँक बड़ इज्जति करैत छथि। देखू ने, निशामे कोना सलाम क' रहल छथि! पैंहु निशा त' काल छनि। आ बझो केहन? दू घोंट कण्ठतर गेलनि की नहि, बमकब शुरू भ' जयतनि। बोतल सभक तीन चौथाइ फेंकि खाली पानि मिला दैत छियैक मुदा तैयो कोनो फर्क नहि। पानियोसँ निशाँ लागि जाइत छनि जेना।

पानि मिलब'बला बात कहैत-कहैत कैप्टन साहबक पत्नी खिलखिला क' हँस' लगैत छलीह।

ओहि राति मुदा, हुनकर हँसी बिला गेल छलनि। चीत्कार क' उठल छलीह। बारह बर्खक बेटी असगरें किलोल मचौने रहथि। ओकरे होल तें अपनो मारि खयने छलीह, सेहो सुतली रातिमे।

चाह कातसँ अपन-अपन छत आ बरण्डा वा सामने सड़कपर लोक सभ जमा भ' गेल रहय—बन्द करू ई तमाशा कैप्टन साहब! नीक लोकक मोहल्ला छियैक ई। लोककें मोहल्लामे रहब, चैनसँ सूतब मोसकिल क' देने छियैक अहाँ।'

कैप्टन साहबक तामस पसरि गेलनि, पत्नी-बेटीक जान बाँचि गेलैक। ओ सब पड़ा क' भीतर कोठलीमे नुका गेलैक।

कैप्टन साहब बाहर अपन बरण्डामे आबि चिकर' लगलाह—हू द ब्लडी बास्टर्ड यू आर टू इन्टरफेयर इन माइ पर्सनल अफेयर्स। के तखनसँ चिचिया रहल छलहुँ, सामने आउ।'

कैप्टन साहबक ललकार पर बेसी लोक सटकि गेल, मुदा किछु लोक हुनक डेराक आगू सड़कपर जमल रहल। एकटा नौजवान साहस क' आगू बढ़ल—हैं, ए हम छी! हम रोकि रहल छलौ अहाँकें। ई नीक लोकक मोहल्ला छैक। ई सभ काण्ड नहि चलत एत' ?'

—'के रोकत हमरा ? हू डैयर डेट करैछ ? हम अपन घरको जे इच्छा हैत करब । रोकैके ओरसँ मरत्व ? आ जे हमर घरक मामिलामे टाङ अड़ाओत, ही विल रीपेन्ट'''कहि दैत छी हम ।'

ओहो छौंड़ा मुदा साहसी छल । एकदम अड़ि गेलनि—हम रोकब, हमरा ओकनि रोकब । की क' लेब हमर अहाँ ।

कैप्टन साहब कोठली दिस दौड़लाह—की क' लेब ! अखने देखा दैत छी । आइ विल शूट यू । गोली मारि देब अहाँकेँ ।"

दौड़िक' कोठलीमे आबि टाङल बन्दूक उतारि लेलनि कैप्टन साहब । गोली ताक' लगलाह । तावत पत्नी भीतर आबिक' बन्दूक छिनबाक चेष्टा कर' लगलथिन । हुनका ठेलिक' खसा कैप्टन साहब गोली तकैत रहलाह । पत्नी आङन दिस बरण्डामे आबि जोर-जोरसँ प्रकाशकेँ नाम ल' बजब' लगलथिन । प्रकाशकेँ नहि रहल गेलैक । दौड़ल गेल ऊपर । तावत पेटीमे गोली भेटि गेल रहैने कैप्टन साहबकेँ । प्रकाश रोकलकनि, मुदा ओ ओकर बातपर बिन ध्यान देने गोली भर' लगलथिन बन्दूकमे । प्रकाश बन्दूक छीनि लेलकनि । छीना-झपटी करलथिन, मुदा प्रकाश हुनकासँ बलगर छल, बन्दूक छीनि लेलकनि आ कहलकनि "नहि कैप्टन साहब ! एना करब उचित नहि ।'

कैप्टन साहब छीना-झपटी बन्द क' देलथिन, मुदा हुनकर चेहरापर घृणाक भाव उगि गयलनि—यू टू ब्रूटस । चौधरी जी अहूँ ? अहूँक मुहेँ वैह उचित-अनुचितक पाठ । यू आर फेक टू ड चौधरी जी—एकदम नकली छी, आइ अहाँ । एण्ड आइ डोण्ट बोदर फोर द फेक पीपुल—दी हिपोक्रेट्स'''

ओ 'फेक' छल—एकदम नकली । प्रकाशकेँ अपनो लागि रहल छलैक ।

ओकर अपन डेरा छलैक, पत्नी छलैक, धीयापूता छलैक, भाइ-बहिन छलैक । गामसँ आयो आबि गेल छलैक, मुदा जेना सभ किछु नकली होइ'''।

कैप्टन साहबक डेरामे भरि दिन टाइपराइटर खटखटाइत छलथि । साझमा हिसाब-किताब होइत छलनि । बाप अपन जीवने कालमे सभ भाइक हिस्सा फराक क' देने छलथिन—सभक नाम फराक-फराक मकान, फराक-फराक पासबुक । खाली गाम आ गामक जमीन आ पटनाक मकान साझी छलनि ।

उपजकेँ बेचि मैनेजर हिसाब करैत छलनि आ भाइ-भाइक हिसाब जोड़ि सभकेँ चेक जाइत छलनि—कलकत्ता, दिल्ली आ मद्रास । चारू भाइक हिस्सा चारि ठाम । अपन हिस्सा कैप्टन साहब अपने राखि लैत छलाह । मुदा ऐ चारि हिस्सामे पहिने आधा-आधी हिस्सा लगैत छलनि । आधा हिस्सा काका साहबक । काका साहब विदेशमे छलथिन । हुनक पासबुकमे फराकसँ टाका जमा होइत छलनि । हिसाब-किताब साफ । हिसाबक टाइप कएल प्रति सभ पट्टीदार लग जाइत छलनि । ई सभटा कैप्टन साहब अपने कहने छलथिन प्रकाशकेँ आ कहने रहथिन—हमर बाप पित्ती लोकनिकेँ फोरसाइट छलनि, दूरदर्शी छलाह, सभ टा साफ-साफ क' गेला । भैयारीमे कोनो झगड़ा झंझट नहि । अपन मोबरसँ मतलब । ने तँ देयादक संग झाँउ-झाँउ करैत रहितहुँ सभ गोटे ?'

मुदा प्रकाशक परिवारमे सभकेँ संगे देखि, की भाइ-बहिनकेँ संग देखि दिसोमे कैप्टन साहब बड़बड़ा उठैत छलथिन—हैट्स आफ टु यू चौधरी जी !

मुदा प्रकाशकेँ सभटा दोसर रंग लाग' लगलैक—एकदम बदरंग !

पत्नीक आकृति हरदम तमसल रहैत छैक ।

बात बातपर चिचिया उठैत छैक । अनेरो धीयापूताकेँ मारि बैसैत छैक आ कनैत धीयापूताक संग अपनो चीत्कार कर' लगैत छैक । प्रकाश रोकि दैत छैक—चुप रहू ! लोक सुनत त' की कहत ?

पत्नी आर चिचिया उठैत छैक—लोक की कहत ? अहाँकेँ खाली लोकेक चिन्ता रहैत अछि ! हम लोक नहि छी अहाँक लेल ? मनुक्ख नहि छी ? हमर चिन्ता कहियो नहि होइत अछि अहाँकेँ ? मुदा ई जे छौ टा अछि'''एकरा जन्म देलियैक अछि ओकर चिन्ता करियौक ! ने तँ सभकेँ गला दबा-दबा मारि दैत छियैक हमहीँ ।'

पत्नी बकने चल जाइत छैक । प्रकाशक रोकबाक चेष्टा व्यर्थ जाइत छैक । अपन कोठलीमे बैसलि गाम सुनैत छैक आ ओकरो आकृतिपर भाव बदलि जाइत छैक । एक दिन ओ पत्र लिखने छलैक—पटनामे बड़ हुल्ला छैक । हरदम करेज धड़कैत रहैत अछि ।' आइ ओ पटनेमे छैक, संग रहैत छैक डेरामे, मुदा लगैत छैक जेना बहुत दूर होइ ! दिनक दिन टोकबाक साहसे नहि होइत छैक । पत्नीयोकेँ टोकैत डर होइत छैक । आफिसक बादो बेसी काल डेरामे

पड़ायल रहैत अछि। रातुक अन्हारमे दुनू गोटे विपरीत दिशामे मुँह कयने पड़ल रहैत अछि। प्रकाश तनाव सँ मुक्ति चाहैत अछि। ओ मुक्ति पत्नीक देहमे ताक' लगैत अछि। देह आइ अकड़ि क' काठ-कोढ़ो भ' जाइत छैक। झिक्का-झोरीक चेष्टा करैत अछि त' पत्नी बेस जोरसँ बाजि उठैत छै—बुढ़ेल बिआह करक कोन काज छल! ई त' बजारोमे भेटि जाइत!

प्रकाश डराक' दूरि हटि जाइत अछि। बगलक कोठलीमे धीयापूता सभ छैक। बड़की बारह-तेरह वर्षक भेलैक। तेसर कोठलीमे चारि भाइ आ माय छैक। सभ सुतने हेतैक।

फेर लगैत छैक जे डेरायब बेकार छैक। कतेक दिनधरि नुकायल रहतैक ई बात? ओकरा लगैत छैक जेना तते बजारमे आबि गेल अछि ओ। सभकेँ दाम चाहियैक। सभ सम्बन्ध, सभ सिनेहक छैक दाम चाहियैक।

ओकरा किछु पुरान बात मोन पड़ैत छैक। ओ तेसर दिन गाम पहुँचल छल। उतरी छोट भाइक गरमे छलैक। अन्तिम समय नहि देखि सकल पिताकेँ! मायक कोरामे मूड़ी नुका मायक संग कानल, छोट भाइक गरोसँ उतरी लेलक आ लेलक सभक दायित्व, मोने-मोन पिताकेँ स्मरणक'!

दायित्व आब लगिचिआयल जकाँ छैक। दू टा बहिन पहिने सासुर गेल छलैक, तेसरो अपन सासुर गेलैक। छोटकी बहिनक संग बेटियो मैट्रिकमे आबि गेलैक। एकटा भाइ एम० ए० क' कमाय लगलैक। दोसर एम० ए० मे आबि गेलैक आ छोटका दुनू बी० ए० मे। मुदा जेना सभ किछु गड़बड़ भ' गेलैक। लगैत छैक जेना ओ ककरो दायित्व नहि, ओकरे दायित्व सभ उठौने होइ, बेहू सभसँ बेसी असक्त भ' गेल हो। पत्नी त' सभ दिन साफ-साफ कह' लगलैक—नहि छल उपाय, त' कियैक अनगौलहुँ खदर-बदर? अनका भरोसे कतेक दिन चलत?

ओहो सभ टा लोक-लेहाज बिसरि चिचिया उठैत अछि—ककरा भरोसे छी हम? के दैत छैक हमर धीयापूताकेँ अन्न पानि? अपन बलेँ जीबैत छी हम…।

पत्नी मुदा ओकर ओतक' चीत्कारसँ अविचलित रहैत छैक—से त' कहीं जानी। डेरामे रही दिन भरि तखन ने बुझबैक? हम त' बैस सुनैत छी जे बहुतो कर्ज कयने छी एक लाख, आखी अपन बहु आ धीयापूताक लेल, फुटानी कर' लेल आ आब अनकर कमाइ पर पेट पोसैत छी। के कहैत अछि जे अहाँकेँ तीन

हजार मास दरमाहा भेटैत अछि! से रहैत त' बहु धीया-पूता एना पो..ये लगबितहुँ?'

प्रकाश डरा गेल—पत्नीक चीत्कारसँ नहि, ओइ राति देखल स्वप्नसँ। ओइ दिन पत्नीकेँ चिचिया क' कहने छलैक—एखन छी हम मुदा राति जो स्वप्न देखलक जे ओ नहि अछि आ पत्नी धीया पूता बाटे-घाटे……

नीन्न टूटि गेलैक। पसेनासँ देह भीजल छलैक—जाड़ो मासमे। पत्नी बिछौनक दोसर कात सिकुड़लि सुतलि छलैक आ ओकर दुनू कात दुनू छोटका निभेर सूतल छलैक। दोसर कोठलीमे बेटी सभ सूतल हेतैक। मुदा ओकर आँखिक निन्न हेरा गेलैक। राति भरि आँखि खूजल रखने ओ बेर-बेर दोहरयबाक चेष्टा कयलक मोने-मोन—अखन छी……'हम छी अखन'……अखन कोनो भय नहि।

एना नहि जानि कियैक होइत छैक? एक दिन सभकेँ भयमुक्त रखबाक साहस राखैवाला एक दिन स्वयं भयभीत होअ' लगैत अछि—कातर आ असहाय! ओकरा पिता मोन पड़ैत छथिन। अपन सौ संतान संग, भागिन, भागिनि, बहिन सभक उत्तरदायित्व उठौलाक बाद भयमुक्त आ प्रसन्न रहैत छलथिन। फेर नहि जानि कोना ओ निडरता आ प्रसन्नता बिलीन भ' गेलनि। हरदम चिन्तित भय-भीत आ सशंकित रह' लगलाह। जेना भविष्यमे किछु देखि रहल होथि आ देखि-देखि डेरा जाइत होथि।

मात्र डेरायल रहलासँ भावी टरि नहि सकलनि। जहिया ओ नहि रहलाह, सभसँ छोट सन्तान मात्र आठ वर्षक छलनि।

प्रकाश मुदा निडर छल। सभ किछु क' सकबाक साहस आ संकल्प छलैक। पिताक श्राद्धमे भरि गाम तीन दिन धरि कचरि क' खयलाक बाद कहलकै—कोनो खुशनामा त' नहि भेल छलनि। एक तरहेँ जबानियेमे त' मरल छलथिन बाप, साठियो कहाँ पुरलथि? एतेक पैघ परिवार छनि, ओकरा देखितथि। ई फालतू आडम्बर कियैक?

प्रकाशकेँ ककरो कहबाक चिन्ता नहि छलैक। ओकरा अपनापर विश्वास छलैक। अपन बाट ओकरा जानल छलैक, अपन आदर्शपर ओकरा विश्वास छलैक।

आब लगैत छैक जेना ओकर विश्वास नकली छलैक । ओकर आदर्श एकटा आडम्बर छलैक—मात्र अपनाकेँ ठकबाक लेल । ओ सभ दिन एकटा काज बुढ़हेसँ उनटा करैत आयल हो जेना ।

घरेक लोक कहब शुरू क' देलकै—नै जानि कोना कर्ज-बर्ज भ' जाइत छनि ! हमरा लोकनि त' नहि जनैत छियनि किछु । पेटो पोसबा लेल अन्न-पानि अपने जमीनसँ भ' जाइत अछि । पावनि-तिहार··· ···एकाध टा वस्त्र··· ···ताहीमे एतेक कर्ज-बर्ज ।

पत्नीक आँखिमे हरदम नोर रहैत छनि 'हमरासँ नीक त' दाइ—नौड़िन रहैत अछि । वर्षमे दू जोड़ नूआ, सेहो बहुतो दिन नहि । देह झाँपब मोस्किल भ' जाइत अछि त' बापस माङि लैत छी । बिन मङने दस टा पाइ नहि भेटैत अछि ।

बड़की बेटीक आँखिमे नोर—अइ बेर फगुआमे कपड़ा नहि । वर्षमे दुटा कपड़ा भेटैत अछि—एकटा फगुआ आ एकटा दुर्गापूजामे । अइ बेर सेहो नहि !

मायक आँखिमे नोर—आइ जँ रहितथि त' धीयापूता एना आन ठाम पेट पोसैत ?" भाइ-बहिनक आँखिमे नोर—ककरो कृपापर त' जीबि नहि रहल छी ! एतबा त' अखनो छोड़ि गेल छथि बाप दादा !' पत्नी आ बेटीक आँखिमे नोर···

सेहो सभ क्यो एक दिन प्रकाशक डेरापर छल आ निकलैत कैप्टन साहब बड़बड़ाइत छलथिन—यू आर ग्रेट चौधरी जी !

आइ अपनाकेँ सभसँ दीन आ पराजित पबैत अछि प्रकाश । घरमे दीनताक सूचक कोना एक दृष्टिमे लक्षित किछु नहि होइत छैक—नीक डेरा छैक, मोटर गाड़ी छैक, टेलीफोन छैक, नोकर चाकर छैक । ककरोसँ लाख-डेढ़ लाखक कर्जक गप्प करैत छैक त' अविश्वासमे ओकर आँखि पसरि जाइत छैक—हँसी करैत छी अहाँ !

ओकरा मुदा आब हँसबा लेल बहाना ताकए पड़ैत छैक । दिनभरि आफिसमे सशंकित रहैत अछि जे कोनो तगेदा वला नहि आबि जाइ । सम्पूर्ण व्यक्तित्व सशंकित आ भयाक्रान्त भ' गेल छैक । डेरामे पैर दैत डर होइत रहैत छैक जे पहुँचिते कोनो सूचना ने भेटि जाइ—फादर घटि गेल, मदद दियौक ।

प्रकाश किछु बजबाक पूर्व पत्नीक प्रलाप शुरू भ' जाइत छैक—नहि जानि एहन लोककेँ विवाहक सौंख किएक होइत छैक ? धीया-पूता किएक जनम' दैत अछि ओ, जकरा बुते ओकरा सभ लेल किछु करबो पार नहि लगैत होइ !'

कखनो लगैत छैक जेना पत्नी ठीक कहैत छैक । ओकरा विवाह नहि करबाक चाहैत छलैक । विवाहक पन्द्रह वर्षक उपरान्तो आइ पत्नीक देहपर, एकटा गहना नहि छैक । प्रकाश बुते कहियो कीनब पार नहि लगलैक । जे दू-चारि टा नैहरसँ आयल छलैक, सेहो बन्धक लगैत लगैत बन्धुके वला लग रहि गेलैक । विवाहक पन्द्रह वर्षमे पन्द्रह टा साड़ियो कीनब प्रकाश बुते पार नहि लागल छैक ।

तकर चिन्ता पत्नीकेँ नहि छैक । खाली धीया-पूताक मुँह देखि ओ कान' लगैत छैक—एकरा सभक की हेतैक ? आब त' बड़की विवाह जोगर भेल जाइत अछि ।"

मायोक आँखिमे वैह चिन्ता छैक—एकटा विवाहक जोगर बेटी, तीन तीनटा कालेजमे पढ़निहार बेटा··· ···आइ जँ रहितथि !

पहिने पत्नी-मायक आँखिक एहि भयकेँ प्रकाश अवहेलना क' दैत छलैक—चिन्ता कथीक ? हम छी··· ···की एखन हम !

आब मायक आँखिक ओ भय··· ···पत्नीक आँखिक ओ भय ओकर आँखिमे पोसिआय लागल छैक । एक दिन पहिने भय अपन पिताक आँखिमे देखने रहैक । आइ लगैत छैक जेना पिताक आँखिक भय ओकर आँखिमे आबि गेल छैक··· ···। ओ अयना लग ठाढ़ भ' बेर-बेर अपन आकृति देखैत अछि आ कोन पढ़बाक चेष्टा करैत अछि जे पिताक ओइ सशंकित भयाक्रान्त आकृतिसँ ओकर आकृति कतेक मेल खाइत छैक ।

ओना, ओकर आकृति मायसन छैक । बापक दुलारू छल, मुदा माइयो कम नहि बिगाड़ने छलैक । मासे-मास बापसँ चोरी क' सैकड़ाक सैकड़ा टाका दैत छलैक । मुदा आब पुछलापर ओ कहैत छैक—जेठ जनकेँ अपने परिवार पैघ छनि । बचिते नहि छनि, कहाँसँ किछु देताह । ओ त' घरकटी छोट जनकेँ जे कमाइ छनि, ताहिमे हमरो दैत छथि, छोट भाइ-बहिनीकेँ देखैत छथि··· ···

ओहि दिन प्रकाश अवाक रहि गेल। माय डेरासँ छोड़ि चल गेलि छलीक। माय-भाइ-बहिन सभ निपत्ता। पत्नी एकसरि गुम्म-सुम्म बैसलि छलीक। कहलकै—मायकेँ छोड़' गेल छनि सभ। संझुका गाड़ीसँ गाम गेलीह।

प्रकाश दौड़ल स्टेशन गेल छल। माय गाड़ीमे बैसलि छलीक। बाकी सभ प्लेटफार्मपर छलैक। क्यो किछु नहि बजलैक। आब ककरो ओकरासँ किछु पुछबाक काज नहि रहलैक, ओ बूझि गेल। चुपचाप ठाढ़ रहल।

माय कहलकै—नहि रहि भेल! सगेत छल जेना ककरो छाती पर बैसल होइ। हरदम आँखिमे नोर, ठोरीमे आगि। तीन दिन बोखारमे किलोल करैत रही दिन भरि। तोँ आफिस छलह, बाँकी सभ क्यो बाहर। तैयो ओहिना गुम्म। मुँहो बज्जी नहि। एनामे नहि रहि भेल। हिनका लोकनिकेँ नहि उपाय छनि, पेट पोसहि पड़ितनि। हमरा त' गाम-घर अछि······

गाड़ी खुजि गेलैक खिड़कीसँ हाथ बढ़ा गोड़ लागि प्रकाश प्लेटफॉर्म पर सुन्न भेल ठाढ़ रहल। माय अपन गाम-घर जा रहल छैक······ओकर गाम-घर फराक छैक। प्रकाशक डेरा ओकर घर नहि बनि सकलैक। ओकर डेरापर ओकर भाइ-बहिन पेट पोसतैक—से माय कहने छलैक। प्रकाशकेँ दुनियाँक नहि विश्वास नहि करबाक मोन भेलैक।

गामसँ चिट्ठी आयल छलैक—जा धरि उपाय नहि छनि, ता धरि सभ तोरे डेरापर पेट पोसथुन। एतेक कर्ज-वर्ज भेल छ' हमरेलोकनि (?) कैल, त' थोड़ आरो कर'। कहुना सभकेँ पार लगा दहुन। बाप नहि छथिन हिनका लोकनिक······

प्रकाशकेँ ओही दिनसँ सभ नकली लाग' लागल छलैक। कहियो छोट बालक बरोँसँ उतरि लैने छल अपन घरामे, सोचने छल जे सभक भार ल' रहल अछि। बाप बाली ओकरे मुइल छथिन। बाँकी भाइ-बहिनक हेतु बाप जीवित छलैक···जीवित छैक।

मुदा माय लिखलकै—कहुना पार लगा दहुन सभकेँ। ओकरा सभक बाप नहि छैक······

ओ चिट्ठीकेँ फाड़िक' फेंकि देलकै। मुदा, फाड़बासँ पूर्व पत्नी जिद कयने छलैक—कने हमहूँ देखू चिट्ठी···'

प्रकाश चिट्ठी ओकरा नहि देलकै। फाड़िक' फेंकि देलकै। पत्नीक सन्देह पक्का भ' गेलैक—चिट्ठी ओकरे बारेमे छलैक। ओ अपन घरमे जा टिक टुवेन्टी पीबि पड़ि रहलैक।

डाक्टर अयलैक। ट्यूब लगाक' रद्द करौलकै। धीया-पुता सहमल ठाढ़ रहलैक। अगल-बगलक डेरासँ लोक हुलक' बुलक' लगलैक। किछु लोक डेरा आबि पुछारी कर' लगलैक। प्रकाश गुम्म-सुम्म बैसल रहल।

डाक्टर चल गेलैक। प्राण बाँचि गेल छलैक। डरायल-सहमल धीया-पुता दोसर कोठलीमे सुति रहलैक। भाइ-बहिन अपन कोठलीमे प्रायः सुतल छलैक। प्रकाश अपन कोठलीमे दवाइक निशासँ बेहोश जकाँ पड़लि पत्नीक बगलमे बैसल छल। सम्पूर्ण डेरामे एक टा भयावह अन्हार आ चुप्पी पसरल छलैक।

प्रकाश उठिक' कोठलीसँ बाहर बरण्डापर आयल। ओत' धीया-पुताकेँ पढ़बा लेल टेबुल-कुर्सी लागल छलैक। ओ बत्ती जरौलक आ एक बेर भीतर दिस देखलक। क्यो जागल नहि छलैक। ओ कागज-कलम ल' मायकेँ चिट्ठी लिख' लागल—

—तोँ एक दिन डेरासँ चल गेलेँ आ आइ तोहर चिट्ठी नहि पढ़' देलियनि त' कनिया जहर खा पड़लि छथि। प्राण बाँचि जयतनि। लगैत अछि जेना सभक मार्गमे हमहीँ बाधक भ' रहल छियैक। सोचने रही जे बाबन सभ भाइ अपन पयर पर ठाढ़ भ' जयताह त' दायित्वसँ मुक्त हैब। तोरा लोकनि हमरा पहिने मुक्त कर' चाहैत छेँ। हमरा बयोग्यतापर दया क' समयसँ पहिने ई भार हमरासँ हुँटब' चाहैत छेँ तोँ सभ।

अखिलक ई भार कहियो छलेने! हमहीँ सभ पर भार बनल छलियैक।

बाँट-बखराक बात हमरा कहियो बुझ'मे नहि आयल। तोँ कहने', तोरा बुझबाक काजे कोन छ'? कमाइ छ', सभटा सामर्थ्य छ', तोरा बाँट-बखरासँ की फर्क पड़तह? सत्ते, कहैत छियौक माय, बाँट-बखरासँ हमरा कोनो फर्क नहि पड़त। जाहि बखरामे तोँ हमरा दिस नहि छेँ, ताहिमे आर हमर की क्षति हैत?···'

प्रकाश आर किछु लिख' जा रहल छल, मुदा तखने क्यो ठठाक' हँसलैन—हैप्स आफ द यू चौधरी जी!'

चिट्ठीके टेबुलपर छोड़ि प्रकाश एकटक आङनमे आयल। अपार अन्हार छलैक, मुदा निचला बरण्डाक रोशनीमे ऊपरका सभ किछु देखाइत छलैक। कतहु क्यो नहि छलैक। लगलैक जेना कैप्टन साहब कोनो कोनमे ठाढ़ छथिन। जोर सँ पुछलकनि-कैप्टन साहब छी ?'

कोनो उत्तर नहि भेटलैक। ओकरा आश्चर्य भेलैक। ओ कैप्टन साहबक आवाज स्पष्ट सुनने छलनि। कहाँ चल गेलाथिन ?

ओ आङनसँ फेर बरण्डामे आयल। दैनिक' चिट्ठी कें सम्पूर्ण कर' लागल...

फेर क्यो जोरसँ हँसलैक—हैट्स आफ टु यू....'

ओ हँसी आ ओ स्वर बेर-बेर ओकर चारु कात गोंगिआय लगलैक, जेना चारुकात नाचि-नाचि, ओकर चिट्ठी पढ़ि उपहास क' रहल होइ। अवाक् भेल चारुकात निहारैत रहल जे ओ स्वर कम्हरसँ आबि रहल छलैक। मुदा, ओकरा कतहु क्यो नहि अभरलैक।

एक दिन एकटा चिट्ठी लेने कैप्टन साहब हँसैत आयल छलथिन—ए ग्रेट सरप्राइज चौधरी जी ! महानतम आश्चर्य ! आब जहाँ नहि कहि सकैत छी जे हमरा-लोकनिमे कोनो हिसाबे-किताब लेल पत्राचार होइत अछि। हमरा लोकनि खाली पट्टीदारे नहि, भैयारियो अछि ! पढ़ि लिय' चिट्ठी...'

प्रकाश चिट्ठी पढ़ने छल। कैप्टन साहेबक छोट भाइ लिखने छलथिन—आइ वर्ष दिन बाद एकाएक मोन पड़ल जे ७५ मे जे पटनामे भीषण बाढ़ि आयल रहैक, ताहिमे अहाँक इलाका सभसँ बेसी क्षतिग्रस्त छल। साल भरिसँ कोनो पत्र नहि भेटबाक कारणेँ आश्वस्त छी जे जान-मालक कोनो क्षति नहिएँ भेल हैत। तैयो एक बेर जिज्ञासा क' लेब उचित बुझाइत अछि—'

पत्र समाप्त क' प्रकाश कैप्टन साहबक मुँह देखने छलनि। हुनक ठोरपर हँसी छलनि—हमरो सभमे भैयारी अछि ! मान' पड़त चौधरीजी। डाक्टर आल वी आर ब्रदर्स...'सहोदर छी हमरा लोकनि--

आर, रातिक एहि एकान्तमे चारु कातसँ गोंगिआइत ठहक्का सभक बीचमे ओकरा कैप्टन साहबक हँसी मोन पड़लैक। आ, ओकरा लाज भ' गेलैक। चिट्ठीकें

फाड़ि दैलकै आ चिट्ठी फाड़िते ठहक्का बन्द भ' गेलैक। एकटा शान्ति पसरि गेलैक। बत्ती मिझा ओ अपन कोठलीमे आयल। आब चारुकात पसरल अन्हार भयावह नहि लगलैक। लगलैक जेना चारुकात पसरल सभ चीज फेर बदलि गेल छैक। बिछौनपर पत्नी दवाइक निशाँमे बेहोश पड़लि छलैक। दोसर-तेसर कोठलीमे धीया-पूता आ भाइ-बहिन सभ छैक। गाममे माय छैक, घर छैक... सभ किछु छैक—अपन छैक—असली छैक...'।

किछु दिन बाद प्रकाशकेँ गामसँ मायक चिट्ठी भेटलैक—२८ आ २९ अगस्तकेँ फेर सभ' घर एकत्रित भेल छैक जेना १९३४क भूकम्प बेर भेल रहैक। सभ क्यो पटनामे एकके ठाम रहिह'। एम्हर-ओम्हर नहि जइह' आ साकांक्ष भ' रहिह'...तोरे सभपर मोन अँटकल रहैत अछि...

सितम्बर, १९७९

भयाक्रांत

डाक्टर साहेब अप्रतिभ भ' गेलाह।

बहुत दिनपर भेटल छलाह! बड़ आत्मीय आ कुलाक दोस्तक पिसी! देखि क' चीन्हि नहि सकल छलाह! परिचय देला पर अवाक आ विस्मित रहि गेलाह!

अवाक आ विस्मित आरो लोक सभ होइत छथि। कतेक गोटे अविश्वास-पूर्वक चेहरा निहारैत आगू बढ़ि जाइत छथि। चीन्हियो क' रोकबाक साहस नहि करैत छथि जेना भय होनि जे कोनो अनचीन्हारकेँ आत्मीय बूझि टोकि देलाह। जे क्यो टोकैत छथि से एकटा आश्चर्य आ भय सँ युक्त चेतौनी द' जाइत छथि—की भ' रहल छी अहाँ? हम त' चीन्हियो नहि सकलहुँ। एकरा रोकू।

हम हुनकर विस्मयाहत चेतौनीकेँ हँसीमे उड़बैत कहैत छियनि—असम्भव! एकरा रोकल नहि जा सकैत अछि। एकर त' दिन दुन्ना राति चौगुन्नाक हिसाब सँ तरक्की भ' रहल छैक।

शुभचिन्तक-हितैषी अवाक मुँह ताक' लगैत छथि। हम गम्भीरता पूर्वक हुनका बुझेबाक स्वरमे कहैत छियनि—देखू। वर्तमान कालमे दुइए टा प्रमुख राष्ट्रीय समस्या अछि—बर्थ कन्ट्रोल आ गर्थ-कन्ट्रोल! एहिमे पहिल समस्या अपेक्षाकृत कम गम्भीर अछि आ राष्ट्रीय स्तर पर एकरा लेल प्रयास भ' रहल अछि। मुदा दोसर समस्या अछि भयंकर। एकर नियंत्रणक कोनो उपाय नहि।

हमर नकली गम्भीरता देखि हुनका हँसी लागि जाइत छनि मुदा तैयो ओ जाइत काल कहि जाइत छथि—एकरा हँसीमे नहि उड़बियौक, ई त' अपनाकेँ मारब भेल।

आइ सँ पाँच वर्ष पूर्व डाक्टर सिन्हा सेहो कहने छलाह। बापक चिकित्सक छलाह, बच्चेसँ बापक आँगुर पकड़ि हुनकर क्लिनिकमे जाइत रही। तहिया हुनकर क्लिनिक खाली रहैत छलनि। रोगीक संग हमरा सन छोटो-मुटाके संग गप्प क' लैत छलाह, नाम-गाम पूछि लैत छलाह। फेर ओ पैघ डाक्टर भ' गेलाह—एकदम व्यस्त। हमरा लोकनि सँ गप्प करबाक कोन कथा रोगियोसँ गप्प करबाक फुरसति नहि रहलनि। ई सभ काज जूनियर डाक्टर सभ कर' लगलनि। दवाइक पुर्जा सबके डाक्टर लिख' लगलनि। अपने ओ एक मरीजकेँ तीस सेकेण्ड टाइम दैत छथिन। सभ के एके टा सवाल—की तकलीफ अछि। मुदा ओकर जवाब सुनबासँ पूर्व दस सेकेण्ड लेल रोगीक नाड़ीपर हाथ जाइत छनि आ तावत जूनियर डाक्टर रोगीक हाल लिखल पुर्जा सामने राखि दैत छनि। ओकरा पर पाँच सेकेण्ड लेल दृष्टि दौड़ा डाक्टर साहेब दवाइक नाम बाज' लगैत छथि जकरा जूनियर डाक्टर गलत-सही उतारि लैत अछि आ डाक्टर साहेब दोसर रोगी दिस मुड़ि जाइत छथि—

"की तकलीफ अछि?"

ओइ दिन ओइ भीड़-भाड़मे मुदा डाक्टर साहेबकेँ फुरसति भेटि गेल रहनि। बापूक हालत गम्भीर रहनि मुदा डाक्टर साहेब हुनका लेल नहि, हमरा लेल चिन्तित भ' उठलाह—ह्वाट हैव यू डन न्याय? इस उम्रमे इतना ओभरवेट? विथ दिस फैमिली हिस्ट्री। डोण्ट किल योरसेल्फ।

आ डाक्टर त्रिपाठी सेहो सैह कहलनि। बहुत रास चेतौनीक बाद बजलाह—"हम तोरा दवाइ देखाक' दैत छियौक। सभ ठीक भ' जयतौक। भोरमे एकटा अण्डा आ एक गिलास दूध, दस एगारह बजेमे बिना चीनीक कॉफी, डेढ़ बजेमे एक टा रोटी आ उसनल हरियर तरकारी जतेक मोन होइ आ राति नौ बजेमे तहिना एकटा रोटी आ तरकारी! बाकीखन किछु फल फलहरी।"

हमरा हालेमे देखल एक टा फिल्मक दृश्य मोन पड़ि गेल। खूब गम्भीरता पूर्वक पुछलियनि—अहाँक ई दवाइ भोजनक बाद खायब वा भोजनक पहिने डाक्टर साहेब?

डाक्टर साहेब अप्रतिभ भ' गेलाह। मुदा भौजी त' हमरे अप्रतिभ क' देलनि।

हमरासँ पाँच बरख जेठ छथि भौजी—खूब सुन्दर आ स्वस्थ। जहिया हम पन्द्रह वर्षक रही, एक बेर बिदागरी करब' हुनकर गाम गेल रहियनि। टाँगामे

हुनकर संग विदाइक पीअर धोती पहिरि ठेंघि गेल रही। रास्तामे एकटा मुसलमान बटोही आह्लादसँ बाजल रहय—"खुदा ने खूब अच्छी जोड़ी बनायी है।" भौजी लाजा गेलि रहथि।

सेहु भौजी खूब गौर सँ हमर चेहरा देखैत बाजि उठलीह—'अहाँक चेहरा एहन श्यामर कोना भ' गेल ? केहन गोर आ कान्ति भरल आकृति रहय ?

हम अप्रतिभ भ' गेलहुँ। फेर कहुना सम्हरैत कहलियनि- फेर पीअर धोती पहिरि अहाँक संग टाँगा पर बैसब त' चेहरा चमक' लागत।"

भौजी अहू वयसमे नवकनियाँ जकाँ लजा उठलीह।

मुदा कान्ता त' जेना मर्माहत भ' गेल ! कोनो शब्दे नहि बहरेलैक मुहँसँ। नेनामे ओ हमरे टा कनियाँ बनैत छलि, कने चेतन भेला पर ताश पचीसीमे हमरे टा गोंधिया बनैत छलि आ पन्द्रहम वयसमे द्विरागमनक बाद सासुर जाइत काल हमरो कान्ह पर मूड़ी गाड़ि हिचुकि-हिचुकि क' कानलि छलि ओ बाल संगी।

पच्चीस वर्षक अन्तराल पर ओहि बेर गाममे देखलियैक। एकदम बदलल। ने ओ रूप, ने ओ देहक कान्ति ! मुदा एतेक वर्षक बाद अपन बाल संगीकेँ देखि अपूर्व आनन्द भेल। झट आगाँ बढ़ि टोकलियैक—"कहिया अयलैं कान्ता ?'

ओ डरा क' पाछाँ हटि गेल। जेना कोनो भूत-प्रेत देखि लेने हो। आँखिमे पहिने आश्चर्य आ फेर एकटा घनीभूत पीड़ा पसरि गेलैक— तों पुलक .... तोंही छें............?

—"तोंही छें' मे निहित विस्मय आ पीड़ा हमरा भीतर धरि हिला देलक। आगू किछु पूछय सम्भव नहि भेल। ओकर आँखि दिस देखबाक साहस फेर नहि भेल जाहिमे एकटा खण्डित स्वप्नक पीड़ा छटपटा क' घनीभूत भ' गेल छलैक। जाय लागल त' बकार फूटल—"अखन किछु दिन रहबें ने गाममे ?"

मुदा से प्रायः ओ नहि सुनलक। प्रायः सुनियो क' जवाब नहि देलक। चुपचाप चल जाइत रहलि। एक्को बेर पलटि क' पाछाँ नहि तकलक। हमर पैर सेहो ओतहि जमीनमे गड़ल रहल। अपन पच्चीस वर्षक विवाहित जीवनमे अनेक बेर नैहर आयलि छलि। प्रत्येक बेर हमर आँगनमे मायसँ अनुरोध क' जाइत छलैक आ प्रत्येक बेर सासुर जाइत काल आय लग हमरासँ भेंट नहि हेबाक कचोट

बखानि जाइत छलैक। मुदा पच्चीस वर्षपर भेंट भेल त' ठोर सिया गेलैक आ चेहरा भयाक्रांत भ' उठलैक जेना भूत प्रेत देखने हो।

कोनो-कोनो चीज लोकके बड़ जल्दी आक्रान्त करैत छैक—जेना कोनो मोहक व्यक्तित्वक जादू। ओकर जादूसँ ओहि दिन 'भाभी' आक्रान्त भेल छलीह। पहिले बेर भेंट भेल छलनि। केहन-केहन गप्प सुनौलकनि आ केहन उन्मुक्त ठहाका लगौलकनि मनोज जे भाभी मुग्ध भ' उठलीह। हमरे संग गेल छल मनोज। औपचारिक परिचयक बाद दस पन्द्रह मिनट ठहरल हैत आ ओही बीच चाय-पानक क्रममे बहुत रास गप्प सुना देलकनि। ओकर जाइतहि भाभी अपन पति वर्माजी बजलीह— देखै छियै, अहाँक वयसक त' छथि। मुदा चुस्ती आ चेहरा क' दीप्ति देखियौक। आ अहाँ लोकनि ... ... अही वयसमे एतेक टा पसरल पेट आ निस्तेज चेहरा.........।

त' हमर चेहरा पर दृष्टि गेलनि। बात सम्हारैत 'बजलीह'—"अहाँक बात नहि कहैत छी भाइ साहब ! अहाँ त' एतेक भारी देह होइतो कतेक स्फूर्तिवान छी मुदा हिनका देखियनु.........। हरदम अलसायल.........एकद छिरा बिच टमों।

आ फेर अपन बातकेँ आर्थिक पक्षसँ जोड़ैत बजलीह—'असल बात छैक आर्थिक सुविधा। खाली नोकरी आ दरमाहावाला चेहरा पर ई दीप्ति आबिये नहि सकैत छैक। एहि लेल चाहियैक...... —आ कि नहि भाइ साहब ?

अपन बातक चोटकेँ हल्लुक करबाक भाभीक प्रयासमे सहयोग दैत नाटकीय हम मुद्रामे कहलियनि—'असल चीज छैक भाभी, चिन्ता। एकरासँ चितासँ भयंकर बेसी छैक।' आ फेर फारसी थियेटरक अन्दाजमे कहलियनि—

"चिता हम उसको कहते है जो मुर्दे को जलाती है
बड़ी है इसलिए चिन्ता कि जिंदे को जलाती है।"

हमर मुद्रा देखि भाभी ठठाक' हँसलीह। वर्माजी मनहुआयल आकृति पर सेहो एकर असरि भेलैक। मुदा भाभी अपन हँसी रोकि बजलीह—'ई बात झूठ भाइ साहब। अहाँकेँ त' कखनो चिन्तित नहि देखैत छी। हरदम प्रसन्न आ चिन्ता मुक्त। हिनकर बात दोसर छनि।" हम ओहिना नाटकीय मुद्रामे कहलियनि— "छ्यूजब भाभी—बड़का भ्रम। ई त' भेल एकटा नकली चेहरा......दुनियाकेँ"

देखाब' लेल······अपनाके बहुटाक लेल······ऐ चेहराक पाछाँ नुकायल चेहराकें देखू भाभी············।

हमर अभिनय पर ओमी नीक जकाँ हँसैत छथि··· अहाँ त' बढ़िया नाटक क' लैत छी भाइ साहब।

झूठ ! एकदम झूठ ! भाभी झूठ बाजलि रहथि ओहि दिन। कहाँ कोनो नाटक पार लगैत अछि हमरा सँ··· कहिओ, कोनो दिन पार नहि लगैत अछि। सभ किछु ओहिना आकृति पर लिखा जाइत अछि। पत्नी अनेक बेर कहि चुकल छथि—'अहाँ झूठ बजैत छी अहाँ। अहाँक त' चेहरा कहि रहल अछि।

पकड़ैत छथि सभ सँ पहिने कका······बड़का कका ! सुतली रातिक निस्तब्धतामे आबि सिरमामे बैसि जाइत छथि—चिन्तित आ उद्विग्न। कनेक फुसफुसा क' कहैत छथि ''एकटा विचित्र बात सुनलहुँ अछि बाउ। तहिया सँ मोन चिन्तित अछि। ओना विश्वास नहि भेल मुदा नीलकंठ कहलनि···तेँ झूठो मान' मे कोनादन लागल। एहि बूढ़ बयस मे झूठ बजताह ओ ?

हम उठि क' ओसीस कने उत्सुकता सँ पुछलियनि—एहन कोन बात छैक कका ?

कका आरो फुसफुसा क' बजलाह—''सुनलहुँ अछि जे तोरा बड़ बेसी कर्ज भ' गेल छौ'। सुनिक' विश्वास नहि भेल। एतेक कमाइ छ', गाड़ी-घोड़ा रखैत छ', ताहि पर कथीहुँ कर्ज ?

झूठ ! एकदम झूठ। भाभी झूठ बाजलि छलीह। नाटक हमरा बुते नहि पार लागत ? हम ककाक विश्वासक रक्षा लेल अपन सम्पन्नताक नाटक नहि क' सकैत छी। कहैत छियनि- 'कहुने त' ठीके छलाह नीलकंठ कका !

ककाक आकृति पर पसरल आश्चर्य आ भयक भाव रातुक अन्हारोमे पढ़ल जा सकैत छल। बड़ीकाल कका स्तब्ध बैसल रहलाह आ फेर उठि क' आस्ते आस्ते अपना कोठली दिस जाइत जेना अपनहिँसँ बाजि उठलाह—मुदा एतेक बेसी कर्ज ! इ सधत कोना ?

कीनाक जबाब हमरो लग नहि छल ! मुदा जे सत्य छलैक तकरा झुकयबाक नाटक कका सँ करब पार नहि लागल ! कका एक तरहेँ सन्यासी छथि ! काकी

आइ सँ पैंतालिस वर्ष पूर्व संसार छोड़लनि ! कका एकसर छथि—निर्लिप्त, एक तरहेँ संसारक चिन्ता सँ मुक्त। हुनको एकटा सूचना सँ चिन्ता भेलनि आ हुनकर चिन्ता केँ मिटा देब' लेल सम्पन्नताक नाटक करब पार नहि लागल।

माय केँ त' चुप्पो करब पार नहि लागल। ओ कका जकाँ लग बैसि अपनामे बुदबुदाइत नहि चल गेल, सामने बैसि जोर सँ कान' लागल। ओकरा कर्जक गप्प नहि बुझाउ छलै से बात नहि। मुदा गामक लोक ई बात कहैक से बर्दाश्त नहि छलैक। कानैत कनैत बाजलि—सभ त' इएह ने कहत जे हमरे लोकनि द्वारे एना कर्जमे फँसल छ' ! अनेरो सभक लग एकर खिस्सा पसारला सँ लाभ ?

झूठ ! एकदम झूठ ! भाभी आबो झूठे बाजलि छलीह। नाटक किछु हमरा बुते पार नहि लागल। माय केँ चुप्प करबा लेल अपन सम्पन्नताक स्वांग करब संभव नहि भेल। हम ककरो, किछु कहने नहि छलियैक, मुदा जे स्थिति छल तकरा झाँपबाक नाटक हमरा निष्प्रयोजन लगैत छल, आइयो लगैत अछि। आ भाभी कहने छलीह—अहाँ त' खूब नाटक क' लैत छी भाइ-साहब।

कार्यालयक कोनो-कोनो आत्मीय कहियो कहियो काल नितान्त अपनैती आ व्यावहारिक बुद्धि देखबैत कहि बैसैत छथि— अहाँ केँ बोन्न कोना होइत अछि, पुलक बाबू ? एतेक रास कर्ज माथ पर तखन, एतेक प्रसन्न आ चिन्तामुक्त। हमरा त' बेटीक विवाह मे अपन जमाक अतिरिक्त पाँच हजार कर्ज भ' गेल अछि, से दिन-राति माथ टनकैत रहैए। परिवार अहाँक पैघ अछि, मानलहुँ। मुदा खर्च त' अपन ओकातिएक मुताबिक करक चाही।

कहीं औकातिक बात पर खिसिया ने जाइ, तेँ कनेकाल हमर मुँह देखि कहैत छथि—''ओना अहाँ सब तरहेँ समर्थ छी, अहाँ लेल एतेक कर्ज किछु नहि अछि ! मुदा तैओ अपन बुझि कहलहुँ, बुधियार लोक समय सँ पहिने चेति जाइत अछि।

तकलेल त' हमहुँ नहि छलहुँ कहियो। मुदा ई बुधियारी बला गप्प कहियो नहि बुझ' मे आयल ? आइयो नहि अबैत अछि। पत्नी दिन-राति कनैत छथि, अपन भाग्य केँ कोसैत छथि, हमर असमर्थताक विद्रूप करैत छथि, मुदा बुधियारी हमरा नहि सुझाइत अछि। हम किछु कहु' चाहैत छियनि त' चिकरि क' बाजि उठैत छथि—बस करू आब ! हमरा देखा लेल आर बछिये की अहाँ लग—मात्र

एकटा उपदेश, गनहु वर्ष सँ ओकरे घोरि क' पिबा रहल छी। हम त' बैहु पोथ सन्तोष क' लेलहुँ। मुदा ई अबोध नेना सब, ई विवाह ओगरि बेटी आ ई दूध पिबुआ बेटा। एकर भविष्य की हेतैक ?

हम हुनका परबोध' लेल किछु कहऽ चाहैत छियनि मुदा ओ हमरा तकर मौका नहि दैत छथि। ओहिना उच्च-स्वरमे बकने चल जाइत छथि—"असलमे अहाँ सन लोककेँ विवाहे नहि कर' चाही। सभटा झंझटक मूल। आ अहाँ के अखनो कोन झंझट अछि। बिछौन पर पड़ैत देरी चैन सँ फोंफ काट' लगैत छी आ हम सब राति अन्हारमे जागलि, एकसरि भविष्यक आशंकासँ थरथराइत रहैत छी।

पत्नीक एहि आक्रमणसँ अपन आत्मामे उत्पन्न सिहरन केँ दबबैत हम किछु कहऽ चाहैत छियनि मुदा ओ ओहिना क्रोधावेश मे बड़बड़ैने जाइत छथि—"आब कोनो दोसर उपाय नहि। अहाँ कायर छी। आब एकेटा उपाय रहि गेल अछि, एक दिन सभी नेन्ना केँ गरदनि दाबि अपनो फाँसी लगा लैब। सभटा झंझट एक्केबेर चैन।"

पत्नीक बढ़ आक्रमणसँ हमर शरीरक शोणित जमि जाइत अछि। पत्नीक आँखिमे एकटा आहत हिंसक भाव छनि। ओइ सँ हमरो डर लगैत अछि। ओ कनैत पड़ि रहैत छथि। पड़ले रहैत छथि। प्राय: नीन्न भ' जाइत छनि।

हम चुप्प भेल बैसल रहैत छी। लगैत अछि जेना एहने क्षणमे पुरुषक मौन मे हुधियारी जन्म लैत छैक।

हुधियारीक जन्मक आशंकामे हम राति भरि जगले रहि जाइत छी।

आ प्राय: बहुत वर्ष पर पत्नी भरि राति निश्चिन्त सुतैत छथि। ●

अगस्त, १९८०

नवम दशकक कथा : प्रभासक

- एकालाप
- इन्द्रधनुष
- स्थानान्तरण
- बजन्ताक पोता
- विकलांग
- बाढ़ि
- रक्षक

एकालाप

ओ चिट्ठी डेरामे मनोरंजनक वस्तु बनि गेल छल।

ओना कोनो चिट्ठीमे एहन किछु नहि छलैक जकरा मनोरंजनक वस्तु मानल जाय! पोस्टकार्डमे लिखल चिट्ठी! खूब गजल-गजल घुमा-घुमा क' लिखल आखर! टेढ़-मेढ़ मुदा दूरसँ देखबामे बेस सुन्नर। असल मनोरंजन पोस्टकार्ड हाथमे लेलाक बाद शुरू होइत छैक! ऊपरसँ नीचाँ धरि एकको आखर पढ़ि सकब सम्भव नहि। ककरो थाह-पता नहि लगैत छैक जे ककर चिट्ठी थिकैक! होइत छैक जे कयो मजाकमे एहन पोस्टकार्ड पठा देने अछि। साँझखन आफिससँ डेरा अयला पर ओ पोस्टकार्ड हमरो हाथमे अबैत अछि! बड़की बेटी ओ चिट्ठी हाथमे दैत कहैत अछि—"अहाँक लेटर पप्पा,!" आ मुसकिया उठैत अछि। घर भरिक लोकक ठोरपर मुस्की! हमरा किछु आश्चर्य होइत अछि! पोस्टकार्ड पढ़बाक चेष्टा करैत छी! एकको आखर पढ़ल नहि होइत अछि! पलटि क' पता देखैत छियैक—कोनो दोसर हाथक अंग्रेजीमे साफ साफ लिखल पता! चिट्ठी हमरे छल—एहिमे कोनो सन्देह नहि! मुदा ककर?

दोबारा-तेबारा पढ़बाक चेष्टा कयलो पर ने एकको अक्षर पढ़ल सम्भव होइत अछि, ने कोनो अन्दाजे लगैत अछि जे ककर चिट्ठी छैक! हमर हालति देखि घर भरिक लोक ठिठिआय लगैत अछि! हमहूँ खिसिआयल सन हँसैत छी। मोनमे एकटा चिन्ता पसरि जाइत अछि - नहि जानि ककर चिट्ठी थिकैक?

चिट्ठी हमर हाथसँ छिना हाथे-हाथ घूम' लगैत अछि। सभ अपन-अपन अटकरसँ किछु ऊटपटाँग सन पढ़ैत अछि आ डेरामे ठहक्का पर ठहक्का छूट' लगैत अछि! हम कपड़ा-लत्ता बदलि जहिना ड्राइंग रूममे आबि बैसैत छी कि सामने टाँगल 'दादा' (हमर पिता)क फोटो पर दृष्टि जाइत अछि आ सभटा अन्हार फाटि जाइत अछि!

एकटा पुर्जी हाथमे लेने दादा धड़फड़ायल आँगनमे अबैत छथि! गाय भैंसाकरे बाजल अछि! दादा सभ आ कहैत छथिन—"सुनै छी, ककरो बाइये

ओरउठ पठब' पड़त ! सावीक चिट्ठी आयल अछि ! पंडीजी आयल छथि सौराठसँ !"

माय कोनो उत्तर नहि दैत छथि । दादा ओइ ठामसँ हटि आंगनक बीचमे आबि जाइत छथि ! ओइ पुर्जीकेँ एक-दू बेर फेर उनटबैत छथि आ एकटा स्नेहपूर्ण मौआहटि हुनकर आकृति पर पसरि जाइत छनि—"की लिखैत छथि सावी से बिन अन्दाज कयने बूझबे मुश्किल !

एहने स्नेहपूर्ण वत्सल हँसी हम बहुत बादोमे दादाक आकृतिपर अमू दाइ (हमर छोट बहिन)क चिट्ठी अयला पर देखैत छलियनि—"अमू त' सावीक दोसराइत छथि । बिन अन्दाज कयने एकनो आखर बूझब मुश्किल !

तखटा अन्हार फाटि जाइत अछि ! हम लपकि क' ओ पोस्टकार्ड छीनि लैत छियैक ! सावी पीसीक चिट्ठी ! तखटा अक्षर स्पष्ट होमऽ लगैत अछि—

चि० हृदयकेँ पीसतीक तरफसँ आशीर्वाद ! आगाँ समाचार जे......

छोट रही त' बड़ आश्चर्य होअय ! आँगनमे जखन साँझक झलकल अन्हार पसरि जाइ, घरे घर लालटेन डिबिया लेसा जाइ आ हम खेला धूपा क' अपन आँगन घूरि आबी त' कखनो माय वा कखनो दादीकेँ देखियैक जे हमर कोनो भाइ वा बहिनकेँ कोरामे सुता दीप लेसा रहल छैक ! कोरामे तेल लूड़ देल कखनो सूतल, कखनो नीन्दि मिलमिलबैत बच्चा आ दादीक हाथमे ऊपर नीचाँ घूमैत जरैत दीप ! ओ दृश्य हमरा बड़ अद्भुत लागय ! दादीक आँखिमे ममता आ पहपटाइत ठोर—माय मामु सावी पीसी, देखनिहारि... आजी पीसी केँ हम सावी पीसी सुनि लैत छलियैक ।

हमरा बहु बालक आश्चर्य होअए जे दादी सभ दिन सावित्री पीसीक नाम किएक लैत छनि ! फेर अपने मोनसँ उत्तर तानि ली जे पीसी त' हमरा एकेटा छथि, आर ककर नाम लेतैक दादी ! मुदा कोनो साँझ खेलाइत-धोआइत साँझ भेलोपर यदि कोनो आने आँगनमे रहि जाइ त' ओतहु वैह दृश्य देखियैक । कहियो अरवक दादी त' कहियो चुन्नीक दादी ! हुनको हाथमे ओहिना घूमैत बारल दीप आ पटपटाइत ठोर—"माय बापू सावी पीसी, देखनाहरि सुननाहरि...—

तखन हमरा लागय जे सावी पीसीकेँ सभ बड़ मानैत छनि—अप्पन दादी, शारदा दादी, चुन्नीक दादी ! सभ हुनके नाम लैत छनि । कतेक मानैत छनि सभ हुनका ।

दादी कहैक, बापो बड़ मानैत छलथिन सावीकेँ ! सावित्री नाम छलथिन । बड़का जमींदार छलाह, आ ओहूसँ बड़का छलथि हुनकर रोब-दाब ! धीयो पुता सभ डेरायले रहैत छलनि, डरे लगो ने जाइत छलनि ! मुदा सावी छलीह छोटकी बेटी—बापक बड़ दुलारु ।

दादीक बात पर बड़की दादीकेँ लेसि दैति—"देहु मे आगि नै लगाबह दे मुमानी ! केहन मानैत छलथिन से त' सभ देखिते छनि ! अपन सातो सन्तानक लेल सभ दिन छिछिआइते रहैत छथि !

अपन जेठ बहिनकेँ दादी कोनो उत्तर नहि दैत छलैक ! ओहुना कठोर बात कहब ओकर स्वभावे नहि छलैक आ बड़की दादी त' अपने जेठ बहिन छलैक, सेहो बाल विधवा ! सातमे वर्षमे जखन स्वामी संसार छोड़ि देलथिन, त' बड़की दादीकेँ सासुरो छूटि गेलैक ! बाप रहथिन दरिद्र भलमानुस आ छोटकी बहिनकेँ रहैक बड़का जमींदारी ! बड़की दादी छोट बहिनक संग ओकरे सासुर चल आयलि । जिनगी बिता देलक !

ओकरा मोनमे जागि रहैक अपन पहाड़ सन एकसरुआ जिनगीक अजित एकमात्र पूँजी ! जखन तखन ओ धधकि उठैत छलैक ! दादी जखन सावी पीसीक बापक दुलारक हेबाक बात कहैक, बड़की दादी एहिना धधकि उठैक ! दादी बुझबैत कहैक —"एना नहि बाज' ठकनि ! बापक दुलारू अवस्से छलीह सावी ! ओहुना कोनो बाप, कोनो गरीबो बाप जानि बूझि क' अपन बेटीक गरदनि कटैत अछि ? हुनका जाति-पाँतिमे, उच्च कुल-शीलमे बेटा-बेटी बिआहबाक बड़ सोझ रहनि । कहुन से नक्षा रहनि । सभ बेटीकेँ तहिना बिआहलनि । बड़की दुनू भागमन्त छथीह, नाना-सन्तति भेलनि आ स्वामीक अछैत संसारसँ गेलीह । सावीकेँ कोनो जन्मक पापक फल छनि, भोगि रहलि छथि !"

दादीक ई तर्क बड़की दादी नहि मानैक ! कोनो बार कठोर बात कहैक मुदा ओ नहि सुनैक ! दादी जिद्द बेसी ऊँच सुनै । किछु नहि, खूब बेसी ऊँच । बड़की दादी अपन बात फेर दोहरबैक मुदा दादी तैयो ने किछु सुनैक । बड़की दादी लोहछि क' कहैक—"कपार तोरा कहिय', तोहर त' काने बहिर छ'— —

आ ई दृश्य देखि आ दुनू बहिनक प्रेमालाप सुनि घर भरिक लोक खूब हँसैत छल !

ओह दिन मुदा सभक आँखिमे नोर भरि गेल छलैक ! दादाक आँखिमे नोर, बड़का काकाक आँखिमे थरथराइत पानि। बड़की दादी आ मायक आँखिमे दहो-बहो नोर ! खाली दादी आशंकित-अपस्यांत, सभ लग दौड़ैत ! पहिने अपन बहिनकें नेहोरा कयलका—"कने हमरा कहु' ने हे ठकनि ? एना सभ गयो कनैत किएक छ' ?"

बड़की दादी कोनो जवाब नहि देलकै ! दादी अपन छोटका बेटा लग गेलि —"तों कहु' मद्दू ! की बात छैक ?"

दादा ओकरा टारैत कहैत छथिन—"कहबौ बादमे ! तों चैन सँ बैस ने !

दादीकें मुदा चैन नहि ! ओ बड़का बेटा लग गेलि— तोंही कहु' ने लोचू ! की भेलैक अछि ?

बड़का काका किछु कहबाक चेष्टा करैत छथि ! ठोर थरथराइत छनि मुदा एक्को शब्द नहि बहराइत छनि ! ओ ओत'सँ बाहर दलानमे चल जाइत छथि ! कोनो आशंका दादीक मोनकें दलमलित कर' लगैत छैक ! ओ हमर माय लग जाइत अछि—"आब हम नहि मानब जसमन्ती दहुरिया ! एना सभ कयो मिलि क' हमर जान नहि लिय' ! कहु हमरा जे की भेल अछि···—

माय आँखिक नोर पोछि कहैत छैक —"सौराठ सँ आदमी आयल छैक ! मौसर—···"

दादी चीत्कार नहि करैत अछि ! अपन कोठलीक माटिपर पड़ि रहैत अछि ! ने आँखिमे नोर, ने ठोर पर कोनो शब्द ! भोरसँ साँझ होइत छैक, साँझसँ प्रात ! दादी ओहिना पड़लि रहि जाइत अछि। बड़की दादी बेर-बेर लग आ कहैत छै —"आब उठह, साहस करह सुभागी !"

दादीक शरीरमे कोनो स्पन्दन नहि ! बड़की दादी बेर-बेर देह डोला बाकि क' ओतहि बैसि अपने कान' लगैत अछि। दादा कतेक बेर लग जा कहि अबैत छथिन —"उठ माय ! एना कयलासँ गेनिहार घुरि औथुन ?" दादी तैयो ओहिना निशब्द पड़लि रहैत अछि। बड़का काका बेर-बेर ओकर कोठली मे जाइत छथि मुदा बिन टोकने घुरि अबैत छथि !

तेसर दिन सौराठवला पंडा अबैत छथि - पंडीजी ! गामक हाट स्कूलमे हेड पंडित छथि ! दादाक पितिऔत बहिनक वर आ पीसाक पितिऔत भाइ। पिउसी पीसी सेहो ओही घरमे विआहलि छथि ! तहिआ आबल छनि ! जनाबक अबइ क बात सुनि दादी झट उठि बैसैत अछि। धोती सँ नोक जका देह-हाथ आरि लैत अछि, आँचर कने मुँहपर घीचि लैत अछि ! पंडीजी बड़ी काल धरि समटा बात कहैत छथिन ! दादी चुपचाप सुनैत अछि, देहो ने हिलैत छैक ! पंडीजी उठिक' बाहर जाइत छथि आ दादीक आर्तनाद घर-आँगनमे पसरि जाइत अछि—"सावी हे सावी ! कोना आब पहाड़ सन जिनगी कटतह हे सावी ···—

× × × × ×

जिनगी त' कटिए जाइत छैक—एना वा ओना। हँसी-खुशीक समयक पयरमे बिहाड़ि रहैत छैक आ दुखक दिनक पयरमे बान्हल जांत ! जांत नहि, पहाड़। मुदा ओहो कटि जाइत छैक ! सावित्रियो पीसीक दिन कट' लागल छलनि जेना सभक कटैत छैक !

सावित्री नाम दैत छलथिन बाप मुदा यमसँ स्वामीक जिनगी घुराक' नहि आनि सकली ! सतीत्वमे, तपमे कोनो कमी नहि छलनि ! भरिसक यावित्रिएक बात ठीक छलैक ! कोनो जन्मक जुड़लाहा छलनि। मनुक्ख लग एकर हिसाब-किताब ककरा भेटतैक।

भोला मिसर (हुमरणीया) लग सेहो हिसाब-किताब नहि छलनि ! नहि बूझल छलनि जे एतेक जल्दी चल जयताह। भूमिहीन नहि छलाह ओ ! गरीबीमे गुजर कर' ओसर, दू मालिक राम-सालक ओरिआन छलनि अपना घरमे ! सासुरसँ जखन-तखन किछु ने किछु आबिए जाइत छलनि। कोनो चिन्ता फिकिर नहि छलनि ! फेर सात टा सन्तान भेलनि ! पहिल दूनू बेटी-मंजुल आ संजुल ! तखन जोड़ा बेटा शीत आ बसन्त ! फेर एकटा बेटा हेमन्त। छोटकी बेटी सुफला आ छोटका बेटा पहुरन ! बेस शिकस्त होम' लगलनि। धीया-पुता अधिक काल मातृकेमे रह' लगलनि !

सासुरो बेस भारी छलाह आ कदकाठी सेहो छोट छीन ! मुदा प्रतिष्ठा खूब ! स्वाभिमानी आ दुखसह लोक ! धारिटा लोक दरबज्जापर अबिते छलनि, अपने बिन खौने नहि जाइत छलाह कतहु' ! सासुरो नहि ! ओना सासुरसँ अधिक काल बजाहटि अबिते रहैत छलनि !

हमरा पीसा खूब मोन छथि। मानितो खूब छलाह हमरा ! जतबा दिन सासुरमे रहथि, बड़का काकाक संग कहियो घार आ कहियो पोखरिमे बंसी खेलाथि ! बड़का कक्काकेँ रहनि घिरनीवला बंसी आ पीसाकेँ हथलग्गी ! सेर-दू सेरक रहुकेँ छीपि क' उपर फेकि दैत छलथिन पीसा ! बड़का कका जकाँ आधा सेरक रहुकेँ पानिमे खेलबैत नहि छलथिन ! माछ पकड़'मे आ दौड़िक' ओकरा अँगना पहुँचाब'मे हमरा बड़ मोन लगैत छल।

पीसियो अधिक काल नैहरेमे रहैत छलीह ! हमरा खूब मानैत छलीह ! ओना सब छोट नेनाकेँ ओ बड़ मानैत छलथिन, आइयो मानैत छथिन ! ककरो कोराक नेना होइ, सावी पीसीक कोरामे द' निश्चिन्त भ' जाइ। तेल-फूड़ द एना मस्मा क' सुता देथिन जे भरि दिन लेल आ निश्चिन्त भ' जाइ, निलकाक माय निश्चिन्त ! हमरा जाड़ मासमे अखनो दम फूलवला बीमारी तंग करैत अछि ! गलामे निरन्तर कुचकुची ! ओकासी करैत करैत आँजर-पाँजरमे दर्द ! कोनो दवाइ, कोनो उपचार नहि सुनत ! दमा नहि, एकदम बहिरा ओकासी ! कोनो दवाइ, कोनो उपचार नहि सुनत ! दमा नहि, एकदम बहिरा ओकासी ! एक बेर खूब पैघ भेलाबर, ब्रोंकोलिया नहि ! मात्र एलर्जी ! डंडासँ एलर्जी ! सावी पीसी नौकरी शुरू कयलाक बाद, बड़ी ओकासीसँ छटपट करैत गामपर रही। सावी पीसी सेहो आयलि रहथि ! आँगनमे कोनो काज रहैक ! हमरा ओना कष्टसँ छटपटाइत देखलनि त' मायकेँ दस हजार भंजन कयलथिन—"रहि गेलहुँ अहूँ बेतियाक बागड़े ! नेना एना ओकासीसँ जान द' रहल अछि आ अहाँ भड़ार-भंसामे बुधियारी देखा रहल छी !"

आ झट गाय घी, आ बाटीमे गनुतेल ल' एकटा मटकूरमे आगि पजारि ओहि पर गरम कैरा लेल हमर बिछौन लग राखि लगमे बैसि गेलीह ! जाड़ मास रहैक, गुराइ ओढ़ने रही ! तैयो ओकासी करैत करैत घामसँ तर-बतर रही ! ओढ़ी गुराइ तरमे हाथ दैत-पीसा छातीसँ तरवा धरि तेहुन मालिश आ ततेक काल धरि करैत रहलीह जे पते ने लागल जे कखन पपनी बन्द भेल आ कखन प्राप्त भेल ! पीसीक ममत्व भरल स्पर्शक उष्णतामे राति कटि गेल !

पीसीक ई ममता सब ठाम एक रंग नहि रहैत छनि ! ककरो ककरो पर गलती वा बिना गलती कयनो ओ अतिशय कठोर भ' सकैत छथि ! हमर माय खूब काजुलि आ बोध-व्यवहार बुझ' गुझ'मे सामने बेस गामी, दुखित-सुखितक

परिचयामे अद्वितीय आ धीयापुता लेल ... सावी मुदा पीसीक आगाँ ओ ... आ अकछेल बनि जाइत अछि। आगन कयो कतबो नीक जकाँ नीपि देक, ... अवस्से डेंटथिन मायकेँ— "नीहुन अलूरि अपने छी, तेहने राड़िनो रखने छी !" आ झट अपने हाथे नेना नीपि बहार' देथिन जे अँगना अकबाका छहैक ! माय अपना मोन कुजरनो सबसँ नीक जकाँ मोल-मोलाइ क' बेचा द' क' तरकारी किनय, पीसी अवस्से डेंटथिन—मुफ्तक भेटल अछि, खूब लुटबैत छी ! दोबर दैत, डजोड़मे आनि गेलिऐक !

सावी पीसीक बात पर मायकेँ कहियो क्रोध नहि होइक। एककेटा ननदि, सेहो समवयस्क। देयादनी केँ देखने न कयलक। ओकर विवाहसँ पूर्व भूकम्पमे बहैत मकानमे आपन जेठ बेटाक संग दबा गेलीह। विधुर ससुर आ हुनक बेटा-बेटी। विकता सासु आ हुनकर जेठ बहिन, दूटा स्वर्गीया ननदिक धीयापुता आ एकटा ननदि छोटकी ! सावी पीसी ! सावी पीसीक बात पर कहियो तमसाइत नहि देखलिऐक मायकेँ !

सावी पीसी मुदा मायकेँ कोनो गलती वा असावधानी पर खूब फज्झति करैत छलथिन आ अन्तमे कहैत छलथिन—"कप्पार देखू अपन ! केहन दरिद्रक बेटी आ कत' राज करैत छी ! आ हमरा देखू ! कपार बेटी आ कोना रहैत छी···"

× × × × +

सावी पीसी कोना रहैत छलीह—हम देखने छलियनि !

हुनकर बापक जिनगीमे नहि ! बाबा हमर जन्मसँ पूर्वे मरल छलाह ! कतेक दुलारू छलीह सावी पीसी बापक, से बाबी कहैत छथि ! हम देखने नहि छलियनि !

देखने छलियनि सावी पीसीकेँ ! सब दिन एकके रंग ! सधवा रहथि त' पाड़िवाला साड़ी पहिरथि, रंगि क' ! विधवा भेलीह त' कोरा, छोटी पहिर' लगली ! आर कोनो वस्त्र ने तहिया पहिरैत देखलियनि, ने आब देखैत छियनि ! ओढ़नामे सब दिन एकटा सूती मलगा ! सूतबो काल ओकरे ओढ़ि लेथि ! जाड़-गरमी-बरखा-सबमे। जाधरि बाबी जीवैत छलि, बाबी-बड़की काकीक संग उत्तरवरिया फूसक कोठलीमे कलहु माटि पर आ पटिया बिछा सूति रहैत छलीह। हाथमे सदिखन एकटा बिअनि। नोओमे अनवरत घुमैत—माय बेटी दुहूक हाथमे।

माय-बेटीमे बस यैह टा साम्य । आर सब किछु विपरीत । रूपरंग-स्वभाव कथुमे मेल नहि । बाबी जतबे शान्त, पीसी ततबे तमसाहि, बाबी जतबे कारी, पीसी ओतबे गोरि । बाप पर गेल छलीह । स्वभावो हुनके सन छलनि । मुँह कान सेहो खूब निखरल । बादमे समय बितला पर आकुलित झलकैत रंग आ निखरल मुँह-कान चाम ओकचला सँ रुक्ष आ आकर्षणहीन भ' गेल छलनि ।

पीसी कोना रहैत छलीह-से हम हुनकर सासुरोमे आ क' देखि आयल रहियनि ! कोनो उपनयन रहनि आंगनमे ! माय नहि जा सकलि । हमरा पठा देलक ! हाइ स्कूलमे पढ़ैत रही तहिया मुदा देह दशा सँ बेस चेतन सन लागी !

सखिया आंगन रहनि पीसीक । चारू कात चारूभाइक एक-एकटा फूसक घर । दू टा सहोदर आ दू टा पितयौत, एक्के आंगनमे । सभक घरमे दू टाक कोठली । टाटके माटि सँ लेबल । चार पर खड़ । एकटा घरक बदला पुआर । तीनू कोनटामे तीनू गोटेक फूसक छोटछीन भंसा घर । चारिम कोनटाबाटे दलान पर जयबाक रस्ता । ओही दुरखा लग एकटा कटहरक आ एकटा लतामक गाछ । पीसीक घर दक्षिणवारी कात रहनि आ भंसा घर दक्षिणवारी-पछवारी कोनटा मे । दक्षिणवारी-पुबारी कोनटा बाटे दलानक रस्ता रहैक । सभसँ छोट भाइ रहथि पछवारी कात । हुनका भंसा घर नहि । अपन घरेक ओसारा पर भनसा होनि । हुनका दलानो ने रहनि । अपने घरक पछुआरमे जे ओसारा रहनि दू हाथ चौड़ा आ दस हाथ लम्बा । यैह दलान रहनि । बाकी तीनू भाइक दलान आंगनाक मुँहथरि सँ आगू, पोखरिक मोहार पर रहनि । सभ सँ पहिने पंडीजी, तखन पीसा आ तकर बाद सभसँ जेठभाइ । सभक दलान पर करचीक टाट आ एकटा क' कटहरक गाछ । पीसीक दलानपर एकटा फूसेक घर दक्षिणवारी कात सँ, माल जाल हेतु । एकटा गाय आ एकटा बाछी । पूब मुँहे दलान आ आगूमे बेस पैघ पोखरि । दक्षिणवारी पछवारी कोन पर दुर्गास्थान । पीसीक सासुर हमरा नीक लागल छल ।

ओहुना नीक लागल छल ओहि आंगनक लोकसभ । चारू आंगनमे चारिटा पीसी, एकटा भाउजि, आ बहुत रास भाइ-बहिन । सभक स्नेहपूर्ण आत्मीय व्यवहारमे अतिशय अपनत्व । हम ओहि बेर बहुत दिनधरि रहि गेल रही पीसीक सासुरमे । ततेक दिनधरि जे गामक बहुत रास स्त्रीगण सभ हमरो सासुरक इन्तजाममे लागि गेलि रहथि ।

ओहि उपनयनक आंगन मे एकटा सुन्दर सन छौंड़ी सेहो आयलि छलि ! ओ जखन हमरा लगमे ठाढ़ होइथ, कोनोने कोनो स्त्री बाजि उठथि—"खूब फबै छनि ओही ! बिआह होइतनि त' बड़ नीक लगितनि !

पीसी ओना बहीर छथि मुदा ई बात झट सुनि लेत छलथिन आ ओहि स्त्रीगण पर ललकि उठैत छलथिन— "दुर बाउ ! बहुँक मतिहरण भ' गेल अछि ! छौंड़ी त' पैघे हेतैक वयसमे ! ओकरा देह छैक तैं एना लगैत अछि ! फेर ककर बेटा-पोता छैक से बिसरि गेल ! जहाँ तहाँ विवाह हेतैक !"

पीसी अपन नैहरक गुमानमे किछुओ बाजि जाइत छलीह मुदा ओहि छौंड़ी पर कोनो असरि नै होइत छलैक । एकान्त मे भेटितहि मुँह दुसिसैत छलि—"दहु ? लोक ने देखिअनु । हमरा संग विवाह हेतनि ।"

पीसीक सासुर सँ घुरल रही त' दुइये टा चीज मोन रहि गेल छल—झकझक करैत आ चकचकाटा साफो आंगन जकर बीचमे मड़बा बनल छलैक आ पीयरकी गोराइवाली छौंड़ी, बड़की टा आँखि आ पिपनीवाली ।

फेर बहुत रास समय बीति गेल छल, बहुत किछु भेटबैत-भसियबैत, बहुत किछु जोड़ैत ! पीसी, पीसीक आंगन आ ओ छौंड़ी सब बहुत पाछाँ छूटि गेल छल !

बीस वर्षक बाद फेर पीसीक सासुर गेल रही ! बसलमे गेल रही समागाछी ! पीसीक ओहिठाम नहि ठहरल रही ! ओहे टोलमे दसटा भाइक ओहिठाम ठहरल रही, हमर समवैं पैघ पोसियौत भाइ, बड़की पीसीक बेटा ! साबो पीसी नै बँट कर' मुसहरी टोल गेल रही !

आंगन जेना ओहिनाक ओहिना राखल छल— । सभ किछु यथावत । खाली बीच महक मड़बा निपत्ता ! पीसीक हिस्साक आंगन ओहिना झकझक करैत ! हमरा भेल जे अखने किम्हुरोसँ ओ छौंड़ी बहरायत आ कहत—"दहु ! सोझने देखू ! हमरासँ विवाह करताह ! नेपाली बोको नहितनि !

हमर गोर रंग, मोट नाक आ मजबूत काठी द्वारे ओ नाम राखि देने छलि—नेपाली बोको । हमहुँ मौका नहि छोड़ैत छलियैक । झट कहैत छलियैक—"ककर बाफत आयल छैक जे बिढ़नीसँ विआह करत ! सेहो ललका नहि, पिअरका बिढ़नी ! एहन क' बीन्हि देतैक जे भरि जिन्दगी छटपटायत । हम त' कात पकड़ैत छी ।

ओ लजा जाइत छलि ! हमरा ओ पाली कोनो नहि दैत छल त' हमरो तामस नहि होइत छल । हम कहैत छलियैक बिहुनी त' ओ लजा जाइत छलि, नहि जानि कियैक ! जहिया पीसीक सासुरसँ विदा भेल रही, भोरेसँ गुमसुम छलि, आइत काल हम टोकबो कयलियैक— 'जाइ छी बिहुनी ?' तैयो किछु नहि बाजलि ! आँखि मुँहे फुलल सन रहैक ।

आइ बीस वर्खक बाद पीसीक आँगनमे ओ कत' सँ आओत ? एतेक पैघ धरती पर कोनो गाममे अपन स्वामी, अपन परिवारक संग मगन हैत ! पीसीक आँगनमे पयर दितहि जेना कोनो मुझायल पावक बेढ़ी नोचा क' बल द' बहरायल— ''आउ नेपाली बौआ !'' हम अकचकाक' चाक काल ताक' लगैत छी ! तावत मनसा घरबला कोनटासँ पीसी बहराइत छथि आ हुनका पाछाँ पाछाँ धीया पुताक झुण्ड ! गोर लगैत छिअनि त' पीसी सभके आदेश दैत छथि ।— ''गोर लगहुन, बड़का काका छथुन !''

जेना जेना बेरा बेरी गोर लगैत अछि, पीसी परिचय देने जाइत छथि— ई धीरजक बेटा विनय, ई बेटी ! ई दुनू बेटी बसन्तक आ ई बेटा ! ई सुफलाक बेटा किसुनजी !'' आ फेर कोरा महक छौंड़ी के देखबैत कहैत छथि— ''आ ई हेमनक बेटी !''

पीसी पहिनेसँ स्वस्थ बुझाइत छथि ! पछिला बेर गाममे देखने रहियनि त' मरणासन्न रहथि, पेटक दर्दसँ अपस्यांत । लहेरियासरायमे आ अपन संगी विनोदसँ देखा आपरेशनक व्यवस्था करा देने रहियनि । आपरेशनक दिन हमरा पटनासँ लहेरियासराय अस्पताल पहुँचबामे देरी भेल छल ! तावत आपरेशन भ' गेल रहनि मुदा पीसी बेहोश रहथि ! विनोद कहलक जे चिन्ताक प्रयोजन नहि, आपरेशन ठीक भेल छनि ! बड़का गोला छलनि पेटमे !

ओहुसँ पैघ गोला माइक पेटमे हड़कम्प मचौने छलैक ! अवसर भेटितहि कहलक —'देखहु बौआ पीसीक बात ! डाकदरो कहलक, पेटमे गेरूआ बान्हिक' सूति रहैत छथुन, आ देखहु ई गेरूआ ! एहिमे पाँच सय टाका नुकाक' रखने छथुन ! आपरेशन लेल त' जाय लगलीह त' ई गेरूआ हमरा दैत कहलनि—''अइमे टाका अछि ! दवाइ-दारू लेल काज होअय त' अही मे सँ निकालि लेब !'' माइक ठोर पर करुणा मिश्रित हँसी छलैक आ आँखिमे नोर !

दोसर दिन होश भेला पर माय हुनको उपरागलनि— ''बुर जाउ छोटकी दाइ ! अपने ओतेक खिसरी करैत छलहुँ, एतेक दिन करि, दवाइतक नहि कयलहुँ कोना ! आ गेरूआमे नुकाक' टाका रखने छलहुँ ! कोन दिन लेल आ ककरा लेल ?''

ओहुनो स्थितिमे पीसी डाँटि देलथिन मायके— ''अपना लेल आ कहिया दिन लेल ! त' क' आयल छी रौड़ा, करब सबटा खर्च-वर्च ! बेटी सब हाथ झोलबिते आयल छथि । माय कोनो उत्तर नहि द' सकलनि ! हमरा दिस तकलक, हमहुँ अगल-बगल देख' लगलहुँ ! मोनमे एकटा लज्जित अपराध-भाव छल !

पीसी ओहिना बजैत रहलीह— ककरो एक पाइ नहि जनैत छी हम ! भाइ छलाह त' कहियो ने बुझायल जे बाप नहि छथि । आब ओ नहि छथि त' लगिते नहि अछि जे हमरो क्यो नैहरमे अछि । आमो—काठी पठायबाले कोन रहैत अछि, त' टाका पैसा की पठायब अहाँ लोकनि । अपन बेटो सभक किछु नहि जनैत छियनि हम ! ई सभटा कारी बाबूक कृपा, हमर धर्मक बेटा ! दुखिया भौजी लेल मासे मास टाका पठबैत छथि, धोती नुआ द' जाइत छथि सभ वर्ष !''

उत्तेजनामे पीसी आर किछु बजितथि मुदा हम रोकि देलियनि जे अखने आपरेशन भेल अछि, बेसी नहि बाजू । हुनकर बातक जवाब ककरो लग नहि छलैक ! सभ गुमसुम ठाढ़ छल हुनकर बिछौन लग ।

मामी पीसी अखनो अबैत रहैत छथि अपन नैहर ! दादा जिबैत छलाह तहियो आ आओ अबैत छथि ! पहिने, दादाक जिनगीमे बजाहटि पर आ अपनो मोनसँ अबैत छलीह, आब बिन बजौने अबैत छथि । बजाहटि कोनो विवाह-दान, मुड़न, उपनयन भेले पर होइत छनि । दादाक जिनगीमे बसन्त हेमनु-बहुरन सभ अही गामक स्कूलमे पढ़िक' मैट्रिक कयलनि ! आइ० कम आ बी० कम बसन्त गामे सँ मधुबनी जा क' पढ़लनि ! बीत नहि पढ़ि सकलाह । हुनको स्त्री छनि, दू टा बच्चा छनि ! बसन्त नीक डिवीजन बादो नीक नोकरी नहि पाबि सकलाह, नवानीक संस्कृत स्कूलमे शिक्षक छथि ! छओ मास पर दरमाहा भेटैत छनि ! हेमनु हजारीबाग खानमे काज करैत छथि आ बहुरन बेकार ! सभक स्त्री, धीया पुता सौराठे रहैत छनि । पीसीक कोनो देखापर कोनो बेटा माइक काज लेल तैयार नहि होइत छनि आब !

सामी पीसीकेँ मुदा नेहरक गुमान, आइयो छनि ! हमरालोकनि बचनेमे अपरबात रहैत छी, पीसीक सुख-दुखसँ अज्ञात, निरपेक्ष ! काज तिहारमे पीसीकेँ बजा कर्त्तव्य मुक्त होइत छी ! मुदा पीसीक मोनमे उलहन-उपराग नहि छनि । अस्पतालक बिछौनपर आजि गेलीह पीसी बहुत किछु, मुदा हुनका आइयो अपन नेहर आ ओतुक्का लोकसँ सिनेह छनि ! ओइ ठाम अपन मान अपमानक विचार नहि करैत छथि पीसी ! समाद भेलनि कि चल अबैत छथि ! आ पीसीक अबैत देरी सभ धीयापुता प्रसन्न भ' उठैत अछि ! पीसी सभकेँ खूब खिस्सा कहैत छथिन ! ओ सभ खिस्सा जे कहियो बाबी हमरा कहने छलि— प्रह्लाद बाबाक खिस्सा, दुवरियाक खिस्सा आ मनियरवा हैरयक खिस्सा । सभ नेनाकेँ पीसी बड़ नीक लगैत छथिन-एकदम अपने बाबी-नानी सन !

पीसीक आँगनमे हुनकर ओही दछिनबरिया घरक ओसारा पर राखल चौकीपर बैसल बैसल हमरा अनायास ई बात सभ मोन पड़ैत अछि ! पीसी लगमे बैसलि बिअनि होंकैत छथि, धीयापुता घेरने अछि !

तखन माथपर छिट्टा लेने बसन्त अबैत छथि आँगना आ हुनके पाछाँ बहुरन । बसन्त दिस तकैत पीसी अपने बड़बड़ाय लगैत छथि जेना हमरा सुना रहल होथि—

—"जखन गाम औता एहिना खटताह बड़द जकाँ । कमं देखियौन केहन गुलगुहार छनि ! एतेक पढ़ि लिखिक' बेह संस्कृत स्कूलमे मास्टरी करैत छथि आ बहिन ओत' पेट पोसैत छथि ! आ कनिया एकदम प्रचण्ड ! सभटा लुटबैत रहतनि ! सभक उधार आ लेलनि-तरकारी वाली, दूधवला, दोकानवाला-सभक उधार ! हम टोकबैक त' हमरे गरिओत-मारत पीटत ।

बसन्त स्थिति बेसम्हार होइत देखि असहाय भाव सँ माय दिस तकै छथि ! बहुरन डँटैत छथिन —"चुप्पे रहू ने माय !"

मरिआक पीसी नहि सुनैत छथिन ! हुनकर बाजब जारी रहैत छनि— —"ओ त' छथिहे तेहने गामक मुदा ई जे छथि गोतिआइन, बौतक कनिया, सेहो कनियो उन्नैस नहि । आयलि रहथि त' केहन शान्त सुशील रहथि मुदा आब

नहि ! मुदा कथीपर ! बर बेकार, दूटा पेट धीया-पुता ! कतेक औतै अनन्त ! हम छियैक त' बहुना अपने सुदरियो गहिरि एकरा सभके देह झाँपि दैत छियैक ! मुदा हमही दुसमन ! लोक सभ सिखा दैत छैक !"

एतबा कहि पीसी पुबरिया घर दिस ताक' लगैत छथि । बिल्ली पीसीक घर । ओत' बिल्ली पीसी बैसलि छथि ! हमरा आश्चर्य होइत अछि जे हमरा देखियो क' ओ दम्हर किएक ने अबैत छथि ! कोनो घरसँ नयो नहि आयल छथि जेना हम एकदम अनचीन्हार भ' गेल होइ । हमरा बिल्ली पीसीक ओसारा दिस तकैत देखि सामी पीसी बाज' लगैत छथि—"सुफलाक मरैनि काटि देलथिन पंडीजी ! तेहन ठाम बिआहि देलथिन जे सभटा जमीन कोसीक काटमे चल गेलैक । बेटाकेँ एत' द' गेल ! बहुना पढ़बैत छियैक ! सुफलाक अपनो मोन खराब रहैत छैक, मुदा के रखतैक ? अबैत अछि त' सभटा हम अपने करैत छी, तैयो सभकेँ अखरैत छनि । किसुनजी गामक लेल खटैत छनि, ओकरो अन्नपानि अखरैत छनि सभकेँ ! सभ भिन्न भ' गेल छथि । होइ जाउ ! छनिहु की जे बँटताह ! एकटा हेमनू पढ़बैत छलाह सभकेँ ! आइयो सभकेँ आ धीयो-पुताकेँ दैत छलाह ! कनिया छलथिन त' कारी, मुदा बड़ सुरिबरि ! सुखमे रहबो कयलीह नीक जकाँ ! आब हुनको बरक कमाइक गुमान भेल छनि ! आब मनीआर्डर हमरा नाम नहि अबैत अछि—बहुक नाम अबैत छनि !"

पीसी एकदिसाहे बजने जा रहल छलीह ! अनकर बात ओ सुनबे ने करैत छथिन जल्दी ! हुनका चुप्प नहि होइत देखि बसन्त इशारा कयलथिन ! तैयो पीसी चुप नहि भेलथिन ! बहुरन जोरसँ डँटलथिन—"बन्द कर ई चर्खा आब !"

की कहलथिन बहुरन, से पीसी नहि बुझलथिन मुदा हुनका बजैत देखि ओम्हुरे पलटि गेलथिन—"आ ई बहुरनकेँ देखू ! भाइ मैट्रिक करा देलथिन मुदा कोनो काजक नहि । गाम मे घेर घर सभ ट्यूशन पढ़बा लेतैक आ केर बाइ लेल दौड़बैत रहतैक ! ताहिपर देह बिराधियाह भ' गेलैक ! तैयो कोदारि ल' खेत पहुँचि जायत । बड़का बोझ उठा लेत माथपर ! कनिया छैक, परिवार हेतैक··· एकर कोनो ओगार करितैक ——"

हम कहु' चाहैत छियनि जे ठीक छै, चेष्टा करबनि ! मुदा बोल नहि फुटैत अछि जेना बकार लागि गेल हो ! ई हमरा बैसाक' कोन खिस्सा पसारि देलनि पीसी ! कनिया लोकनिको सोचैत हेतीह !

पीसी भरिसक हमर मोनक भाव बूझि जाइत छथि आ फेर कहऽ लगैत छथि—'जनियो बिचार छैक एकरा सभकें ? बहुक संग रही निर्लज्जा सभ बाज' लागल जे हम की जानि' मेलियौ तोहर बाप आ माएकें ! ककरो किछु ने कहैत छियौ····

आब हमरा डर होम' लगैत अछि जे कोनो काण्ड ने जबतैक अननामे ! पीसीके हाथक इशारासँ बुझबैत बिल्ली पीसीक ओसारापर जा सोर लगैत छियनि, त' ओ कहैत छथि—खूब सिकाइत कहुने हेबुन साबी हमर ! हमहीं हुनकर सभ पुतहुकें दूरि करैत छियनि ! हम हुनका लेल मजूरि आ अपरोजक छी ! ओ रहथु काबुलि आ होसियारि, मुदा हम त' अपन बेटा-पुतहुक मुँह ब' क' रहैत छी ! बैनसँ रहैत छी ! से ओ नहि करतीह। तखन कलह होइत छनि, त' दोष हमरा माथ दैत छथि।"

किछु काल बीत' बैसि क' हम फेर दछिनबरिया ओसारापर चल अबैत छी ! पीसी लग आबि बिजनि होंक' लगैत छथि—"अभ्यास रहब एतेक गर्मीक तखन ने ! सभदिन त' पंखा तर रहलहुँ ! तोहूँ आबह हो बिसुन जी ! पंखा हौंकि कहुन। अइ छौटका बिजनिसँ की हेतनि ! अहाँ पड़ि रहू नीक जकाँ।

हम चुपचाप बिछौना पर पड़ि रहैत छी। पंखा आ बिजनिक दुनकाँ हवा नीक लगैत अछि। आँखि मूनि लैत छी।

पीसी हमर कान लग बड़ करुण स्वरमे बाज' लगैत छथि—'हमर जिनगी त' कटि गेल बाउ ! कोनासँ हमहीं जनैत छी ! मुदा सभ दिन इज्जतिसँ रहलहुँ ! ककरो आगाँ नहि गेलहुँ कहियो, ककरो लग हाथ नै पसारलहुँ ! बेटी तीनू ठाम लागि गेलि —नोकरी बेकाय ! बेटा सभ पैघ भेल छथि, दू टा कमाइतो-खटाइत छथि मुदा जेना छिछिबैनी पैसि गेलि होअय ! कुजरनी पचारनीसँ बत्तर ! बात-बातमे मारि-मारि ! बोध अइनामे जीवन देत, जिनगी भ' गेल आउ ! कपार फोड़ि देत। सभकें होइत छैक जे हम की कोनो रखने छी ! मुँह सीबि क' रहैत छी !

पीसीक मुँह सीबि क' रहबाक गप्प प' हमरा हँसी लागि जाइत अछि आ आँखि खुजि जाइत अछि ! बसन्त पीसीकें टोकैत छथिन—मैह रामायण पसारने रहबें, कि किछु खायो-पीब' लेल देबहुन !

पीसी बड़फड़ा क' उठैत छथि ! अपन कोठलीसँ फुलही थारी बाटी, पापड़, तिलौड़ी आ की की सभ निकालैत छथि आ सभ लेने भनसा घर चल जाइत छथि ! हम बूझि रहल छी जे पीसी भनसा घरमे हमरा लेल सचार लगौतीह आ अपन चारू पुतहुकें डेटतीह—अहाँ सभ की जानै मैलिबैक ई सभ ! कहियो आँखि देखने रही तखन ने।"

हम पड़ल-पड़ल पीसीक बारेमे सोच' लगलहुँ जे मनुखक स्वभाव केहन विचित्र होइत छैक। जकरा सभक लेल ओ भरि जिनगी अपस्याँत रहलीह आ छथि, तकरा एकटा नीक बोल कहब हुनका नहि पार लगैत छनि आ ओ सभ हुनके अपन दुश्मन बूझि रहल छनि। आइयो सभ बेटा भेल, ओकर स्त्री आ धीयापुता लेल एक एकटा पाद, एक-एकटा अन्न जोगबैत छथि मुदा बदलामे मारि-गारि भेटैत छनि !

हमरा अपन नेनपनक बात मोन पड़ैत अछि जहिआ हमरा लगैत छल जे माबी पीसीकें सभ बड़ मानैत छनि ! आइ लगैत अछि जे क्यो ने मानैत छनि हुनका ! भरल संसारमे, अपन समस्त परिवारक बीच रहितो अपन चिन्ता आ अपन चेष्टामे नितान्त एकाकी छथि माबी पीसी ! हुनका क्यो ने मामलकनि कहियो ! भगवानो नहि।

× × × × ×

पीसीक चिट्ठी डेरामे मनोरंजनक वस्तु बनि जाइत अछि। पहिने हमरा नै बुझाइत अछि जे ककर चिट्ठी थिकै। धाराक फोटो पर ध्यान जाइत अछि आ अन्हार काटि जाइत अछि। हम ओ चिट्ठी जे अखन धरि पढ़ैतो बनल छल, धड़ाधड़ पढ़' लगैत छी—

'आगाँ समाचार जे आब अहाँ बहुरनपर ध्यान नहि देबनि त' ओ बताहु भ' जयताह ! दुनू साँझ भाँग पीबि बमकल रहैत छथि। दुकानो छोड़ने छथि, से त' बस कथने छथि। अखन पाहुन नहि देतनि त' पढ़ौलासँ कोन लाभ ?

बसन्त हेनहूँ अपनठाम चयने छथि ! बाबी बीतक चिन्ता छल जे हमर बाद हिनका के देखतनि। ने पढ़ल-लिखल छथि ने कोनो आन लूरिए छनि ! बाबी गाममे बैसल पतिया लिखैत छथि। कहियो काल पाँच टा सुपारी आ पान बाना पाड़ बैटि जाइत छनि, ताहिसँ कोना गुजर हेतनि ? स्त्री धीया-पुता छनि ! हुनके लेल सोचि क' बताहि भेल रहैत छी। ऊपरसँ गाममे पढ़ि-लिखि क'

[illegible] बैसल बहुरन लगैत अछि जेना सभ काटि जायत। ओना अहाँ कहब जे हमरा कोन गर्ज अछि, सभ फराक भेल अछि हमरासँ, बहुरन सेहो! अन्न बाँटि लेत, एकके मासमे खा लेत आ फेर धरना देत माइक दिस! जेना मायक बापक जमींदारी उठि क' आब अहाँ माथमे आबि गेल होइ! तेँ उदास ओना रहु' देबैक कहियो। अहिंआ बयोने छथ, सभ भाए अबोध छल, तहिओ उदास नहि पड़' देलियैक कहियो!

आब हम थाकि गेल छी! अहींक आस अछि। पैघ हाकिम छी। साँत पढ़ल-लिखल नहि छथि, हुनका भगवान देखथिन। अहाँ बहुरनक कोनो उपाय करियनु!"

हम पीसीक आस पूर नहि क' पबैत छियनि! आरो बहुतरास पत्र अबैत अछि। बहुरनोक चिठ्ठी आब' लगैत अछि, हमरा बुते उत्तरो देब पार नहि लगैत अछि! खिसिया क' बहुरन लिखैत छथि—"ई हमर अन्तिम चिठ्ठी अछि! आब फेर नहि कहियो कष्ट देब अहाँकेँ।"

बहुरन चिठ्ठी लिखब छोड़ि देत छथि मुदा पीसीक चिठ्ठी अबैत रहैत अछि। हमरा बुते एकको बेर जबाबो देब संभव नहि होइत अछि! व्यस्तता हरदम घेरने रहैत अछि। फेर एकटा दोसरे रंगक पत्र अबैत अछि "चि० हुलकक श्रीमतीक तरफसँ आशीर्वाद! आगाँ समाचार जे यदि आब अहाँ ध्यान नहि देब त' हम अहींक डेरापर आबि क' बैसि रहब! एत' हमरा सभ सदिखन बैंद जकाँ घुड़कैत रहैत अछि, काम-धपार फोड़ैत रहैत अछि! सभ त' सुख कथनहि छल, आब बहुरन जबुधा भेल अछि। भांग पीबि बेमत्त भेल रहैत अछि। आब सहाज नहि होइत अछि! आबि क' हमर निसाफ करू वा हमरा संग ल' चलू!"

हमरा बुते हुनुमे किछुओ पार नहि लगैत अछि। ने पीसी अपन धमकीपर अमल करैत छथि। हमर डेरा पर नहि अबैत छथि! हमरा बूझल छल जे पीसी गाम छोड़ि कतहु नै जयतीह! हुनकर प्राण ओही घर आंगनमे बसै छनि।

दोसरे मास हुनकर फेर बैह पुरने ढंगक चिठ्ठी अबैत अछि—"जल्दीसँ जल्दी बहुरनक कोनो व्यवस्था करियनु।"

× × × ×

मनुक्खक समक्ष कोन व्यवस्था छैक? समटा व्यवस्था त' कालक रहैत छैक। दिन-क्षण पल! कनियो हेरफेर नहि होइत छैक! बड़का काका चल गेलाह—अकस्मात! हमरालोकनि सभ गओ गाम पहुँचल रही!

साओ पीसी सेहो आयलि रहथि! आब पाँच भाइ-बहिनमे एकसरि रहि गेल छथि—हुनका देखि क' ई बात बड़ टीस देने छल! काकक दुलिमालि खतम भेला पर एक दिन बसन्तकेँ डँटलियनि—"तोहरालोकनिकेँ अपना इज्जतिक कनिओ ध्यान नहि छ'! एना सभ गओ मिलि क' पीसीकेँ मारैत छहुन, पटना धरि चिट्ठी लिखैत रहैत छथि!"

बसन्तक आकृति पर एकटा दयनीय भाव पसरि जाइत छनि—"बुढ़िये खराब भ' गेल छैक! हमरालोकनि मारबैक ओकरा?

बसन्तक बात गोविन्द काका बीचेमे लोकि लैत छथिन—"कोन नब बात करब अहाँ? अहाँ ओरठाम त' ई रिवाज एक खाढ़ी उपरेसँ आबि रहल अछि!

बसन्त लजाएल सन हँसैत छथि—अपन मायक पितिऔतक बातक प्रतिवाद नहि करैत छथि! हुनहु बेसी नहि कहैत छियनि!"

फेर बहुत रास समय बीति जाइत अछि। समयक ओइ बाढ़िमे पीसीक अस्तित्व सर्वथा विलीन नहि होइत अछि! कहियो काल पत्र अबैत अछि। हमर मोनमे एकटा अपराध-भाव जकड़ल जाइत अछि!

ई भाव गाम गेला पर आर गहीर धँसि जाइत अछि! अपन भतीजी दीपाक बिआहमे गाम जाइत छी। माय एकसरमे कहैत छथि—"कने तरपटकेँ आहुन! आर ककरो साहुसे नहि होइत छैक। हम कहि क' हारि गेलियनि, नहि मानैत छथि! एकके टा पीसी बाँचल छथुन! एहनो अवसरपर आशीर्वाद लेब नहि बजबैत गेलहुन, त' अनुचित हेतइ!

हम मायकेँ कोनो आश्वासन नहि दैत छियैक। सरपट मायसँ कहबाक सेहो अवसर नहि भेटल! हम स्वयम् बिआहसँ एक दिन पहिने कार्यवश पटना चल अयलहुँ। समटा काज नीक जकाँ सम्पन्न भेलैक। एहिना चलैत छैक समटा! ककरो लेल किछु नहि रुकैत छैक! अहिंआ बाबा छलाह, लगैत छल जे बिना हुनके किछुओ ने चलत। आइ दस बर्खसँ ओ नहि छथि, बड़का काका सेहो नहि रहलाह। सभ किछु चलि रहल अछि। मनुक्खक सबसँ पैघ ताकति आ कम-जोरी। ओकरा समटा स्मरण रहैत छैक आ किछुओ स्मरण नहि रहैत छैक।

साबी पीसीक नाम सेहो काटि देलनि आब! पावनि-तिहारमे हुनका दजेबाक कर्तव्यसँ सेहो मुक्त क' लेलहुँ हम सभ अपनाकेँ।

सदाक लेल मुक्ति देबाक बाट स्वयम् पीसी देखा दैत छथि—''कहियो किछु मँगैलहुँ नहि आइ मुदा आब नहि सहल होइत अछि! बूढ़ि भेलहुँ आ बूढ़क लेल बड़काला बड़काकाल। सेहो एहि बेरका जाड़! हड्डी-हड्डीकेँ छेदैत रहैत अछि! एकटा मोटगर कम्बल पठा दियऽ त' जाड़ बँचि जायब! नै त' अही जाड़मे पीसी समाप्त......!''

दू वर्ष पूर्व एहने चिट्ठी बड़का काकाक आयल छल। पैघ पित्ती, आचार्य गुरु! विद्वान, संयमी। जिनगीमे कहियो किछु नै मँगलनि! नाम जपैत छलहुँ! समटा त' आशीर्वाद द' कहैत रहलाह—''किताब-मैगजीन अनने छ' ने बाबू।'' एकटा किताब आ पत्रिका उठा क' ल' जाइत छलाह आ फेर किछु काल बाद पोथी लेने अबैत छलाह—''लेह, ई पढ़' ! गोविन्दसँ माँगि क' अनने छी!''

काकाक आदर आ स्नेहवश पढ़ल रहलो पर ओ पोथी हम राखि लैत छलहुँ। हुनकर एकबेर चिट्ठी आयल—''आइ हम सत्तासि वर्षक भ' गेलहुँ। हमरा दिससँ अहाँ लोकनि मधुर खा लेब! हमर कोनो ठेकान नहि। ई जाड़ बेपरबाह नहि! बूढ़क लेल जाड़ काल! आइ बेर पुरना दुशालासँ काज नहि चलत! सुविधा होअय त' एकटा मोटगर कम्बल पठायब!''

कम्बल पठा देलियनि! बड़का काका जाड़ त' बँचि गेलाह मुदा वर्ष नहि।

आ आब पीसी सेहो कम्बल ल' लिखने छथि! इच्छा होइत अछि जे कम्बल पठा दियनि। मुदा डर होइत अछि जे बड़के काका जकाँ पीसी सेहो वर्ष नहि बँचि सकतीह! दोसर मोन कहैत अछि जे ठीके हेतनि! आब साबी पीसीक एकालाप समाप्त क' देबाक चाही। बहुत दिन धरि ओ एक एकसरि चललीह, एक बाटपर! ओ कहियो ने सुनलखिन ककरो मुदा सोचलखिन सभ दिन अनके लेल! आइयो ओ अनके लेल सोचैत छथि, जिबैत छथि मुदा आब हुनकर कयो ने सुनैत छथि! ई एकालाप समाप्त करबाक हमरा अवसर भेटल अछि!

अवसर हम चुकि जाइत छी! कम्बल पठायब पार नहि लगैत अछि! आन-आन खर्च सामने आबि जाइत अछि! सोचैत छी जे अगिला वर्ष पठा देबनि, ई जाड़ कहुना बँचि जयतीह! वर्षक वर्ष एकटा सूती सलगा पर बँचने छथि।

पीसीक एकालाप समाप्त नहि भेल छनि। आब हुनका कयो ने मानैत छथि, तैयो ओ जीबैत छथि! आब अपना चिलकाकेँ सोआयब तेजकूड़ द' कयो ने जरैत दीप देखा कहैत छैक—''माय मानु, साबी पीसी, देखनाहरि सुननाहरि···''।

सुनै छी, ऐ बेर पीया-पूता सभ किछु बेचिये मारि मारलथिन आ पीसी ससि क' दोसर अँगनामे छथि!

तैयो साबी पीसी जीबैत छथि! फेर हुनकर एकटा पोस्टकार्ड आओत! डेरा मे मनोरंजनक साधन बनत! पीसीक लेल हमरालोकनि किछु सहानुभूतिपूर्ण चर्चा क' अपन सहृदयताक भ्रम पोसब आ फेर सभटा बिसरि अपन-अपन दुनियामे व्यस्त भ जायब!

सितम्बर १९८३

इन्द्रधनुष

मायक बात पर विश्वास नहि करबाक कोनो कारण नहि छल । तैयो बेर-बेर लागि रहल छल जेना किछुओ सत्य नहि होइ……

अकस्मात् गाम आबि गेल रही । कोनो पूर्व निर्धारित कार्यक्रम नहि छल । जखने मुँह-हाथ धो क' चाह पीबि दलान पर आबि क' बैसलहुँ त माय कहलक —भने आबि गेलाह् । गाममे बड़का उत्सवा उठल छैक । तोरालोकनि क्यो गाम पर नहि, बड़ डेरायल रही हम !'

मायक गप्प खतम हैबासँ पूर्वहि नहि जानि किम्हरसँ अनिल दलान पर आबि गेल—"डर कोन बातक काकी ? हमरा लोकनि त' छीहे गाममे। सभ तैयारी भ' गेल छैक । एहि बेर जहिना अबोध, तहिना निपटि लेबा लेल तैबार छथिक हमरा लोकनि ।"

हमरा सबटा गप्प विचित्र लागि रहल छल ! कोन तैयारीक गप्प करैत अछि अनिल ? मायकेँ कथीक डर छैक ? आइ दस वर्षसँ ऊपर भेलनि बाबूजीक मुइना, तहियेसँ लगभग सभ भाइ हमरा लोकनि बाहरे रहैत छी, पावनियै-तिहारे गाम अबैत छी । पहिने कोनोने कोनो बहिन अपन धीया-पुताक संग माय लग रहैत छलीह् , आब सेहो नहि । माय एकदम्म एकसरि रहैत अछि, मुदा कहियो कोनो भयक गप्प नहि कयने छलि । आइ एकरा भ' की गेल छैक ? एहा किबैक आतंकित अछि आइ ?

अनिल मुदा खूब उत्साहमे छल—'अहाँ कोनो फिकिर नहि करू भैया । सभ इन्तजाम छैक ? सभ तक आबि गेल छैक ।'

हम स्तम्भित रहि गेलहुँ ?

एहि गाममे लाठियो ककरो ककरो घरमे भेटैत छैक । एकटा साँप बहरा जाइत छैक त' ओकरा मारबा लेल लाठी आ सड़ल ताक' लोक माँगने-माँगते दौड़ैत अछि । एहि गाममे कम कऽ' ऽ' कयलैक आ किबैक कयलैक ? माय सने कहने छलि—गाम एकदम्म बदलल छहु'……विश्वासो ने होइछ जे बेहू सभ लोक अछि ।

एहि गामक लोककेँ हम खूब चिन्हैत छियैक । ओहो सभ हमरा चिन्हैत अछि । जखो मास-वर्ष दिन पर गाम अबैत छी, मुदा बुझाइत नहि अछि जे गाममे नहि रहैत छी ।

जाहीं टोल बाटे बहराइत छी, क्यो आगाँसँ घेरि लैत अछि—'परनाम मालिक, हमरा नहि चिन्हलौ ?"

हमरा हँसी लागि जाइत अछि—"तोरा कोना चिन्हबौ रे बुच्चा ? कहियो जामुन तोड़ि क' खुअबैत छौ आय जे चिन्हबौ ?"

हकरा गदगद होइत बाजत—"एहू मालिक । अहाँके कुच्छो ने बिसरै छ्य । ओ जमुनी आय अहाँकेँ निम्मन लागत ?"

हमरा सभ नीक लगैत अछि । मुसहरटोलीक हकरा आ खतबेटोलीक हजरो । धनुकटोलीक छिदरा आ कुमहरटोलीक गेनमा सेहो ! मुसलमान टोलक अजीज जखने देखत, एक हाथ झुकि जायत—"आदाब हुजूर !'

—'अरे अजो मियाँ आप ? कैसे हैं ?' अजीज ओहिना झुकले कहत—"सब अहाँकि किरपा हय हजूर !

'मालिक-हुजूर' एकरा सभकेँ ठोर पर बसल छैक ! पहलमान रघुनाथो देखत त' झुकि जायत—"गोर लगै छी मालिक ?" आ झट बोल करत—"अहाँ त' दिन-दिन भिभिएले भेल जाइ छी मालिक ! कोन चक्कीक पीसल आंटा खाइ छियै !"

हमहूँ हँसि क' कहैत छियैक—'तोरे पछाड़बाक तैयारीमे छिऔक ! जड़बेर आबि जो अखाड़ामे फेर !'

रघुनाथ कने नाटकीय मुद्रामे कहत—"जाउ जाउ, मालिक ! चोंक देहु हम अहाँक ! आर अखाड़ामे पोसल देहसँ अहाँ भिड़ब ?"

हम हँसी करबैक :—"त जहिया अखाड़ामे चाक लाल चित क' देने रहियौक, तहिया ई पोसुआ देह कत' गेल रहो ?" रघुनाथ लजायल हँसी हँसत—'औत' मालिक जनजोकासे पटकि देली—ओकर गोजर नहि होत !'

हम झट कहबै—'त' आबि जो, लड़ि कै अइ बेर···।'

आ माय कहैत अछि—गाम उनटल रहु ! अनिल कहैत अछि—सभ तैयारी ठीक भैया ! अहाँ कोनो चिन्ता नहि करू !

हमरा तकर चिन्ता नहि अछि ! खाली विश्वासे ने होइत अछि जे अहू गाममे एना भ' सकैत छैक ? पछिली बेर त' गेल रही खतबे टोली दिस ! बाटे पर बिशनपुरवाली बैसलि छलि । बुढ़ि थुरथुर । डाँड़मे एकटा मैल चिक्कट कपड़ा लपेटने आ सारा चाम सिकुड़ि-सिकुड़ि क' धारीदार बनल । आँखिमे इजोत कम । गाय-महींसकेँ गाछीमे छोड़ि बाट पर बैसलि छलि । लगमे जा कहलियैक—तों जीविते छेँ गे नढ़टिन बुढ़िया !"

बिशनपुरवाली अकचकायलि । फेरसँ अकानलक आ आह्लादसँ बाजलि—"अहाँ छथी बौआ ! अइ गरीबनी बुढ़ियाकेँ अखनियो कोना चीन्हि गेली ?

हम ओकर आकृति पर पसरल हीनताकेँ हटबैत लेल हँसी कयलियैक—"तोरा कोना नै चिन्हितौ गे नढ़टिन बुढ़िया ! सभ साल कटनीमे हमरा ठकि लैत छलेँ ! अपने एकटा छोटकी आँटी बन्हैत छलेँ आ अपन जुआनकी पुतोहुकेँ आँटीक बदला बड़का बोझे बन्हबा दैत छलहिक !"

बिशनपुरवालीक आकृति पर चिर-परिचित दुष्ट हँसी पसरि गेल छलैक—"सत बात कहू मालिक ! बुढ़िया बन्हैत छड़की आँटी, त' दितियैक एक्को बड़ुला बेसी ! आ जुआनकीकेँ कोना छोड़ि दै छलियै आधा आ बोनियोंमे कोना ओकरेबला बड़का बोझ छोड़ि दै छलियै ? ई हो बुढ़िया दुनियाँ देखने छथि मालिक···"

बिशनपुरवाली झूठ नहि बजैत छलि ! दुनियाँकेँ ओ नीक जकाँ देखने छलैक ! अपने त' ओहू दिनमे एहिना छलि ! मरिकलसँ दिन भरिमे दूटा बोझ काटैत छलि···सेहो बोझ नहि, पुल्ली ! मुदा पुतोहु रहैक लुसी ! जतबा कालमे आन एक पाहि कटैक, ओ दूटा पाहि काटि लैक ! भरिदिनमे छ: टा सँ कम बोझ कहियो ने कटैक, सेहो छबो जबर्दस्त बोझ ! बोनिक बेरमे ओ अड़ि जाइ जे हम अपने बोझमे बोनि लेब ! काटब जबर्दस्त बोझ त' पुल्लीमे बोनि किऐक लेब ? सोलह बोझपर एकटा बोझ भेटैक ! पुतहुक संग बुढ़ियाक दुनू आ आठ टा बनकर बोझक भाँज लागि जाइ । आ आँटी चुकब' बेरमे ओ एकदम भीड़ि जाइ जिरतियाक संग—"एहन जुलुम नै करहु हो जिराती ! मालिक

देखैत छथुन !" आ हमरा मोलायम देखि जिरतियाक हाथ उपरेसँ किछु ढील भीचिक' रहि जाइ ! जाबत काल कटनी चलैक, बुढ़िया हमरा टकटकैत रहय—"लुसी छय हमर पुतोहु मालिक ! चीन्हि दू अहाँक देखने ?" हम कृत्रिम तामससँ कहियैक—'मारबौ गे बुढ़िया ! हमर डेकामे आगि लगबबेँ !" बुढ़िया ओहिना दुष्टतासँ हँसय—"करेजामे त' आगि लागले छय मालिक ! कुता लू ! भेजि देबै आइ राति हवेलीमे···

हम खिसियाक' मार' दौड़ियैं, त' बुढ़िया प्रसन्न भ' हँस' लागय । ओहू दिन अपन बात पर बुढ़िया प्रसन्न भ' हँस' लागलि ! हम कृत्रिम क्रोधसँ कहलियैक—"तों रहि गेलेँ ओहिना नढटिन !" आ आगाँ बढ़ि गेल छलहुँ । पाछाँसँ ओकर स्नेह भरल स्वर आयल छल—"खूब जीबू मालिक ! भगवान भल करथि···"

आ माय कहैत अछि—"आब एहि गाममे ककरो भल नहि हेतैक ! सौंसे आगि पसरल छैक !" अनिल कहैत अछि—"एहि बेर फैसला भ' क' रहतैक, बड़ बढ़ति गेल अछि ई सभ ? आ बहुसत कोना नहि ! हमहीं अहाँ बहसबैत छियैक कि नयो आन ? सभटा ओइ पारक महाकान्त झा आ भुट्टा झाक करब अछि ! दुनू कम्युनिष्ट बनैत अछि ! एक मोटे आधा मजक एक गज नपैत अछि आ दोसर तीन पावकेँ सेरभरि, आ कहत जे कम्युनिस्ट छी ! धान छथि । साँझमेँ एकरा सभक चौपालमे बैसत दुनू, घरेघर तिमन चिखत ! तिमन की चिखत, मौगी सभकेँ आँखियोत आ लेर चुबौत ! दुनू भारी चमचोर अछि भैया ! ओकरे फिराकमे रहैत अछि !"

हम आर अचम्भित भेल जा रहल रही ! एखनी टा अनिल, कोन-कोन गप्प कयने जा रहल छल ! चमचोरी आ घरपैसीक गप्प क' रहल छल । हमरा आँखिमे अविश्वास देखि क' ओ फेर बाजल—"अहाँकेँ विश्वास नै भ' रहल अछि भैया ! चारि दिन गाममे रहू त' सभ बूझि जयबैक ! सभ पताल जड़ि बैह दुनू अछि ! ग्राम पंचायतमे सेहो घुसिआयल अछि ! मुखियाजी मुट्ठीमे छथिन ! सभटा रोड बनेबाक ठीका ल' लेत आ हमरा अहाँक जन-बोनिहारकेँ टाका-आठ आना बेसी द' क' बहकाओत ! हमरे अहाँक गाछीक माटि काटि क' सड़क-बान्ह बनाओत आ हमरे अहाँक जन-बोनिहारकेँ भड़काओत ! सरोज भैयाक काज जे

सभ राइ-राडिन आ जन-बोनिहार छोड़ि देने छनि तीन माससँ, ओकरो पाछाँ कहीं दुनूक हाथ अछि……"

हमरा किछुओ अर्थ नहि लागल। तीन माससँ सरोजक काज किएक बारि देने छलनि, हमरा नहि बूझल छल। अनिल कहलथि—'अहाँकेँ आरो बहुत रास गप्प नै बूझल हैत। गाममे रहू त' अपने बूझि जयबै सभटा पेँच।"

हमरा पेँच सोझराब' नहि पड़ल। किछु काल बाद सरोज अपने अयलाह—"की कहू भैया। ई सभ त' सनकि गेल अछि। कनिबेटा बात पर आफत क' देने अछि। परबोधना हरवाहि करने छल, सहिसन आफिससँ आयले रही कि ओकर बहु बोनि लेल आयल। मौन गरमायल छल, बिगड़ि देलियैक जे जो कालि्ह अबिहेँ। बस्स, एतबे टा पर फसाद क' देलक। प्रात भेने पनिभरनीकेँ रोकि देलक। हरवाह नागा क' देलक। सभ पर बन्हेज कयने अछि। पंचैती कयलक अपनामे जे हमरा माफी माँग' पड़त ओकर बहुसँ… आरो बहुत रास माँग सभ तैयार कयने अछि। देखू त' सार सभक खचरपनी…"

बड़ीकाल अपन दुखनामा सुना अन्तमे आरत-आरत सरोज कहि गेलाह—"हमरा सभने अपनामे मेले नहि अछि तैँ, न त' देखा दितियैक खचरहवा सभकेँ जे बन्हेज केहन होइत छैक? ककरो कोनो काज नहि कर' दितियैक। अपने भीख माँग' अबैत। मुदा हमहीं सभ माथा चढ़ौने छियैक…"

सरोजक संग महेश सेहो आयल रहथि। सरोजक गेलाक बाद कहलनि—"सभटा बात ठीक नहि कहलनि भैया। बोनि लेल तीन दिनसँ घुरि जाइत छलनि! ओहू दिन दू बेर घुरि गेल रहनि! कमायल बोनि रहैक, से देबाक बदला गारि देलथिन खिखिर-बिखिर? धकियाक' आँगनसँ बाहर क' देलथिन। अपनो मुँह सककमे नहि छनि। झट अवाच्य कथा कहि दैत छथिन सभकेँ। ई तेसर बेर छनि। हिनका लेल ककरा-ककरासँ झगड़ा करत लोक? अपनो बहिकिरनी-हरवाह काज छोड़ि देत, त' की करब हमरालोकनि?"

अनिल हुनका जोरसँ डँटलकनि—"बस्स, अहीं सारे अहीं सभक ई दशा होइत अछि। करबै किएक ने हम सभ? तेहन दाब करबै जे सभ ठण्ढा भ' जयतैक। खाली अपनामे मेल आ बन्हेज आबू, सभटा गड़दपनी पुराड़ि देबैक।"

महेश खिटपिटा क' चुप भ' गेलाह। गाम उठिक' अंगना चल गेलि। अनिल बिस्तारसँ सभटा खिस्सा कह' लागल।

+ × +

राति अधिक नहि बितल रहैक मुदा अन्हार बेस पसरि क' बैसि गेल रहैक गाममे। नामी बाबूक दलानपर मुदा अन्हारक लेसो नहि रहैक। रसी-रसी झकझकायल। अब बनल पुरान-साहबी फैसनक बंगलीमे दू बल्बक संग-संग एकटा पेट्रोमैक्सक रोशनी सेहो पसरल छलैक। यहायही लोक। किछु बैसल, किछु ठाढ़। नामी बाबू अपने नहि घुरल छलाह मधुबनी सँ। हुनकर गाड़ीक हॉर्नक प्रतीक्षामे सभ कान ठाढ़ कयने बैसल-ठाढ़ छल। सभक अपन-अपन दुखनामा छलैक। आशा छलैक जे कहीं कदेर हमरे भाग्य जागि जाय। ककरो दू-दू टा बेटा बेकार बैसल छलैक—कमसँ कम एको टाक कोनो जोगार बैसि जाइ…

नामी बाबूक लेल कोन मोस्किल। कने नजरि फेरबाक देरी छनि। जिनको कोनो दोसरे आस छनि। हाथपर नमरी-दू नमरी राखि देताह, हुनका लेल कोन कीमति छैक दू-चारि नमरीक। गरीबक उपकार भ' जायत। सय-दू सय देलाक बाद बिसरि जाइत छथिन नामी बाबू। गाममे क्यो पाँचो टाका पैंच देत त' तेसरे दिन तगेदा पठाओत…जान अकच्छ क' देत तगेदासँ।

जिनका सभक आशा नमरी-दू-नमरीसँ बेसीक छनि, ओ सभ दलानमे राखल कुर्सी सभपर बैसल छथि। बीचबला कुर्सी—रामजी सिंहासन जकाँ खाली छनि! नामी बाबू औताह त' सिंहासन ग्रहण करताह! पँच भाइ…भरत जकाँ छोट भाइ नहि——बिन खड़ाम रखने भक्तिभावसँ ओहि सिंहासनक रक्षा आ सेवामे रहैत छथिन सदिखन! अखनो सिंहासनक बगलवला कुर्सीपर विराजमान छथिन—दहिना कात। आ बामा कात बैसल छथि काशी चौधरी! गामक पुरना जमींदार। नामी बाबू लोकनि हुनके घरक भगिनमान छथि। मुदा आब सम्बन्ध पलटि गेल छनि! नामी बाबूक ग्रामक फ्रंटक सेनापति बनल छथि काशी चौधरी! ओना कहबा लेल सरपच छथिन अपने जेठ भाइ मुदा गामक राजनीतिक असली कर्णधार छथिन काशी चौधरी! नामी बाबू हुनका प्रसन्न करबा लेल बीच-बीचमे कहि दैत छथिन—शेर बब्बर छथि काशी काका! बूढ़ भेला ताहिसँ की…अखनो ककरो साहस छैक हिनकासँ भिड़बाक…!

काशी बाबू तखनो कुर्सीपर अकड़ल बैसल छलाह। सुट्टा खसने ओहि बंगलीक रूममे आबि गेलनि आ गरजि क' कहलकनि—"हमर ओनि देब की नहि काशी बाबू ! नहि देब त' बेजाय बात भ' जायत !"

सुट्टा ताड़ी पीने धुत्त छल। हाथमे मोटगर लाठी छलैक। संगमे रहैक चारि-पाँचटा नौजवान चढ़ले-धानुक। बंगलीमे बैसल आ नीचामे ठाढ़ पचासो लोकमे ककरो साहस नहि भेलैक जे ओकरा रोकतैक !

सुट्टा चारूकात ठाढ़ लोकके सम्बोधित करैत बाजल—"देखू त' हिनकर चालि अहाँ सभ ! माटि कटली हम सभ। महीना बीति गेल ! ओनि लेल सभ दिन दौड़ा रहल छथि जेना हम सभ भीख मँगैत छियनि ! सुनि लू काशी बाबू, ओनि नै देब आइ त' दरबज्जापर सँ उठब बोलि लेब ! ई नखटपनी छोड़ि दू... सभटा पुराड़ि देब ! कोनो बभनाक साहस हुए जे बाजत किच्छो ! हइए—ठाढ़ छी हम आउ, के अबै छी—"

लाठी आगूमे गाड़ने सुट्टा ठाढ़ छलनि आ दलानमे चहालपहो भरल लोक सकदम्म छलाह। ककरो बोल नहि फुटलनि। काशी चौधरी उठि क' ठाढ़ पर्यन्त नहि भ' सकलाह ! मरि इच्छा गारि पढ़ि, धमकी द' ओहिना लाठी बजारैत चल गेल सुट्टा......मस्त साँढ़ जकाँ झुमैत ! पाछू-पाछू ओकर दल छलैक।

ओकरा जाइते काशी चौधरी छकुपि क' ठाढ़ भेलाह। लोक सभ तखनो सकपकायले छल। नामी बाबूक भाइ बटेसर बाबू लेल घस सन ! एना निर्विकार बैसल, जेना हमरा कोन मतलब...कोनो हमरा गारि पढ़लक अछि ! हमरा दरबज्जा पर आबि क' पढ़लक त' की भेलैक ! हमरा खिलाफ थोड़े बाजत ! सभ साल सभ पाबनिमे घर-घरानिकें नोट बँटैत छथि नामी... —

काशी चौधरी मुदा तामसें थर-थर काँपि रहल छलाह। बिना किछु बजने दौड़ैत अपन टोल दिस विदा भेलाह ! पोखरिक भीड़पर अबैत देरी हाक मारलनि ...दौड़ह हौ अनिल—

आ चारूकातसँ लोक दौड़' लागल। काशी चौधरीक दलानभरि भीड़ लागि गेल। अनिल सभके जुटौलक। लाठी-भाला आबि गेलैक। मुदा राति क' ओहि भीड़कें खतबेटोली दिस बढ़बाक साहस नहि भेलैक। नामी बाबूक गाड़ीक हॉर्न

सेहो लोक सुनलक। ओहो काशी चौधरीक जिज्ञासामे नहि रहल छथि। ओने सुट्टाक बाप काशी चौधरीक पयर पकड़ि लेलकनि—"हमहीं पयर पकड़ैत छी मालिक। निशामे छल। माफ क' दियौक। हमरा कहेक मारब से मारि लू..."

अनिल ओकरा ठेलिक' पाछाँ क' देलकैं—"जो, भाग एहिठामसँ। नाटक नहि कर। तोरा माफी मंगने की हेतौक। सुट्टाकें पठा दहिक। ओकरा आइ लाठी घुरा मुँह बाटे बहार करबै तखने फैसला हेतौक। नेता बनैत छौक। धानुक-टोलीक मुनराक संग कमिटी बनौने छौक 'पिछड़ा वर्ग जागरण समिति।' बजा आइ सभके, जे के उचकैत छैक।"

बबुआ बेर-बेर कल जोड़ैत रहलनि आ ई सभ घमियबैत रहलथिन, मार... बहीन—गरियाबैत रहलथिन। ओहीकालमे पोखरीक उत्तरबारी महार पर लाठी नेने सुट्टा निकलल—"घुरि जाउ' बाबू ! ककर नेहोरा-मिनतीमे लागल छ' ! ककरो वास्ते ! कोन गलती कयली हम—मुफ्त ओनि मंगली—अपन कमायल ओनि ! से जे हमरा नहि देब तकरा एहिना गारी देबै हम—बभना सभके...। अपन कमा क' खाइ छी हम त' छोटका जाति, आ ई बैठल खयता त' बड़का जाति... बबुआ"

छौंड़वा सभ मुनराकें छोड़ि सुट्टा दिस दौड़ल। पचासोक संख्या छलैक। सुट्टा एकसर छल। अपन टोल पड़ायल। खिसिआयल भीड़ निरपराध बबुआकें खूब पिटलक। अधमरू भेल ओहो अपन टोल दिस भाग' चाहय मुदा भीड़ घेरने छलैक।

ताही कालमे दछिनबारी टोलसँ काशी चौधरीक घरक सिमानसँ आबि मुनरा गरजल—"छोड़ि दिऔ बबू काकाकें अहाँ सभ' ने त' बेजाय बात भ' जायत। खतबेटोली-दुसधटोली-मलहटोली सभ उनहि पड़त। सभक घरक चार नोचि लेत—लाश बीछि जायत..."

क्रोधान्ध भीड़ बबुआकें छोड़ि मुनरा दिस दौड़ल। मुनराक पीठपर क्यो ने छलैक। ओहो पड़ायल। भीड़ ओकर अँगनामे ढुकि गेलैक। ओ अपन कोठलीमे बन्द भ' गेल। उत्तेजित छौंड़ा सभ आँगनमे ठाढ़ि ओकर स्त्रियेकें गोलियाब' लगलैक। नूआ तिरी-तिरी क' देलकैं...। मुनरा घरमे नुकायल रहल।

मुदा ओ बहरायल घरसँ। सभ घरसँ बहरायल ओ सभ। टोले-टोल बहरायल! हाथमे लाठी, भाला-गड़ास लेने बहरायल! बड़कीटा जुलूस बना क' बहरायल। गामक सभ बाट, सभ दरबज्जा पर बाटे बहरायल। सभ बभनाकेँ मारि दैत बहरायल। बबो घरसँ नहि बहरयलाह! अपन-अपन कोठलीमे नुकायल रहलाह! अनबोकासँ जे पकड़ा गेलाह, तिनकर दुर्गति भेलनि। नेहरा विश्वनाथ मिसर अपन दलानपर बैसल छलाह, हुनका उठाक' ऐंग जकाँ पटकि देलकनि! पण्डित सुपहर झा पूजा कयने अबैत रहथि, हुनका फूलडालीक संग ओंघरा देलकनि माटिमे। सरोजक घरक सोझा बाटपर मूति देलकनि आ काशी चौधरीक दलान लग दस मिनट धरि नारा लगौलकनि।

फेर सभ मिलि एकटा मीटिंग कयलक। बहुतराक प्रस्तावपर सर्वसम्मतिसँ पारित भेलैक—

(१) हमर सभक जनीजाति बोनि लाब' नै जायत! पहिने बोनि भेटत तखन हरवाही-चरवाही करब!

(२) बोनि नगद लेब, सेहो तीनटाका रोज नै, छओ टाका रोज। अन्नमे धानो धान आ गहूम लेब, सेहो अढ़ाइ सेर पक्का। कन्योंसँ चारि सेर।

(३) सरोज आ घरि परबोधनक स्त्रीसँ माफी नहि मंगताह हुनकर कोनो काज क्यो नहि करतनि।

(४) काशीबाबू जावत सुट्टाकेँ मारि कटवाक बोनि नै देथिन, हुनको कोनो काज क्यो नहि करतनि।

सभाक अध्यक्षता कयलनि—सतीनाथ झा।

× × × × ×

सभटा खिस्सा सुना अनिल हँसैत नाटकीय मुद्रामे कहलक—"आब बुझलियै भैया जे कत' पौ छै आ कत' छौ छै! ओइपरक महाकान्त झा आ भुट्टा झा आ थपना पारक सतीनाथ झा…पहिल दुनू महान साम्यवादी आ अन्तिम लोकदलक उन्नायक—आब वर्गविहीन समाज स्थापित भ' क' रहत!"

हमरा हँसी लागि गेल—"मुदा सतीबाबू त' पुरान कांग्रेसी छथि—स्वतंत्रता सेनानी! पेंशन भेटैत छनि…"

अनिल आरो जोरसँ हँसल—"असली स्वतन्त्रता सेनानी छथि…; एकबेर जहल भ' अयलाह त' बाट देखल भ' गेलनि! स्वाधीनताक बादो दस बेर जहल भ' आयल छथि। चोरिसँ ल'क डकैती धरिमे! पेंशन त' भेटैत छनि, ओंघोसुता सभ कमाइत छनि मुदा बुढ़ारीमे एकटा आफत आबि गेलनि तेँ लोकदलमे शामिल भ' गेल छथि।"

हम उत्सुकतासँ पुछलियैक—"एहन कोन आफत आबि गेलनि एकाएक!"

अनिल गम्भीर होइत बाजल—"घरकी बुढ़ारीमे स्वर्ग मरि गेलथिन! बिन मौगीक रहबाक अभ्यास नै छनि सती बाबूकेँ! विधवासँ बियाह करबा लेल तैयार छथि—पुरान समाज-सुधारक छथि! मुदा ब्राह्मणी विधवो भेटबाक आस नहि छनि। तेँ आब लोकदलमे गेल छथि! पहिने कमलपुरक खतबे सभ भरोस दैने रहनि। मुदा बुढ़बाक संग सगाइ लेल कोनो खतबिनिया तैयार नहि भेलनि। आब अपने गाममे दुसधटोली पर आस लगौने छथि!"

हमरा अनिलक गम्भीरता पर हँसी लागि गेल! बुझबामे भांगठ नहि रहल जे बातकेँ अतिरंजित क' रहल अछि। मुदा हँसी लगले थमि गेल। मोनमे बहुत रास बात उमड़' लागल। की थिकैक ई सभ? दलितक जागरण? जाति संघर्ष आ वर्ग संघर्ष! कथीक तैयारी थिकैक ई। वोटक लेल जे जहर पसारैत अछि नेता सभ जातिक नामपर… तकरे प्रतिफल थिक ई? तखन अइमे महाकान्त झा, भुट्टा झा आ सतीनाथ झा कोना छथि? दोसर लोग कहैत अछि जे कहीं ई देशक इन्द्रधनुषी राजनीतिक एकटा छोट-छीन दृश्य मात्र त' नहि थिक? कानून-व्यवस्था, शासन, सभटाक स्वरूप इन्द्रधनुषी भ' गेल अछि। वर्षासँ पूर्व आ वर्षा हेबा धरि कतहु पता नहि। वर्षा समाप्त आ इन्द्रधनुष उगि आयत। उपद्रव समाप्त, हत्या मारि-पीट समाप्त— पुलिस उगि आयत। चोरी-बेइमानी, लेन-देन, आपसी वितरण समाप्त, अधिकारी उगि आयत। पुल-बान्ह बनल आ टूटल, तखन जाँच-कमीशन उगि आयत। अदृश्य शक्तिक द्वारा उपद्रव पसारल जायत… निरपराध लोक मरत-मारत आ तखन ओइ घटनास्थलक आकाश पर एकटा छोट-छीन नेता अवतरित हेताह जेना आइ महाकान्त झा, भुट्टा झा आ सतीनाथ झा अवतरित भेल छथि। एकर बाद एकटा पैघ, ओहूसँ पैघ नेता अवतरित हेताह… इन्द्रधनुष पैघ…आरो पैघ हैत। सौंसे आकाशकेँ छापि लेत। तखन सभ समस्या सभ दुःख—कष्ट स्वतः तर पड़ि जायत… समाप्त भ' जायत। सर्वोपरि भ' जायत

राजनीति आ नेता। नेताक समस्याक समाधान राष्ट्रक समस्याक समाधान बनि जायत।

ओहो समस्याक समाधान भेल नामी बाबू सेहो नाम दिस झुकल छथि। टाका बहुत कमा लेलनि, आब नेता बनबाक छनि। ओनाहुँ पाइका लेल कबलाहपमे नेतागिरी धारण कएल लैत अछि। मुदा आब ओकरी सभकें किछु दिनकलि भ' रहल छैक। नेताकें चाही पाइ आ लाठी। पहिने पाइसं लाठी भेटि जाइत छलैक। आब स्थिति उनटा भ' गेल छैक। लाठीकें पाइ आ प्रतिष्ठा स्वत: भेटि जाइत छैक। आब ओकरा नेताक लठैत बनबाक काज नहि होइत छैक, ओ स्वयम् नेता बनि जाइत अछि लाठीक जोरसँ। लाठीक जोरसँ बहुमत सभ दिन प्रभावित होइत भवलैक अछि। नामी बाबू टाकासँ बहुमत प्रभावित कयने छथि···किछु लाठियो छनि। मुदा धारक ओइ पारमे खाली लाठिए लाठी छैक। ओतेक लाठी खरीदब सम्भव नहि भेलनि, मुखिया पदक उम्मीदवार अपन भाइकें नहि बना स लाह। मुखिया फेर ओही पारक बनला, समझौता क' सरपंचीसँ सन्तोष कयलनि। हुनका दरबज्जा पर लाठी पटाक अबलनि सुट्टा। अपने नहि छलाह, भाइ बटेसर बाबू छलथिन··· ओ जनता देलथिन— हमरा पर थोड़े लाठी बजारलक अछि। हम अनेरो फियैक अराड़ि मोल लिअ'। नामी बाबू घुरलाह, ओहो शान्ते रहलाह। भाइक बुधियारी नीक लगलनि। काशी काकाकें द' ल' क' मना लेबनि।

ई कथा हमरा अनिल नहि कहलक। ई त' हमर अन्तर्मनक दृष्टिमे सभटा स्पष्ट झलफला रहल छल। हमरा गुनधुनमे देखि अनिल बाजल—"अहाँ कोनो फिकिर नहि करू भैया। ओकर सभक जुलुस आ मीटिंगसँ डेरायल नहि छी हमरा लोकनि। अइ बेर हमहूँ सभ अड़िये गेल छियनि···फैसला भैये जयतैक। बिना पैर पर नाक रगड़बयने नहि छोड़बैक···"

अनिल बड़ विश्वासपूर्वक हमरा सभटा आयोजन आ तैयारीक विवरण देब' लागल।

+ + ×

मीटिंग काशी चौधरीक दरबज्जा पर भेलैक। भरि गामक लोक आयल। खाली बटेसर बाबू आ हुनकर भैयारी नहि अयलथिन। नामी बाबू भोरे अपन मोटरसँ पटना बिदा भ' गेल छलाह। मीटिंग शुरू कर'सँ पहिने बटेसर बाबूकें

बजाइ गेलनि। ओ समदियाकें घुरा देलथिन—चल, अबै छी। आधा घंटाक बाद दोसर समदिया गेलनि, ओकरो सैह कहलथिन— चल, अबै छी। काशी चौधरी तैयो मीटिंग शुरू नहि क' रहल छलाह। भीड़ उठ' लगलनि—"तखन हमही सभ जाइत छी। एक गोटे लेल एतेक काल के बैसत ?"

अनिल सभकें रोकलक मुदा काशी चौधरीक भातिज महिम गरज' लागल—"यौ कथी लेल नाटक करै छाइ छी अहाँ सभ। ओ किन्नहु ने औताह। हुनका दरबज्जापर, हुनका सामनेमे काकाकें मारि देलकनि, किछु बजलाह ? बटेसर भाइक त' जाय दिअ', नामी भाइ घुरिक' अयलाह, ओहो किछु बजलाह ? ओना बात बातमे बन्दूके बहार करै जाइत छथि, ओइ कालमे सभ चूड़ी पहिरि लेलनि। आब मीटिंग शुरू नहि करब त', हम सभ जाइत छी!"

मीटिंग शुरू भेल आ खतमो भेल मुदा बटेसर बाबू नहि अयलाह! काशी चौधरी सभकें सभटा घटना सुना कहलथिन—"ई खाली हमरे संग नहि भेल अछि, सरोजेक संग नहि भेल छनि, अहाँ सबहुक संग हैत। एकर सभक माथे उनटि गेल छैक। सुट्टा त' अछिए पाजी। ओही दिन मुसलमान टोलीक एकटा छौंड़ीक संग खेतेमे लट्टमपट्टी कर' लागल छल "दंगा करबा दैत! हमही बचा देलियैक।" भीड़मे मन्नू चौधरी फुसफुसा उठलाह—"खेतमे छौड़ी संग लट्टमपट्टा करैत छल, त' ई कोना पहुँचि गेलथिन? हिनकर त' एकोटा खेत नै छनि ओइ टोलमे···

मन्नू चौधरी आस्तेसँ जबाब देलथिन—"ई हिनके गोसाक त' लोक छनि ई सुट्टा आ मुनरा! सभटा छोटका लोकसँ साँठ-गाँठ रहैत छनि हिनका! सभपर दुलकैने रहैत छथिन! अइ बेर अपने पर दुलकि गेलनि, त' जमीन-आसमान एक कयने छथि!

गुलगुल होइत देखि अनिल ठाढ़ भेल आ एकटा कागजपर लिखल प्रस्ताव सभ पढ़' लागल

ई सभा सर्वसम्मतिसँ पास करैत अछि जे

१. आ धरि प्रबोधना आ ओकर स्त्री सरोज बाबूसँ आ सुट्टा आ मुनरा काशी बाबूसँ पैर पकड़ि क' माफी नहि मंगतनि, हमरा लोकनि ओकरा सभकें काज नहि देबैक, चाहे सभटा काज हमरा सभकें अपने कर' पड़य।

२. तीन टका जे ओनि दँ छिऐक ताहूमे फाजिल एक पाइ लेल गयो पार नै देबैक, माफी मांगि लेल तैयो···

३. एहि संघर्ष लेल बड़ टाका लागत ! लाठी कुटब पड़त···बम आ बन्दूकक इन्तजाम करऽ पड़त ! तेँ सभ घरसँ तत्काल पच्चीस टाकऽ टाका चंदा लागत !

४. सती गाय आकेँ नै क्यो नौत देतनि ने हुकार। हुनकर सम्पूर्ण सामाजिक बहिष्कार कयल जायत।

५. एहि संघर्षक संचालनक हेतु चार गोटेक एकटा समिति गठित होइत अछि, जकर अध्यक्ष कार्त बाबू, आ कोषाध्यक्ष अनिल बाबू रहताह। अन्य सदस्य रहताह—बटेसर बाबू···

महिम तुरत हल्ला मचौलक—'हुनकर नाम कोना रहतनि ! मीटिंगमे बजाहटियर बजाहटि भेलापर नै अयलाह, से एकर संचालन करताह। चलै चलू यौ····

ओकर आवाजपर मुदा क्यो नहि उठल। बटेसर बाबूक गप्प छलनि, नामी बाबूक भाइ ! खुल्लम खुल्ला हुनकर खिलाफमे के जाकैत ?

मीटिंग समाप्त भेलापर घुरिकऽ अपन आँगन जाइत मन्नू चौधरी कन्तू बाबूकेँ कहलथिन—''अ' गेलनि काफी आइन्ना ज्यौंत ! चन्दा पूरा आबिये जयतनि। नामी बाबू संग छथिन्हे। काल्हिए मुनरा आ सुटुटाकेँ बजा लिति अयताह···हुनके गोलक नऽ लोक छनि। आ गाम भरिक लोक धनत उत्सू। कार्त भाइ तऽ खेत पथारसँ निश्चिन्ते छथि ! जमीन परती रहत जहाँक आ मौज करता औ—

\+ \+ \+

अनिल मीटिंगक समटा खिस्सा सुना चल गेल। बीचमे माय नहि जानि कखन आबि कऽ दलानमे बैसि गेलि से पतो नै लागल ! असलमे मन्नू चौधरी आ कन्तू चौधरीक टिप्पणीक गप्प बेहू कहलक ! अनिल तऽ खाली मीटिंगक गप्प कहलक आ चल गेल।

ओकर गेलाक बाद माय कहलक—''आब तोँही देखहू ! एहन मामने कोना रहैत छी हम एकरहि आ तोरा लोकनि एकदम निश्चिन्त रहैत छऽ····

सत्ते हमरालोकनि एकदम्म निश्चिन्त रहैत छी। माय आइ एतेक बात कहलक···गाम उनटि जयबाक गप्प कहलक, तैयो कोनो डर नहि भेल। गामक लोकसँ मायोकेँ कोनो डर नहि छैक—हम जनैत छी। ओकरा सभ लेल स्नेह छैक मायक मोनमे···कोनो प्रपंच वा राजनीति नहि। ओकरा कथीक डर ?

तैयो हम जखन गाममे टहलऽ बिदा होइत छी तऽ माय टोकैत अछि—''सम्हरि कऽ जैह', ओ पुरना गाम नहि रहल' आब !''

हम उत्सुकताक संग आगाँ बढ़ैत छी। सत्ते यदि गाम जागि गेल हो···सत्ते यदि एकरा सभमे आत्मसम्मान जागि गेल होइ····एकरा सभक ठोरपर साटल 'मालिक हजूर' गोंधा' पेल होइ···तऽ केहन लागत ? एकटा सुखद परिवर्तनक संग साक्षात्कारक प्रत्याशामे हम आगू बढ़ैत गेलहुँ।

कतहु किछुओ ने बदलल। पहिने जकाँ टोकी दिस गेलहुँ। बाटपर ओहिना बैसलि छलि विशनपुरवाली ! नहि, विशनपुरवाली नहि। लग आ देखलियैक, ओकर जुअनकी पुतोहु छलैक···एकदम वृद्धि ओहिना, डाँड़मे थोड़े नवमिलाट लपेटल···ओखड़ल-सिकुड़ल देह ! बहुत दिनपर देखने छलियैक, मुँह यदि अपरिवर्तित नहि रहितैक तऽ चिन्हबो नहि करितियैक। ओ चीन्हि लेने छलि। लग आबिते कहलक—''परनाम मालिक !''

हम हँसी करलियैक—''आइ गाय चरबऽ जुअनकी कोना आबि गेलै···बट्टिब बुढ़िया कतऽ छौ ?

ओकर पपड़ी पड़ल ठोरपर बड़ दयनीय हँसी पसरि गेलैक—''कोन जुअनकी मालिक ? हमरो आरकेँ जुआनी थर्ब हइ कहियो ! कोन बाटे अबै हइ आ केन्ने जाइ हइ अनका भले बुझा जाइ, अपना नै बुझाइ हइ ! आ कतबो दिन रहै हइ—कोन अप्पन होइ हइ ? कहियो तऽ रहै हइ सब दिन···

हमरा सिहरन भेल ! विशनपुरवालीक पुतोहु इ कोन भाषा बाजि रहल अछि ! माय झूठ नै कहैत छलि। गाम सत्ते बदलल छैक···विशनपुरवालीक लुत्ती-पुतोहु आइ सत्ते लुत्ती बनलि छैक।

हमरा किछु सोचैत देखि ओ अपने कहलक—''बुढ़िया तऽ मरि गेल मालिक ! बूढ़ देह रहबै, भूख नै बरदाश्त भेलै, भूखे मरि गेल ! रौदी हइ···

कहाँदन खियैतियैक ! एक मास भोथ पाँचि क' बचलक आ एक दिन घरमे सूत रहि गेल···सात साँझक उपास रहलै···

हमरा अवाक आ हतप्रभ देखि ओ कहलक—"हमरा आर के जान लेत हुथ नै कक्र मालिक ! बुढ़िया गेल आ हमहू चल जायब। भूखे मरि जायब। बुद्टा शहरमे रहि क' रिक्सा चलबै हुय आ मुनरा गामे-गामे घूमिक राजमिस्त्रीक काज करै हुय···! ओकरा सबके कौन चिन्ता हइ ! आगि लगा मौज करै हय। एन्ने हमरा सबक पेटने आगि धधकै हय, । धीयापुता अन्न बेतरै मरै हुय···! बहाँ सभ निर्दयी बनल छी—काज बन्द केने छी··· माल-जाल सेहो भूखे मरै हुय। गाछी-बिरछी, खेतक आरिमे गाय-महींस नै चरब' देब ! इहे बाम्हुपर, बड़ रौदीमे चरै हुय गाय-महींस ! मरबे करत ! जे ने करै ई बुद्टा आ मुनरा !"

हम सर्द भ' गेलहुँ···लुत्ती त' सर्द-हेमाक भेल अछि ! कत' छैक आगि ! ई त' खाली छाउरे-छाउर छैक। माथ सत्त नहि भहलक। किछुओ ने बदलल छैक। गाम त' ओहिना छैक···

हमरा घुरैत देखि ओ फेर कहलक—"कोनो उपाय करियौक मालिक—!

हम ओकरा बिना कोनो आश्वासन देने मलहटोली दिस विदा भ' गेलहुँ। धार पार करैत जहिना पहुँचलहुँ, ओइ पुरना पोखरक गाछ लग कि एकटा बुढ़िया, एकटा पाँच वर्षक नेनाक आँगुर पकड़ने हमर चाक्षकात नाचि-नाचि क' गाब' लागलि—"हाली-हाली बरिसू, इन्नर देवता।"

वैसहीं अछि। रौदी छइ—अकाशमे मेघक एक्कोटा टिक्कर पर्यन्त नहि छैक आ ई नाचि-नाचि क' गबैत अछि—"हाली हाली बरिसू इन्नर देवता !"

बाट पूछिक' हम आगू बढ़' लगलहुँ त' ओ फेर आगुसँ हमर बाट छेकि लेलक - हमरा नै चिन्हली मालिक ! हम छी वैसहीं फुलेसरी ! गुलमाक माय आ बउआक दादी ! गुलमाकेँ हुबकलकै साँप आ बउआकेँ पुलिस बन्दूकसँ समाप्त क' देलकै। मुदा वैसहीं जिबै हुय मालिक···नै चिन्हली।

हम गौरसँ देखलियैक ! बिसनपुरवालीसँ बेसी बूढ़ि-थुरथुट ! चमड़ी थोकचिक सिकुड़ि क' आकृतिकेँ अजीव स्वरूप देने। तिरीं-तिरीं भेल डाँड़मे टंगल लत्ता। डाँड़सँ ऊपर कतहु किछु ने ! उज्जर सनसन केश मुँहपर छाबल आ ओइ तरसँ मिलमिलाइत ओकर चमकैत आँखि···

हमरा आगू बढ़ैत देखि फेर बाट छेकि लेलक बुढ़िया—"नै जाउ बौआ। शान्नहन तन रहै हुय, आ ने त। हमर बेटा-पुतहुकेँ बचलक तैयो सन्तोष नै भेलै··· अइ बिन आपक नेनाक मायोकेँ खा गेलै। पुतोहुकेँ खयली हम आपने। एकरा सबकेँ पततमे छाड़ि क' भकलैक देही—जनमौतीक कोखिमे लात मारलक गुलमा। बहु चलि गेलैक कसि क'···द' गेलैक सोन सन बेटा। ओ बगदि गेलैक। चोरी-डकैतीमे पड़ैक गेलैक। पुलिस ओकरी सत्ता बना देलकै। आइत-काइत ओहो अपन बहु आरि बहुक कोखिमे लात मारने बेल। ओकरो बहु सोनसन बेटा देलकै। ओइ लातिसँ नै मरली मौगी, आहतवाली छलि। एकसरे अपन नेन्नाकेँ पोसि क' पैघ कर' चाहैत छलि। समन्व लेल कतेक लोक कहलकै मुदा नहि मानलकै मौगी। तकरा की कवलकै जइ टोलक लोक से जनबै मालिक। काजपर बन्हैल लगा देलकै। साँझक साँस भूखलि रहलैक मौगी। एक दिन भोरे मूइल पड़लि छलैक आ छातीसँ सटल किलोल करैत रहै ई छौँड़ा···

हम घुर' लगलहुँ। बोनमे बहुत रास बात छटपटाय लागल। बुढ़िया पाछाँसँ जोरसँ बाजलि—,'आगू नै बौआ, कहुले जाउ। ऐ छौँड़ाकेँ के देखतैक, फुलेसरी जतहीं त' पाकल आम हय, आहियो खसि पड़त। कहने जाउ बौआ·· बहीं सभने कहने रही जे आब अत्याचारीक राज नहि, जनताक राज हइ···आब क्यो जुलुम नै करतैक···कहने रही ने बौआ···जबाब दू।

हम बिन कोनो जबाब देने पड़ाइत रहलहुँ। मलाहक टोल पूर्ववत छल। छोट-छोट फूसक घर। जे बड़ पैघ से आठ हाथ लम्बा-चारि हाथ चौड़ा। ओहिना डाँड़मे चिप्ठी पहिरने पुरुख आ नानगिलाट लपेटने मौगी सभ। नंग-धड़ंग खेलाइत, धारमे चुभकैत धीयापुता सभ। माय झूठे कहने छलि। गाम ओहिना छलैक···मलहटोली ओहिना छलैक। एकदम अपरिवर्तित।

घुरतीकाल धनुखटोली बाटे घुरलहुँ। लागल जेना किछु बदलल-बदलल होइ। पहिने ठीकसँ नै बुझायल जे केहन परिवर्त्तन। फेर ध्यान देला पर स्पष्ट परिवर्त्तन बुझायल। टोलक पछबरिया छोर पर एकटा ऊँच मड़वा जकाँ। मड़वाक चार नरम, जेना हालेमे तैयार होइ। खाम्हमे बान्हल एकटा आशा लटकल छलै—"पिछड़ा वर्ग जागरण मण्डप"। मड़वा पर बैसल बहुत रास लोक सभ।

हमरा उत्सुकता भेल। लग जा पैर ओहिना थकमका गेल। माय कहने छल, ताम्हरि क' बैर' मुदा हमरा कोनो भय नहि भेल। हमरा ओना ठाढ़ देखि किछु गोटे ठाढ़ भेल—"परनाम मालिक।"

मोनमे किछु कष द' उठल । मालिक अखनो एकरा सभक ठोर पर साटलो छैक । हम मटहाकेँ पुछलियैक— "अब बनती जाट मेलै है । मुदा एना चार जरल कियैक छौ··· ? मटहा तश भावसँ कहलक—"समितिक मड़वा हइ मालिक । कोइ जरा देलकै परसू राति···

तखने एकटा छौँड़ा छड़पि क' मड़वा परसँ नीचा आयल—"जबैला से की होतैक । चार फेर ठाढ़ भ' जयतैक । ई हमरा सभक हकक लड़ाइ हय···

हमरा मोनमे किछु छड़पि उठल···माय ठीक कहने छलि । गाम सत्ते बदलल छैक···किछु भ' क' रहतैक । तखने मड़वापर ध्यान गेल । किछु परिचित चेहरा···सभ उत्सुकता बश हमरे तकैत । खाली एक गोटे पीठ कद कयने··· । ध्यानसँ देखितहि चीन्हि गेलियैक –सतीनाथ झा ।

मोन फेर छोट भ' गेल । आकाश अखनो इन्द्रधनुष सभसँ भरल छैक । सभकेँ नोचि क' फेंक' पड़तैक । मोन भेल जे अखने जे छौँड़ा हकक लड़ाइक गप्प कयलक अछि, दौड़ि क' मड़वा पर जाय आ सतीनाथ झाकेँ लात मारि क' खोंचरा दिअय । फेर ओइ मड़वा पर बान्हल मुट्ठी तानि क' ठाढ़ भ' जाय आ आकाशमे लहरा क' कहय— ई हमरा सभक हक के लड़ाइ हय···जीत हमरे होत— □

नवम्बर १९८३

स्थानान्तरण

नीक नकाँ ई बुझि लेलाक बादो जे एहि दिनके आब बेसी दिनधरि टारल नहि जा सकैत अछि, हम बेर-बेर भगवानसँ ई प्रार्थना करैत छलहुँ जे कहुना ई दिन टरि जाय ! अपना एहि कामना आ एकर औचित्यके प्रमाणित करबाक लेल हम पछिला अनेक वर्षसँ बहुतरास तर्क आ सुरक्षात्मक तथ्य तथा आँकड़ा एकत्रित क' लेने रही आ कोनो चर्चा अबितेहि अखनक उपयोग अपना पक्षकेँ मजगूत करबाक लेल बो जानसँ करैत रही ।

तैयो चर्चा उठिते रहैत छल आ बेर-बेर हमर पक्षकेँ कमजोर प्रमाणित करबाक चेष्टा सेहो होइत रहैत छल । पछिला बेर त' उच्चतम अधिकारी सेहो कहि देलनि—'आब कोनो उपाय नहि अछि । बात संसद धरि पहुँचि गेल अछि । अहाँके एत'सँ जाय पड़त । एकैठाम काज करैत सत्तरह वर्ष भ' गेल अछि अहाँकेँ ।

हम धीरेसँ बात कटैत कहलियनि—एई सत्तरह वर्ष तँ अहीं लोकनि अपन आवश्यकतासँ रखलहुँ, कहैत रहलहुँ जे हम 'इनडिसपेन्सेबल' छी । आब दू वर्षसँ हमरा आवश्यकता अछि त' वर्षक विनती शुरू भ' गेल अछि ।

उच्चतम अधिकारी हमर तर्कसँ अप्रभावित रहलाह—'त' हम की क' सकैत छी ? वर्ष ई विनती हमरा लोकनि तँ नहि शुरू कयने छी । अहाँक अपन सहकर्मी, स्थानीय अधिकारी लोकनि एहि गिनतीक हिसाब रखने छथि, बातकेँ अखबारधरि पहुँचा देने छथि । बात आब हमरालोकनिक नियंत्रणसँ बाहर भ' गेल अछि ।

हमर मन मे किछु कचकल । लोकसभकेँ बुझियो क' जे जाबा कोनो बात नहि छल, एकबेर अन्तिम प्रयास कयल—'मुदा ई कहाँधरि न्यायसंगत हैत सर ! कोशिश-पैरवी क' कोनो टुटपुँजिया अखबारमे किछुओ छपाबैत आ अहाँलोकनि ओही आधारपर अपना फैसला करहि लेब । हमर एतेक वर्षक निष्कलंक एवं निष्ठापूर्ण सेवाकेँ नहि देखबैक । सत्तरह वर्षधरि एकेठाम रहि जायब अपराध भ' जायत' मात्र ककरो अखबारमे छपबा देलासँ ? अखबार मे छपबासँ पूर्व केन्द्रीय कार्यालय नहि जनैत छल जे एत' हम सत्तरह वर्षसँ एके स्टेशन पर छी ?

मुख्यालय अधिकारी तैयो कोनो आश्वासन नहि देलनि । हम अपन अहं मात्र छोड़लहुँ—'अहाँ तँ हमर पारिवारिक स्थितिसँ अवगत छी सर ! कतेको वर्षसँ पैघ संयुक्त परिवारक दायित्व वहन करैत आयल छी, आर्थिक रूपसँ एकदम टुटि गेल छी । बाल-बच्चा छबो सन्तान पैघ भ' रहल अछि । एखन बदली भेलासँ ओकरा सभक पढ़ाइ-लिखाइ आ भविष्यपर कतेक घातक असरि हेतैक ? ओहूमे कैको तँ एम० बी० एस० सी० धरिक विद्यार्थी सभ अछि ।

हमर प्रश्नात्मक कोनो असरि उच्चतम अधिकारी पर नहि पड़लनि । ओ मुस्कियाइत बजलाह—हम सभटा बात जनैत छी मिस्टर झा आ इएह मुख्य कारण अछि अहाँक बदलीक निर्णयक । अहाँक एहि सभ समस्याक कारणे हमरा-लोकनि एतेक वर्ष एकठाम रखलहुँ मुदा जिनगीभरि हमरालोकनि कोना राखि सकैत छी एकठाम अहाँके ? सेवा-निवृत भेलाक बादो अहाँक समस्या समाप्त होइ वाला नहि अछि ।

ओ चल गेलाह आ हम नायन अः निराशासँ थरथराइत ठाढ़ रहि गेलहुँ । पहिलबेर एहन थरथराहटि तहिया भेल छल, जहिया किछु मास पूर्व हम आफिसक लंच रूममे पहुँचल रही । हमर बहुत रास सहयोगी पहिनहिंसँ ओतऽ बैसल छलाह आ एकटा अखबारक कतरन पढ़ि-पढ़ि किछु गप्प क' रहल छलाह ; हमरा देखतहि सिन्हा बाजल— लिखलक तँ ठीके अछि । ई आफिस तँ पक्षपात आ भ्रष्टाचारक अड्डा बनिये गेल अछि । हमरालोकनि पछिला पन्द्रह वर्षमे पाँच-पाँच ठामसँ घुरि अयलहुँ आ किछु गोटे भीतक पाथर जकाँ ओहिना एहिठाम गड़ल छथि । ओ लोकनि चमचागिरी करबा लेल रहबे करताह आ हमरालोकनि सूप महक भाटा जकाँ थोंथराइत रहब, ई कतक न्यायक ठीक—जानू अहीं लोकनि.... ।

तावत ओकर दृष्टि हमरापर पड़लैक । ओ बात बदलि बाजल—हम अहाँक बात नहि क' रहल छी झाजी ! अहाँ तँ अपन मेरिटपर एहिठाम टिकल छी, मुदा कतेक लोक छथि अहाँ जकाँ ! काजो नहि करताह आ खाली चमचागिरीक बलपर चासनी चटैत रहताह ।

हमरा ठीक जकाँ किछु बुझबामे नहि आयल । प्रसाद एकटा अखबारक कतरन हमरा हाथमे दैत बाजल—'आइए छपल अछि ! देखि लिय' ।

हम ओ कतरन पढ़' लगलहुँ । स्थानीय दैनिक पत्रक कतरन छलैक । एकटा स्थानीय संवाददाता एतुका कार्यालयक मुख्य अधिकारीपर पक्षपात, जातिवाद आ क्षेत्रीयताक आरोप लगौने छलथिन ! स्थानीय अधिकारी लोकनिक अधिकारक हनन एवं लगातार बदली द्वारा हुनका लोकनि पर कयल गेल अन्यायक सेहो चर्चा कयने छलथिन आ संगहि एकटा सूची देने छलथिन मुख्य अधिकारीक दुलरुआ आ संरक्षण-प्राप्त अधिकारी सभक जे हुनका जातिक वा हुनका प्रान्तक छलथिन । सूचीमे पहिल नाम हमर छल ।

हम तामसे थर-थरा उठलहुँ मुदा लंचरूममे बैसल सभ सहकर्मी मुसकिया रहल छलाह । ऊपरी सहानुभूति देखबैत ठाकुरजी बजलाह—'कार बात त' ठीके लिखलक अछि झाजी । लिस्टो लगभग ठीके छैक । खाली अहाँक नाम कोना एहिमे आबि गेल । ने त' अहाँ हुनकर जातिक छियनि ने प्रान्तक''' ।

मोन आर लोहछि गेल । ई नकली सहानुभूतिसँ जरलपर नोन छीटि रहल छल ठकुरवा । हम लगभग ओहि सभ नाम आ चेहराकेँ चीन्हि सकैत छलियैक जकर ई बदमासी छलैक । हालेमे किछु स्थानीय अधिकारी सभक बदलीक आदेश बहरायल छलैक जकर विरोधमे बहुत आक्रोश छलैक एकटा वर्ग विशेषमे । सेहो वर्ग एक तीरसँ दूटा चिड़ै मारने छल । मुख्य अधिकारीपर आरोप लगौने छलनि आ हमरो खखिया क' एहि-ठामसँ हटयबाक चेष्टा कयने छल । सत्रह वर्ष धरि हमर एक-ठाम रहि जायब ओकरा सभक आँतिक कुरकुराहटि बनल छलैक.... ।

हम ठाकुरक गप्पक कोनो जबाब नहि देने छलियैक, ओहिठामसँ उठि गेल रही । मुख्य अधिकारीसँ ओहि दिन किछु कार्यवश भेंट कयने छलियनि । ओहो मुसकियाक' बाजल रहथि—आजुक अखबार देखलियैक अछि मिस्टर झा ।

हम मूड़ी डोलाकेँ सहमति जनौलियनि । ओ ओहिना मुसकियाइत बजलाह —''एहि साल बदली भेल प्रस्तुत रहू । आइये अखबारक कटिंग केन्द्रीय कार्यालय पठा देने छियैक ।

हमरा आश्चर्य भेल । पुछलियनि—एहि समाचारक हमर बदलीसँ कोन सम्बन्ध छैक सर ? अहाँलोकनि हमरा सत्रह वर्ष धरि एकठाम रखलहुँ, से हमर अपराध भ' गेल ?

मुख्य अधिकारी मुसकियाइत रहलाह—"बदली कोनो सजाय तँ नहि छैक मिस्टर झा ! मुदा बात त' सत्य छैक। अहाँ दू दू प्रोमोशन भेलाक बादो एकेठाम रहल छियैक।

हम तमसाक' हुनकर कोठलीसँ बहरा गेल रही। बहरेलासँ पहिने मन भेल जे पुछियनि—अखबारमे जे अहाँक बारेमे छपल अछि सेहो सत्य अछि ? मुदा किछु नहि पुछलियनि। दू साल पहिनुका एकटा बात मन पड़ल ! प्रमोशन भेल छल, बदलीक आशंका छल ! मुदा मुख्य अधिकारी दृढ़तासँ कहलाह—अहाँकेँ बदली नहि हैत ! अहाँकेँ हम छोड़ि नहि सकैत छी ! स्थानीय शाखामे बहुत रास जरूरी शिक्षा आदेश लागू नहि भ' सकल छैक ! अहाँकेँ सबटा लागू कर' पड़त—।

हम शिक्षा दू सालमे सबटा लागू करबा देलियैक ! प्रशंसा पत्रो भेटल। फेर सबठाम हमर-बदलीक गप्प होम' लागल आ सबक ठोरपर दबल-दबल मुसकी छलैक। हम मुख्य अधिकारीक कोठलीसँ सोहछल बहरयलहुँ आ सोझे अपन डेरा आबि गेलहुँ।

सुनितहि सौंसे घर मे प्रसन्नताक लहरि दौड़ि गेल ! हरदम उखड़ल-उखड़ल रहऽवाली पत्नी प्रसन्न भ' उठलीह आ बेटा-बेटी सभ खुशीसँ नाच' लागल। नव स्थानमे जयबाक संभावनासँ सभ बड़ प्रसन्न भ' उठल। पहिल बेर लागल जे एकठाम रहैत-रहैत ओ सभ कतेक उबिया गेल छल।

हमर मन आर हताश भ' गेल। आसक कोनो किरण कतहुँसँ नहि अभरि रहल छल। हम एहि शहरक छूटि जयबाक संभावना मात्रसँ थरथरा रहल छलहुँ आ हमर तैयार कयल गेल सुरक्षा-दुर्ग एक-एक क' ढनमना रहल छल। कार्यालयमे हमर तर्ककेँ नकारल जा रहल छल आ जिनका सँ आ जिनका लौकिक आधार-पर हम अपन तर्कक निर्माण कयने रही ओ सभ ओहि तर्कसँ असहमत आबि रहल छलाह।

भाइ बहिन सभसँ भेंट भेलापर किछु साहस बढ़ल। ओ सभ किछु चिन्तित बुझायल बदलीक संभावनासँ मुदा लगले पता लागि गेल जे भयभीत आ चिन्तित ओहो सभ नहि छल। खूब अक्षम लागि रहल छल। हमर बदलीक संभावनासँ हमरे सन चिन्तित छल ओ सभ।

एहेन दिन धरि हम सभक मेल चिन्तित रहैत आयल छलियैक। बेर बेर सोचैत आयल रही जे हमरा बिना एत' किछुओने चलतैक—ने हमर कार्यालय, ने हमर संयुक्त परिवार ! आब हमू सक्षम लागि रहल छल ! कार्यालयकेँ हमर जयबासँ कोनो क्षतिक चिन्ता नहि छलैक आ हमर परिवार हमरे सन चिन्तित छल। सबताकेँ हरदम केन्द्रमे राखि सोचऽ वला हमर अहंकारकेँ एहिसँ बड़ ठेस लगलैक। ओ बेर-बेर छटपटाय लागल।

मुख्य अधिकारी लग हम फेर एक बेर चेष्टा कयलहुँ—हमर शाखामे किछु काज अपूर्ण रहि गेल अछि। एक दू मास आर रहि जैतहुँ त' सभ काज प्लानक अनुसारे पूरा भ' जाइत।

मुख्य अधिकारी बीचेमे रोकि देलनि—"प्रैक्टिकल बनू मिस्टर झा ! एतेक सेल्फिस जुनि बनू। जिनगी भरि एक कार्यालयमे रहबाक बात ककरो ने सोचबाक चाहियैक। आयब-जायब तँ लगले रहैत छैक। काल्हि हमरे बदली भ' जायत, तँ कार्यालय बन्द भ' जयतैक ?

हमर चोटायल अहंकार फनफना उठल : मन भेल जे कहियनि—"अहाँ सन-सन दसटा मुख्य अधिकारी चल गेलाह मुदा आ अहाँ सहित सभ यैह कहैत रहलाह जे अहाँक बिना एतुका काज नहि चलत। आ आइ अहाँक सुर बदलल अछि""चाली अखबारमे किछु छपि जयबाक कारणे।

हम किछु नहि कहलियनि। ओतसँ चल अयलहुँ। दोस्त लोकनिक सगहि हम अपन चोटायल अहंकारकेँ शान्त कर' चाहलहुँ। सबकेँ कहलहुन लगलैक—'त' आब तोहूँ चल जयबेँ। एक-एक क' सभ चल गेल, कॉलेजक सभ संगी-साथी बाहर कतेक सुख लागत....।

हम ओकर बातसँ उल्लसित भेल जाइत रही की ओ अपन काज आ आन-आन लोक मे व्यस्त भ' गेल। हम किछु काल आर बसैत रहलहुँ। हमरा मन पड़ल जे एके शहरमे रहितहुँ हमरा लोकनिक भेंट एक वर्ष पर भ' रहल छल। हम कखन उठिक' चल अयलहुँ, ओ प्रायः बुझबो नहि कयलक।

हम अपने कार्यालयक सहयोगी संगक बीच सहानुभूति बटोरबाक चेष्टा कयलहुँ। पाँच-सात वर्षबाक। पछिला सत्तह वर्षमे लगभग सभ कहिओने कहिओ

निरन्तर हमरा संगे काज करने छल । बहुतोकें ई कुबेर काज पड़ल हएतैक । सुनिकें उदास होइत कतेको गोटे कहल— 'अहाँक रहलासँ कार्यालयक बड़ क्षति हैतैक । खासकें हमरालोकनिक । अहाँक रहलासँ एकटा बल रहैत छल बेर-कुबेर । दू-चारि वर्ष बाहर बिता फेर चेष्टा क' एत' अवश्य चल आयब....।

ओलहुसँ लोहुछिकें भागि अयलहुँ हम । सम्मिलित भय आ आशंकासँ थरथराइत प्रार्थना करैत रहलहुँ जे ई दिन टरि जाय । एहि शहरकें छोड़ि नहि सकब हम, टूटि जायब, एकदम छिड़िया जायब ।

आ आइ प्लेटफार्मपर ठाढ़ छी । भोड़ छैक आ भीड़मे बहुतरास चीन्हल-जानल चेहरा आ नाम अछि जे हमरा संग वा हमरा लेल एहि प्लेटफार्मपर नहि आयल अछि । अपरिचित चेहराक बीच मिझरायल अछि किछु आर चेहरा जकर नाम हम नहि जनैत छियैक मुदा जनैत अछि जेना चीन्हैत छियैक । बहुत कम, गनल गुथल लोक छथि जे हमरालग ठाढ़ छथि—किछु परिवारक लोक, स्कूल-कालेजक एकटा मित्र आ दफ्तर एकटा अधिकारी आ एकटा कर्मचारी । हिनका लोकनिक बीच ठाढ़ हम ओहि असंख्य अवसरक आ एहि प्लेटफार्म वा एयरपोर्ट वा बस स्टैण्डपर ठाढ़ अनेक चेहराकें मन पाड़बाक चेष्टा क' रहल छी जनिका बिदा कर' आ जिनका स्वागत कर' बेर-बेर एहि सभ स्थानपर अबैत रहल छी । ओहि महक कोनो चेहरा एत' नहि छल । ने दफ्तरक ने दोस्त-महिमक । ने सरसम्बन्धीक । मात्र एकटा भीड़ छल जाहिमे बहुत रास चीन्हल जानल चेहरा छल । किछु नजदीकी लोक छलाह जे घेरिक' ठाढ़ छलाह प्लेटफार्मपर ।

एतेक वर्षस एहि शहर आ एहि शहरक लोककें हम एतेक निकट अनुभव करैत रही जे शहर छोड़बाकाल हुनका लोकनिकें देखितहि हम कानि उठब, टूटिकें छिड़िया जायब । मुदा ओहिमेसँ अधिकांश चेहरा एहि भीड़मे नहि छल आ हमर डर एकाएक काम होअ' लागल अछि । ओहि चेहरा सभकें एत' नहि देखि किछु सहज होअ लागल छी । जिनकालोकनिकें छूटि जयबाक डर आ आशंकासँ हम एतेक दिन धरि थरथराइत रही ओ सभ एत' छलाहे नहि । मन एकाएक हुलसित भ' रहल छल ।

आइसँ 27 वर्ष पूर्व जखन स्टीमर पर चढ़ि गंगाक लहरिपर हेलैत हम एहि शहर दिस आबि रहल रही, मन एहिना उल्लसित छल । ई शहर एहि प्रान्तक ई राजधानी जहिआ सत्ताइस वर्षमे हमर गाम बनि गेल छल आ आगन एहि गामकें छूटि जयबाक डरसँ हम बेर बेर ओहिना डेराइत रही । हरदम सोचैत रही जे एहि शहरसँ जाइत काल ओहिना कानब जेना अपन गाम क एहि शहर लेल बिदा होइत काल कानल रही । मुदा तेहन किछु नहि भ' रहल छल आ हम ओहिना उल्लसित भेल जा रहल रही जेना स्टीमरपर एहि शहर दिस अयबाक काल भेल रही ।

आ आशाक विपरीत पत्नी आ धीयापुता सभ जे एहि शहरकें छूटि जयबाक समाचार पाबसँ प्रसन्न भ' उठल रहथि, एखन उदास लागि रहल छथि । हुनका-लोकनिक आँखिमे नोर छनि आ प्लेटफार्मपर ठाढ़ लोक सभसँ गप्प करैत करैत बेर-बेर ओ लोकनि कानि रहल छथि ।

गाड़ी बिदा होइत अछि आ छूटि रहल एहि शहर आ शहरक लोककें आ प्लेटफार्म पर क्रमशः विलीन होइत आकृति सभकें बेर-बेर हाथ हिलाक' हम प्रसन्नतापूर्वक बिदा भ' रहल छियैक ।

अप्रैल १९८७

□

बजन्ताक पोता

बीच आँगनमे भीजल बखरा चौकी पर चितंग पड़ल रही। उमससँ सौंसे आँगन औनायल छल। धीया-पुता सभ खटल-खटल चौकी पर अपनेसँ बैसल गर्मीसँ लोहछल हल्ला-गुल्ला मचा रहल छल। श्रीमतीजी सेहो बच्चे सभक बीच बैसलि जल्दी-जल्दी हाथक पंखा घुमबैत बबस्यौत छलीह।

माय मुदा बहु गरमीमे भनसा घरमे छथि। पहिने सबेर, फेर चाहु आ कनिये कालक बाद जलखइ। आइए गाम आयल रही जमशेदपुरसँ-कलाक स्थापनक छः दिन बाद। आ बड़ू मासमे एहन गरमी। भीजलो चौकी पर चैन नहि छल। दू बेर स्नान क' आयल रही, तैयो नहि।

जलखइ-चाहक व्यवस्थासँ निश्चिन्त होइते माय फेर आंगनमे आयलि। एहि बेर ओकर हाथमे एकटा बड़का पंखा छलैक। ताड़क बड़का पंखा जाहिमे बढ़ाइ हाथक पतरका बांसक डण्टा लागल छलैक। एहि पंखाकेँ हम चीन्हैत छियैक। दादा (हमर पिता)क बनबाओल छलनि। जहिया कहियो गाम अबैत रही, बजन्ता बड़का पंखा ल' ठाढ़ भ' जाइत छल। तावरि हौंकैत रहैत छल– जाधरि हम मना नहि करैत छलियैक। जेना कोनो मशीन रहय। समान गतिसँ ओकर हाथमे ओ पंखा घण्टो डोलैत रहैत छलैक। दरबज्जा पर कोनो पाहुन आबथि, पंखा लेने बजन्ता स्वागत आ सेवामे हाजिर।

आइ ने दादा छथि ने बजन्ता। आइ मायक संगमे छलैक एकटा दस बारह बर्खक छौंड़ा। मड़बा पर राखल लालटेनक इजोतमे ओकर कारी आकृति त' खूब स्पष्ट नहि देखाइत छलैक मुदा ओकर सुन्दर आ साफ दाँत झकझक चमकि रहल छलैक। हाथमे बड़का पंखा लेने मुश्किलसँ ठाढ़ छल ओ छौड़ा। देह खाली मुदा डांड़पर चरखानाक साफ सन पैजामा।

—चीन्है छहक? चुगलाक बेटा छैक। आब क्यो दसो बर्खक छौड़ा नहि भेटैत अछि गाममे जे माल-जाल चराओत, बर्तन बासन माँजत। एकर माय आब नैहरसँ एवहि आबि गेल छैक। चुगला आब रिक्शा चलबैत अछि दरभंगामे। भोरे जाइत अछि आ राति क' घुरि अबैत अछि। कहुना कइ छौंडाकेँ फुसला क' रखने छी एक माससँ। मुसहरवाक सभ बेटा आब रिक्शे चलबैत छैक। एतेकटा आँगनमे देह एकटा छौड़ाक संग रहैत छी हम आ तोरा लोकनिकेँ गाम अयबाक इच्छा नहि रहैत छ'। सभ भाइक एक्के हाल—आयो सालमे एक बेर दुर्गापूजामे गाम। बाकी एगारह मास कोना रहैत अछि माय, तकर कोनो चिन्ता रह' तखन ने।

माय अपन दुखनामा सुना फेर भनसाघर दिस चलि गेल। ओ छौड़ा पंखा हौंक' लागल। हम आँखि मुनि पड़ि रहलहुँ। पड़ल-पड़ल बजन्ता मोन पड़ल। नहि जानि, के ओकर नाम बजन्ता राखि देने छलैक। छल ओ एकदम गुम्मा। कखनो काल एकाध टा शब्द रुकि-रुकि क' बजैत छल जेना ओहो दू चारि शब्द बजबामे कष्ट भ' रहल होइ—''पनपिआइ मलिकाइन''।

भोरे उठि, महींसकेँ चौरमे चरा, रातुक सभटा ऐंठ-कांत बर्तन-बासन पोखरिक घाटपर माँजि, कुल्हड़ि क' जारनि चीरि मंसापार लग राखि, चौरमे जहाँ तहाँ बोआइ एक छिट्टा घास छीलि, सूर्य माथपर अबलाक बाद ओ भनसा-घरक कोनटा लग ठाढ़ होइत छल—''पनपिआइ मलिकाइन''।

माय ओकर गमछामे किछु मोटसन उसना चूड़ाक संग नून आ कहियो काल अचारी द' दैत छलैक 'जबरा आ बथान पर, अपन बथान पर बैसि पड़ोकाक थरि चिबा-चिबा क' खाइत छल। बहू बीच कतेको बेर लल्ला मचैत छलैक आँगनमे —'केम्हर गेल बजन्ता। सभ काज पड़ले छैक?'

चूड़ा आ नूनक पनपिआइ क' बजन्ता आल्मुनियमक बड़का बट्टा निकालैत छल आ कल पर आ ओहमे पानि भरि भरि क' दू तीन बेर भरि छाक पीबैत छल, माय कपार सेहो पो लैत छल। तावत आँगनमे गर्द मच' लगैत छलैक।

—'महम्मदपुर चलि जो बजन्ता। मिलसँ एक बोरा आंटा पिसा ला।'

—'लाखा चलि जो बजन्ता। ओत' दस बोरा धान चिरतियाक घरमे पड़ल छैक। बैलगाड़ीक इन्तजाम नहि भ' रहल छैक तोहीं दिनमे दू खेप क' ल' आ। पाँच दिनमे सपरि जयतौक।

'बाड़ीमे पाँच सय बम्बइ आम तोड़ि क' राखल छौ। जल्दी जो बजन्ता। तीन खेपमे भ' जयतौक। बोरा लेने जैहें'।

'स्टेशनपर चलि जो बजन्ता। रतुका गाड़ीसँ बेतियावला बोझा बोधुन। ट्रेन डेढ़ बजे रातिमे छैक। एगारह बजे खा-पी क' स्टेशन चलि जैहें। दियासलाइ आ लालटेन अवश्य ल' लिहे। आब कालपर लेसि लिहैं'।

बजन्ता घिरनी जकाँ नचैत रहैत छल। कोनो काज लेल 'नहि' नहि कहैत छल ओ, सभ काज फुर्तीसँ करैत छल—तुरन्त। पसेनासँ तर-बतर, डेढ़ सय बम्बइ आम वा डेढ़ मन चाउर-धान वा आँटा ल' आँगनमे पहुँचैत देरी नव हुकुमनामा जारी भ' जाइत छलैक। ओ अपन मैल फाटल गमछासँ गरदनि पोछैत बिदा भ' जाइत छल ओहि हुकुमक तामिल कर'। अकड़ल टेढ़ भेल गरदनिकेँ सोझ करबाक वा दू मिनट बैसि क' हकमैत कोढ़िकेँ स्थिर करबाक मौका नहि भेटैत छलैक कहियो।

एकटा मौका मुदा ओकरा अवश्य भेटि जाइत छलैक—छोट-मोट चोरी करबाक मौका। चोरियो एहन जे सभ बेर पकड़ले जाइत छल।

मोजेपरसँ चाउरक बोरा ल' क' बजन्ता आँगन आयल। माय ओहि चाउरकेँ फेर तौलबैत छल। चाउर डेढ़ सेर कम?

—'चाउर डेढ़ सेर कम कोना छौक बजन्ता?' बजन्ताक जवाब हाजिर। ओही कालमे ओ एतेक राश शब्द एक संग बजैत छल—''गीर पड़लैक मलिकाइन। बाटमे एक ठाम बोराक मुँह खुजि गेलैक। चाउर माटीमे गीर पड़लैक। सभटा चाउर उठा लेलियैक मुदा किछु चाउर एकदम माटी-माटी भ' गेलैक—छोड़ि देलियैक।

आमक बोरा ल' क' गाछीसँ अबैत छल। आमक गिनती होइत छलैक। दस आम कम।

—'आम त' दसटा कम छौक बजन्ता।' बजन्ताक जवाब हाजिर—'नदीमे गीर गेल मलिकाइन। बोराक मुँह खुजि गेलै आ आम पानीमे गीर क' बहि गेल।

आर कियो रहैत छलैक आँगनमे—काका, दादा वा बड़का भाइ, त' ओकर पसेनासँ तर बतर मुँह हाथ पर दू चारि चाट लागिये जाइत छलैक। खाली माय रहैत छलैक त' बचि जाइत छल। मुदा माइयो एकदम्म नहि छोड़ैत छलैक। ओकरा ओंघाड़ि क' पुछैत छलैक—सत्त-सत्त बाज बजन्ता। चाउर वा आम पसिनियाँकेँ द' अयलहिक ने।''

—जाउ मलकाइन'' बजन्ता लजा जाइत छल—'बहु' त' मलकाइन चोरि करैत छी।

—देख झूठ नहि ने बाज। पठबियौक खवासिनीकेँ पसिनियाँ लग।''

बजन्ता ओहिना लजाइत बजैत छल—''बहु' त' मलकाइन। मोन बड़ थाकि गेल छल। दू चौठी ताड़ी—

माय ममतापूर्ण भर्त्सना करैत कहैत छलैक—दुर जाउ। चोरियो करैत छी त' पसिनिये लेल: अपना बहु बाल बच्चाक लेल नहि।'

ओना चोरी ओ खाली पसिनिये लेल नहि करैत छल। सन्तू काकाक काज सेहो बजन्ते चलबैत छलनि। अधानक भटले रहैत छलाह, बजन्ताक बड़ आस छलनि। चारि पेग ताड़ पीबैत छलाह मुदा ने अथानिपर माथ मड़ैत छलनि, ने उठौना लैत छलाह। मौका भेटिते बजन्ता दुहि क' एकटा बड़का लोटामे द' अबैत छलनि। रुपयाक बदला भोजन्नी भेटैत छलैक सेहो बेर-सबेर आ बजन्ता दौड़ैत छल पसीखाना।

बजन्ताक एहो चोरी सभ बेर पकड़ल जाइत छलैक। दूध दुहि क' जहिना बाबा मायक सामने रखैत छल, ओ बूझि जाइत छलैक—''दूध आइ बड़ कम छौक बजन्ता? बजन्ता गोंगियाय लगैत छल—''संझियामे भैंस एक गो खराब घास खा गेलै। दूधे बिला गेलै।''

ओकर फेर दुर्गति होइत छलैक। डाँट-डपट आ कखनो काल दू चारि थापर। बजन्ता मारियो खा क' घिरनी जकाँ नचैत रहैत छल—कोनो काज बन्द नहि करैत छल। रौद जखन झुक' लगैत छलैक, दू बजेक बाद, अपन अलुमुनियमक थारी लेने बजन्ता फेर भनसा घरक कोनटा लग ठाढ़ होइत छल—''कलउ मलिकाइन।''

कलउ माने दिनुका भोजन। भोजन माने मड़ुआक दू टा मोट-मोट रोटी। संगमे नून आ तेल। कहियो काल अचार वा रतुका बसिया तरकारी। कहियो काल चाउर वा धानक रोटी भेटि जाइ, त' बजन्ताक आँखि चमक' लगैक। जहिया भात भेटि जाइ, बजन्ता दौड़ क' अपन बड़का बट्टा सेहो ल' अबैत छल। थारीमे भात आ बट्टामे झोर। संगमे नोन। माछ-भात बड़ प्रेमसँ खाइत छल बजन्ता। ओना किछुओ भेटैत छलैक ओ कहियो किछु ने बजैत छल।

एक दिन ओ आजल। पहिने माय लग ठाढ़ भेल—''हम पूब जेबै मलकाइन', अइ गाममे गुजर नहि होत आब।

माय चिन्तित भेल मुदा ऊपरसँ सहज बनल कहलकै—'त' जो। हम आर कतेक पेट भरबौ तोहर। कमाइ छें अगगर आ खबनहार छौक छः टा। बहु छौ देहुन लुरिगर जे कखनो कोनो काज परसबे नै करतैक। बेटाकें तोँ दुलारे बनौने छें—कतौ काज नवेबे ने करबाहिक। तीनू बेटी ककरो काज किछु करैत छौक, बस्स। हम जे दैत छियौक ताहिसँ बेसी नहि द' सकबौक।

जे दैत छियौक मतलब दश कट्ठा जमीन। ओहमे जे उपजि जाइ', नगद किछु नहि। खयनाइ आ जलखइ ऊपरसँ पावनि तिहारमे एकटा धोती आ गंजी, बर्खमे एक बेर बस्स।

माय लगसँ ससरि क' बजन्ता ठेराइत दादा लग ठाढ़ भेल—'हम पूब जेबै मालिक। आब गुजर नै होएत। कमेबै ओतै-ठीकाक लोक सभ जाइ-हए। हमरो जाइ दू।' 'दादा ताहिसे बरबर कोप' लगलाह' नमक हराम छें तोँ। सात पुस्तसँ अही घरसँ तोहर घर-परानिक गुजर होइत अयलोक अछि। आब तोहर गुजर नहि होइत छौक। पूबमे राखल छौक तोरा हेल सोरा। बजन्ता क' देखि लें मुदा घुरि क' हमरा लग नै अबिहेँ खबासिया कर' से कहि दैत छियौक।

बजन्ता चल गेल। ओकरा ने दादाक चेतौनी रोकि सकलैक ने मायक बुझौनाइ। ओ निर्णय क' चुकल छल। चल गेल सिलीगुड़ी। ओतसँ कमाक' पाइ पठब' लगलैक। ओकर परिवारक गुजर होब' लगलैक। माय चरवाहीमे मुसहरवाक छोटका बेटाकें राखि लेलक। सब बजन्ताकें बिसर' लगलैक।

हमरा पूरा अधिक काल बजन्ता मोन पड़ैत छल। हम दुनिया ओकरे कनहा पर बैसि क' देखने रही। दुर्गापूजामे जखन भरि गाम बाजावर बिदा होइत छल विजयादशमीक दिन, दादा हमरा बजन्ताक कनहापर बैसा दैत छलाह। महमदपुर-लाखा ओकरे कनहा पर बैस क' जाइत छलहुँ। पैघ भेलापर जखन बाहर पढ़'-लिख' लगलहुँ, गामसँ बिदा हैबा काल हमर बकसा आ मोटा ल' क' बजन्ते स्टेशन पर अबैत छल आ जहिया छुट्टीमे गाम अबैत छलहुँ, स्टेशन पर लालटेन लेने बजन्ते ठाढ़ रहैत छल।

बजन्ता पूब चल गेल—गाममे ओकर पेट नहि भरैत छलैक। ओकर मचानपर आब मुसहरवाक बेटा चोइला सुतैत छलैक आ पचिसियाँ आ सन्तु काकाकें आब ओकरे आस रहैत छलनि।

बजन्ताकें लोक बिसरि गेल रहितैक कि तखने एक दिन ओ घुरि आयल। बीचमे एक दू बेर ओ गाम आयल छल। आँगन आबि हवेलीमे अपन हाजिरी ओ द' गेल छल। लोक बेसी ध्यान नहि देलकै। एहि बेर सभक ध्यान गेलैक। ओ रोगी भ' क' घुरल छल—मरणासन्न। डाक्टर जबाब द' देने छलैक। दिन गनि रहल छल। फूलल बढ़की टा पेट—पीयर चेहरा आ लटपटाइत डेग। देहमे एक्को बुन्द शोणित नहि। भूख मुदा खूब। अधिक काल आँगनमे आबि क' बैसि रहैत छलैक। माय किछु आब लेल द' दैत छलैक। खाइत काल ओकर आँखिसँ दहो बहो नोर चुबैत रहैत छलैक। बजैत ओ किछुओ नहि छल।

आ एक दिन ओकर बाजब सभदिन लेल बन्द भ' गेलैक। बजन्ताक बाजब बन्दो भेलासँ संसारक कोनो काजमे कोनो फर्क नहि पड़लैक। ओकरा मोन पाड़बाक समय वा इच्छा ककरो नहि छलैक। भरिसक ओकर अपनो बेटा-बेटीमे नहि। युग बीति गेलैक।

एकटा बताहि-बूढ़ झुरखुट स्त्री हमर आँगनमे बैसलि कानि रहल छलि आ बजन्ताक नाम ल' रहल छलि। हम साकांक्ष भेलहुँ। हमर सभसँ छोट बहिन दादासँ पुछलकथि ''ई के छैक दादा ?''

दादा बहुत खिन्न छलाह। डाक्टर सभ जबाब देब' लागल छलनि। ओसारा पर चौकीपर पड़ल रहैत छलाह। लोककेँ चीन्हबोमे भ्रम होइत छलनि। मुदा ओइ बुढ़ियाकें चीन्हि गेलथिन।

—'ई माय छैक—बजन्ताक माय। अपन बेटा लेल कनैत अछि। हमरा त' मायो नहि अछि, हमरा लेल के कानत ?' दादा कालक क्रमशः लग अबैत डेगक धाप सुनि रहल छलाह। बजन्ताक बुढ़िया माय जे गाम-गाम घुरि क' भीख मँगैत छलि तुरत आनि मायक स्मृति करा देने छलनि। हमर छोट बहिन अवाक हुनका लग बैसलि छलि। ओकरा किछुओ नहि बुझायल छलैक।

आब दादा नहि छथि। हमर सभ भाइ बहिन सयान भ' गेल अछि। बहिन सभ सासुर बसैत अछि आ सभ भैयारी पटना-जमशेदपुर रहैत छी। गाममे

माय एकसरि रहैत अछि। हमरा ओकनि पावनि-तिहारमे, सेहो खाली दुर्गापूजामे गाम अबैत छी।

बजन्ताक बेटा पहिने अरकसियाक काज करैत छल दरभंगामे, अपन ससुरक संग। बहुओ संगे रहैत छलैक। बजन्ताक परिवार बिलटै' लागल छलैक। माय ओकर बड़की बेटीकें गायक चरवाहींमे राखि लेने रहैक। बजन्ताक बहु सेहो मजूरी कर' लगलैक। बड़की बेटी सासुर गेलैक त' माय दोसर बेटीकें रखलकै। दोसरो सासुर गेलैक त' सभसँ छोटकी बेटीकें रखलकै, ओहो सासुर चल गेलैक।

मुसहरवाक बेटा सभ दरभंगामे रिक्शा चलब' लगलैक। दू टा कानपुर चल गेलैक। मायकें चरवाहो भेटब मश्किल होब' लगलैक। चुमना सेहो आब गामे रह' लागल छल। भोरे जाइत छल, रातिक' घुरैत छल। दरभंगामे रिक्शा चलबैत छल। ओकर बेटा मुनराकें माय राखि लेने छलैक।

—अहाँ त' सूति रहलौं। पंखा डोलबैत-डोलबैत हमर बाँहि ऐंठि गेल आ अहाँ चैनसँ फोंफ काटि रहल छी।

मुनरा देह डोलाक' हमरा जगा रहल छल। ओ हाथक पंखा राखि चुकल छल आ हमर देह डोलबैत झुकल ठाढ़ छल।

हम कने सकपका गेलहुँ। पंखा ओकरा लेल सत्ते बड़ पैघ छलैक आ बड़ी कालसँ डोला रहल छल। ओकर बाँहि सत्ते ऐंठि गेल हेतैक। हमरा आश्चर्य भेल। ओ छौंड़ा अपन बात एकदम स्पष्ट बाजल छल—निडर आ निष्कम्प।

—"आब भ' गेलैक तों जो।" हमर एतबा कहैत देरी ओ पंखा उठा बिदा भ' गेल। हमर आश्चर्य कौतूहलमे बदल' लागल। मुनरा हमर अत्याचारक भरि ओ अनजानमे भेल छल, विरोध एहन स्पष्ट शब्दमे क' गेल छल। राति खएला-पीलाक बादो सुतबामे विलम्ब भेल। गर्मीसँ बड़ी काल छटपटाइत रहलहुँ। आँखि लागल त' भोर तक सुतले रहि गेलहुँ। आरो देरी तक सूतल रहितहुँ यदि दरबज्जा पर किछु गुलगुल सुनि नीन्न ने उचटि जाइत।

दरबज्जा पर आबि क' देखलहुँ जे हमर श्रीमतीजी तामसे थरथराइत मुद्रामे ठाढ़ि छथि आ हमर छोटका बेटा लगातार कानि रहल अछि। माय हमरा देखितहि मुनरा पर हाथ चला देलकै—तोहर ई मजाल। बेन्ना पर हाथ उठलें तों?

मुनरा एकदम तरंगि उठल—ई हमरा मारलनि से किछो ने आ हम कने हाथ लगा देलियनि तकर एतेक हल्ला। जे हमरा मारत तकरा हम मारबे। मारि खा क' चरवाही नै करब हम। मू अपन छिट्टा-खुरपी, हम जाइ छी।

माय एकदम डरा गेल। ओकरा बड़ मश्किलसँ एकटा चरवाह भेटल छलैक। चाट त' ओ अपन पुतहु आ बेटाकें प्रसन्न करबाक लेल मारने छलैक। हमर श्रीमतीजी ओहिना तमतायलि ठाढ़ि छलीह।

हम अपना बेटाकें लग घीचि ओकरा चुप्प करैत मुनरासँ कहलियैक—तों जो, घास कर' ग'। तोरा क्यो नहि मारतौक।

मायक आँखिक डर बिला गेलैक। श्रीमतीजी आँखिक तामस आर लहकि उठलनि। हमरा भर्त्सनापूर्वक दृष्टिये ताक' लगलीह। मुनरा छिट्टा आ खुरपी उठा बिदा भ' गेल।

पत्नीक भर्त्सनापूर्ण दृष्टि जखन असह्य होम' लागल त' हम आगू बाट दिस ताक' लगलहुँ। मुनरा छिट्टाकें माथसँ लगा ओकरा पीठ पर लटकौने आबहिना हाथक खुरपीकें जोर-जोर हवामे नचबैत कोनो गीत गबैत जा रहल छल जेना ओइ खुरपीक धारसँ काटि काटि क' बाना लेल अपन बाट बनबैत जा रहल हो।

हमरा ओ बड़ नीक लागल।

जुलाई १९८७

विकलांग

ओकरासँ हमरा डर लाग' लागल अछि।

हरदम लगैत अछि जेना ओकर आँखिमे कोनो खतरा लपलपा रहल हुए। ओना ओ हमरा आगाँ हरदम शान्त रहैत अछि, एकको शब्द नहि बजैत अछि मुदा हमरा सदिखन ओकर आँखिमे लपलपाइत खतराक प्रतीक अनुभव होइत अछि आ हम ओकरासँ डेरायल रहैत छी।

डेरायल रहबाक ओना कोनो कारण नहि अछि। ओ हमर आदर करैत अछि। हमर सभ बात मानि लैत अछि मुदा ओकर ओहि आज्ञाकारितामे एकटा विचित्र ढंगक अवज्ञाक भाव मिश्रित रहैत छैक। भरिसक तेहन किछु नहि रहैत छैक, हमरे भ्रम होइत अछि। सदिखन लगैत अछि जेना ओकर पैंच-पैंच आँखिमे हमर प्रत्येक धारणा, प्रत्येक सिद्धान्त आ प्रत्येक आज्ञा लेल एकटा स्थायी अवज्ञा आ उपेक्षाक भाव आबि गेल छैक। यद्यपि अपन आचरण आ उक्तिमे, कमसँ कम सामने-सामने ओ हरदम आज्ञाकारी बनल रहैत अछि।

अखनो ओकरा आँखिमे वैह भाव हेतैक—हम सोचैत छी आ मूड़ी उठा क' ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि। यद्यपि हमही ओकरा बजौने छिऐक। ओ आबि क' चुपचाप हमर सोझाँमे ठाढ़ अछि आ हमर बकार नहि फूटि रहल अछि। ने आँखि उठा ओकरा दिस तकबाक साहसे भ' रहल अछि, ने जवाबक लेल ठोरे उठि रहल अछि। आइ अन्तिम दिन छैक- हमरा बूझल अछि। वैह कहने छल। आइ यदि काज नहि हेतैक त' एहो अवसर समाप्त। ई अवसर समाप्त माने सभ किछु समाप्त। एकर बाद सरकारी नोकरीक लेल वयस नहि रहतैक।

ओ जखन हमरा कहने छल त' कने आश्चर्य भेल छल। ओकर वयस एतेक कोना भ' गेलैक। पछिले साल एम०ए० पास कयलक अछि आ एहि साल वयस समाप्त। एतेक छोटेसँ स्कूल जाइत रहल अछि ओ।

फेर अपन आश्चर्य पर अपने हँसी लागल। मैट्रिकक बाद दस वर्षमे एम० ए० क कोर्स पूरा भेल छलैक। आइ० ए०, बी० ए०, आ एम०ए० तीनूमे दू-दू वर्षक बदला तीन-तीन वर्ष लागल छलैक। एहि लेल नहि जे ओ सभ कक्षामे एक-एक बेर अनुत्तीर्ण भेल छल। एहि लेल जे परीक्षा आ रिजल्ट लगा क' सभ कक्षामे तीन-तीन वर्ष लागल छलैक। आ बी० ए० (प्रतिष्ठा) आ एम०ए० क परिणाम दुरुस्त करबामे एक वर्ष आर लागि गेल छलैक, तैयो बात बुझिआयल नहि छलैक। आइ अन्तिम दिन छैक आ ओ हमरा सोझाँमे ठाढ़ अछि। डरे हमरा मूड़ी उठा ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि। ने ओकरा संग जवाबक लेल ठोर उठि रहल अछि।

एकटा आवेशमे हमरासँ बजा गेल छल —'तोरा बुते किछु नहि हेतह। काल्हि जा क' झगड़ा क' लिअह्, हम अपने जायब। चलिह' हमरा संगे, सभटा काज करबा देबह।' ओ नमल स्वरे मुदा जेना चुनौती दैत बाजल छल — 'दरखास्त जमा करबाक अन्तिम तिथि मुदा लग आबि गेल छैक।'

आइ जयबा लेल तैयार बैसल छी बड़ी कालसँ। ओहो आबि क' सामनेमे ठाढ़ अछि मुदा हम ओहिना बैसल छी आ आँखि उठाक' ओकरा दिस तकबाक साहसे नहि भ' रहल अछि। ओकरासँ हमरा डर लाग' लागल अछि।

ओना ओकरासँ डरयबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि। ओ हमर छोट भाइ अछि। पाँच भाइमे सभसँ छोट। सभो भाइ-बहिनमे मात्र एकटा बहीन ओकरासँ छोट अछि। हमरासँ बीस वर्ष छोट अछि ओ। पन्द्रह वर्ष पूर्व जखन दादा (हमर पिता) मरल रहथि, ओ मात्र बारह वर्षक छल। बापक दुलारू! हरदम दादा ओकरा अपना संग रखैत छलथिन। सभ जिद्द पूरा करैत छलथिन। दादाक मृत्युक खबरि जहिया पहुँचल छल, आलोक हमरा संगे छल। अबोध छल। मृत्युक अर्थ मुदा बूझ' लागल छल। खबरि भेटितहि तेहन आर्त्तनाद कयने छल जे हमर आँखिक नोर सुखा गेल छल। ओकरा बरन बाँहिमे समेटैत कहने छलिऐक— नहि कान। दादा खाली हमर मरल छथि। तोरा सभ लेल त' हम छियो। तों नहि कान'। हम छियौ तोरा लेल।

आ आइ आलोक सामने ठाढ़ अछि आ हमरा मूड़ी उठाक' ओकरा दिस तकबाक साहस नहि भ' रहल अछि। ओकर आँखिक खतरा लपलपाइत पूछि

बैसल 'कहाँ गेल अहाँक आश्वासन ? अहाँ सामर्थ्यवान छी मुदा की क' सकलहुँ हमरा लेल आइ धरि। हमरा देखा लेल अछि जे अहाँ लग—मात्र एकटा नपुंसक आदर्श। भरि जिनगी बैहु घोरि-घोरि क' अपनहुँ पीलहुँ आ हमरो सभके पिआ रहल छी।' अपन नपुंसकता आ सामर्थ्यहीनता पर ततेक ग्लानि भ' रहल अछि, जे डेगे नहि उठि रहल अछि। बड़ जोशमे कहने छलियैक जे हम अपने चलब, सभ काज भ' जयतह। तहियासँ सात दिन पुरि आयल छी आ काज नहि भेल अछि। पहिल दिन कोनो पाह्र पता नहि लागल। गेट पर हम डेरा गेल रही। चारू कात संगीनधारी सिपाही जेना विश्वविद्यालयक कार्यालय नहि कोनो सैनिक शिविर वा सुरक्षित जगहमे आबि गेल होइ। कोन विभागसँ काज हैत सेहो पता नहि लागल। अधिकांश कक्ष खाली। उप कुलपतिसँ भेट करबाक इच्छा भेल त' पता लागल जे ओ आइ काल्हि कखनो काल कार्यालय अबैत छथि। कहियो काल जखन कार्यालय अबैत छथि, तँ पुलिसक सुरक्षाक काज पड़ैत छनि। कार्यालयमे पुलिसे मात्र स्थायी रूपमे रहैत अछि। बाँकी सभ अधिकारी-कक्ष वा कार्यालयमे ककरो भेटब वा नहि भेटब अहाँक भाग्य आ संयोग पर निर्भर। तेसर दिन लाचार फेर अपन ओही परिचित अधिकारीक कक्षमे गेल रही जिनका लग तीन वर्ष पूर्व आलोकक एम० ए० क एडमिशन बेरमे जाय पड़ल छल।

ओइ बेर नीक जकाँ स्वागत कयने रहथि। यद्यपि हुनकर कोठलीमे पचास सँ अधिक विद्यार्थी एकहि बेर संगे उच्च स्वरमे गप्प क' रहल छलनि। किछु नेता-गुमा प्राध्यापको लोकनि सेहो हुनका कोठलीमे कुर्सी पर पलथी मारने बैसल छलाह। सभक गेलाक बाद हम अपन समस्या कहलियनि—''आलोकक एम० ए०मे एडमिशन नहि भ' रहल छैक। ओकरा ऑनर्स नहि भेटल छैक यद्यपि ओकर सबटा पेपर्स नीक भेल छलैक आ जे सभ कमजोर विद्यार्थी छल तकरा सभकें फर्स्टक्लास भेटि गेल छैक।'' सुनिक' ओ हँस' लगलाह—'ई सभ त' होइते रहैत छैक, अइमे कोन आश्चर्य ?'

हमरा मुदा बड़ आश्चर्य भेल हुनकर ओहि वक्तव्य पर। कहलियनि—हमहूँ त' अही विश्वविद्यालयक विद्यार्थी छी, एहि ठामक लेल त' ई सोचबो असंगत छल।' ओ ओहिना हँसैत रहलाह—'आब किछुओ असंगत नहि होइत छैक। आब खाली दुइए टा बात होइत छैक—सुतरब आ नहि सुतरब। जकरा सुतरैत

छै से बाजी मारि लैत छैक। भ' सकैत अछि जे अहाँक भाइक कापीक नम्बर कोनो दोसर विद्यार्थीमे लागि गेल होइ आ कोनो कमजोरहा विद्यार्थीक कापीक नम्बर अहाँक भाइक कापीमे लागि गेल हो।'' हमर आश्चर्य बढ़िते गेल—''एना कोना भ' जाइ छैक ? कोनो नियंत्रण नहि छैक अइ सभ पर ?' ओ हमर अज्ञानता पर हँस' लगलाह—''नियन्त्रण कोना नहि छैक। जकर नियन्त्रण छैक तकरे माध्यमसँ काज होइत छैक। उपकुलपति रजिस्ट्रार सभ बेकार। असली देखनिहार नहि, कतेक नेता लोकनि छलाह एत।' प्राध्यापक आ विद्यार्थी दुनू। हिनके लोकनिक हाथमे सभ किछु छनि। कखनो काल हिनके लोकनिक नाम पर आनो सुतारि लैत अछि।

हम हतप्रभ भेल जाइत रही। हमर स्थिति देखि ओ कहलाह—'आब ई आश्चर्य करब छोड़ू। अहाँ अपन भाइक एम० ए०मे एडमिशन चाहैत छी ने ?' हम उत्साहित होइत कहलियनि—'अपनेक बहुत कृपा...'। ओ हँस' लगलाह—'कृपा हमर नहि, विकलांग वर्षक भ' सकैत अछि। जय विकलांग वर्ष।

हमरा कोनो अर्थ ने लागल। ओ स्पष्ट करैत कहलनि जे-जे फार्म जमा कयने छैक तकरा किछु टाका-ताका चपरासी-क्लर्क आदिकें द' क' वापस ल' लिय' आ ओहिमे लिखि दियौक जे अहाँक भाइ विकलांग छथि।

हमर स्थिति दयनीय भेल जा रहल छल—'ई कोना सम्भव छैक। हुनकर हाथ-पयर, नाक कान आँखि सभ दुरुस्त छनि। लोक देखतनि नहि ?'

ओ पूर्ववत् हँसैत रहलाह—'क्यो किछु ने देखतनि अहाँ हुनकर दुनू हाथ मोड़ल एकटा फोटो खिचा क' आवेदन पत्र पर साटि दियौक। बाँकी हम सम्हारि लेब। अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्षक एतबो त' फायदा होअय।'

हम हुनकर परामर्श स्वीकार नहि क' सकल छलियनि। चुपचाप बाहर चलि गेल रही। आलोक ठाढ़ छल। तुरंत काल सबटा बात सुनि ओकर आँखिमे फेर बड़ पघरा लपलपा उठलैक—'सभ चोर अछि सार सभ। वी-सी आ रजिस्ट्रार दुनू। एकरा सभ बुते किछु नहि हैत। आब हम अपने इन्तजाम क' लेब। एतेक दिन अहीं रोकैत रहलहुँ अछि, आब देखियौक ?'

हमरा फेर डर लागल। पुछलियैक 'तोरा बुते कोन इन्तजाम हेतह ?'

ओ तमकि क' बाजल— 'सब इन्तजाम भ' जायत । आइ कालिह दुइए टा इन्तजाम होइत छैक— चमक आ धमकी । चाहे त' पाकेट भरि दियौक, चाहे प्राणक धमकी दियौक, सबटा काज भ' जायत ।

हमरा आलोकक गप्पसँ बड़ कष्ट भेल । नवका पीढ़ी की सोचि रहल छल—से देखि मर्मान्तक पीड़ा भेल । ओकरा डाँटि क' कहलियैक— 'किछु करबाक काज नहि छ' । फेरसँ जाँच' लेल सब पेपरक हेतु पाइ जमा क' दहक ।

आलोक व्यंग्यसँ बाजल— 'एकर मतलब फेर एक साल गेल । एडमिशनक तारीख खतम भ' रहल छैक ।

दोबारा रिजल्ट होइत-होइत ठीके एक वर्ष चल गेलैक, तखन ओकर रिजल्ट भेलैक । फर्स्ट क्लास भेटलैक । कहाँ बारहो नहि छलैक, कहाँ फर्स्ट क्लास । अइ विश्वविद्यालय पर, जे हमर अपन विश्वविद्यालय सेहो छल, हमर आस्था डोल' लागल ।

ओना आस्था रखबाक कोनो प्रयोजन नहि छल । आलोकक आइ० ए० परीक्षामे जे भेल छलैक तकरा देखैत हमरा सतर्क रह' चाहैत छल मुदा हम ओकरा एकटा संयोग मानि टारि देने छलियैक ।

आलोककेँ आइ० ए०मे प्रथम श्रेणी नहि भेटलैक । नम्बर अयलैक त' देखिक' आश्चर्य भेल । इतिहासक एक पेपरमे अनुपस्थित । एनके पेपरमे साठिसँ अधिक नम्बर रहबाक कारणे ओ पास क' गेल छल मुदा दोसर पेपरमे परीक्षा देलाक बादो ओकरा अनुपस्थित देखाओल गेल छलैक ।

बहुत बेर तहियो दौड़ल रही । हमरा परतारैत एकटा अधिकारी कहलनि— 'आब छोड़, एकर चीजा भीजी ! कॉपी हेरा गेल हेतैक त' अनुपस्थित लिखि देल गेल हेतैक । बी० ए०मे नाम लिखाइए गेल अछि, तखन आब एतेक चिन्ता किऐक ?"

हम गुम्म रहि गेल रही । आलोक सुनबाक त' बमकल छल— 'कॉपी हेरायल नहि हेतैक । ओइपर कोनो दोसर लड़काक कॉपीक कबर साटि देने हेतैक । येह चालिए छैक एकर सभक ।

हमरा ओहि दिन विश्वास नहि भेल छल । मुदा बी० ए०क परीक्षाक बाद जखन फेर एकर पुनरावृत्ति भेलैक आ अधिकारी स्वयम् ई बात कहलनि त'

मानि लेबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि छल । तैयो हमरा मोनमे अपन विश्वविद्यालय लेल बड़ उच्च भाव छल, जे, एहन बात मानबासँ बेर-बेर हमरा रोकि रहल छल ।

ओना स्वयम् हमर अपन समयमे किछु चर्च होम' लागल छलैक । हमरा जखन एम० ए०मे पहिल स्थान नहि भेटल त' हम अपनाकेँ सन्तोष देने रही जे हमर तैयारी नीक नहि छल आ हमर अक्षरो बड़ खराब होइत अछि । हमर एकटा मित्र कहलक —'प्रोफेसर सभक डेरापर जाइत छ' ?'

— "आइ धरि प्रयोजन नहि भेल अछि ।"

ओ हँस' लागल— 'प्रयोजन त' छौक । प्रथम स्थान ओना भेटतौक ? व्यक्तिगत सम्पर्क आ प्रोफेसरक समर्थन अवश्य होइत छैक । डेरापर टहल-टिकोरा क' देल करहिक । परीक्षासँ पहिने प्रश्न पत्र भेटि जयतौक ।' हमरा क्रोध भेल छल । बिना मेरिटकेँ टॉप करबाक बात सोचब हमरा लेल असम्भव छल मुदा हमर ओ मित्र हमर बारम्बार मजाक उड़बैत कहलक— 'हमर भाइ साहबकेँ चीन्हैत छहुन ?'

हम सहमति मूड़ी डोला देलियैक । ओ बाजल— 'हुनका कुड़ारीमे डाक्टरेट चाहियनि । एकटा प्रोफेसरसँ कन्ट्रेक्ट गप्प करबा देने छियनि । तीन हजारमे तय भ' गेल छनि । प्रोफेसर हुनका लेल तीन हजारमे थीसिस लिखि देतनि आ डाक्टरेट सेहो दिआ देतनि । भाइसाहबकेँ कुड़ीरीमे अपन नामक संग डाक्टर लिखबाक स'ख पूरा भ' जयतनि ।

ई त' बड़ पुरान बात भेलैक । ओहि दिनमे ओकरा मानबामे हमरा आपत्ति भेल छल । आब त' लोक बहुत रास गप्प करैत अछि । ओइ दिन विश्वविद्यालयक अधिकारी स्वयम् कहलनि । आलोक त' बहुत किछु कहैत अछि । ओकरा हिसाबे आब एहि विश्वविद्यालयमे बिना परीक्षा देने प्रथम हैब, बिना थीसिस लिखने डी० फिल भेटब आम बात छैक । एहि सभपर लोककेँ आब आश्चर्यो ने होइत छैक । पछिला साल आनर्सक परीक्षामे ओ कहैत छल जे सभ परीक्षार्थी अपन अपन कॉपी ल' घरपर चल गेलैक आ सन्ध्याकाल विश्वविद्यालय कार्यालयमे खिड़की बाटे खसा देलकै । परीक्षा भ' गेलैक ।

आलोकक एम०ए०क परीक्षा भेलाक-दु सालक बदला तीन सालमे। अइ बेर औकरा संग बंह भेलैक जे सभ परीक्षामे होइत आयल छलैक। प्रथम श्रेणी नहि भेटलैक। नम्बर जोड़लक त' एक विषयमे फेर अनुपस्थित लिखल छलैक। आलोक ओहि दिन तेहन उग्र रूप धारण कयलक कि हमरा डर भेल। घर भरिमे सभके आशंका छलैक जे कोनो काज ने क' बैसय। ओकर वयस सेहो खतम भ' रहल छैक। कतहु कोनो प्रतियोगिता परीक्षामे नहि बैसि सकत। एहन रिजल्टपर प्राध्यापकी भेटब सेहो असम्भव छलैक, तें आइ० ए० एस क फार्म भ' र' लेल कहने छलियक।

ओकरा लग बी० ए०क ने सर्टिफिकेट छलैक ने मार्कशीट। ओतसं नहि भेटलापर पुन: जाँचक लेल जे आवेदन कयने छल, रिजल्ट भेलापर पुरना मार्कशीट सेहो देब' पड़लक। प्रथम श्रेणी भेटलैक मुदा परिवर्तित मार्कशीट अखन धरि नहि भेटल छलैक। सर्टिफिकेट सेहो नहि। आ हम बड़ विश्वासक संग कहने छलियैक जे हम अपने जायब, सभ काज भ' जयतैक।

तीन दिन निराश भेलाक बाद हम ओइ परिचित अधिकारी लग गेल रही। ओ हुनकर विभागक काज नहि रहनि मुदा ओ सम्बद्ध विभागमे फोन क' देलथिन। हम सम्बद्ध अधिकारीसँ भेट क' सभ समस्या कहलियनि त' ओ हँस' लगलाह— 'अइ लेल अपने किऍक चिन्तित छी। ई सभ त' होइते रहैत छक। अपने निश्चिन्त रहू, सर्टिफिकेट आ मार्कशीट परसू अवस्स भेटि जायत।'

हम आश्वस्त होइत बाहर आयल रही मुदा हमर बात सुनि आलोक चिन्तित भ' उठल छल—'ओकरा बात पर नै जाउ। सार नम्बरी जालिसाजी आ हरामी अछि। किछु ओना काज नहि करत। अहाँ जिनकासँ फोन करबा देलियेक तिनकासँ त' ओकरा जानी दुश्मनी छैक, काज गड़बड़ा गेल। पुनू दु जालिम आ दु गुटक अछि।'' हमरा मुदा पूर्ण विश्वास छल। तेसर दिन हम पहुँचल रही।

ओइ अधिकारीक कतहु पता नहि छलनि। कार्यालयसँ छुट्टी ल' हम दिन भरि हुनकर कोठलीक बाहर ठाढ़ रहि गेल रही। पता लागल ओ कोनो नेताक संग घूमि रहल छथि, कखन औताह तकर कोनो ठेक नहि। सन्ध्याकाल हम निराश घूमि आयल रही।

दोसर दिन हम फेर कार्यालयसँ छुट्टी ल' क' पहुँचल रही। बारह बजेके बाद ओ कार्यालय आयल छलाह। हम बिना बजाहटिक प्रतीक्षा कयने कोठलीमे

पैसि गेल रही। ओ कने रुष्ट होइत बाजल छलाह— 'अखने आयल छी, कतेको काज सभ अछि, अपने कने प्रतीक्षा करू।'

हम बैसैत कहलियनि— 'काज हमरो अछि आ हम दु दिनसँ काज छोड़ि अपनेक प्रतीक्षामे बैसल छी। आइ हम मार्कशीट आ सर्टिफिकेट लैयेक' जायब। काल्हि ओकरा पठयबाक अन्तिम तिथि छैक।

ओ कने संकुचित हेबाक अभिनय करैत कहलाह 'काल्हि जरूरी काज छल सचिवालयमे, दफ्तर दिस नहि अयलहुँ। आइ अपनेक काज अवस्स करबा क' राखब। अपने काल्हि भोरे आउ।'

—''काल्हि मुदा अन्तिम तिथि छैक।'

—''अपने निश्चिन्त रहू। भोरे हम दुनू चीज अपनेक हाथ मे द' देब।'

आ आइ नओ बजेसँ तैयार बैसल छी। हमरे बजाहटिपर आलोक आबि क' सामनेमे ठाढ़ अछि। ने ओकरा दिस देखबाक साहस भ' रहल अछि, न ओकरे आगू ठाढ़ि रहल अछि। आलोकसँ हमरा डर भ' रहल अछि।

आलोक हमरा दोसरे अछि—वैरी भ' रहल अछि। जयबैक नहि? रजिस्ट्री सेहो कर' पड़त आइए।

हमरा तैयो ओकरा दिस तकबाक साहस नहि होइत अछि। चुपचाप उठि क' विदा होइत छी। भरि बाट मोटरमे गुमसुम बैसल रहैत छी, एकको बेर आलोक दिस नहि देखैत छियैक। जेना-जेना विश्वविद्यालय कार्यालय लग अबैत जाइत अछि, हमर डर बढ़ले जाइत अछि। आजुका दिन निर्णायक अछि। हम आलोककेँ आश्वस्त कयने छलियैक जे काज भ' जयतैक। यदि नहि भ' सकलैक आइयो तँ लोग ओकरा दिस ताकि हैत हमरा? ओकर जिनगी हमरे हाथे नष्ट भ' जयतैक। हम जे लेनपनसँ ओकरा आदर्श आ उपदेश घोरि क' पिअबैत आयल छियैक, से काज देतैक ओकरा आइ?

हम ढेर चिन्तित बैसल आशंकित ओइ अधिकारीक कक्ष लग पहुँचि परदा हटा भीतर हुनका देखलियैक। जकर आशंका छल, सैह भेल। कक्ष खाली छल। हम भीतर पैसि हताश एकटा कुर्सी पर बैसि रहलहुँ। आलोक बाहरे रहि गेल, कतेक काल बीतल से ज्ञात नहि भेल। बैसल-बैसल हमरा प्राय: झपकी आबि

गेल छल। तन्द्रामे लागल जेना क्यो टोकि रहल अछि— 'अहाँ एना भीतर कोना आबि गेलहुँ ? कोन काज अछि ?'

हमर भीतर जेना एकाएक किछु लहकि उठल। कने ऊँच स्वरमे कहलियनि 'हमरा चीन्हैत नहि छी अपने ? नहि जानल अछि जे हम विएक बैसल छी ?'

—'बिन कहने हम कोना बुझब ?' ओ ओम्हरसँ बजलाह।

हमरा भीतर जेना एक्के संग हजार चिनगी लहकि उठल। 'हम मुदा अहाँकें बुझि गेल छी। अहाँ झुट्ठा आ अयोग्य छी। चारि दिनसँ हमरा दौड़ा रहल छी। आइ एगारह बजे हमरा कागज देब' लेल कहने रही आ आब हमरा चीन्हबामे संशय भ' रहल अछि।'

ओ सकपका गेलाह—'ओ कागज ? आइ तँ नहि भ' सकत।'

हम कण्ठ फाड़िक' चिचिया उठलहुँ—तँ हैत ? कोना ने हैत ? आइ बिना ओ कागज लेने हम नहि जायब। नहि त' आइ—आइ कार्यालयमे आगि लगा देब हम। अहाँ सन-सन भ्रष्ट आ अयोग्य लोककें कुर्सीसँ घिसिया क' चौराहा पर ठाढ़ क' देब। अइ सड़ल-गलल व्यवस्थाकें लतिया क' ओंघरा देब। हम आइ नैं हटब एत'सँ बिना काज भेने।

उत्तेजनासँ हमर देह थरथर काँपि रहल छल। आँखिसँ पथरा आ मुँहसँ फेन बाहर भ' रहल छल। आलोक भीतर दौड़िक' आयल आ हमरा भरि पाँज पकड़ि कुर्सी पर बैसा देलक। चारु कातसँ आरो बहुत रास लोक कोठलीमे आबि गेलाह। ओ अधिकारी सकपकायल अपन कुर्सीमे गड़ल छलाह।

लोक सभक भीड़ बढ़ैत देखि ओ उठलाह आ भीतर कार्यालयमे जाइत बजलाह—'अपने अनेरो बिगड़ि गेलहुँ ! बैसू अपने, हम कागज लेने अबैत छी।

हमरा आब अपन स्थितिक ज्ञान भेल। आलोक अविश्वासपूर्वक हमरा दिस देखि रहल छल जेना हम कोनो अनचीन्हार व्यक्ति होइ। बाँकी जमा लोक सभ हमरा प्रशंसात्मक दृष्टिए देखि रहल छलाह जेना हम कोनो बड़का भारी काज कयने होइ। हमरा अपन देहमे हजार-हजार चिनगीक लहकि अखनो लागि रहल छल आ हम ओहि धाहसँ छटपटा रहल छलहुँ। ओकर विपरीत आलोकक आँखिमे जत' सदिखन एकटा चिनगी लहकैत रहैत छलैक एकटा विस्मय आ

आश्चर्यक भाव छलैक। ओ हमरा पकड़ने हमरा लग ठाढ़ छल जेना हम कोनो नेता होइ आ ओ हमर अभिभावक रहय। ओकरा आँखिमे हमरा लेल चिन्ता छलैक।

किछुए कालमे ओ अधिकारी कागज लेने बाहर अयलाह। आलोक ओकरा दस्तखत क' क' लेलक। हम ओकरा संग उठि क' कोठलीसँ बाहर आबि गेलहुँ। ओइ अधिकारीकें औपचारिक धन्यवादो नहि देलियनि।

पोर्टिकोमे अपन मोटर दिस जाइत काल हमरा ई देखि क' आश्चर्य भेल जे हमर आ आलोकक आँखिक भावमे अदला बदली भ' गेल छल। हमरा आँखिमे ओकर आँखिबला चिनगी लपलपा रहल छल आ ओकर आँखिमे हमरा लेल चिन्ता आ भयक ओहने भाव आबि गेल छैक जे हमर आँखिमे सदिखन ओकरा लेल रहैत छल।

चारु कात ठाढ़ लोक हमरा तेना देखि रहल छलाह जेना हम कोनो विजेता होइ मुदा हमरा लागि रहल छल जेना हम एकटा पैघ आ बहुत दिनसँ लड़ि रहल युद्धमे पराजित भ' गेल होइ।

आलोक हमरासँ जीति गेल छल मुदा ओकर आँखिमे विजयक उल्लासक बदला एहन गहन चिन्ता किएक छलैक ? □

सितम्बर १९८७

बाढ़ि

ओ सभ जेना डेरायल छल जेना क्यो पछोड़ धयने होइ जे मौका भेटितहि नरेटी चाँपि देतैक। आशंकित आ आतंकित। रहि रहि क' चारूकात तकैत जेना सभदिस पसरल अन्हारकेँ चिरैत क्यो बढ़ैत आ ओकरा सभकेँ गीड़ि जयतैक।

अन्हार नीक जकाँ पसरि गेलाक बादे मानसक मैक्सी टैक्सी गामक सिमान लग ठाढ़ भेल छलैक। विदा सबेरे भेल छल, लगैत छलैक जेना दू तीन बजेसँ पहिलहि गाम पहुँचि जायत। बाट-घाटक ठेकान नहि छलैक, बाढ़ि नीक जकाँ घटलो नहि छलैक—सैह सुनने छल सभ। मुदा बाटमे एहन किछु नहि अबरलैक —खाली रोडक दुन कात पानि रहैक जे सटकि रहल छलैक। बेनीबाद पहुँच' लागल त' लगलैक जेना आब गाम पहुँचबामे बेसी समय नहि लगतैक। तकर बाद मुदा समटा गणना गड़बड़ा गेलैक।

जँ यो गामक सिमानपर साँझ झुकलापर पहुँचिये गेल। सभ साल जकाँ ओ सभ अइ बेर, ओही चौबटियापर सलहेसक मंदिर लग ठाढ़ छलक—ठीक ओही चौबटियापर जत' उत्तरे दछिने पिचरोड कमतौल-दरभंगा जाइत छैक आ पुबे-पछिमे कच्ची सड़क निकलैत छैक। पछबारी कातबला बाट हायरकूल होइत रेलवे लाइन धरि जाइत छैक जत' गामक सिमान खतम होइत छैक आ पुबारी कात बला मदिआइ बाट हरिजन टोल होइत भुतही गाछीक कात दने बड़ बाबाक स्थानसँ सटैत, बनुकटोली पार करैत, शिव मंदिर आ राधा कृष्णक मंदिरक उत्तरबारी कात दने बीच गाम धरि चल जाइत छैक।

ओही चौबटियापर आब लोकेँ सवारी छोड़ि देब' पड़ैत छैक। बस वा मिनियो बसकेँ अवबाक बाट नहि छैक। अपन कार जीप वा टैक्सी रहय वा रिक्सा-टमटम होइ, त' कहुना गाम धरि चल जा सकैत छैक। पहिने एना नहि छलैक, बस वा मैक्सी-टैक्सी ओकर दरबज्जा धरि चल जाइत छलक। मुदा बहियामे शहतिक' चोराक' फनैत आ सड़कक समटा माटि काटि' अपन देबालक लेल गिलेबा बनबा लेलथिन तहियासँ झंझट भ' गेल छैक। तकर बादो माटि नाटि द' मैक्सी टैक्सी दरबज्जा धरि चल जाइत छलैक। मुदा बहियासँ फनैत झाक देखाउसमे चुनियार मिसर सेहो अपन बाड़ीक टाट पसकाय' आधा बाट धरि ल' अनलथिन, ई बाट एकदम शिकस्त भ' गेल छैक आ फियेट आ एम्बेसेडर-केँ गाम धरि लाबामे चारि टा मजूरकेँ ओधारि भ' क' आगू-आगू चल' पड़ैत छैक। पहिने ओ सभ माटि काटि' बाट बनैत छैक, तखन सवारी आगू बढ़ैत छैक।

हँयो मानस सभ बेर मैक्सी टैक्सी लँ' क' अबैत अछि गाम। सभ साल एक बेर दुर्गापूजामे। दोसर कोनो उपायबो नहि छैक। परिवारक सभ लोककेँ मिलाक' तीस पैंतीससँ बेसिये भ' जाइत छैक, औतबे संख्यामे मोटरी चोटरी। पछिला दू सालसँ मैक्सी टैक्सीबला हँसी कर' लागल छैक—आब मैक्सी टैक्सीसँ नहि हैत। पूरा बसे रिजर्व करा लिय'।

मानस बस रिजर्व नहि करबैत अछि, मुदा ओकर मैक्सी टैक्सी हरिजन टोलक लोकक लेल रिजर्व छैक। पहिनेसँ सभ पता लगौने रहैत छैक आ सलहेसक थान लग ठाढ़ रहैत छैक—बूढ़-जवान, बच्चा सहित। हाथे हाथ समटा मोटरी-चोटरी उठा लैत छैक। मजूरीक लोभसँ नहि, वर्ष भरिक पावनिमे इनामक लोभ। मेला देख' लेल दू चारि टा रुपैया। आ से देबामे मानस कहियो कंजूसी नहि करैत छैक।

अइ बेर सभ ओहिना ठाढ़ छलक। मोटा-पेटी-बक्सा सूटकेस सभ हाथो-हाथ उठा लेलकैं। जकरा किछु नहि हाथ लगलैक से कोनो बच्चाकेँ कोरामे उठा लेलकैं। जकरा बच्चो नहि हाथ लगलैक, से किछु बेलगो भेल जेनाकेँ ठाढ़ रहि लेलकैं। लालटेन आ टार्च साथ चरवाहक हाथे पठवा देने रहैक। झटपट सभ विदा भ' गेल।

विदा आनोबेर एहिना होइ छल मुदा अइ बेर मानसकेँ लगलैक जेना सभकेँ हड़बड़ी होइ—पुरुष, जनीजाति सभकेँ। अन्हारोमे बेराबेरी ओकर सभक चेहरा देखैत मानसकेँ लगलैक जेना सभ डेरायल आ सशंकित होइ। आँगनमे पहुँचैत देरी, अपन अपन माथक मोटा ओसारा पर रखैत देरी सभ विदा हैबा लेल उधत भ' गेलैक। सभसँ आगू बेस उठौलकँ नन्हकू—'समटा वस्तु बीतिक

निसान क' लू मालिक। हमरा आर जाइ छी आब ! बड़ी देरी हो गेल, नै जानि की होत आइ राति।'

मानसकें जे आशंका गामक सिमाने पर भेल छलैक से आब मजबूत भ' गेलैक मुदा कोनो अर्थ नहि लगलैक ननकूक बातक। राति बेसी भ' गेलैक तें एना डेरायल किएक छैक ई सभ। राति बिराति खेत-खरिहान, गाछी-बिरछी जा बाट-बाट बौआइते त' रहैत अछि ई सभ ? आइ कथीक डर पैसि गेल छैक ?

सभकें पाइ दैत मानस ननकूसँ पुछलकै—'एना डरायल किएक छें ननकू ? कोन बात छैक आखिर ...'

कनेक भरोस भेटितहि ननकू लग चल अयलैक आ फुसफुसा क' बजलैक—"बाते नेहने हइ मालिक ! वारन्ट हइ हमरा सभक नाम। बैदा, कैन, लोकू आ रीझनक संग हमरो नाम वारंट। हय। 'कितनी-कितनी रातिमे पुलिस घरपैसी करै हय डांड़मे रस्सा लगब' खातिर। अपन-अपन घर छोड़ि भरि-भरि राति गाछी-बिरछी, धाथ बोनमे नुकायल रहै छी ... साँप कीड़ाक संग राति बितबै छी मालिक ...'

मानस आर अवाक भेल जाइत रहय। ओकरा कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलैक। फेर पुछलकै—"वारण्ट किएक छौक तोरा सभक नाम ? कोनो चोरि कयने छहिक तों सभ ..."

अइ बेर ननकूक बकरा भाइ बौका बाजल—"चोरियोमें बढ़ि क' मालिक ! लूटि मारि कयने छियैक हमरा आर ! सरकारी गहूम लूटने छियैक। रिलीफ बांट' लेल जे गहूम आयल छलैक से लूटने छियैक हमरा आर ..."

मानसकें किछु मोन पड़लैक—"सत्ते लूटने छहिक रिलीफक गहूम तों सभ ! अखबारमे देखने रहियैक किछु दिन पहिने। अपने ब्लाकक समाचार रहैक मुदा गामक आ तोरा सभक नाम नैं रहैक।

रीझन जे एतेक काल चुप्प ठाढ़ छल, एकाएक कने तीव्रतासँ बाजल—"अखबारो तँ बड़ी बारकें हय मालिक। गरीब गुरबाक गप्प के छापत ? ओकरा जे मोन हेतैक छापि देत आ हमर आर दोषी करार ..."

ननकू ओकरा बीचेमे टोकलकै— बेसी चुप चुप नैं कर रीझना ! मालिक कें सभटा बात नीक जकाँ कहुन।

मानस सेहो आग्रह कयलकै— "कह ने हमरा सभटा असल बात ! की कयनहिक तोरा सभ ? किएक निकललौ वारण्ट ...:

रीझना खूब संयत स्वरमे कह' लगलैक—"सभटा बात सत्ते कहब मालिक। हम गेल रही ओइ हँसिडीमे। मुदा ई ननकू नैं गेल छल' कोला नहि गेल छल। बौका आ बैदा त' गामोमे नहि छल। तैयो एकरो सभक नामें वारण्ट हइ—हमरो नाम हय। हमहू की एकसरे गेल रही,—आगू-आगू गेल रहथि किसनपुरक बाभन सभ—अइ गामक बाबू भैया सभ रहथि। टोल देने जाइत रहथि त' हमरो सभके हाक देलनि - गहूम लुटाइत छैक, चलल चल सभ क्यो।" हमरो आर हुनका सभक पाछाँ बिदा भ' गेली। हम रही ! संगमे इ बारि टा मर्दाना आ किछु जनी जाति सेहो गेल। सभ पंचायतमे रिलीफक गहूम बँटा गेलैक मुदा अपना पंचायतमे डीलर-मुखिया नैं जानि कोन ओगारमे लागल छल। लोक भुखे मरैत छल, गुहले दाना बला कतना रोज हो गेल रहै सभके। ने घरमे अन्न पानि, ने काज। बाहर जा क' रिक्शा ठेला चलायब, सेहो बाट बन्न। चहुँ जात निन्ना। बिना दामके किच्छो मिलि सका नहि आ दामो कैहन। मटिया तेल आ गौमक दस टके किलो। दियासलाइ एक रुपैयामे आ चाउर गहूम चालू दस रुपये किलो। सेहो एगो दूगो दोकान गोलापर खुजल। मुड़ी पर मुड़ी पसरैत। हमेरा आर कहाँ ओइ भीड़िमे जयती। भूक्खल पेटे दिन कटैत रही। गहूम अयलैक तँ उम्मेद लगलैक मुदा पनि दिन ओहिना बोरामे बन्ने रहलै मालिक। तखनी बाबू सभ हँसिडीमे गेला, औरे हमरो आर गेली। अहिना बाढ़ि अयलै, माल जाल समेत भागिकें अहीक ड्योढ़ीमे गेली सभ क्यो। सभकें ओसारापर जगह देलनि बूढ़ी मलकाइन माल जालके पोरा सेहो। दू दिन खाइ लेल अन्न आ भानस लेल जरनो देली। तकरा बाद सभ अन्हार। क्यो ककरो पुछै वाला नहि। माल जाल मरलै, मनुक्ख मर' लगलै—तैयो हमरा आर पेट बन्हने पड़ल रही। तखनी बाबू भैया लूटि कयलनि—हमरो आर किच्छो पैली। जतना गमछामे अँटल, बान्हि लेली, जती बालकें लुआ ओढ़नामे जतना अँटलै उठा लेलकै। बाबू भैया सभ बोरा उठा उठाकें ल' गेला। बेसी तँ जिआन हो गेलै। लुआ लुआमे बोरा सभक मुँह खुजि गेलै आ गहूम पानिमे गिर पड़लै। पहलो पर डाँड़ से ऊपर पानि रहैक।

एतबा कहैत कहैत रोक्षना हाँफ' लागल, किछु काल दम लेब' लगल रहल। फेर कह' लगलैक — "बही निसाँस छल मालिक। सिर्दिकेक गहुम बकरा लेल आनब रहलं ? हमरे बार बाबो ने। मदनपुर आ बहो गामक बाबू बेचा लेल त' नं आयल रहली। औ सब त' ओहुना बाढ़िमे जौंव पाकल खाइते छलाह। लेखियाके लेखिया त' हमरे बारके बिलैत छल। हमरे बार लेल आयल गहुमसे सै हू बारि सेर उठा अनली—से हमरा बार चोर डाकू हो गेलौं आ जे सब बोरान बोरा उठौलनि से सब हो गेला साधु-महात्मा। आ काज केहन कयलनि ई साधु महात्मा सब, सेहो सुनिए लू मालिक। विहाने भेले जब हल्ला होलैक जे पुलिस दरोगा अबै छं, साधु-महात्मा सबके हुक्कको लगलनि, त' ई फेकन बाबू पानि हेलि क' दरभंगा गेला आ हमरा बाउरक नाम लिखा अयला। पुलिस दरोगा घर देखि लेल। हम सब जनीजातिके घरमे छोड़ि क' किम्हरो पड़ा गेलौं। जेहो डू बारि सेर गहुम अनने रही, सब पानीमे फेंकि देलौं। तहिया से पुलिस पछोड़ धयने हय। अखनो लुटिहारा सब जेलमे घरो बंगल हय आ हमरा बाउर राति बितरति बने बने बौआ रहल छी मालिक।

रोक्षनकें रोकैत बौआ बजलैक —पचतन जायके डर नं हय मालिक। जहलमे खायके त' निचिते बारन। ओहो लेल त' एतेक हुक्कर येलैत छी। मुदा बच्चा बुतरू आ जनी जातिके की होतं ? कोनो काजो ने मिलं हय ओकरा बारके जे कमाइयो क' खा लेतं। जौना इम्हर्हु की करैत छियं। सुकायल फिरैत छी। साँझक साँझ उपास त' आरिये हय। सबक लेल बाढ़ि अयलन आ गेलैक। हमरा बार त' अखनो बाढ़िमेमे डूबल छी मालिक, एकदम अथाहमे···

बैदा निहोरा करैत बजलैक—हमरा बारके अइ बाढ़ि से बचा लू मालिक। सबटा विरजू बाबूक हाथमे छनि, कोरट-कचहरीसे काज करैत छथि। मदनपुरक सब बभनान नाम रहै, अइ गामक इ बारि-अनक नाम रहनि··· सबक कटवा देलखिन सुरजू बाबू। खाली हमहीं पाँच गोटे फंसल छी। पाँचोसँ पाँच-पाँच सय मँगैत छथि···कहाँसँ लाउ अढ़ाइ हजार हमरा बार ? सेहो बेचिके नं मिलत। पाँच टाका लेब देह नोचैत छी सब दिन···अढ़ाइ हजारक मुँह त' खानदानोमे नं देखलक कहियो मयो··· घर-घराड़ी बेचियो देब तैयो ने होत मालिक··· हमरा बारके बचा लू।

मानस कोनो स्पष्ट आश्वासन नहि देलकं। ओ सब नेहोरा विनती करैत चल गेलैक। जनी जाति सब सेहो बाहर जाइत नेहोरा कयलकं—"एगो बहोंके आस हय मालिक। बचा लू हमरा बारके···"

ओकरा सबकें जाइत देरी निरसू काका खसरि क' लग अयलथिन। बड़ी कालसँ आँगनमेठाढ़ ललकू-रोक्षनाक गप्प ओ सुनि रहल छलाह। ओकरा सबक जाइते ओ अपन भाषण शुरू कयलनि—"बहाँ एकरा सबक बातमे नहि आउ मानस। अहाँ त' गाममे रहिते ने छी। गामक हाल की जाने' गेलियैक ? एकर सबह माथ उनटल छैक। सरकार पिछड़ा वर्गक नामपर सबटा सुविधा एकरे सबकें दैत छैक। पिसाइत त' छी हमरा लोकनि। कहबा लेल त' सबसँ पैघ जाति मुदा हालत सबसँ बदतर। एहि बाढ़िमे त' साँझक साँझ उपासे बितल। पचास सालसँ एहन बाढ़ि नहि देखल। आँगनमे भरि डाँड़ पानि पैसल छल-सब घरमे पानि। खाली जहीक घर बाँचल छल।

निरसू काकाकें गोड़ लगैत मानस कहलकनि— "हमरा लोकनि त' अपने डरे सकत रही। कोनो खबरि नं भेटैत छल' माय गाममे एकसरि छलि।

—"सबटा भगवानक इच्छा।" कहैत निरसू काका चलि गेलथिन। मानस अपन दलानमे आबि क' बैसि गेल। कनेक कालक बाद आरो लोक सब जुमलैक। किसुन काका सेहो अयलथिन। हुनकर खिस्सा सुनि मानस स्तब्ध रहि गेल। एहन वयस आ एतेक अदम्य साहस। किसुन काका कहलथिन— तोरा त' विश्वासो नं होेत जे ई बूढ़, पचहत्तरि वर्षक ई बूढ़ छाती भरि पानिमे दिनक दस बजेसँ राति बारह बजे धरि···चौदह घण्टा लगातार चलैत रहल। सेहो खाली हाथ नहि। दुनू हाथमे दू टा झोरा···कान्हसँ उपर उठौने भूख-पियाससँ बेहाल। तों सुनि क' हँसब'; मुदा एको पाइ मिथ्या नहिं कहैत छिय'। एक दिन पहिने तोहर काकीसँ लड़ि क' लहेरियासराय चल गेल रही। एको पाइ द' क' नहि गेल छलियनि। भोरे सुनलियैक जे बाढ़िक पानि बढ़ि रहल छैक। पक्की सड़क बूड़ि गेलैक, ट्रेन बन्द, सवारी बन्द। मोनमे बड़ चिन्ता भ' गेल···बाट बन्द भ' गेलैक पाँचो दिन त' बेचारी गाममे भूखे मरि जयतीह। एकसरि गाममे छलीह। ऐह बाढ़ि-विपत्तिमे के देखतनि ? भूखे मुइल पड़लि रहि जयतीह घरेमे। संगमे जे पाइ छल ताहिसँ चाउर-आँटा, नून-मसाला, आलू कीनि क' दू टा झोरामे भरि लेलहुँ आ

विदा भ' गेलहुँ पयरे। दस बजे दिनमे विदा भेल रही लहेरियासरायसँ। मध्वी मोड़ तक अबैत अबैत साँझ होब' लागल। समयक पतो न चलल छलक। झमझम पानि बरसैत। सूर्यक कतहु पता नहि। ओइ मोड़सँ विदा भेलहुँ त' किछु गोटे पानि बरसैत। सूर्यक कतहु पता नहि। अपन घरसँ चिचिया क' मना कयलक मुदा हम नै मानलियक। दू गोटे आगू-अपन घरसँ चिचिया क' मना कयलक मुदा हम नै मानलियक। दू गोटे आगू आगू जा रहल छलाह। साहस बढ़ल, हमहूँ आगू बढ़लहुँ। आगू जाइत दुनू व्यक्ति कखन निपत्ता भेला, पतो न लागल। प्रायः नौजवान छलाह— जल्दी-जल्दी आगू बढ़ि गेलाह। हम बूढ़ थाहि-थाहि क' आगू बढ़ैत रही। मूसलाधार वर्षा, छातीभरि पानि""खूब तेज करेण्ट आ घुप्प अन्हार। लागल जेना ओइ अन्हारकेँ देखबाक लेल औँठामे आँखि निकलि गेल हो। औँठासँ पानिमे डूबल पिच स्पर्श करैत आगू बढ़ैत गेलहुँ। कतहु मनुक्खक नामो निशान नहि। चारूकात पसरल पानि आ बतरल अन्हार। कात करोट घर सब पानिमे डूबल। एकटा डूबल घरक मुड़बरि पर चौकी पर चौकी गेंटि क' एकटा स्त्री बैसलि छलि। किछु भरोस भेल। पानि मंगलियैक कण्ठ एकदम सुखा गेल छल। एकरा बाटीमे ओही बाढ़िक पानि देलक पिब' लेल। पियास नहि गेल। आगू बढ़ैत गेलहुँ। एकटा ठेंग एम्हर ओम्हर होइत त' दहा क' कत' चल जयतहुँ पतो नहि लगैत। कहुना आँगन पहुँचलहुँ आ पहुँचितहि बेहोश भ' गेलहुँ। आब त' कतेक दिन भेल मुदा अखनो अंग अंग दर्द करैत अछि आ स्मरण मात्रसँ देह सिहरि जाइत अछि।

किसुन काकाक गप्प सुनि क' मानस सिहरि गेल छल। मुदा ओ पूर्णतः स्वस्थ छलाह। ई आतंक-कथा आब हुनका लेल उपलब्धि-कथा भ' गेल छलनि— ई स्पष्ट लगलैक मानसकेँ। एकरा दोहरबैत काल आब ओ सिहरैत नहि छलाह गौरवान्वित होइत छलाह।

मानसकेँ विचारमे पड़ल देखि किसुन काका हँसैत कह' लगलथिन "अइ बाढ़िमे खाली नोकसाने आ भयेक कथा नहि भेलैक। किछु कथा त' बेस मनोरंजक। तों सुनि क' हँसबह। पलटू बाबू एकटा मोट तन सिल गाछीमे छोड़ने छलाह। बाढ़िमे ओ दहा क' श्याम बाबूक आँगनमे आबि गेलनि। श्याम बाबू ओकरा चीरि क' बाढ़िमे पन्द्रह दिन अपन काज चलौलनि। बाढ़िक बाद पलटू बाबू अपन सिलक पता लगौलनि तावत आधा सिलक जारनि बरि चुकल छलनि। कहुना आधा जारनि पर अनलनि मुदा जिराइक पाइ पलटूये बाबूकेँ देब' पड़लनि श्याम बाबूकेँ।

किसुन कका हँस' लगलाह मुदा पारस चौहद्दिक' बाजल— "बाढ़िक एहन एहन हृदय विदारक कथाकेँ छोड़ि क' अहाँकेँ जारनि आ सिलक कथा सुझैत अछि किसुन कका। हँसीक कोनो गप्प नहि छलैक अइ बाढ़िमे मानस भाइ। छलैक खाली तबाही आ बरबादी, दुख आ दुर्गन्धी, बिमारी आ मृत्यु। बिलबाड़ा एक मास आइयो एकटा दुःस्वप्न जकाँ झकझोरि जाइत अछि। माल जाल आ मनुक्खक कतेक जान गलैक, तकर हिसाब राखब मश्किल। सुखद टोलीमे कम-सँ-कम पाँच टा मुइल। क्यो भूखसँ, त' क्यो बिमारीसँ। भीखूक बाप मरलैक आ बंकूक बेटा। एकटा खिस्सा त' रोइयो भूलकाब' बला अछि। दू टा भाइ हेलि क' टूटल बान्ह पार कर' लागल। धारमे बहि गेल। बहैत-बहैत दू कोस धरि चल गेल। साँझ भ' गेलैक, पानिक कतहु अन्त नहि""अथाहमे बहैत रहल दुनू। किछु कालक बाद आगू-आगू बहि रहल छल दुनू भाइ आ पाछू-पाछू एकटा गहुमन साँप। साँप बहैत-बहैत बड़का भाइक पीठपर आबि गेलैक। किछु काल ओ दम साधने रहल। मुदा पीठपर साँप"" देह सिहरैत रहैक। हाथ बढ़ा क' ओकरा अपन पीठ परसँ फेंक' चाहलक, हाथमे हबकि लेलकै। तैयो ओकरा पकड़ि क' कोरसँ आगू फेंकलक। साँप आ क' आगू-आगू हेलैत छोटका भाइक पीठपर चढ़लैक आ ओकरो हबकि लेलकै। दुनू भाइ समाप्त। दुनूक लाश ओइ अन्तहीन पानिमे भसिआइत रहलैक।

किसुन कका पारसक बात सँ कुहुकुआइत बजलाह —"आ एकरा देखबाक लेल ओही अथाह पानिमे तों उपस्थित छलाह— प्रत्यक्षदर्शी, आ कि नहि।

पारस बिगड़िक' उठिक' चल गेल। किसुन काका बजलाह— "उहनी पसार'बला विपत्ति-कालमे सेहो आनन्द लैत रहैत अछि मुदा हम ई कहयह मानस जे एहन बाढ़िने अपन पचहत्तरि वर्षक जिनगीमे देखलहुँ, ने अपन बाप दादासँ सुनलहुँ। गाममे आधासँ बेसी घर दहल। १९३४क भूकम्पोमे एहन तबाही नहि भेल छलैक। बाढ़ि कहियाने उतरि गेलैक मुदा ओकर विभीषिका अखनो व्याप्त छैक। परसू सुकना मरि गेल। डबराक सड़ल पानिसँ छोट-छोट माछ छानि क' अनने छल। ओकरे खा क' दुनू बाप-बेटा खसलक। बपने गेल आ बेटाक हालति अब-तबमे छैक।

सबहक गेलाक बादो मानस अपन दर्लानमे बैसल रहल । बाढ़िक एहन बहुत कथा सुनने छल पटनासँ बिदा हैबासँ पहिनहुँ । बाढ़िक जखन हल्ला भेल रहैक ओ बम्बइमे छल । रोज दूरदर्शनपर समाचार देखै जे पटनाकेँ कतरा छैक— गंगा, सोन आ पुनपुनमे पानि बढ़ि रहल छैक । बाढ़िक एतबा समाचार कहि उद्घोषक गुजरात आ उत्तरप्रदेशमे रौदीक समाचार कह' लगैक आ तकर बाद खेल समाचार । ओहि प्रशिक्षण-केन्द्रमे सभ प्रान्तसँ आयल प्रशिक्षु सभ बिहारक बाढ़ि आ गुजरात, उत्तर प्रदेशक-रौदीकेँ बिसरि क्रिकेटक स्कोर सुन' लगैत छल ।

मानसकेँ लगैत छैक जे बाढ़ि रौदी-हत्या-लूटि-बलात्कार आ नरसंहार आब कौतूहलक वस्तु बनल जा रहल छैक । सभ दिन अखबार आ टेलीविजन लोक अही उत्सुकताक संग खोलैत अछि जे आइ कत' एहन घटना भेल हेतैक आ जहिया एहन समाचार नहि भेटैत छैक निराश जकाँ भ' जाइत अछि— आइ एकोटा उत्तेजक समाचार नहि' नरसंहारक कोनो घटना नहि । जहिया एहन घटनाक समाचार भेटैत छैक कोनो दहशत आ आतंकक अनुभव नहिए करैत अछि बेसी लोक । एकटा क्षणिक उत्तेजना । आ फेर ओकरा बिसरि क्रिकेटक स्कोर वा पॉप म्यूजिक सुन' लगैत अछि । बिहारक बाढ़ि, गुजरात आ उत्तर प्रदेशक रौदीक समाचार ओ एकदम तटस्थ भावसँ सुनैत अछि ।

मानस मुदा तटस्थ नहि रहि पबैत अछि । ओकर चिन्ता बढ़ले जाइत छैक । अपने पन्द्रह दिन लेल बम्बइमे छल आ पटना पर खतरा छलैक जत' सौंसे परिवार छलैक । एको टा चिट्ठियोने भेटि रहल छलैक ।

पटना घुरि क' आयल तँ जानमे जान अयलैक । पटना पर कोनो खतरा नहि छलैक मुदा सौंसे उत्तर बिहार बाढ़िमे डूबल छलैक आ बाढ़ि पीड़ितक उद्धारक लेल पटनामे जोर शोरसँ प्रयास भ' रहल छलैक— बाटे घाटे, मोहल्ले-मोहल्ले । सभ चौराहापर बाढ़ि पीड़ितक सहायता-कोषक झण्डा गाड़ल छलैक । चन्दा असूल करय बला दल सभ चौराहापर बैसि क' तान बेना रहल छल । बड उत्साह छलैक ओकरा सभमे । एकटा उत्साही दलसँ ओकरो भेंट भेल छलैक । घुरबामे देरी भ' गेल छलैक, एकटा दोसर मोहल्ला गेल रहय । रातुक बारह बाजि गेल छलैक तँ ओ कोनो चिन्ता नहि छलैक । निश्चिन्त भेल अबैत रहय,

ठीक कोतवाली लग सड़क घेरने छलैक बांस ल' क' आ किछु उत्साही लोक ठाढ़ छलाह—"बाढ़ि पीड़ितक लेल चन्दा दियौक, तखन रिक्सा आगू बढ़त ।"

बजनिहार लड़खड़ा रहल छल । मुँह भभकि रहल छलैक । ओ कतबो कहलकैं जे ओ द' चुकल छैक अपन कार्यालयमे आ मोहल्लोमे चन्दा आ सभ नहि मानलकैं । मानस जेबीसँ पँचटकही निकालि कहलकै— "ई टा हमरा संगमे अछि -रिक्सावलाकेँ भाड़ा देबैक ।"

ओ निशामे धुत्त युवक कूदि क' पँचटकही छीनि लेलकै— "भाड़ा डेरापर द' देबैक । पँचटकही जमा क' दियौक ।" फेर तलाशी सेहो लेलकै जे कुछ तँ नहि बाजि रहल अछि । रिक्सा जखन कहुना आगू बढ़लैक तँ पाछाँसँ सुना क' गारि देलकै— मार, भिखमंगा । पँचटकही ल' क' मटरगस्ती करैत अछि— सार रण्डीबाज""।

मानस चुपचाप डेरा चल आयल । ककरो किछु कहबो ने कयलकै । एहन घटना आब सभ ठाम होइत छैक, एकर चर्चा कोनो अर्थ नहि रखैत छैक । बड़ू केँ साहस आ ताकति होअय तँ देखाउ अपन पराक्रम ।

पटनासँ अबैकाल ओइ टूटल पुल लग एहने पराक्रमी लोक सभसँ भेंट भेल छलैक । पुल लग डाइभरसन छलैक जाहिपर नीचाँ जा क' एकटा ट्रक उनटि गेल छलैक भोरे । सात घंटासँ जाम छलैक आ आगुओ सात घंटा तक लाइन साफ हैबाक कोनो आस नहि छलैक । मानस हताश होइत पटना घुरि जयबाक बात सोच' लागल छल ।

तखने आसक एकटा छोर पकड़यलैक । बहुत रास प्राइवेट कार आ रिक्सा, मोटरसाइकिल सभ मेनरोड छोड़ि गाम बाटे एकटा दोसर सड़कपर जा रहल छलैक । ड्राइवर कहलकै जे ओकरो मैक्सी-टैक्सी ओहि बाटे निकलि सकैत छैक । सभ क्यो प्रसन्न होइत ओही बाटे बिदा भेल ।

बीच गाममे अबैत-अबैत एकटा भीड़ बाट छेकि लेलकै । ककरो हाथमे लाठी, ककरो हाथमे बाँसक छिपाडी । ओकर नेता आगू अयलैक— 'दुर्गापूजाक चंदा दिय' त' गाड़ी आगू बढ़य देब ।" मानस एकटा दू टकही निकालि क' देलकै । ओ दू टकही ओकरा मुँहपर फेकैत एकटा छौंड़ा बजलैक— 'भीख द' रहल छी ? सय टाका निकालू ।' मानसकेँ तामस उठलैक— 'कोनो जबरदस्ती

छैक, नहि देब एक सय टाका। 'लेबाक हो तँ लिय' दू टाका।' ओ छौड़ा बकड़ि क' बजलैक— 'त' नहि दिय'। रहू राति भरि एतहि।'

पाछाँसँ ओकर चेला सभ गाड़ीपर बसि-डंटा बजारय लगलैक। गाड़ीमे स्त्रीगण एवं धीया-पूता त्रस्त भ' गेलैक। पिंड छोड़ब' लेल एक सय टाका देलकैं। ओ सभ ठिठिआइत हटि गेलै। ओ जान छोड़ा आगू बढ़ल। लगलै दोसर आफत।

ओ सड़क पुरना छलैक जाहिपर नबका रोड बनयबा पहिने सवारी चलैत छलैक। एहि सड़कपर गामक बीच एकटा पुल छलैक जाहिपर एकेटा हल्लुक सवारी निकलि सकैत छलैक। ओहि पुलक आगू लकड़ी, चौकी, आदि अड़ा क' बाट घेरने किछु छौड़ा ठाढ़ छलैक— "गाड़ी आगू नहि जैत, पुल टूटि जैत। हमरा सभक अयबाक-जयबाक वैह बाट अछि। अहाँ सभ गाड़ी घुमाक' मेनरोड पर ल' जाउ।

मानस कतबो बुझयबाक चेष्टा कयलकैं, मानबे नहि कयलकैं। किछु स्त्रीगण सभ सेहो जमा भ' गेलैक। हाथ नचा-नचा चिचिया क' बाज' लगलैक। ओकरा मोन भेलै जे पटना घुरि चली।

तखन एकटा मुस्सशाख नेतानुमा लोक ओत' उपस्थित भेलैक। मानस लग आबि कहलकैं— "अपने चिन्ता नहि करू, सभकेँ एखने शान्त करैत छी।" ओ छौंड़ा सभक बीच पहुँचि गेलैक आ सभक चौकी लकड़ी उठा क' फेंकि देलकैं। ककरो रोकबाक सहास नहि भेलैक। स्वयम ड्राइवरकेँ निर्देश देत ओ गाड़ीकेँ पुल पार करा देलकैक। मानस ओकरा आगाँ नतमस्तक भेल जाइत रहय कि ओ कहलकै— ई चारि टा बोरा अछि, एकरा उपर चढ़ा दैत छी। हमरा संग दू टा छौंड़ा सेहो अछि, हम सभ दरभंगा उतरि जायब। ओ साधिकार सामानक उपर अपन बोरा लदबा अपन दुनू लोकक संग तीन टा सीट दखानि बैसि गेलैक। मानसक तीनू छोट भाइकेँ ठाढ़े दरभंगा धरि आब' पड़लैक। भराठी कथन बति गेलैक, ककरो ध्यानो नहि रहलैक। सभ सकदम्म बैसल रहल।

ओकर उतरलाक बाद सभक जानमे जान अयलैक। मानस ओकरा सादर नमस्कार कयलकैं। ओ विपत्तिसँ निकालने छलैक ओहि भीड़मे। एहन-एहन परा-

कर्मी लोकक आइ बड़ आवश्यकता छैक, चाहे ओ पटनाक देली रोड हो वा गामक चौराहा। देशक मामूली जनता छिन्हे लोकनिक हरो फेरि करि।

अही बातपर ओह दिन एकटा भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री दुखी होइत कहने रहथिन— "अहाँ लोकनिमे वैह एकटा बड़ पैघ बीमारी अछि। सभटा दोष अहाँ लोकनिकेँ नेता, मन्त्री, एम० पी० आ एम० एल० ए० मे देखाइत अछि। अपन दोष अहाँ लोकनि देखबे नहि करैत छी? अहीं बाबू त', देशमे सभटा प्रान्तकेँ जोड़ि क' कतेक मन्त्री, विधायक आ सांसद छथि। एतबे किछु हजार लोक पूरा देशकेँ डूबा रहल छथि, आ बाँकी लोक, ई विशाल जनसंख्या। ई सदाचारी करोड़ लोक मात्र किछु हजार लोकक कारण गर्तमे जा रहल अछि। बाँकी सभ सदाचारी आ निष्ठावान। बइमान खाली नेता! जनता दूधक धोअल।

ओहू दिन बाढ़ि रहैक। पातपर पोलाव, माछ-मांस, दही मधुर सभ बहि रहल छलैक। एकटा वरिष्ठ अधिकारीक पिताक बर्षी रहनि। बहुत ओतक लोक, नेता, अफसर, पत्रकार, लेखक, ओकील, जज आदि आमन्त्रित रहथि। ओह बाढ़िए, बाढ़िक गप्प शुरु भ' गेलैक। उत्तरी बिहारक जनताक तबाही आ सरकारी निष्क्रियताक गप्प होम' लगलैक।

विपक्ष आ विक्षुब्ध कांग्रेसक गप्प होब' लगलैक। बाढ़ि पीड़ित भुखल जनताक नाम भ' रहल राजनीतिक गप्प होबय लगलैक। पातपर लागल पकवानक पथार पर लुधकल लोक सभ खाली पेट, भूख आ बिमारीसँ मरैत, बाढ़िमे घेरायल लोक सभक गप्प क' रहल छल— शासन आ नेताकेँ दोषी मानि रहल छल एहि स्थितिक हेतु। एकटा भूतपूर्व मुख्यमन्त्रीक समर्थक त' चिचिया क' बाजि उठलाह— [illegible] सभ जानि बूझि क' भ' रहल अछि। हमरा लोकनिक क्षेत्र भूतपूर्व मुख्यमन्त्रीक समर्थक अछि तेँ हमर उपेक्षा भ' रहल अछि। रेलवे लाइन टूटल अछि, रेल बन्द अछि, सड़क टूटल अछि, बस बन्द अछि। ककरो कोनो थाह नहि लागि रहल अछि आ प्रशासन सूतल अछि। खाली अपन काज होइ त' बड़ मोस्तैदी देखाबैत।

ओ उत्साही विक्षुब्ध कांग्रेसी एकटा खिस्सा सुनौलथिन। एकटा वरिष्ठ अधिकारीक माय बाढ़िमे गाममे फँसल छलथिन। एकटा हेलीकाप्टर सँ पता लगबौलनि आ सूचना भेटलनि जे हुनकर गाम बाढ़ि मे निपत्ता छनि, एकोटा घरक

कोनो निशान नहि बाँचल छैक । चिन्तित अधिकारी स्वयम् हेलीकाप्टरसँ देखने छ। अपन गाम आ घरकें चिन्हलनि आ आश्वस्त भ' किछु अवसादित मन आपस भेलाह ।

ई किस्सा सुनि मानसकें अपन माय मोन पड़लैक । नहि जानि कोन हालतिमे हेतैक । आरो कतेक लोक हैत जकर माय, भाइ बहिन फँसल हेतैक । ओकरा लेल कोन हेलीकाप्टर जयतैक ? हजारो लाखो लोक गाममे रहैत अछि - ओकर कोना उद्धार हेतैक ?

"—उद्धार हेतैक"—भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री बाजय लगलाह— "विकल्प चाही, कांग्रेसक विकल्प । त्रिपाठीजी बुढ़ारीमे पत्रिकाक सम्पादन क' रहल छथि । हमरोसँ लेख मंगने छलाह । हम लिखि देलियनि— कांग्रेसक विकल्प मात्र कांग्रेस अछि । हमर त' ई अटूट विश्वास अछि । इतिहास देखि लिय'— पुरान कांग्रेसक विकल्प इन्दिराजी, इन्दिरा कांग्रेस, इन्दिराजीक विकल्प जे० पी० पुरान कांग्रेसी आ एखन फेर राजीव गाँधीक कांग्रेसक विकल्प ।"

"वी० पी० सिंह"—"उत्साही विक्षुब्ध कांग्रेसी प्रसन्न होइत बजलाह— अपने त' खूब लेख देलियनि अछि, कहिया छपत ?" भूतपूर्व मन्त्री प्रसन्न होइत बजलाह—हम त' हरदम सही बात कहैत आयल छी । खाली अपन बेरमे गलती भ' गेल । पाँच वर्ष सांसद रही । सब मास अपन क्षेत्र जाइत रही । जनताक सेवा करैत रही । अगिला चुनावमे वैह क्षेत्र दूधक माछी जकाँ निकालि क' फेकि देलक । बड़ आश्चर्य भेल जे कत' चूकि गेलहुँ । एकटा पुरान सांसदसँ दि परिचय बनाय लगातार भेटैत छलाह, अपन प्रश्न पुछलियनि । ओ झट उत्तर देलनि—"तोरासँ एकेटा गलती भेलौक जे तों सब मास अपन क्षेत्रमे गेलँ । हम पाँच वर्षमे मात्र एक बेर अपन क्षेत्र जाइत छी । जनताकें सब बेर एकेटा शिकाइत रहैत छैक जे अहाँ खाली चुनावे बेरमे अबैत छी । हम ल' द' क' ओकरा मना लैत छी । तों सब मास अपन क्षेत्रमे गेलँ, जनताक शिकाइत एकसँ अनेक भ' गेलैक आ तोरा पछाड़ि देलकौ ।

एतबा कहि ओ भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री हँसय लगलाह— दुःख सँ वा आनन्दसँ से नहि जानि । मुदा मानस मोने मन हुनकासँ सहमत भेल जाइत रहय जे कोनो देशकें सरकार ओहने भेटैत छक जेहन ओकर जनताक चरित्र रहैत

छैक । जत' किछु हजार विधायक सांसद आ मन्त्री करोड़ जनताक जिनगी आ भविष्यक संग खेलबाड़ करय आ जनता देखैत रहय, ओत' आर भैये की सकैत छैक ?

ई बात मानस अपन बगलमे बैसल सज्जनकें कहलकनि त' ओ बिगड़ि उठलथिन —"अहूँ केहन गप्प करैत छी ? ई सभ भाग्य हमारे अछि । स्वतंत्रताक सन्तान अछि ई सभ । एक नेताक संग हजार नेता फड़ैत छैक । मन्त्रीक चमचा नेता, विधायक — सांसदक चमचा नेता । चमचाकच मचा नेता, ऑफिसक कर्मचारी नेता, शिक्षक नेता, गामक-मुखिया-ठीकेदार नेता, गाम आ शहरक सभ गुण्डा बदमाश नेता । नेतासँ कोन स्थान अबंच अछि यौ ।

मानस गुम्म भ' गेल । फेर हुनके लोकनिक गप्प सुन' लागल । एकटा प्रधान मन्त्री समर्थक कांग्रेसी ओहि भूतपूर्व कांग्रेसी मन्त्री पर बमकि रहल छलाह — अहूँ लोकनि लगले अपन ओकातिपर आबि जाइत छी । राजीवक विकल्प वी० पी० सिंह ? गाछक विकल्प अण्डी ! बेस कहलहुँ अहूँ । एकटा प्रान्त त' सम्हरबे ने कयलनि आ देश सम्हारताह । एहन अनटोटल गप्प करैत छी, अहूँ सभ जे देहमे आगि लागि जाइत अछि ।

आस्ते आस्ते मानसोकें देहमे आगि सुनगि रहल छलैक । की भेल जा रहल छैक अइ देशक लोकके' । सब ठाम सब गप्पक अन्तमे वैह जगन्नाथ मिश्र, वह बिन्देश्वरी दुबे, वह राजीव गाँधी, वैह रामा राव, हेगड़े, देवी लाल, चन्द्रशेखर वाजपेयी । गप्प बाढ़िक भ' रहल छलैक, बाढ़ि पीड़ित सहायताक भ' रहल छलैक आ सभकें ठेलि ठालि क' ऊपर आबि गेलैक कुर्सी-सत्ता-संघर्ष । वैह देशक चरित्र भेल जा रहल छैक । सब चौराहा, सब घर, सब कार्यालय, सब स्कूल कालेजमे चर्चाक विषय भ' गेल छैक राजनीति, साहित्य-संस्कृति मानवताक गप्प आब बेर कुबेर लेल ठेकना क' राख'क वस्तु भ' गेल छैक । कोनो मंच, कोनो सभामे भजा लेबाक हेतु, अपनाकें जमा लेबाक हेतु । चर्चित वस्तु छैक राजनीति —"हिंसा""भ्रष्टाचार" शुरुंग सब ककरो होउक नेता वा शिक्षकक अभिनेताक वा कानून बेचताक व्यापारी वा नोकरिहाराक, चर्चाक विषय एकेटा छक — राजनीति ।

भोज खतम होइत होइत बाढ़ि आ बाढ़ि पीड़ितक गप्प सभ बिसरि गेल छल आ सुस्वादु भोजनक प्रशंसामे लागि गेल छल बकर उच्छृंखलक पाछाँ पड़ि लागल छलैक। राजीव समर्थक वा राजीव विरोधी दुनू एहि बातमे सहमत छलनि जे एहन भोजन बहुत दिनपर खयने छलाह। दुनू बाढ़ि आ बाढ़ि-पीड़ितक संग सरकारी निष्क्रियता आ सहायता सामग्रीक अभावक बात एकदम बिसरि गेल छलाह आ हिंकार लैत अपन घर विदा भेल छलाह।

आइ गाममे एकसर बैसल मानसकेँ आइ दिनुका गप्प सभ मोन पड़ि रहल छलैक। बाटमे कखन मराठी बितलैक आ कखन टूटल बान्ह पर कयलक, किछुओ ध्यान नहि रहलैक। लगलैक जेना बाढ़िक जे समाचार पढ़ने छल से झूठ छलैक, कतहु कोनो तबाही नहि छलैक। सम्पूर्ण इलाका पूर्ववत छलैक आ दुर्गापूजाक तैयारीमे, बाट-बटोहीकेँ घेरि क' सभक चन्दा असूल करबामे व्यस्त छलैक।

गाम अबैत अबैत मुदा लगलैक जेना बहुत किछु छलैक जे मास बितला पर आब देखार नहि छलैक। बहुत किछु आइयो छैक जे उपरसँ जगजियार नहि छैक। बाढ़िक विभीषिका आइयो एम्हुरका लोककेँ घेरने छैक। एहि गाम आ इलाकाकेँ घेरने छैक। बैदा, कँसा, बीकू आ रोशनकेँ घेरने छैक। ओ सभ आइयो डूबले अछि। ओकर उद्धार कोना होतैक ?

सोचैत सोचैत मानस बड़ी राति धरि बैसले रहि गेल। खा-पीक' सूतय गेल तयो ओकरे सभक बात आ डेरायल आकृति ओकरा उद्विग्न आ चिन्तित कयने रहयैक। अढ़ाइ हजार टाका कहाँसँ अनतैक ई पाँचो मिलि क' ? भोरे सूरजूकेँ कहतनि ते कथा सहक एकरा सभकेँ। ओहिना विपत्तिक मारल अछि, उपरसँ रेहन डाँग नहि भोरहुक जे खतमे भ' जाय।

उठल त' मोन किछु भारी छलैक। भोर भेना किछु काल बीति गेल छलैक मुदा रौदमे कोनो गर्मी नहि छलैक। ओ टहलैत किछु दूर चल आयल।

दुर्गापूजाक तैयारी भ' रहल छलैक—आने साल जकाँ। भगवतीक मूर्ति बनि गेल छलनि; आइए बेलनौती छैक, काल्हि डिम्हा पड़तनि ! स्टेज तैयार भ' रहल छैक ! बसिरक आने साल जकाँ तीनू राति नाटक हेतैक। दोकान सभ

खुजि गेल छैक एक पतियानीमे मधुर-चाह-पान रेल-पुलैस आ कैलीना इत्यादिक दोकान सभक आगू किछु गोटे खूब जोर-जोरसँ चिचिया रहल छलैक।

मानस उत्सुकतासँ आगू बढ़ल। किछु भीड़ लागल छलैक आ बहुत गोटे मिलि क' ककरो घेरि क' चिचिया रहल छलैक। मानस एकदम लग चलि गेल।

बगलमे एकटा मोटर साइकिल ओंघरायल छलैक। मानसकेँ ओकरा चिन्हबामे कनियो समय नहि लगलैक। सूरजूक मोटर साइकिल छलैक !

किछु चिन्तित होइत मानस किछु गोटेकेँ ठेलैत आगू बढ़ल। सामने विचित्र दृश्य छलैक ! सूरजूक गट्टा पकड़ने रोशना चिचिया रहल छल। ओकर पीठपर बीका, कँसा तैनात छलैक आ घेरने छलैक हरिजन टोलीक बहुत रास स्त्रीगण-पुरुष ! बीचमे सूरजू सकपंज भेल ठाढ़ छलाह— चेहराक रंग एकदम उड़ल, थरथर करैत। हुनका लगपासमे क्यो मदति करनिहार नहि छलनि। सभ अगल बगलक' दोकान सभक बिल ठाढ़ तमासा देखि रहल छलनि आ रोशना गरजि रहल छल—'आइ हँसिस ने जाय देब कोरट अहाँकेँ। पहिले कबूल करू जे हमरो बारके नाम कटवा देब—पाँचो गोटेक नाम, तखने जाय देब आइ। बाबू-भैया करैत जीहू टूटि गेल ! एक मास पाँचो गोटे खेतमे बेगारी क' देब सेहो गछलौं मुदा अहाँ नहि मानलौं ! अहाँकेँ चाही अढ़ाइ हजार। से आइ देबे देब अढ़इयो हजार ! पाँचो अंगुरी फाटिक', आ दुनू हाथ पयर तोड़िक' दहमे धइकेँ फेंकि देब ! बैसलो जहल, ऐसनो जहल। मुदा अहाँके लुरह गोमर बनाके तेहन देबो देब जे फेर कोनो गरीबकेँ सताबेके नाम नहि लेब अहाँ ! बाजू, जबाब दू'' सूरजू सकदम्म, कण्ठमे बकार नहि। रोशना गट्टा ऐंठने जा रहल छलनि आ ओहिना गरजि रहल छल—'बाढ़िमे बड़का गोहि आ मगरमच्छ सभ आयल रहय ? बाढ़िसँ बँचि गेलौं हमरा सभ मुदा ई मगरमच्छ त' गीड़ि लेत हमरा बारके''बड़की गो पेट हनि''हमरा बारकेँ भूखलो पेटो बड़' बथारी हनि बड़का, अपना पैसा से भरैत हनि''।

सूरजू आब किकिआय लागल छलाह। रोशना बाहिकेँ उनटा क' पीठपर चढ़ा देने छलनि। हुनकर कातर दृष्टि मानसपर पड़लनि। आतंक रेखा हुनकर आकृति पर स्पष्ट उभरि अयलनि आ बकार फुटलनि— बचाउ मानस भाइ, ''एकरा सभसँ हमरा बचाउ !''

मानसकेँ रक्षाक गप्प मोन पड़लैक। ई पाँचो हुनकासँ नेहोरा कयने रहथिन जे हमरा सुरज बाबूसँ बचाउ। आ ओ रे सुरज मदति लेल पिपिआइ रहल छथि। राति भरिमे ई पाँचो अपन बँचबाक बाट ताकि लेने अछि। आब कोनो बाढ़ि एकरा सभकेँ डुबा नहि सकतैक, कोनो मगरमच्छ एकरा सभकेँ गीड़ि नै सकतैक। बाढ़िसँ बचबाक बाट ई सभ अपने ताकि लेने अछि। एकरा ककरो मदति नहि चाहियैक।

मदति सुरजकेँ चाहियनि। ओ पिपिआ रहल छलाह मुदा मानस ओहि बाढ़िक बात सोचि रहल छल जकर भय आब समाप्त भ' गेल छलैक।

अक्टूबर १९८७

रक्षक

बूढ़ा बड़ी काल सँ प्लेटफार्म पर घुड़िया रहल छलाह।

नहि, ओ बूढ़ नहि छलाह। बेसी सँ बेसी पैंतालीसक वयस हेतनि मुदा ततेक दुब्बर छथि आ तेना झुकि क' चलि रहल छथि जे हुनका कतेको बेर बयोवृद्ध बूझि लेबाक भ्रम होइत छैक। यद्यपि केश कारी छनि आ दाँतो एकोटा टूटल नहि छनि! मुदा चेहरा पर व्याप्त असीम दुख आ क्षोभ। ओइ दुख आ क्षोभक कालिमा सँ झाँपित ओर आकृति पर एकटा छटपटाहटि एकटा विकलता छनि। प्लेटफार्म पर कतहु एकको ठाम स्थिर नहि होइत छथि। तखन चलिते रहैत छथि आ बेर-बेर घुरि क' प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय लग घुड़िआइत छथि।

घुड़िआइत छथि आ क्रमशः हुनकर आकृति पर एकटा हताश भाव पसरि' लगैत छनि। लगैत छैक जेना ककरो प्रतीक्षा रहल होइनि आ से प्रतीक्षा निराशामे परिणत भेल जा रहल होइनि।

फाटल मैल धोती आ मैले सन ढीलढाल कुर्ता पहिरने घुड़िआइत बूढ़ा ककरो लेल आकर्षणक केन्द्र नहि छथि। लगभग सभ दिससँ उपेक्षित मुदा अपन चेष्टामे स्वयं व्यस्त, घुनघुनमे पड़ल। नहि जानि ककर प्रतीक्षा छनि?

कान्ह पर एकटा झोरा लटकल छनि, खूब हल्लुक सन। आर सोझाँ कोनो समान नहि। दाढ़ी बेस बढ़ल छनि आ बेसी पाकलो नहि छनि! सायद केश त' कारी छनिहे मुदा तैयो नहि [illegible] लगैत छैक जेना एकटा खूब बूढ़ लोक मैल धोती कुर्ता पहिरने कान्हमे झोरा लटकौने, छोड़ गामक युवक प्लेटफार्म पर चाकचाक बौआ रहल होथि आ बेर-बेर प्रथम श्रेणीक प्रतीक्षालय लग पहुँचि ठेस खसैत जाइत होथि! नेटिन कटक दरवज्जा ठेलि ठेलि क' हुनकी द' फेर ओहिना चाकचाक उद्विग्न बौआय लगैत छथि जेना ककरो ताकि रहल होथि।

गाड़ी धड़धड़ाइत प्लेटफार्म पर आबि ठाढ़ भ' गेलैक आ यात्रीगणमे धक्कमधुक्की शुरू भ' गेलैक। ओहि धक्कमधुक्कीमे कहुना कहुँ त बुढ़ा प्रथमश्रेणीक डिब्बा लग पहुँचि गेलाह। बहिते निराश जकाँ भेलाह। फेर प्रसन्नतासँ आँखि चमकि उठलनि।

एकटा बड़का काफिलाक संग एकटा नेतानुमा लोक धोती कुर्त्ता टोपी पहिरने आ गरदनिमे माला झकझकौने डिब्बा दिस बढ़लाह आ संग चलैत लोक आ सशस्त्र सैनिक बाँकी मन्त्रीकेँ हकियाव' लगलैक—"हटि जाउ, मंत्रीजीकेँ चढ़' दिअनु। संगमे आइ० जी साहब सेहो छथिन।

ओहि धक्कामे बुढ़ा फेर दू लग्गा दूर फेका गेलाह मुदा हताश नहि भेलाह। मन्त्रीजी आ आइ० जी साहब भीतर प्रवेश कैल छलाह। संग आयल बाँकी लोक सेहो डिब्बामे चढ़ि ओकर गेट जाम कयने छलाह आ हुलकि-हुलकि क' मंत्रीजीक दर्शन पाबि रहल छलाह आ हुनका अपन मुखारबिन्द सेहो देखा रहल छलथिन। जिनका उपर नहि चढ़ि भेलनि से प्लेटफार्म पर ओहि डिब्बा लग ठाढ़ छलाह आ आन सोहरैरी देखबाक मौकाक तलाशमे छलाह! बुढ़ा घुमकैत ओहि दरबज्जा लग पहुँचलाह आ आनन्दित होइत डेग उपर उठौलनि कि तखने कियो जोरसँ डेंटलकनि—"एम्हर कत' घुसिआयल अबैत छी बुढ़ा? ई फर्स्ट क्लासक डिब्बा थिकै।

बुढ़ा सहमि गेला मुदा चेष्टा जारी रखलनि। कियो खिसिया' एक गोटे जोरसँ धक्का देलकनि! बेंका क' बाकनाल चित खसलाह प्लेटफार्म पर। माथ झनझना उठलनि। डाँड़ पीठमे सेहो खूब चोट लगलनि। तावत गाड़ी ससर' लागल छलैक! बुढ़ा आन सभटा संचित शक्ति समेटि उठलाह आ एकबेर फेर डिब्बा दिस दौड़लाह। लोक जबित पकड़नि आ धक्का दैनि ओ हैण्डिल पकड़ि पौदान पर लटकि गेलाह।

तैयो आफत पिण्ड नहि छोड़लकनि। गेट पर ठाढ़ सशस्त्र पुलिस सभ नीचा खसा देबा लेल उद्यत भ' गेलनि। बुढ़ा बार जोरसँ हैण्डिल पकड़ि लेलनि। उपर चढ़बा लेल प्रयास कर' लगलाह मुदा सफल नहि भेलाह। एकटा पुलिस केँ दया आबि गेलैक—"आब रहुन बुढ़ा केँ। गाड़ीक स्पीड तेज भ' गेल छैक, आब उतराह त' जाने जयतनि।" ओकर पुलिस हाथ पकड़ि हुनका भीतर खीँचि लेलकनि। बुढ़ा ओँघराइत ओघराइत बँचलाह। नाक घोआ होइतहुँ त बँचलनि।

बुढ़ा तखनो नुड़िआइये रहल छलाह। गाड़ी अपन उच्चतम गतिसँ जा रहल छल। डिब्बाक लोक अपन-अपन स्थान ध' लेने छल।

छ टा केबिन छलैक! एकटामे मन्त्री महोदय आ आइ० जी० साहब छलाह। दोसरमे मंत्री जीक सम्पूर्ण सुरक्षा दल—छ'टा सशस्त्र सिपाही। तेसरमे पी० ए० आ चमचा लोकनि आ बाँकी तीन टामे यात्री। सम्पूर्ण पैसेजमे मात्र तीन गोटे छल—मंत्री साहबक केबिनक बाहर पहरामे तैनात दूटा सशस्त्र पुलिस आ पैसेजमे नुड़िआइत ओ बुढ़ा। एकबेर सुरक्षा सिपाही नरेटी बाबि देलकनि—"की बात छैक? एना की एम्हर ओम्हर क' रहल छी!

बुढ़ा घिघिआय लगलाह। ओ सिपाही हुनकर झोराक तलासी लेलकनि। ओहल बाइल एकटा कागजक बण्डल छलनि ओरामे। एकटा प्लास्टिकक गिलास, एकटा मैल गमछा आ एक जोड़ धोती। सिपाही सभटा बाहर छिड़िया झोरा मुँह पर फेकि देलकनि! बुढ़ा सभटा सामान उठा फेर झोरामे रखलनि आ ओहिना नुड़िआय लगलाह। सिपाही फेर डेंटलकनि—चुपचाप कोनामे जा क' बैसू! एम्हर ओम्हर की क' रहल छी तखनसँ!" ओकर डाँट सुनि केबिनमे बैसल चार सिपाही सभ बाहर निकलल आ सहमल बुढ़ाकेँ एकसर पैसेजमे ठाढ़ देखि एक गोटे कहलकनि "आउ बुढ़ा बाबा, भीतरे आबि जाउ।

भीतर केबिनमे तीन गोटे निचला सीट पर आ तीन गोटे उपरका सीट पर बैसल छल। जगह नहिये जकाँ छलैक मुदा जे सिपाही बजौने छलनि से कनेक घसकि क' कहलकनि—"बैसू, बुढ़ा बाबा।

बुढ़ा तैयो ठाढ़े रहलाह जेना बैसबामे डर भ' रहल होनि, जेना बैसबाने आपत्ति होनि। हुनकर बाँहिने और पुलिसक सहृदय व्यवहारक बादो ओकरा लेल एकटा उपेक्षा आ घृणाक भाव छलनि। फेर टोकलापर ओ तेना सिकुड़ि' ओकर बगलमे बैसि गेलाह जेना स्पर्श सँ बाँचि रहल होथि, जेना स्पर्श होइते अपवित्र भ' जयताह। बाँतो घृणे टा नहि, घृणा आ डरक मिलजुलल भाव। जेना लगमे बैसितहि नरेटी दबा देतनि ओ।

ओ सिपाही मुदा खूब सहृदय छल । तम्बाकू बनौलक त' बूढ़ा दिस सेहो बढ़ा देलकनि । बूढ़ा हाथ नहि बढ़ौलथिन त' हुनकर मुठी खोलि तरहत्थी पर तम्बाकू राखि देलकनि । तैयो हुनकर तरहत्थी पर ओ मसल तम्बाकू ओहिना पड़ल रहलनि बड़ी काल ! सिपाहीक ध्यान फेर ओम्हर गेलैक—''खाउ ने बूढ़ा बाबा ! खूब रानिगज तम्बाकू अछि ।'' बूढ़ा अनिच्छापूर्वक डेराइत ओ तम्बाकू ठोर तर रखलनि आ पीठ पाछू खटा, ओठंगि गेलाह आ आँखि बन्न क' लेलनि ।

सिपाही सभ अपनामे गप्प क' रहल छल ! बूढ़ाक आँखि बन्द छलनि मुदा समटा बात कानमे जा रहल छलनि ।

—''घुरैत काल राति भ' जयतैक ! काल्हि भोरे वापस आबि सकब !

एकटा सिपाही बाजल ।

—''डेरापर पहुँचि त' लिहू ! डेरा पर जाय लगबै त' काल्हि भोरो वापस नहि भ' सकबै ।

—''बी० ए० साहब त' पटना पहुँच' स' पहिने लिखबाक छिहे ।'' दोसर बुढ़ौलकै ।

—''अखनीधा लेत सेहो लिखबा लिहू—नव लेल एक-एक सब ! मंत्रीजीक हाइकोर्ट मे गेल छलै ।' तेसर कहलकै ।

—लिखौलासँ की होतौ ? पछिलो सभ बेर जे लिखौलें, से भेटलौ आइ धरि ! ई मंत्री सभ त' एहिना लिखि दै छइ ।'' पहिला लोहछि क' बाजल ।

—कानिये दिनुका राजपाट रहै छै ! सभ सब पूरा क' लैत अछि । हाइकोर्ट चाही, जनाब अकबीज देबाक चाही । एही मंत्रीजी के देखाने । तीन महीना खयला भेलैक आ सत्ते हटबाक सम्प भ' रहल छैक ।'—थाकिम उम्हका सीटसँ बजलैक ।

—गप्प की भ' रहल छैक ? हृदयँ करतैक अहाँ माय । ई आखरी लाट साहूबो छैक ।' कहनैं कोनो दोसर सिपाही बजलैक ।

—रौनियो त सकैत छैक भाइ । ई जे काण्ड भेलैक अछि ताहीसँ उम्मेद भ' गेल छैक । एकरे जातिक सब मारल गेल छैक । एकरे फैदा उठौतै । कोना दौड़ल गेल छलौ । खून निरबाक बाद एको बेर गेल छलौ आइधरि ? हमहूँ त' ओहीं खेत के छी ? मुदा अपन गद्दी डोललैक त' कोना दौगल गेल छलौ······ लाथ बचक पुछारी मे गेल छलौ ···

—''लाश ! बूढ़ा चेहा क' उठलाह—''कहाँ छैक लाश ? कोम्हर छै······

बूढ़ा तेना छटपटा क' उठल छलाह जे सभ सिपाही चौंकि गेल । एकटा सिपाही हुनकर छटपटाइत देह केँ पकड़ैत—की भेल बूढ़ा बाबा ? एना डरा किएक गेलहुँ ? एत' कत' सँ लाश औतैक ? लाश त' बिछल छलइ ओइ गाममे पत'सँ हमरा लोकनि दूरल अबैत छी । स्टेशनसँ बीस कोस दूर छलै । जाय के कोनो रस्ता नै ! चाक कात पानि । राति क' सब बन्दूक ल' क' आयल छलैक नाव पर । घरसँ निकालि निकालि क' मारलैक सभकेँ । बूढ़ जवान स्त्रिगण बच्चा······सभकेँ भूनि देलकै ।

—''नै'' बूढ़ा फेर जोरसँ चिचिया उठलाह जेना प्राण कण्ठ मे आबि गेल होनि । ओसे देह छटपटाय लगलनि । ओ सिपाही ओहिना पाँज मे समेटने छलनि ।

दोसर सिपाही बाजल—'अहाँ सुनिक' एना छटपटा रहल छी बूढ़ा बाबा । हम सभ देखि क' आबि रहल छी । आइ त' सब दिन एहिना देखैत रहैत छी—आइ एत' त' काल्हि ओत' । आइ एक जाति के, त' काल्हि दोसर जाति के······

एकटा आन सिपाही बुझनुक जकाँ बाजल—मर'बला के त' एके जाति होइ छैक आर मारहोबलाक सेहो एके जाति होइत छैक । मारल जाइत अछि समटा निरपराध आ आ मारैत छैक समटा अन्यायी, हिंसक, मतिभ्रष्ट ।

दोसर टोकलकै—कखनो-कखनो दुनू एकके रंगक रहैत छैक मुदा बेसी काल मारल जाइत छैक निरपराध । ई गुण्डवा सभ अपना मे लड़ै-मरै जाय, कोनो निरपराधकेँ किऐक मारैत छैक ? आइये देखलहिक······एकटा सोलह बरखक छौंड़ा छलैक—नेहन सुन्नर । बी० ए०क परीक्षा द' क' आयल छलैक—''नै'' बूढ़ा फेर चीत्कार कयलनि । एकटा सिपाही ओहिना हुनकर शरीर केँ समेटने छलनि अपन बाहि मे । हुनका उठा क' सोझ क' बैसबैत कहलकनि—रहू बूढ़ा बाबा, सोझ भ' क' बैसू । एना चिकरि किऐक रहल छी ? इ सभ त' होइते रहैत छैक । ई नेतबा सभ बन्न होब' देतैक ई सभ ? येह रहैत छैक आ होइत रहतैक । ई नेतवा सब बन्न होब' देतैक ई सभ ? येह मन्त्रीजी आयल छलौ आइ एकरे जातिक लोक मरल छै । देखि लिहें, मासो नहि

पुरतैक। जे हम मारने छैक—ओकरो जातिक निरपराध दस-बीस मारल जयतैक। हिसाब बरोबरि। जे मरल से मरल······नेताजीक गद्दी सलामत।

जे बुढ़ा कें सम्हारने छलनि से बाजल—'आ बदनाम हमरा लोकनि। खराब पुलिस। बेइमान आ भ्रष्ट। दू रुपया—चारि रुपया लेल। दू जे लाख-करोड़ खाइत छथि—से साधु महात्मा। हरान भ' चोर डाकू कें पकड़ू आ फेर कोनो नेताजी ओकरा छोड़ा देथिन, माला पहिरौथिन। ओकरा घर पर अतिथि बनथिन, अगिला चुनावक टिकटक इन्तजाम करथिन। चोर-डाकू गुण्डा-बदमाश सभ मस्त साँढ़ जकाँ घौआयत। नेता सभक बंगला मे मौज करत आ ओकरा सभ कें पकड़बा लेल सुट्ठे हमरा लोकनि हरान हैब।

तावत ओकर ध्यान अपन बाँहि मे सिकुड़ल बुढ़ा पर गेलैक। लगलैक जेना बुढ़ा बेहोश भ' गेल होथि। फेर लगलैक जेना सुति रहल होथि। ओ हुनका फेर नीक जकाँ पाछू दिस बर्थ पर बैसा देलकनि।

बुढ़ाक आँखि बन्द छलनि। गाड़ी अप्पन द्रुत गतिसँ भागि रहल छल।

बुढ़ाक आँखि बन्द छलनि मुदा ओ जागल छलाह। जागल छलाह आ जेना कोनो भयानक सपना देखि रहल छलाह—जागल आँखिक सपना।

बहुत रास सपना छलनि सुधीर बाबुक आँखि मे।

पहिल सपना रहनि देश आ संसारक श्रेष्ठ गायक बनबाक। भगवानक देल मधुर स्वर छलनि आ विख्यात गुरुक प्रारम्भिक शिक्षा। राज-घरानाक वातावरण मे, राजसी ठाठक बीच। गरीबी मे जन्म आ बादशाही मे बीतल नेनपन आ किशोरावस्था।

ओ सपना चकनाचूर भ' गेलनि। राजमहल छोड़ि कालेजक पढ़ाइ आ तकर बाद नोकरीक तलाश मे ततेक बौअयलाह जे अपनो पता नहि चललनि जे देशक श्रेष्ठ गायक बनबाक सपना कत' पाछाँ छूटि गेलि। बाकी कसर तहिया पूरा भ' गेलनि जहिया मुँहसँ खून खसलनि आ डाक्टर जाँच क' टी० बीक घोषणा क' देलकनि। आब स्कूल कालेज मे अखिल भारतीय स्तर पर जीतल कप आ शील्ड सभ ओइ स्वप्नक मखौल उड़बैत बदरंग भेल कोनो अलमारी आ बकसा मे फेकल पड़ल रहैत छनि।

दोसर सपना रहनि क्रिकेटक बढ़ियाँ खेलाड़ी बनबाक। संगीतक रेयाज छोड़ि क' मैदान मे प्रैक्टिस लेल पहुँचि जाथि। कतेको बेर गुरुजी डँटबो करथिन मुदा ओ पड़ाइये जाइत रहथिन। गुरुजी छोड़ि देलथिन बाद मे। ओ स्वयम् क्रिकेटक प्रेमी छलाह।

ओहो सपना मुदा बीचे मे दम तोड़ि देलकनि। तेना खसलाह एक बेर जे ठेहुन हमेशा लेल कमजोर भ' गेलनि। कमेन्टरी सुनि-सुनि क' ओइ मुइल सपना कें जियबैत रहैत छथि।

तेसर सपना रहनि नीक निशानेबाज बनबाक। जाबति राजमहल मे रहथि, खूब नीक निशाना रहनि। गुरुजी अपनो शिकारक खूब शौकीन रहथिन। हुनके राइफल साफ करैत-करैत ओहो निशाना लगाब' लगलाह। मुदा राजमहल छोड़ि जहिये अपन झोपड़ी मे अयलाह, राइफल कें दुर्लभ स्वप्न भ' गेलनि।

फेर सपना पत्नी मे बसबलनि जे जाहि आँखि मे खाली अपन स्वप्न भरल रहैत छलनि, कहिया धीयापुता सभक सपना जगह बना लेलकनि।

धीयोसँ हुनका कोनो बेसी उम्मेद नहि रहनि। ओ कार रंग, पढ़बा-लिखबा, सभ मे साधारण रहनि। बी० ए० पास करैत देरी ओकरा अपने संग चाकरी मे लगबा देलथिन। बिआहो-दान करबा देलथिन। ओकरा लेल ओइसँ बेसीक कहियो उम्मेद नहि रहनि।

दोसरका बेटासँ बड़ा बड़का-बड़का आस रहनि, पैघ-पैघ सपना रहनि। जहिया नीक नम्बरसँ पास क' रमण कालेज मे आबि गेलनि, बी० ए० मे आबि गेलनि, टुटि क' थौआ भेल सपना फेरसँ पनपि क' जवान भ' गेल रहनि। डाक्टरक मनाही रहलाक बादो ओ जखन लम्बा-लम्बा आलाप लेब' लागल छलाह। पत्नी एक बेर दाबल स्वरे मनो करलथिन त' ओ हँसि क' उड़ा देलथिन—''आब चिन्ता नै करू। हम नहियो रहब त' वहीं कें देखनिहार सभ ठाढ़ भ' रहल छथि।

अत्यधिक प्रसन्न रह' लागल छलाह सुधीर बाबू। जागलो आँखि मे सपना रहैत छलनि। बेटा कें आइ० ए० एस० बनएबाक सपना। मुरझायल आकृति पर फेरसँ मासु आ चमक घुरि आयल छलनि। कपड़ा-लत्ता फेर ओहिने छाँटल पहिर' लागल छलाह जेना अपन किशोरावस्था मे राजमहल मे रहैत काल पहिरैत छलाह। लोक सभ जखन-तखन टोक' लागल छलनि—की बात छैक सुधीर बाबू? बड़ चक्कन रहैत छी आइ-काल्हि।

सुवीर बाबू मुस्किया क' रहि जाइत छलाह। कोनो जवाब नहि दैत छलथिन। आँखियो दोसर दिस घुमा लैत छलाह जेना डर भ' रहल होनि जे आँखिमे उबिआइत सपना कें क्यो देखि ने लिअय, ककरो नजरि ने लागि जाय।

नजरि मुदा लागिये गेलनि। ककर से नहि जानि। हुनका देखबाक फुरसतिये नहि रहनि। अपन धुन मे मगन छलाह। सदिखन सपने मे डूबल रहैत छलाह, आन दिस तकबाक फुरसतिये नहि छलनि।

चौंकला ओइ दिन जहिया पत्नी कहलथिन—"रमण अखन धरि नहि घूरल अछि। कालिह रातियेसँ घर नहि आयल अछि।

सुवीर बाबू आफिससँ घूरले छलाह। पत्नीकें जोरसँ डँटलथिन—'कालिह रातिसँ घर नै अयलाह आ हमरा अखन कहैत छी। भोरे किऐक ने कहलहुँ?" पत्नीक भयभीत चिन्तित आकृति आर दयनीय भ' उठलनि—'भेल जे कोनो दोस्त-महिम लग रहि गेल हैत। भोरे चल आओत। मुदा भोरसँ साँझ भेलैक, कोनो पता नहि। डरे काँइ काँपि रहल अछि।'

सुवीर बाबू चिन्तित भ' उठलाह। पत्नी फेर कहलथिन—"सभ ठाम पता लगबौलियैक मुदा क्यो किछु ने कहैत अछि। सभसँ बढ़का दोस्त छैक राम, ओहो किछु ने कहि रहल अछि। लगैत अछि जेना किछु नुका रहल होअय।"

सुवीर बाबू बिना किछु बजने घरसँ बहरयलाह आ रामक घर पहुँचलाह। हुनका लगलनि जेना राम हुनका देखैत देरी चौंकल होअय। कहलकनि—"कालिह साँझमे हमरा लग आयल छल। फेर मण्टू……लड्डू आ गोपाल ओकरा बजबा लेलकै। तकर बाद हमरा किछु ने बूझल अछि। काकियो के हम ई बात कहि दैने रहियनि।"

सुवीर बाबूक चिन्ता आब आर बढ़ि गेलनि। मण्टू, लड्डू आ गोपाल मोहल्लेक छौंड़ा छलैक मुदा रमण ओकरा सभसँ दूरे रहैत छल। भारी बदमाश छलैक तीनू।

राम डराइत कहलकनि—"परीक्षामे चोरी करैत छलैक मण्टू। चिट पकड़ाय लगलैक त' रमण दिस फेकि देलकै। अपन बचाव लेल रमण सब बात कहि देलकै जे चिट रमण अपने छलैक। परीक्षासँ निकालि देलकै ओकरा। तहियेसँ मण्टू रमण पर लागल छैक। धमकियो देने छलैक।

सुवीर बाबू आर चौंकलाह। आगो ओहो ठाम छथि मुदा कोनो खबरि

नहि। आशंकासँ मैर थरथराय लगलनि, ओठहि बंधि गेलाह। राम जल आनि क' देलकनि। पानि पीलासँ सुखायल कण्ठ मे कहुना प्राण अयलनि। निष्प्राण स्वर मे रामकें कहलथिन—हमरा नैं बूझल छल किछुओ। रमणो किछु नहि कहलक।

राम आरो विस्तारसँ कहलकनि—"रमण प्रिन्सिपल लग गेल रहैक मुदा ओ कोनो ध्यान नहि देलथिन। ई तीनू त' हुनके पोसुआ छनि, हुनके जातिक छनि। परन्तु कालेज मे रमण के दू थापर मारने रहैक आ जान लेबाक धमकी देने रहैक।

राम आरो किछु बजितैक, ताबत ओकर माय घरसँ बहरैलैक—"अनेरो तखनसँ बकर-बकर कयने छै। तोँ की जानि गेलहिक ई सभ बात। तोरा कोन मतलब छौक?

राम चुप्प भ' गेल। सुवीर बाबू कातर दृष्टिये रामक माय दिस ताक' लगलाह। किछु क्षण बाद बकार फुटलनि—"रमण कालिहसँ घर नै आयल अछि। रामकें मना नैं करियौक। हमरा लोकनि बड़ चिन्ता मे छी।

रामक माय कोनो जवाब नैं देलथिन आ भीतर जाइत कहलथिन—"जल्दी आ राम, जरूरी काज अछि।

सुवीर बाबू नेहोरा कयलथिन—"हमरा कहू राम, कत' अड्डा छैक तीनूक। घर मे त' नहिये भेटत। तोरा बूझल हेतौक। डेरो जुनि, सभटा कहू हमरा।

राम डेराइत डेराइत बाजल—ओम्हर धारक कात मे एकटा कोठली छैक। ओहि मे अड्डा छैक तीनूक। लड्डूक आरो बदमाश सभ अबैत छैक।"
—"चलै ने लक' देखा दे हमरा ओ कोठली।" सुवीर बाबू नेहोरा कयलथिन।

राम मुदा तैयार नहि भेलनि। हुनका एकसरे जाय पड़लनि। कोठली लग जाइते बहुत गोटेक बजबाक स्वर सुनाइ पड़लनि। ओ दरबज्जा ठेलि भीतर पैसि गेलाह। भीतर शराबक बोतल खूजल छलैक आ सभ पीबि क' मस्त छल। एना भीतर ढुकैत देखि मण्टू उठि क' ठाढ़ भेलैक।

—"एना भीतर किऐक अयलौं? कोनो सभ्यता नहि अछि आहाँके।

सुधीर बाबू गिड़गिड़ाय लगलाह—"एना अयबा लेल क्षमा कर हमरा मुदा कहू जे रमण कत' अछि ? तोंही सभ बजौने रहिऐक काल्हि साँझ"……

गोपाल जोरसँ गरजल— "के कहलक अहाँके ? ओ चोट्टा राम ? ओकरा देखि लेबैक काल्हि । मुदा पहिने अहाँ निकलू एत' सँ । हमरा सभ नै जनैत छी अहाँक रमण कें !

सुधीर बाबू ओकर पयर प' खसि पड़लाह—"नहोरा करै छियौ बाउ । कहि दे जे कत' अछि । बड़ चिन्तामे छी हम सभ ।

गोपाल जोर सँ ठोकर मारलकनि—"नाटक नै करू । हम सभ की जानै गेलौं जे अहाँक रमण कत' अछि । निकलू एत' सँ । सभ टा मूड खराब भ' गेल । फेर दू गिलास चढ़ब' पड़त । जाइ छी अहाँ, की लतिया क' बाहर' कर पड़त ।

अपमानित, क्षुब्ध सुधीर बाबू ओत' सँ बहरा गेलाह । भारी डेगे डेरा अयलाह । पत्नी, पुतहु, बेटा आ प्रमोद सभ चिन्ता सँ अपस्याँत बाट तकैत रहथि । हुनकर उदास आ हारल आकृति देखि सभक मोन आर बैसि गेलैक !

सुधीर बाबू मुदा बैसल नै रहलाह । सभ ठाम गेलाह । पुलिस स्टेशन, डी०एस० पी०, एस०पी०, डी० एम०, प्रिन्सिपल, प्रोफेसर्स सभक कत' दौड़लाह । तीनूक नामो लिखा देलथिन मुदा क्यो कोनो आश्वासन नहि देलकनि, नै तीनू कें पकड़बे कयलकै । कतेको गोटे चुपचाप घरे आबि मना कयलकनि—ओकर तीनूक नाम नहि दिऔक । आफत मे पड़ि जायब । बड़का बड़काक संरक्षण प्राप्त छैक ओकरा । ओकर माइ मुख्यमन्त्रीक खास आदमी छनि । अनेरो जिंदगी कें कियेक खोआइ त छी ।"

सुधीर बाबू नहि मानलथिन । सभ ठाम दौड़िते रहलाह । थाना मे नित्य तगेदा कयलथिन डी० एस० पी०, एस० पी० कें नित्य फोन कयलथिन, धरना द' अपने बैठो कयलथिन । जिलाधीश लग लिखि क' देलथिन मुदा रमणक कोनो पता नहि लगलनि । घर मे कन्नारोहटि मचल छलनि । भानस भात सभ बन्द । पत्नी पेटकान देने छलथिन । बाकी सभ डरे पस्त छल । खाली एकसर सुधीर बाबू सभ ठाम बौआ रहल छलाह । सातम दिन क्यो समाचार देने छलैक !

पत्नी सुनिते बेहोश भ' गेल छलथिन । घर मे कन्नारोहटि कँर मचि गेल छलनि । बड़का बेटा प्रमोद बेजान ओम्हरे दौड़ल छल । सुधीर बाबू कनैत बेटी

पुतहु कें देखलनि—एना किथैक कनैत छी ? बुझू हुनका मनोलक अछि क्यो । हम अपने देखने अबैत छी ।

बेहोश पत्नी कें ओहिना छोड़ि ओ दौड़ले बाहर आयल छलाह । मुदा बाहर अबितहि पयर लोथ भ' गेल छलनि । डेग आगू ससरिये ने रहल छलनि । लोथ पयरकें घिसियबैत कहुना धारक कात मे पहुँचलाह ।

भीड़ ठसम-ठस छलैक । सभ कें ठेलैत कहुना भीतर पैसलाह । एकटा सड़ल-गोबल लाश बालू पर पड़ल छलैक जकरा लग प्रमोद कनैत बैसल छल । बालू मे गाड़ल लाश कें गीदड़-कुकुर उखाड़ि कें नोचि-नाचि देने छलैक आ चोल कौआ चोंच मारि क' क्षतविक्षत क' देने छलैक । मात्र देह परक कपड़ा चिन्हलथिन सुधीर बाबू आ ओहि सड़ल गलल लाश पर धड़ाम सँ खसि पड़लाह ।

होश भेलनि त' चचरी तैयार छलैक । भीड़ निपत्ता भ' गेल छलैक । प्रमोदक संग मात्र चारि टा लोक । आर ककरो पता नहि ।

सुधीर बाबू बहुत चेष्टाक बाद कहुना ठाढ़ भेलाह । आँखिक नोर सुखा गेल छलनि । ओइ मे एकटा विचित्र सन भाव आबि गेल छलनि—निराशा, संकल्प आ प्रतिहिंसाक मिलल जुलल भाव । अर्थीक एकटा अहिला बाँस पकड़ि उठबैत कहलथिन—चल' ।

लोक सभ मना कयलकनि । बेटा कहलकनि—अहाँ छोड़ि दियौक बाबू ।

सुधीर बाबू जेना किछु ने सुनलथिन । बाँस पकड़ने ठाढ़ रहलाह । आगूक दोसर बाँस प्रमोद पकड़ि लेलकनि । दू गोटे पाछू सँ उठौलनि । सभ चिचिया गेल—राम नाम सत्य है ।

सुधीर बाबू एकदम चुप्प छलाह । डेग हुनकर उनटा दिस चिचिया भेलनि । बेटा टोकलकनि—ओम्हर कत' जाइत छी ।

सुधीर बाबू कोनो जबाब नहि देलथिन । डेग बढ़ैत रहलनि । किछु अनुमान करैत बेटा कहलकनि—ओकरा सभ लग जा क' की हैत ? सात दिन सँ त' दौड़ि रहल छी, की कयलक ओ सभ ? जान बचा सकलैक रमणक । ई सभ त' असली कसाइ अछि ।

सुधीर बाबू आगू बढ़िते गेलाह । मात्र छः गोटे रहथि । बाटमे क्यो संग नहि भेलनि । बाट चलैत लोक एक बेर ताकि अपन बाट चलैत रहल । एहि सँ बेसी केकरो फुरसति नहि छलैक ।

पुलिस स्टेशन पहुँचि छूटि गेलैक त' प्रमोद के' चिन्ता भेलैक— किछु पता छी बाबू ?

सुधीर बाबू कोनो जवाब नहि देलथिन। एस॰ पी॰ क बंगलाक अहातामे सिपाहीक रोकितो रोकितो ओ पैसि गेलाह आ १८ कमरहसँ चीत्कार कयलनि।

लाश बरण्डा पर राखि सुधीर बाबू बड़ी काल धरि चिचिआइत रहलाह। तखन एस॰ पी॰ साहब बाहर अयलथिन। ओ सुधीर बाबूकेँ चीन्हैत छलथिन। पाँच दिन पहिने ओ अपन शिकायति लिखा गेल रहथिन—सभक नाम सेहो लिखा गेल रहथिन।

हुनकर आकृति पर संवेदनाक भाव उपरलनि, परिस्क अन्तःकरणमे कोनो लज्जाक भाव सेहो। क्यो देखलकनि नहि। ऊपरी तौर पर ओ स्पष्टतासँ बजलाह—"लाश एत' कियैक अनलहु ?" पोस्टमार्टम लेल लाश ल' जयबाक आदेश दैत सुधीर बाबूक कान्ह पर हाथ रखैत कहलथिन—"अपने विश्वास राखू। अपनेक संग इन्साफ हैत।

सुधीर बाबू शून्य आँखिये एस॰ पी॰ साहबक चेहरा देखैत रहि गेलाह। सामनेमे बेटाक लाश पड़ल छलनि, जीवनक अन्तिम सपनाक लाश आ एस॰ पी॰ साहब इन्साफ करबाक बात क' रहल छलथिन।

प्रमोद एक गोटे के' संग करैत कहलकै—बाबू के' डेरापर ल' जाहुन करैत। एहि समयमे आब समय लगतैक।

सुधीर बाबू चिचिया उठलाह—नहि, अखन डेरा नहि जायब हम। पहिने बात हमर सुनू— अपना कान्ह पर बेटाक लाश ल' क' हम एना घुरि जाबि लेल नहि आयल छी।" हुनकर बयान लिखबा देलथिन एस॰ पी॰ साहब। किछुओ नहि नुकौलथिन ओ। परीक्षाक पहिलासँ रामक मरण घटना धरि सभ सुना देलथिन।

घुरि क' जखन डेरामे अयलाह, कन्यारोहटि शान्त भ' गेल छलनि। पत्नी ओहिना बेहोश पड़लि छलथिन। सुधीर बाबूकेँ नहि ज्ञात छलनि जे डाक्टर आबि सूई द' गेल छलनि आ दवाइक असरिसँ राति भरि ओहिना पड़ल रहती ओ—संज्ञाहीन।

हुनकर बेहोश शरीर लग बैसि गेलाह ओ। मुदा किछुए काल बाद भहरिक' हुनके देह पर खसि कान' लगलाह, कनिते रहि गेलाह राति भरि !

भोरे सबकेँ खबरि भेटि गेलैक।

रातिये पुलिस मन्टू लड्डू गोपाल तीनू के' पकड़िक' ल' गेलैक। पुलिसक जीपमे एस॰ पी॰ साहब स्वयम् आयल छलथिन।

तकर बाद लोको सभ आब' लगलनि। लाशक संग जाय लेल मात्र चारि गोटे रहथि, बाप बेटाकेँ छोड़ि क'। भोरसँ सैकड़ोक भीड़ लागि गेलनि। पड़ोसी-सम्बन्धी सहकर्मी आ पत्रकार क्यो बाकी नहि रहलाह। सुधीर बाबू ककरो किछु नै कहलथिन। प्रमोद सभ के' सभटा कहैत रहलैक, भोरसँ राति बितला धरि।

तीनूक गिरफ्तारीक समाचार जखन प्रमोद हुनका कहलकनि हुनकर आँखिमे एकटा चमक आयल रहनि। प्रमोद नहि देखलकनि मुदा बड़ी काल तक हुनकर आँखि ओहिना चमकैत रहलनि जेना कोनो तख्वारिक धार चमकैत छैक।

लोक सभक भय किछु कमल रहैक। बहुत रास बात कहि गेल रहथि। राम आरो बात कहने रहथि। रमणक नहि पुरला पर ओ राति खन ओइ कोठली दिस गेल छल। रमणकेँ दू गोटे पकड़ने रहैक आ मन्टू आ गोपाल एकटा बिजलीक तार ओकर गरदनिमे कसि रहल छलैक। ओ डरे पड़ा गेल छल। पोस्टमार्टम रिपोर्टक मोताबिक गला दाबिक' मारल गेल छलैक आ बादमे बालू मे गाड़ि देने छलैक।

किछुए दिनक बाद मुदा प्रमोद संग पर भरिक लोको आर भयभीत भ' गेल रहथि। आतंकसँ सर्द। बीसे दिनुका बाद तीनू जमानति पर छूटि गेल रहैक आ तकर तेसरे दिन प्रमोद एकटा पुर्जी हाथमे देने रहथि। बरण्डा पर क्यो फेकि गेल रहथि।

—दोसरो बेटाक बेह गति हैत। तैयार रहू।

सुधीर बाबू पुर्जी लेने एस॰ पी॰ साहब लग दौड़ल गेलाह। पुलिसवा सभ ठाड़ फेक' लागल रहथि मुदा एस॰ पी॰ साहबके' प्रायः दया आबि गेलनि। भीतर बजबा लेलथिन।

पुर्जी हुनकर सामने राखि सुधीर बाबू कहलथिन—कोना छोड़ि देलियैक अपने लोकनि तीनू हत्याराकेँ। आब हमर समस्त परिवारकेँ समाप्त करत। लोकक जान मालक एहिना रक्षा करैत छियैक अपने लोकनि ?" एस॰ पी॰ साहब नीक लोक छलाह। बुझबैत कहलथिन—"अपने शान्त होउ। हमरा लोकनि नोकरी करैत

छी। ककरो आदेश मान' पड़ैत अछि। देशक असली रक्षक वैह लोकनि छथि। ककरो जीवा मरबाक फैसला हुनके लोकनिक हाथ छनि। नै मानबनि त' हमरो आफत। अपने हमर बात मानू, जे भेल से भेल। जे बाँचल छथि तिनका बचबियनु।

सुबीर बाबू अवाक रहि गेलाह—"ई अपने कहि रहल छी! तखन अइ शहरक लोक ककरा लग जायत? के बचौतैक ओकरा अइ गुण्डवा सभसँ——

एस० पी० साहब बुझौलथिन—क्यो नै बचा सकैत छैक। हम पकड़िक' भीतर करबैक, ऊपरसँ आदेश औत, छूटि जायत। मोकदमा हेतैक, डरे क्यो गवाही नहि देत। ओ आर जकड़िक' बाहर औत। दू चारि टा आर खून करत। अपने कोन झंझटमे पड़ल छी। गेल बेटा त' वापस नहि औत। हुनका लेल बचलाहाक जिनगी खतरामे नहि दियौन। हम अपनेक नीक लेल कहैत छी।"

सुबीर बाबूकेँ किछुओ नीक नहि लागल छलनि। एस० पी० साहब डरपोक आ सिद्धान्तहीन लागल छलथिन। ओ हुनकर कोठलीसँ उठिक' चल आयल छलाह।

डेरा पर सभक चेहरा तेहन रहैक जेना फेर क्यो मारल गेल हो। आतंकित सुबीर बाबूकेँ किछु पुछबासँ पहिने प्रमोद एकटा दोसर पुर्जा देलकनि— एस० पी० लग गेल रही। बेटी पुतहु दुनूकेँ तीन दिनक भीतर डेरासँ दिन-देखार उठा लेब! बचा लिय', जेकरा बचेबाक हो।

सुबीर बाबू फेर बाहर दौड़' लगलाह! पत्नी पयरसँ लपटि गेलथिन—नै जाउ कतहु, चुपचाप घरमे बैसू।

बेटा कान' लगलनि—घर-आंगन नाश क' देत ओ सभ, जाय दियौक बाबू। रमण त' गेल।

बेटी पुतहु कनैत कातमे ठाढ़ि छलनि जेना सते क्यो जबरदस्ती उठब' लेल आबि गेल होइ।

सुबीर बाबू हताश बैसि गेलाह। ओइ दिन कतहु नहि गेलाह। दिन भरि नर्भेत रहलनि जे किम्हरोसँ एकटा बम खसतनि घरमे आ सपरिवार सुड्डाह भ' जयताह। बिन खयने पीने पड़ल रहलाह। बड़ी राति क' नीन्न भेलनि। नीन्नमे रमणकेँ देखलथिन—मुँह पर पट्टी बान्हल छलैक आ दुनू हाथ सेहो पाछाँ मोड़ि

क' बान्हल छलैक। एकटा तार गरदनिमे कसल छलैक जकरा दू कातसँ मण्टू आ गोपाल खीचि रहल छलैक। जीभ बाहर लटकि गेल छैक मुदा तैयो सुबीर बाबूके' लगलनि जे ओ किछु कहि रहल छनि हुनका सँ······

ओ चेहाक' उठि बैसलाह। घामे पसेने तर छलाह। कोठलीमे अन्हार रहनि। डेरामे मृत्युक निस्तब्धता रहनि। लगलनि जेना सभे,सभ मारल जयताह। रमण गेलनि, सभ क्यो जयताह! क्यो रक्षक नहि छनि। ककरा लग जयताह। सभ दिस अन्हारे अन्हार छैन।

भोरे फेर एक बेर प्रयास करने छलाह। एस० पी० साहेबक डेरा पर गेल रहथि। नहि छलथिन। पटना चल गेल छलाह। निराश सुबीर बाबू डी० एस० पी०क डेरा पर गेलाह। सिपाही ढुकहे नै देलकनि। सामने बरण्डा पर दू चारि टा नेतानुमा लोक सभक संग डी० एस० पी० साहब बैसल छलाह। सुबीर बाबू जोर जोर सँ चिचिआय लगलाह। सिपाही बेर बेर धक्का देब' लगलनि, ठेहुन कपार शोणिते शोणिताम भ' गेलनि मुदा ओ उठि उठि क' चिचिआइत रहलाह। डी० एस० पी० साहब खौंझायल अपने जगहसँ बैट धरि अयलाह आ गारि दैत कहलथिन—"की हल्ला क' रहल छी—जे कहबाक अछि थाना मे लिखा दियौक।" डी० एस० पी० साहब चल गेलथिन आ धमकीक पुर्जा लेने ओ अनिच्छापूर्वक थाना दिस बढ़लाह। ओकर सभक रबैया ओ देखने रहथिन। जखन रमण नै भेटैत रहनि, दिनमे तीन बेर दौड़ैत छलाह, हुनकर रिपोर्ट धरि नहि लिखैत छलनि। गारि द' भगा दैत छलनि। औत' जयबाक कोनो इच्छा नहि रहनि। असहाय भ' ओम्हरे जाय पड़लनि। प्रभारी हुनका देखते फेर मुँह बिचका लेलकनि। ओ धमकीक दुनू पुर्जा देलथिन। ओ फाड़ि क' फेंकि देलकनि— अइ सँ की हैत? की पता के लिखने अछि? भ' सकैत अछि अहाँ अपने लिखि लेने होइ तीनू केँ फसब' लेल।

सुबीर बाबू तामसे थरथरा उठलाह। धमकीक मतलब बेचा देने रहनि। मण्टू नाटू आ गोपालक संग शहरक सब गुण्डा छैक। शहरक पुलिसो छैक—सेहो आब ओ बूझि गेल छलाह। मुदा तैयो आस नै छोड़ने छलाह।

बिगड़ि क' कहलथिन—हमर कागज किऐक फाड़लहुँ अहाँ?

प्रभारी आर तरेगि उठलनि—'हमरा आँखि देखबैत छी? ठहरि जाउ, सभ बुढ़ियारी घुसारि दैत छी। हनुमान सिंह, लगाउ अइ चार के दस बेंत आ

क' दियौक भीतर ठेका लगा क'। राति भरि हवालातमे रहत त' अपने होश आबि जयतैक।

सेवक हनुमान आज्ञापालन करैत दनादन बेंत चलब' लगलनि। सौंसे देह दागि उखाड़ि देलनि। हुनकर चीत्कार पर प्रभारी सहित आरो सभ हँसैत रहलनि। सेवक हनुमान हुनका छड़पिटबैत घसकबैत हवालातक कोठलीमे पटकि बाहर सँ ताला लगा चल गेलनि। भरि राति अन्हार कोठलीमे पड़ल दर्दमे कुहरैत रहलाह। मुदा ध्यान डेरे दिस रहलनि। नहि जानि की कयने हैत?

भोरे लतिका क' बाहर क' देलकनि। लंगड़ाइत लंगड़ाइत डेरा पहुँचलाह। सभ सन्देशामे रहथि। सभकें सुरक्षित देखि रसुवा सभ कष्ट कलेश बिसरि गेलाह।

भोरे पुजाकि बदला मण्टू अपन ठाढ़ रहथि डेराक सामने सड़क पर। सौंसे मोहल्लाकें सुनाक कहलकनि—देख रहा है भाला, बुझलियैक मजा। असली मजा आब बुझबै। ऐह राति अइ डेराकें बम सँ उड़ा प्रमोद कें ओइ जरैत आगि मे फेंकि—बेटी पुतोहु के ल' जायब—बजा लिय' जकरा बजयबाक हो।

अपन अपन डेरा सँ सभ सुनलकै मण्टूक धमकी! मुदा लगले सभ अपन दरवज्जा बन्द क' लेलकै जेना किछु भेले ने होइ! कतेको गोटे चोरा क' डेरामे आबि कतेको बेर कहि गेल रहथि—"ओकरा सँ दुश्मनी नहि करू! ओ बाँचल अछि सेहो आयत!"

एस० पी० साहब सेहो यैह कहने रहथिन! सब लोक सैह कहैत छनि! तीनटा बीस वर्षक छौंड़ाक डरे समस्त शहर आ समस्त प्रशासन भयभीत छैक! एस० पी० साहब भयभीत छथिन! कहैत छथिन—असली मार' सिखाब'बला उपरमे बैसल छथि, सब हुनके आदेश सँ होइत छैक!

सुधीर बाबू क' अर्थ नहि लगैत छनि जे अराजकता कें एकटा अबोधक जानक कोन काज छैक! रमणक प्राण सँ ओकर कोन हित सिद्धि भेल हेतैक! ओ सभ कियैक बचा रहल छैक एकटा खूनी कें—

हुनकर बात पर पड़ोसी कमला बाबू ओइ दिन हँस' लागल रहथिन—"—अहाँ कोन दुनियामे रहैत छी सुधीर बाबू! गुण्डा-खूनीक बिना राजनीति-प्रशासन आ पुलिसक काज चलतैक? असली ताकति त' यैह सभ छैक। हमरा

सहोक जिनगी त' आगू पेंची छैक ओकरा सभ लेल। मोन हेतैक त' लेत, मोन हेतैक बाँचि देत। ओकरे सभक कृपा सँ जीवैत अछि सभ क्यो आइ।

सुधीर बाबू मुदा कोना जीताह! कोना बचतनि हुनकर परिवार? रक्षक सभ भक्ष छनि···ककरा लग जयताह?

पत्नी कहलथिन—गाम चलू सभ क्यो! नै चाही ई नौकरी-चाकरी! साग पात खा क' गुजर क' लेब गामे मे।

प्रमोद कहलकनि—ठीके कहैत अछि माय। हमहूँ छुट्टी ल' लैत छी··· दू मासक···! दू-मास बाद देखल जयतैक?

—"आ दू मास बाद! दू मास मे ई शहर आ देश बदलि जयतैक? समाज आ पुलिस बदलि जयतैक! फेर सँ जीव' त' एतहि आब' पड़त! तखन? आ तोहर त' नव नौकरी छह, दू मासक छुट्टी कोना भेटतह।" सुधीर बाबू रोकलथिन।

प्रमोद मुदा अड़ल छल—"देखल जयतैक! भीख दिबाउठय' यैह ने! नै हैत त' नौकरी छूटत यैह ने! एत' नहि रहब हमरा लोकनि! गाम चलू।"

प्रमोदक बात सँ बेसी बेटा-बेटीक मोन डरा देने रहनि! हुनक आँखि मे एहन भयभीत आ निरीह भाव रहैक जेना अखने क्यो औतैक आ सभक सामने नोचि-नोचि क' खा जयतैक! हुनकर आँखिक सोझाँ मे।

बूढ़ा जोर सँ चीत्कार क' उठलाह। बगल बैसलमे सिपाही फेर हुनकर थरथराइत देह कें पकड़ि क' सोझ करबलकनि—"बहुत डरा रहल छी बूढ़ा बाबा? कोनो खराप सपना देखलहुँ?

सपना! बूढ़ा चारूकात तकलनि! ओ गाड़ीक डिब्बा मे छलाह आ गाड़ी अपन वेग मे भागल जा रहल छल! सपना! सत्ते ओ सपना देखने छलाह। एकटा भेरौन सपना! सत्त कतउ कतेक डेराओन होइ! फेर लगले सोचलनि, सत्त त' सभ दिन सपना सँ बेसी डेराओन होइते छैक।

अपन देह पर सिपाहीक हाथक स्पर्श दिस ध्यान गेलनि त' फेर डेरा गेलाह! लगलनि जे यैह हाथ हुनकर घेंटी चाँपि देतनि! ओकर हाथ ओ कने जोर सँ हटा देलथिन! ओ सहृदय सिपाही किछु चौंकल! ओकरा बूढ़ाक व्यवहार बूढ़ सँ अजीब लागि रहल छलैक! पुछलकनि—"कत' जायब बूढ़ा बाबा?

बूढ़ा अनायास बदला ओकरे सँ प्रश्न कयलथिन—कत' आबि गेलहुँ !

ओ सिपाही कने आर चकित होइत कहलकनि—पटना आबि जायत आधा घण्टा मे ।

आधा घण्टा मे ? बूढ़ा चौंकलाह ! एतेक जल्दी समय बीति गेलैक !

समय त' बहुत बीति गेल छलैक ! ओही दिन परिवार कें गाम पठा देने छलथिन ! सब कनैत रहि गेलनि मुदा अपने नहि गेलाह ! तीन वर्ष भ' गेलनि । घरक लोक फेर घूमि क' ककरो सँ भेंट नहि छनि, एको बेर गाम नहि गेल छथि ! प्रमोदनौकरी छोड़ि देलकनि । गाममे एहि शहरमे आब' लेल तैयार नहि भेलनि ! बेटू चारि कट्ठा खेत पथार छनि, ओही मे लागल रहैत छनि ! किछु टाका पठा दैत छथिन ।

गाम मुदा नहि जाइत छथि जेना कोनो सनक सवार छनि । सदिखन लगैत छनि जेना रमणक आत्मा न्याय माँगि रहल छनि ! पिताक रूप मे ओइ आत्माक शान्ति लेल किछु करब जरूरी छनि ! सबठाम ठोकर खाइत बौआ रहल छथि मुदा आस नहि छोड़ने छथि !

केस कोर्ट मे चलि गेल छनि मुदा एकदम कमजोर बना क' । एकोटा गवाही नहि ! राम एकदम नकारि गेलैक··· ! कहलकैं जे ओ किछु नहि जनैत अछि ! प्रिन्सिपल साहेब कहलथिन जे मधु त' रस्टीकेट भेले नहि छल, ओ त' प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेल अछि ! रस्टिकेट त' रमन भेल छल, चोरियो करैत वैह पकड़ल गेल छल ।

सुवीर बाबू ठाम-ठाम ठोकर खाइत ठोकराइत रहलाह ! एस०पी० साहेबक बदलीक भ' गेल छलनि आ नव एस० पी० हुनकर बातो सुन' लेल तैयार नहि छलनि ! पटना आ मंत्री मुख्यमंत्री, सबहक दरबज्जा पर धरना द' आयल छलाह ! कियो भेंटो नहि कयलकनि । खाली चिट्ठी सब लिखैत रहलाह अछि सब दिन, गवर्नर मंत्री मुख्यमंत्री, डी० आई० जी०, आइ० जी० सबकें ! कतहु सँ कोनो जवाब नहि आयल छनि !

झोरा मे लिखल चिट्ठीक प्रतिलिपि सब आ मोकदमाक कागज रहैत छैन आ एकटा गमछा आ गिलास ! एहिना बौआइत बौआइत तीनिये वर्षमे बूढ़ भ' गेल छथि, दाढ़ी बढ़ि गेल छनि आ मोन शोणित शोणितात भ' गेल छनि !

काल्हिये पता लागल रहनि जे मंत्री आ आइ० जी० साहेब आयल छथि शहरमे ! बड़ चेष्टा कयलनि मुदा सफल नहि भेलाह ! पता लगलनि जे आयल छलाह प्लेनमे घुरताह ट्रेन सँ । प्लेटफार्म ओगरि लेलनि ! मारि धक्का खाइत कहुना ट्रेनमे, चढ़ि गेलाह । पटना पहुँच' मे मात्र आध घण्टा देरी छैक आ पटना पहुँचि गेला पर फेर भेंटो ने कर' देतनि !

सुवीर बाबू व्यग्र भ' उठलाह ! उठि क' ठाढ़ भ' गेलाह । सिपाही सब देखलकनि मुदा ध्यान नहि देलकनि । ओ बाहर पैसेजमे आबि गेलाह । पहरा दैत एकटा सिपाही कोनो केबिन मे चल गेल छल प्रायः । दोसर ओही ठाम ठाढ़ औंघा रहल छल । बरिसक ठाढ़े-ठाढ़ सूति रहल छल । राइफल औंठगा क' राखल छलैक, ओकर पयर लग मे । एस०पी० साहेबक बात फेर मोन पड़लनि—ऊपर सँ आदेश आयल छल । मंत्री, आइजी साहबक आदेश छल······

सुवीर बाबूक आँखि चमक' लगलनि । झुकल डांड़ जेना तनि गेलनि । लपकि क' राइफल उठौलनि आ केबिन मे घुसि गेलाह । राइफल दू बेर गरजल ।

सुवीर बाबू हुलसि उठलाह । निशाना एकदम ठीक छलनि । बचपनक ट्रेनिंग बेकार नहि गेल छलनि । ओ राइफलकें घुमाक' दोसर दिसबें बेंट जकाँ पकड़ि लेलनि आ जोरसँ घुमौलनि···छक्का । एक बेर फेर घुमौलनि—छक्का । दुनू लाश उड़ि क' शीशा आबि क' एक दोसर पर गेंटा गेल रहनि । क्रिकेट मे बचपन मे खूब छक्का मारैत छलाह सुवीर बाबू । हुनकर ट्रफ्ल सपना सब एक-एक क' जोड़ा रहल छलनि । लाश मे कखन रमणक आकृति बेर-बेर हुनकर आँखिक आगाँ नाचि रहल छलनि आ कानि रहल छलनि जेना अपन बापक पराक्रमें देखि ओकरो आकृति पर हँसी पसरि गेल होइ ।

सुरक्षा सैनिक जखन केबिन मे पैसल दुनू गेटल लाश पर सुवीर बाबू निश्चिन्तपूर्वक बैसल छलाह आ आँखि मे आनन्दक अतिरेक छलकि रहल छलनि । कान्ह पर राइफल तेना राखल रहनि जेना तानपूरा होनि आ लगैत छलैक जेना कोनो राग को आलाप लेब' लगताह ।

सम्पूर्ण सुरक्षा-दल सम्मोहित हतबुद्धि ठाढ़ छल । ट्रेनक गति मद्धिम भ' रहल छलैक । बरिसक स्टेशन लग आबि गेल छलैक ।●

सितम्बर, १९८८



प्रभास मैथिली कथा साहित्यक समवेत युवा ऊर्जा एवं स्फूर्ति सँ भरल एहन कथाकार छथि जे कथा कें व्यापक आधार, विराट परिवेश, बहुआयामी दृष्टि तथा विशिष्ट दृष्टि-भंगी प्रदान कयलनि अछि। अत्यन्त संवेदनशील हृदय, चिन्तनशील मस्तिष्क, सत्योन्मेषी दृष्टि तथा चोटगर-नोकगर व्यंग्यक वक्र-भङ्गीमा हिनक विशेषता छनि। शहर मे रहितो ई मोन-प्राणसँ गाम मे रहैत छथि। बाल्यकालक संस्मरण आ अतीतक बहुत रास मार्मिक अनुभूति हिनका मे तेना ने रसि-बसि गेल छनि जे कदाचित् नागर संस्कृतिक छलनामय वातावरण हिनका हठात् मिथिलाक अपन माटिपानि ओ गामघर मे आनि दैत छनि। कथाकार प्रभास मे यथार्थ ओ आदर्शक मणिकांचन संयोग भेटैत अछि। गामसँ नगर, नगर सँ राष्ट्र ओ राष्ट्र सँ अन्तर्राष्ट्रीयताक विराट क्षितिज हिनक सम्पूर्ण मनोमस्तिष्ककें झिकझोरैत रहलनि अछि। अतएव बद्धमूल सामंती संस्कारकें तोड़ि-फोड़ि ई बेर-बेर अपन रचना मे यथार्थ जनवादी जमीन सेहो तकैत छथि। पूर्व मे मैथिली कथा जाहि संकीर्णताक कठघरा मे मुनल-बान्हल छल, तकरा ई व्यापकता ओ विविधताक उन्मुक्त भाव-भूमि पर उतारि देलनि। हिनक रचना-शिल्प मे मिथिला-क्षेत्रक सोना-माटिक सम्पूर्ण सुगंधि भेटैत अछि। संप्रति हिनक कथा नाना रूपात्मक जगत ओ जिनगीक बहुरंगी कथा कहैत अछि। हिनका मे एक अपूर्व चित्रमयता, सजीवता, मनोवैज्ञानिकता, बाह्यान्तः संघर्षक उठापटक देखिते बनैत अछि। ई अतीतक ओ कथा कहैत छथि जे वर्तमानक रेखाचित्र गढ़ैत भविष्यक सपना सजबैत अछि। कदाचित् आजुक विभीषिका ओ विसंगति अथवा वर्ग-संघर्ष हिनका ततेक उद्वेलित कयलकनि अछि जाहिसँ क्रान्तिक कोनो दीपशिखा प्रज्वलित कयल जा सकय।